

शरत्-साहित्य

विप्रदास

साथमें

सती और तरुणोंकी पिढाह

२३-२४

भद्रवारक

पन्वहुमार जैन

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड, बम्बई-४

मूक्य : सुखम सस्करण, तीम रूपये
पौषी ध्यावृत्ति, नवम्बर १९६२

प्रकाशक—बडोपर मोदी, मैनेजिंग टायरेक्टर,
दिन्वी-ग्रुप-रजाकर (प्रारसेट) लिमिटेड, हीराबाय, गिरगाव, बाम.
मुद्रक—श्रीमन्महाय कपूर, डानमन्डर लिमिटेड, बाणवडी(बनारस) १०४९-

कौफियत

शरसाहिस्के अक्षतक १३ भाग निकल चुके हैं। प्रत्येक भागमें लगभग १५० पृष्ठ देनेका आश्वासन दिया गया था। कई भागोंमें तो वह संख्या १६ २०५ तक पहुँच गई है, पर १४० से कम किसी भी भागमें नहीं रही। कबल वह २१ २४ भाग ही ऐसा था जिसकी कि पृ० सं० २१४ अर्थात् साधारणसे ५०-६० पेज कम थी और यह न केवल पाठकोंको बल्कि प्रकाशकोंको भी बराबर खटकती रही। अब इस आशुचि में विप्रदासके साथ दो नए रचनार्थ और देकर उस कमीकी कुछ पूर्ति करनेका प्रयत्न किया गया है। अब इतकी पृ० सं० २०६ हो जाती है जो साधारणसे थोड़ी ही कम है।

‘सती’ अपन लंगडी बेबीइ कहानी है और अर्हतक हम यह जानते हैं कि किता भी संयहमें प्रकाशित नहीं हुई है।

‘तक्योंका विद्रोह’ तक्योंके हृदयतक पहुँचनेवाला लघु क्लोटि का निबन्ध है और उस समयको राजनीतिक विचार धाराओंपर प्रकाश डालता है।

विप्रदास

१

बलरामपुर गाँव में रथ-ध्यानक^१ नीचे किसान-मजूरीकी एक बैठक हो गई । निकटवर्ती रेलवे-आवनके कुम्बियोंके बहने गी—उबिबारकी सुझीकी फुरसतमें—समयमें शामिल होकर उनको हल्लत बढ़ाई और कलकत्तेसे कुछ नामी बह्यर्षोंने आकर आधुनिक कालके असाध्य और अमैत्रीके विरुद्ध तीव्र प्रतिवाद करते हुए ज्वालात्म्य भाषण दिये । असंख्य प्रस्ताव स्वीकृत हुए और बादमें क्लूस निकाल कर 'बन्देस्यतरम्' की धनियोंके साथ गाँवकी परिष्का करके उस दिनके सम्मेलनका कार्य समाप्त किया गया ।

बलरामपुर समृद्ध गाँव है । उसमें छोटे-बड़े अनेक तास्नुनेदारों और धनी घरल्लोंका बास है । एक छोरपर मुसलमान किसानोंका मुहल्ला है, और उसीके पास कुछ घर 'बागदी' और 'दूसे' खेगोंके हैं । भागीरथी नदीकी एक शाखा बहुत समय पहले यहाँतक आकर रुक गई थी और उसने अब कोसमर जमीन अर्ध-वृक्षाकारमें घेरकर एक ताल-सा बना दिया है; उसीके किनारे इन खेयोंकी खेपड़ियाँ हैं । इस गाँवमें सबसे ज्यादा धनी व्यक्ति हैं यशेश्वर मुन्धेयाम्प्यव । जमीन-जासदाद, और विचारत आदिके देखते हुए उनकी सम्पत्ति और सम्पदा को यदि बहुत ज्यादा का बख्तरसे ज्यादा कहा जाय तो असुक्ति न होगी । उनकी विशाल व्यावसायिकके सामनवाले रास्तसे अब यह छुट्टा शाल पताकाओं

१. 'रथज्जल' रथला सभ्य है जिसके मानी रथ-ध्यान वा रथ-बास है । इस जगहसे (अथवा मासमें) जगज्जल वा अन्य किसी रथज्जल रथ निकलना और फिर वापस आकर वही जगह रथा रहना है ।

२. 'बागदी' = रंगामयी बड़ अनुजन जाति है जो टोनी-वादी बंदेस करती है। इस खेय प्रायः बलिष्ठ प्रभु-बल और साहसी होते हैं । 'दूसे' = दीनेवाले और एक व्यक्ति-विशेष ।

पर निश्चित जाना प्रकारक भास्यो और किसान मजदूरोंके ओर-ओरते बबबयभर बदन करता हुआ गुजर रहा था तब उठ मकानकी दूसरी मंजिलपर बरामदेमें सदा हुआ एक चौचाईके बलिष्ठ बुढ़क नीचेक सम्पूर्ण हस्त्रको बुधबाप देकर रहा था । अचरभत् उत्तरा दृष्टि पड़ते ही विद्युम्ब बनताका कछनता हुआ कचकाइक एक ही क्षणमें मुक्त-ज गया । आगे-आगे चलनेवाले नेतृत्वानीय को तीन व्यक्तिोंने इधर उधर देखकर बहुतसे लोगोंकी दृष्टिअ चौकड़अ अनुसरण करके ऊपरकी ओर मुँह ठठाव ही देना कि बुढ़क सम्पूर्ण भादमें धीरे-धीरे गायब हो गया । उन लोगोंने पूछा—“कौन है ?”

बहुतोंने इसे हुए मसते कहा—‘विप्रदास बाबू !’

“कौन विप्रदास ? गाँवका बलीदार ?”

किसी एक बनेने कहा—“हां !”

नेता धरक उठे, किसानोंके दोषों ओर परचाह नहीं करते, उल्लाके साथ बोले—‘ओ!—बद बात है !’ और दूसरे ही क्षण धरके ऊपर हाथ पुमाते हुए बुन्द आवाजक एक साथ पीकार करते बोले—“शलो मारतमाताकी बब । पाये किसान मजदूरोंको जप । बीभे बनेमठरम !”

किन्तु कोई रास नतीक नहीं निकल्य । अनिच्छा लोग हुए रहे था मन ही मन बोले, ओर जिन दो-चार बनोंने आवाज निकाली उनक मी क्षीय कम्ब क्पादा ऊँचे म था सक—उनकी आवाज विप्रदासक बरामदेको लौककर उनके कानातक पहुँचा था नहीं, तमसमें मगी आवा । नेताओंने अपनेकी अरम्यमित अनुभव किरा, वे हितकर बोले—“गाँवका एक मामूली बलीदार, उमसे इतना बर ! ये ही ता इतने शत्रु हैं और हमारे धरिका लून यठ-दिन पूजा करते हैं । इयागी अगली कड़ाह तो इन्हींके लिजाह है । प ही तो—”

प्रयोग वाग्यतामें तदर्थ बाधा आ पड़ी । बहुतने पैनावे हुए साथ अथ मने उनके तरकमे संनित थे, किन्तु उनक प्रयोग करकेमें विप्र था गया । मीदमेंने एक आदमीन आदिस्तक कहा—“उनके मार ताह है !”

“/कनके ?”

एक पकोन उर्मल साका बुढ़क सदा सेकर लकके आगे भागे आ रहा था, उनन दुहर कहा—‘ये मैं ही बर मार है !’

ओर मंकी बात बर कि इतो बुढ़क आदद, उतय और लकके आका

यह अनुदान सपका हो पाया था।

“भोः—आपक। आप मी शायद यहाँके जमींदार हैं ?”

मुबक सन्नासे सिर झुकाये चुप रहा।



२

विप्रदासने अपनी बैठकमें छोटे भारीको बुलवाकर कहा—“कबका आयोजन हुआ नहीं था, बहुत-कुछ थोका देनेवाला था। ‘वार-क्राइ’ (War cry = एपसेत्रके थीत्कार) मी लूज चुने हुए थे। यह तो स्पन्ना ही पड़ेगा कि यमी है।” द्विजदास चुपचाप लड़ा रहा।

विप्रदासने प्रश्न किया—‘सुनन क्या खासकर भरे ही किये मेरी नाकके सामनेसे निकलना गया था ? मैं डर जाऊँ इसलिये ?’

द्विजदासने शान्त स्वरसे जवाब दिया—“किरक आपके लिये ही नहीं। सुनन चाहे कित्त एस्तेसे से जाया जाय, डर भिनके लिये है वे तो डरेंगे ही मारई साँव।”

विप्रदास मुसकन्य किये। मुसकराहट निरककुल अवज्ञापूर्वक थी। बोले—“तुम्हारे माइ साहब उस श्रेणीके खादमी नहीं हैं, यह बात तुम्हारे कुम्हलवाभ्येमेंसे बहुतोंको मावूम है। नहीं तो, उनकी अप्पनि सुननेके लिये मुझे बराम्भेमें जाकर कान लगाके लड़ा नहीं होना पड़ता। धरके भीतर बैठे-बैठे ही सुन सकता। तुम लोगोंके तरह-तरहके ढाँचे और बड़-बड़े म्याफ्मानोंसे मैं डरता नहीं। मैं लूज अच्छी तरह समझता हूँ, पमपमाते हुए बनाबडी दातोंसे खादमीको किरक बन्दर पुडकी ही बी का सकती है, उनस फाट खानेका काम नहीं किया जा सकता।”

कित्त कारणसे कल बहुतत लोगेका कष्टरोष हो गया था यह छिया नहीं था। और उलीका इशारा पाकर द्विजदासने मन ही मन महरि बजाका अनुभव किया। वह स्वभावतः शान्त प्रकृतिका खादमी है, और अपने बड़ मारईका असम्भव सम्मान करनेके कारण शायद और किसी प्रसंगमें वह चुप ही रहता; किन्तु कित्त बातको छेकर उगोंने ताना मारा उसका सहना कठिन था। फिर भी मुबकडते ही उठने कहा—“मारई साहब, बनाबडी दातोंसे कित्तना हो

तकटा है उसके ब्यादा नहीं होनेका, यह बात हम लोग जानते हैं, सिर्फ भाप लोग ही नहीं जानते कि संसारमें लक्षमुषके हाँसबाजे लोग भी हैं, काट लानेका दिन आनेपर उनको कमी नहीं रहती।'

ऐसे बचावकी आशा नहीं थी। विप्रवास भाग्यवंत उसके मुँहकी ओर देखकर बोले—“मच्छा !”

द्विजगत प्रमुत्तरमें खोरे एक बात कहने जा रहा था, किन्तु डरकर रुक गया। डर विप्रदासका नहीं था, बल्कि दूरबाजेके बाहर मौका कंटस्वर सुनाए दिया—“तुम लोग बरबाजेपर परदा क्यों लटकाने रहते हो बचाम्यो तो ! पुआ खुद किये बिना परमें पुसना मुक्तिफल है। पर-गिरस्त्री विद्यायती पैयनसे मर गई है।”

द्विजगतने व्यस्त होकर परदा हटा दिया और विप्रदास कुरसी छोड़कर उठ लड़ हुए। एक प्रौढ़ विवशा मरिजा मीतर पुस आई। उमर बालीसते ऊपर पर्वुष बुझे है किन्तु ऊपकी सीमा नहीं। बरा कुछ दृष्ट है, मुँहपर पंचयमी कठोरताकी छाप है, यह बात बय लक्ष देते ही समझमें आ जाती है। छोटे बड़केकी ओर पृथी तरह पीठ करके बड़े बड़केसे बोली—‘क्यों रे विप्र मुना है कि एकादशीक वारेमें इत मरीनेमें पत्थमें यहवही है। देखा तो कमी नहीं होता !’

विप्रदासने कहा—“होना तो नहीं पारिए मौं।”

“ए रगृत्तजन पीरितभीको एक बार बुझा था लकी। उनका क्या मत है मुन हूँ।”

विप्रदास बयना हैकर बोले—“छे बुझवाये लेता हूँ। पर उनके म्सासने क्या मौं गुम्पारे जानौतक एक बार बय कि बात पर्वुष बुझी है, तब मैं जानता हूँ कि उन दानों दिनोंमें एक मौं दिन गुम बलठक न पुमागी।’

मौं इत ही बोली—“छठ मूठ उपमे मनेका क्या कितीको पीक है रे ! पर उपय क्या है ! इनक करनते पुम मरी न करनेमें अनन्त नरक है। क्यों रे, बहू बहू रसो भी भागवतमें लिखा है कि कौर एक बहू मयी पीरित कलकल में बड़ी मच्छी ‘म्यागवत की प्यारना कर रहे हैं। एक बड़े बरिपाफ्त तो करवा देग, क्या करनेम इन वरमें उनक बरपीकी भूक पढ़ तकती है !”

“दुम्पारी आरा होत ही करवा हैरुम मौं।”

“क्यों, मेरी आशाकी ही क्या ज़रूरत है ! तुम लोगोंको मुझनेकी इच्छा नहीं होती ! कब दुर्द भी कथ्य हमारे यहाँ -”

विप्रदासने हँसकर बाबा पहुँचाते हुए कहा—“उते तो अमी तीन महीने मी नहीं हुए मों !”

मौने आश्चर्यक साथ कहा—“बुल तीन ही महीने ! पर तीन महीने ही क्या कम है ! खैर, जो मी हो बेटा अन्नकी बिना कदे काम नहीं चलेगा ! मेरी बोनो मामिसीने बिट्टी लिखी है । कैलाचनाम मानसरोवरक दर्शनके लिए अन्नकी मी आवश्यक आर्जेगी !”

विप्रदासने हाथ जोड़कर कहा—“दुर्दार् है मों यही आका तुम म्म करना । तुम्हारे बोनो बेटीमेते बगैर एकके साथ गये मामिसीक मरोसे तुम्हें लिम्पत नहीं भेज सकूँगा । और तब तरहकी हानि सह सकता हूँ, पर मोंको लोनेकी हानि नहीं सह सकता ।”

माकी दोनों आँसू मर आर्य, बोधी,—“हर म्म रे, कैलासकी यात्रामें मरण हो ऐसा पुण्यका ओर तेरी माँका नहीं है । मैं फिर लौट आर्जेगी । पर बेटीमेते तू तो मेरे साथ जा नहीं सकेगा । तुसपर ही इतनी बड़ी पर-गिरल्लीका साथ मार है । और, मेरे पीछे जो बेटा लड़ा है उस साथ लेकर तो मैं बैकुंठ मी जानेको राधी महीं । आकावका लड़का हाकर सम्भा-पूजा तो बहुत दिनोंसे ही छोड़ रली है, मुना है कि कलकसेम मस्य-अमस्यका मी कुछ विचार नहीं करता । और फिर कल क्या किया है मुना है !”

विप्रदास मसे कादयी कैसा मुँह बनाकर बोधा—“और क्या किया ! मैंने तो कुछ नहीं मुना ।”

मौने कहा—“बकर मुना है । तयी आँसूको सोला दे सके इतनी बुद्धि इस बड़केमें नहीं है । पर इतक तू बोर प्रतिहार कर । यह हमाय ही लापेगा पहिनेगा और हमारे ही बपसौसे कककसस आदमी मुजाकर हमारी रिआयाको उमादनेका पद्वंन करेगा ! इसका कलकसेका साथ तू बन्द कर दे !”

विप्रदासने आश्चर्यक साथ कहा—“पर कैसी बात है मों, पदार्कका साथ बन्द कर हूँ ! पड़ेगा नहीं !”

मौने कहा—“जकरत क्या है ! मेरे सतुरके स्कूलके छात्रोंने अन्न एक साथ हल बाँधकर आकर कहा कि बिपेयी पितासे बैकुंठ सम्नास हो रहा है,

सकता है उससे क्यादा नहीं होनेका यह बात हम लोग जानते हैं सिर्फ भाप लोग ही नहीं जानते कि संसारमें तपसुबुके हाँववाड़े लोग भी हैं, हाट लानेका दिन जानेपर उनको कमी नहीं रहती।”

ऐसे बनावकी भाषा नहीं थी। विप्रदास भावबसे उतके मुँहकी ओर देखकर बोले—“अच्छा !”

द्विजदास प्रत्युत्तरमें कोई एक बात कहने का था या किन्तु बरकर रुक गया। दर विप्रदासका नहीं था, अकस्मात् बरवानेचे बाहर मौका कंठस्वर सुनाई दिया—“तुम लोग बरवानेपर परवा क्यों लटकाने लठ हो बताओ तो ! सुभा-सुर किने बिना परमें पुसना मुश्किल है। पर-गिरली बिलावती दीनसे मर गई है।”

द्विजदासने अस्त होकर परवा हस दिया, और विप्रदास बुरसी छोड़कर उठ लड़े हुए। एक शौढ़ बिबवा मरिजा भीतर पुन आर। उमर चाबीलते ऊपर पहुँच चुकी है, किन्तु ऊरकी लीमा नहीं। अण कुछ हस है, मुँहपर बैकम्पकी कटोरलाकी छाव है यह बात अण अण देते ही समसम भा जाती है। छोटे बड़केकी ओर बुरी तरह पीठ बरके बने लड़केसे बोली—“क्यों दे बिप, सुना है कि एकादशीके वारमें हल महीनेमें पतयमें गड़बड़ी है। देवा तो कमी नहीं होखे !”

विप्रदासने कहा—“होना तो नहीं चाहीए मौं !”

“ए स्मृतिरत्न पंडितजीको एक बार बुडवा तो लरी। उनका क्या मठ है मुन हूँ।”

विप्रदास अण-ला हँसकर बोले—“सो बुलवाने डेला हूँ। पर उन मतामले क्या मौं तुम्हारे अनौठक एक बार अण कि बात पहुँच चुकी है, ल मौं जानख हूँ कि उन दोनोँ दिनोंमेंसे एक भी दिन तुम अलठक न सुमोगी।”

मौं हँस ली, बोली—“छठ-मूठ उणते मरनेका क्या बिलीकी शीक है रे ! पर उणन क्या है ! इसके करनेसे पुण्य नहीं न करनेसे अनन्त नरक है। क्यों रे, बहू अण ली भी अणवारमें बिला है कि कार एक बह भयी पवित करकेसे में बड़ी अण्टी ‘म्यागठ की म्याग्मा कर रहे हैं। एक बडे दरियापत तो करवा देल क्या करनेसे इल परमें उनक परबोकी पूल पड़ सकती है !”

“तुम्हारी भाका दोते ही करवा देलूँग्य मौं !”

“क्यों, मेरी आशाकी ही क्या जरूरत है ! तुम व्योमोंको सुननेकी इच्छा नहीं होती ! क्या हुई थी क्या हमारे यहाँ -”

विप्रदासने हँसकर बाधा पहुँचाते हुए कहा—“उसे तो अभी तीन महीने भी नहीं हुए मों !”

मौने आश्चर्यके साथ कहा—“बुद्ध तीन ही महीने ! पर तीन महीने ही क्या कम है ! खैर, जो भी हो बेटा, अबकी बिना कहे काम नहीं चलेगा । मेरी दोनों मामियोंने जिद्दी लिखी है । बैठासनाय-मानसरोवरके दर्शनके लिए अपनी मैं अवश्य आऊँगी ।”

विप्रदासने हाथ जोड़कर कहा—“बुद्धा है मों, यही आशा तुम मत करना । तुम्हारे दोनों बेटोंसे बगैर एकछत्र साथ गये मामियोंक मरसे तुम्हें तिम्बत यही मेज सकेगा । और सब तरहकी हानि सह सकता हूँ, पर मोंको खोलेकी हानि नहीं सह सकता ।”

मौकी दोनों आँसू मर आये, बोली,—“हर मत रे, बैठासकी यात्रामें मरण हो ऐसा पुण्यका गोर तेरी माका नहीं है । मैं फिर लौट आऊँगी । पर बेटोंसे तू तो मेरे साथ जा नहीं सकेगा । तुझपर ही इतनी बड़ी पर-गिरस्तीका साथ मार है । और, मेरे पीछे जो बरा लड़ा है उसे साथ लेकर तो मैं पैकुठ भी जानेको तभी नहीं । अड़नका लड़का हाकर सच्चा पूजा तो बहुत दिनोंसे ही छोड़ रली है, मुना है कि कलकत्तेमें मत्स्य-अमत्स्यका भी कुछ बिपार नहीं करता । और फिर कल क्या किया है मुना है !”

विप्रदास मझे आदमी बैठा मुँह बनाकर बोला—“और क्या किया ! मैंने तो कुछ नहीं मुना ।”

मौने कहा—“बहर मुना है । तेरी आँसूको घोंगा दे सके इतनी बुद्धि इस लड़कमें नहीं है । पर इतका तू कोद प्रतिहार कर । यह हमारा ही लयवेगा पहिनेगा और हमारे ही रूपोंसे कलकत्तेमें आदमी बुलाकर हमारी रिआयाको उमाड़नेका पर्यवेन करेगा । इसका कलकत्तेका लया तू बन्द कर दे ।”

विप्रदासने आश्चर्यक साथ कहा—“यह कैसी बात है मों, पदार्थका रत्न बन्द कर दूँ ? खेगा नहीं !”

मौने कहा—“बहरत क्या है ! मेरे सतुरके स्तूरके छात्रोंने जब एक साथ एक बौध्दक आकर कहा कि विदेशी पिछासे देवका चर्चना हो रहा है,

तफ्फा है उससे ज्यादा नहीं होनेका यह बात हम लोग जानते हैं, सिर्फ आप लोग ही नहीं जानते कि संसारमें सबकुछके दौलतवाले लोग भी हैं, काट खानेका दिन आनेपर उनको कमी नहीं पड़ती।”

ऐसे बनावकी आशा नहीं थी। विप्रदास भाग्यवश उसके मुँहकी ओर देखकर बोले— अफ्फा !”

द्विजदास प्रामुखमें खोई एक बात कहने का खाया था, किन्तु उरकर बह गया। हर विप्रदासका नहीं था, बल्किस्मात् दरवाजेके बाहर मौका फंटेपर मुनाई बिना—“तुम लोग दरवाजेपर परदा क्यों लटकाने रखते हो कताम्बे लो ! सुधा कुछ किये बिना परमें पुतना मुरिकक है। पर-गिरली विजयवती कैयनसे भर गई है।”

द्विजदासने व्यस्त होकर परदा हटा दिया, और विप्रदास कुरसी छोड़कर उठ खड़े हुए। एक प्रौढ़ विचारा महिला मीतर बुल आई। उमर चाहीससे उमर पहुँच चुकी है, किन्तु स्त्रीकी सीमा नहीं। बरा कुछ कुछ है, मुँहपर बैबम्बकी कन्नेरठाकी छाप है, यह बात जरा बदन देते ही समझमें आ जाती है। छोटे बड़केकी ओर पूरी तरह पीठ करके बड़े बड़केसे बोलीं—“कहीं रे किय, मुना है कि एकादशीके कारमें इस महीनेमें फागुन गढ़वती है। ऐसा ली कमी नहीं होता।”

विप्रदासने कहा—“होना ली नहीं चाहिए मी।”

“तू स्मृतिरत्न परिदलीको एक बार बुलवा लो लरी। उनका क्या मस है मुन र्खे।”

विप्रदास जरा-जरा हँसकर बोले—“तो बुलवाये कैता हूँ। पर उनका म्तामल्ले क्या मी, तुम्हारे कानोंतक एक बार जब कि बात पहुँच चुकी है, तब मैं जानता हूँ कि उन बानों विजोमैठ एक मी दिन तुम अल्लक स सुमोगी।”

मी हँस ली, बोलीं—“छट-मूठ तपते मरनेका क्या किसीको शीक है रे ! पर तपन क्या है ! हलक करनेसे पुन्य नहीं, न करनेसे अमन्त नरक है। कहीं रे, यह कह लो मी, अन्धकारमें जिला है कि कीर एक बड़ मारी परिद बड़कले में बड़ी अफ्फे ‘मामवत’ की ध्यासा कर रहे हैं। एक बने दरिवाफ्त ल्य करवा हैल, क्या बरनेसे इस मरमें उनके चरणोंकी पूज यह लफली है !”

“तुम्हारी आशा होत ही करवा देलूंगा मी।”

“क्यों, मेरी आशाकी ही क्या मरत है ? तुम लोगोंको सुननेकी इच्छा नहीं होती ! अब तुम भी क्या हमारे बर्तों -”

विप्रदासने हँसकर बापा पहुँचाते हुए कहा—“उसे तो अभी तीन महीने भी नहीं हुए मों ।”

मौने आश्चर्यक साथ कहा—“कुछ तीन ही महीने ! पर तीन महीने ही क्या कम है ! खैर, जो भी हो बेटा, अबकी बिना कहे काम नहीं चलेगा । मेरी दोनों मामियोंने चिन्ही लिखी है । जेठाननाय मानसरोवरके दर्शनके लिए अबकी मैं अल्पस जाऊँगी ।”

विप्रदासने हाम जोड़कर कहा—“दुर्भाग्य है मों, बड़ी आशा तुम मत करना । तुम्हारे दोनों बेटोंसे बगैर एकके साथ गये मामियोंके मरसे तुम्हें तिष्ठत नहीं भेज सकूँगा । और सब तरहकी हानि सह सकता हूँ पर मोंको लोनेकी हानि नहीं सह सकता ।”

मोंकी दोनों आँसू मर आईं, बोली,—“डर मत रे, कैलाशकी यात्रामें मरण हो ऐसा पुण्यका ओर ठेरी मोंका नहीं है । मैं फिर लौट जाऊँगी । पर बेटोंसे हूँ तो मेरे साथ जा नहीं सकेगा । तुझपर ही इतनी बड़ी पर-गरस्तीका सारा भार है । और, मेरे पीछे जो बेरा सड़ा है उसे साथ लेकर तो मैं बेकुंठ मी जानेकी यकी नहीं । आइसका रुकका होकर सप्या पूजा तो बहुत दिनोंसे ही छोड़ रखी है, मुना है कि कलकसेम मस्-अमस्मका भी कुछ विचार नहीं करता । और फिर कल क्या किया है मुना है ?”

विप्रदास मसे आदमी बैठा मुँह बनाकर बोला—“और क्या किया ! मैंने तो कुछ नहीं मुना ।”

मौने कहा—“अब मुना है । ठेरी आँसूको पोसा दे सके इतनी बुद्धि इस बड़केमें नहीं है । पर इतक हूँ थोड़ प्रतिभार कर । यह हमारा ही लावेगा पढ़िनेगा और हमारे ही रूपोंसे कलकसेसे आदमी बुलाकर हमारी रिमायाकी उमाइनेका पदुस्रन करेगा ! इतका कर कसेका सर्वा हूँ बन्द कर दे ।”

विप्रदासने आश्चर्यक साथ कहा—“बह कैसी बात है मों, पदारका रत्न बन्द कर हूँ ! पड़ेगा नहीं !”

मौने कहा—“अब क्या है ! मेरे समुरके स्कूलक छात्रोंने जब एक साथ दल बोलकर आकर कहा कि विदेशी शिक्षाते देशका खनास हो रहा है,

तब उन्हें तू मारने सीढ़ा था। और अब जब कि तेरा अपना छोटा भाई ठीक वही बात कहता हो गया है, तो तू इसका कोई प्रतिकार नहीं करेगा। यह तेरा कैसा भाव है ?”

विप्रदासने मुनकरुते हुए कहा—“उत्तमों एक कारण है मों। स्कूलके कक्षागमे प्रयोग्य न पानेर मों वैसी शिक्षणपठ करना मुझने नहीं तथा जाण, मगर शिक्षणो लख एम् ए पाठ करके शिक्षणपटी शिक्षाको कोरें खाहे किजना ही श्रोसवा सिरे, मुझे उत्तको परबाह नहीं।”

मौने कहा—“मगर यह ! हमारे ही स्वयंसे हमारी ही रैकतको मड़खाना !”

विप्रदास भवतक चुप था उत्तने एक मी बातका अभाव न दिया था। जबकी उत्तने अभाव दिया, बोनी—“कलको समा-समितिके लिए तुम शोगेकी हरीदका एक पैसा मों मीन नहीं लियाका।”

मौने कमरेमें बुझनेके बाद एक बार मी पीछे मुड़कर नहीं देखा था, और जब मों नहीं देखा। विप्रदासते पूछने लगी—“तो इत भयानकेसे पूछ तो कि अपने आवे कहति ? रोअगार कर रहा है !”

ठीक इही समय परदेके बाहरसे गृहियोंकी टुन-टुन आवाज हुई। विप्रदासने जान अग्यके मुनकर कहा—“बाहरते अभाव आ रहा है न। तुम्हारे परकी बहु ही मगर अपनेकी मदद दे, तो उते कौन रोक सकवा है बताओ मध्य !”

मौको पाव आ गया। बोनी—“हाँ वही बात है। लखीका ही काम है यह। बड़े आरमीकी लड़की बापकी अमीदारीसे सामाना ठै हमार अपने पायी है, इसका तो मुझे लवाक ही नहीं था। जब वेर खिर रहकर फिर करने लगी—‘तेरी लगाई करने अब समयी लहर लुर नहीं माने, तभी मीने तेरे’ बापूजीसे कहा था कि राय परनेकी लड़की परमें जानेकी अक्यथ नहीं। अनाप राय अन्हीके लानबानक तो था ओ विवाकत जाकर मेम अ्याह काया था। वे लोग क्या नहीं कर सकते ! उनके लिए दुनियामें अलाप्य क्या है ?”

विप्रदास उसी तरह मुसकरता हुआ चुप रहा। वह जानता था कि लखीके मामले यह अत्याहना कमी अनेक्य नहीं। उत्तक मावकेके लानबानका कोरें अनाप राय मेम अ्याह काया था उस बातको मों अकतक सूक नहीं लखी हैं।

उबको चुप ट्रेलकर वे फिर कहने लगी—“अच्छा रहने दे। बाबा कैअत माय अब मुझे लौक रहे हैं, उनके दर्शन करके लौट जाऊँ, इसके बाद इसका

इस्तवाम कर्सेगी ।” इतना कहकर वे बहति बनी गई ।

विप्रदासने कहा—“क्यों रे दिव्य, माँको छेके जा सकेगा ! उन्होंने जब जानकी ठान ली है तब मरोसा नहीं कि उन्हें रोका जा सकेगा ।”

द्विजदासने उसी क्षण अस्वीकार करते हुए कहा—‘भाप तो जानते हैं, बेबी-देवताओंपर मेरा विश्वास नहीं है । इसके सिवा मेरे साथ वे वैकुण्ठ जानेको भी तैयार नहीं इतना तो आप उनके मुँहसे ही सुन चुके हैं—”

विप्रदासने असन्तुष्ट होकर कहा—“हाँ रे पण्डित, सुना है । पर तू जा सकगा या नहीं, सो क्या ?”

“मुझे तो अभी मरनेकी भी फुरस्त नहीं ।” इतना कहकर द्विजदास कूसे प्रफ्नके पहले ही घरसे बाहर चला गया ।

विप्रदासने एक सँभ छोड़कर कहा—“यही बात है । ऐसा ही काम है देखाकि कि माँको भी नहीं माना जा सकगा ।”

यहाँपर माँका बरा-सा परिचय देना आवश्यक है । विप्रदासने ये विमता हैं । विप्रदासकी माँ मरनेके एक बर बाद ही यडोस्वर बयाम्पीको ब्याह कर बाने थे, और उसी दिनसे इन्होंने हाथों बह बड़ा हुआ है । वे उछली माँ नहीं हैं—यह बात विप्रदासको काफ़ी ठमर न होनेतक माखूम ही नहीं हो पाई थी ।



३

इस घरमें द्विजदास सबसे ब्यादा बाहर कपटा बा अपनी मामीका । उसके सब तरइके दिव्य-सर्पके लिए रुपये भी आते थे मामीके सन्वूकते । सती सिर्फ़ रिछेके दिसाबसे ही नहीं, उमरके सिहाबसे भी कई महीने उसने बड़ी थी । इसीसे, अक्सर वह उल्ला नाम छेकर पुकारा करती थी । इसी बातपर बचपनमें दिव्यने माँसे भरसक बार शिकायत की है ।

सिर्फ़ आख छालकी उमरमें सतीने बधूके रूपमें इस घरमें प्रवेश किया था, जिससे उगके ब्याह-व्यारकी सीमा नहीं थी । उस हंसकर करती—“ऐसी बात है ! पर वह तो तुम्हारी बड़ी बेका पात है बहूगानी, देवरको नाम छेके पुका रना ।” सती करती—“क्यों है, मैं जो उमसे उमरमें बहुत बड़ी हूँ ।”

“बहुत बड़ी ! कितनी बड़ी हो बेदी !”

तब उन्हें वृ मारने दीक्षा पा । और अब जब कि तेरा अपना धेरा मार लीक वही बात कहता उल्टा है, तो वृ इसका कार्य प्रतिकार नहीं करेगा । पर तेरा कैसा न्याय है ?”

विप्रदासने मुलझपठे हुए कहा—“उभरने एक कारण है माँ । स्कूलके कर्मचारी प्रमोदजन न जानेर भी पैली शिक्षाप्रसू करना मुझसे नहीं सहा जाता, अगर शिक्षकों तरह एम्. ए. पास करके शिक्षाप्रती शिक्षाको कोर चाहे किचना ही कोस्ता फिर, मुझे उलको परवाह नहीं ।”

माँने कहा—“अगर वह ! हमारे ही रूपोंसे हमारी ही रैस्तको मड़काना !”

शिक्षाप्रसू अबतक चुप था उतने एक भी बातका अन्वय न दिया था । अन्वकी उतने क्लान दिवा, बोला—“कर्मकी सम्य-समितिके लिए तुम ब्येरीकी हस्टेडका एक पैठा मो मीने नहीं बियाइ।”

माँने कर्ममें चुसनेके बाद एक बार भी पीछे मुड़कर नहीं देखा था, और अब भी नहीं देखा । विप्रदासने पूछने लग्ये—‘तो “स” अभागसे पूछ तो कि अपने जाने कहति ? रोक्कार कर रहा है ?’

ठीक इसी समय परदेके बाहरसे भूखियोंकी टुन-टुन आवाज हुई । विप्रदासने कान लगाके सुनकर कहा—“बाहरसे अन्वय आ रहा है न । तुम्हारे परकी बहू ही अन्व रूपेकी मरद है, तो उसे कौन रोक सकता है बतानो मन्वा ?”

माँको याद आ गया । बोली—“हाँ, वही बात है । लखीका ही काम है वह । बड़े आदमीकी लड़की बापकी कर्मशायीसे छात्रना तो हजार रूपे पाती है इसका तो मुझे लजाक ही नहीं था ।” अत वेर त्पिर रहकर फिर कहने लगी—“तेरी खयाई करने अब समयी लाइव खुद बहा धाने, तभी मीने तेरे बापूजीसे कहा था कि राब बयनेकी अन्वकी परम जानेकी जरूरत नहीं । अन्वय राब उन्हीके खानदानका तो था वो शिक्षाप्रसू आकर मेम ब्याह जाया था । मे शोग क्या नहीं कर लखी ? उनके लिए दुनिकामें अन्वय क्या है ?”

विप्रदास उसी तरह मुलझपटा हुआ चुप रहा । वह जानता था कि लखीके माप्यसे वह उन्वहना कभी ब्येका नहीं । उधके लखकेके खानदानका कोर अन्वय राब मेम ब्याह लखी था, उस बातको माँ अबतक चुक नहीं लखी है ।

लखको चुप होकर वे फिर कहने लगी—“अच्छा खने दे । राब कीदास-नाम अब मुझे खीच रहे हैं, उनके र्थान करके बीर आर्क; एतक बाद इसका

इन्तखाम कहेंगी।” इतना कहकर वे बहसि चली गईं ।

विप्रदासने कहा—“क्यों रे दिवू, मोंको सेने भा सकेगा ? उन्होंने बह जानेकी ठान ली है एव मरोसा नहीं कि उन्हें रोका जा सकेगा।”

द्विजदासने उसी एव अस्वीकार करते हुए कहा—“भाप तो जानते हैं, देवी-देवताओंपर भेद विश्वास नहीं है। इसके सिवा मेरे साथ वे पैकुष्ठ जानेको भी तैयार नहीं, इतना तो भाप उनके मुँहसे ही सुन चुके हैं—”

विप्रदासने असन्तुष्ट होकर कहा—“हाँ रे पण्डित, सुना है। पर तू जा सकेगा या नहीं, सो बता !”

“मुझे तो अभी मरनेकी भी फुरसत नहीं।” इतना कहकर द्विजदास दूसरे प्रश्नके पहले ही परसे बाहर चला गया।

विप्रदासने एक सौत छोड़कर कहा—“यही बात है ! ऐसा ही काम है देशका कि मोंको भी नहीं माना जा सकता।”

यहीपर मोंका अण-सा परिचय देना आवश्यक है। विप्रदासको ये बिमाता हैं। विप्रदासकी मों मनेके एक बय बाद ही यशोस्वर दयामयीको प्याह कर जाये थे, और उसी दिनसे इन्दीके हाथों वह बड़ा हुआ है। ये उसको मों नहीं हैं—यह बात विप्रदासको काफ़ी ठमर न होनेतक मासूम ही नहीं हो पाई थी।



३

इस परमें द्विजदास सबसे प्यारा आदर करता था अपनी मामीका। उसके सब तरहके फिजूल-जबके लिए रुपये भी आते थे मामीके सन्तुष्टसे। लठी तिर्क रिप्लेज इलाजम ही नहीं, उमरके लिहाजस भी कई महीने उससे बढ़ी थी। इसीसे, अस्तर वह उसका नाम लेकर पुकारा करती थी। इसी बातपर बन्धनमें द्विजने मोंसे असीपय शर दिखायत की है।

तिर्क प्यारह सालकी उमरमें लठीने बपूके रुपमें इस परमें प्रवेश किया था, जिससे उसका प्यार-प्यारकी सीमा नहीं थी। सात हंसकर करती—“येसी बात है ! पर वह तो तुम्हारी बड़ी बेमा बात है बहूगनी, देवरको नाम लेके पुकारना।” लठी कहती—“क्यों है, मैं जो उमर उमरमें बहुत बढ़ी हूँ।”

“बहुत बढ़ी ! कितनी बढ़ी हो बेटी !”

“मैं बननी हूँ बैताल महीनेमें, वो बनना है मारोंमें।”

मौ हँसकर कहती— “मारोंमें ही हुआ है न, मुझे ही वाद नहीं था। अब अगर फिर कभी वह शिवायत करने आयेगा तो उसके काब रेंट दूँगी।”

बदमाशतमें हाँकर हिन्दू बन गुस्ता हाँकर बध्न जाता तब बहुते गोदक पाठ लीनकर साथ स्नेहके साथ कहती— “अभी बध्ना है न, इलीवे मही समझ्या। ‘बाबाजी’ करनेसे बड़ा खुश होता है। कभी-कभी ‘बाबाजी’ भी कह दिया करना, क्यों टीक है बहुरानी ?”

सतीने धुम्बी हाँकर गरबन हिलाकर जबाब दिया था— “अच्छा म्ये, कभी कभी बाबाजी ही कहूँगी।”

उम दिन वह भी बालिका आज है इतने वह परकी पहिची। बिभवा होनेके बादते साथ ही कभी रहती हैं अपने बन-तन और धर्म प्यानमें, फिर भी उनका उस दिनका उपदेश बारमें बहुत दिनीतक सतीक बहुत काममें आया है। कैस आज।

रिद्धमे परिच्छेदमें बर्षित घटनाको ब्यमम कन्नड-सोवद दिन हो गये हैं। आज सके ही सतीने बेबरके पदनेके काममें प्रवेश करते हुए पुकाय— “बाबाजी—”

हिन्दुस्ताने हाथ उठाकर रोक्ते हुए कहा— “रहने लो मानी, ब्यादा खुसा मरकी करत नहीं, मैं करूँगा।”

“क्या करोगे तुम्हें भी ?”

“उम जो हुकम दोगी, सो ही। मगर मार-साहबकी बर बड़ी बेजा बात है।”

“बेजा कैसे हुए कयको ?”

हिन्दुस्ताने भी ही नाचजके साथ बोला— “मैं व्यन्या हूँ। कभी-कभी मैं मार-साहबके काममें सामने होकर आ रहा हूँ। भीतर के मौ और उम तीनों मिस्कर जो पदपत्र रूप रहे के, सो मेरे कानोतक पहुँच गया है। उममें साहस नहीं कि मुलते करे, इलीवे तुम्हें बक्या है काम हाकिम करनेके लिए। फिदनी बड़ी बेजा बात है कयको मय।”

सतीने मुठकघते हुए कहा— “बेजा लो नहीं है ब्यन्याजी। उन लीगिंको कण्ठो लख मय्य है कि उनके करते ही कयान विवेक, ‘मुझे मरनेकी भी

फुरस्त नहीं—पर मामीके हुकम करते ही बिजूकी मजाक नहीं कि 'नहीं' करे।

द्विजदासने गरदन हिल्यते हुए कहा—“बही तो मेरे लिए मुक्तिरस है, और यहीं ठगैँ अर मिल गया है। मगर करना क्या होया ?”

सतीने कहा—“मौँ कैशस रघनको लवस्त व्यवेगी और तुम्हें उनके साथ खाना पड़ेगा।”

द्विजदास कुछ क्षण चुप रहकर बोध — ‘दो-तीन महीनेसे कम नहीं लगेंगे। काममें कितनी हानि होगी, छोच बैला है मामी ?’

सतीने स्वीकार करते हुए कहा—“हानि तो कुछ होगी ही। पर एक नइ जगह मी देख भाओगे। अपनी तरफसे ऐसे लाकिस हानि नहीं कहा जा सकता। राब्य भरया हो न मेरे, बादमें इसमें को” आपत्ति नहीं करना।”

द्विजदासने कहा—“तुम अब भावेस कर रही हो तो आपत्ति नही करूँगा,— साथ जाऊँगा। मगर माने उस दिन यही आसानीने मइयासे कहा था, मेण कककतेका पढ़ारका लर्च कन्द कर देनेक लिए।”

सतीने हँसकर कहा— ‘बह गुस्सेकी बात थी बाला। पर अभी हुकम बिन्दोने दिया है बे मौँके सिवा और कोर्र नहीं, यह बात मी तुम्हें न भूटना चाहिए।”

द्विजदासने उत्तर दिया—“भूजा नहीं मामी। उस दिनसे मैंने मी क्या तब कर रना है जानती हो ! मैं अकेला मादमी ठहरा, प्याह करनेका मुझे कभी समझ मी नहीं मिलेगा, और मोका मी नहीं आयेगा। सिवाय लख मामूकी समझो। बकरत पनेगी ठा लड़कीको पढ़ाकर गुजर कर ईँगा, पर इनके इन्टेडसे कमी एक पैसा मी नहीं माँगूँगा।”

सती फिर हँस बी, बोली—“मौँगनेकी बकरत नहीं होगी बलाबी, कु” ही आ हाकिर होगा। और अगर न हावा, तो मी तुम्हें कड़के पढ़ानेको बकरत न होगी। कमसे कम, मेरे जीते बी तो नहीं। उसका मार मुझपर रहा।”

यह मरोसा बिजूके मी मनमें खत-खिदकी भाँति मौजूद था, समझे-मरक लिए उसके पलक झरी हा उठे, किन्तु उस माचको सतपट दूर करके उसने पूछ — “कब जानेका तब हुआ है इन लोँगोंका ? कभी बार्ध, आकिर मुझे ही साथ खाना पड़ा। और मजेकी बात यह कि मैंने उस दिन साफ-साफ ही कहा था कि मुझ-जैसे मोक्काचारेके साथ बे बैकुण्ठ जानेको मी रामो नहीं। इसीका करते

माम्मीका परिहास, क्यों माम्मी !”

‘तूने इत ठहरानेका ब्याप नहीं दिया, गुप रही ।

दिव करने लगा— ‘तैर, कुछ मी हो, तुम्हाय हुकम न यार्तैगा माम्मी —
 तर्हि निश्चिन्त रहनेको कर देना ।’

उठी ईत ली, बोली—“मुझे मेककर बे निश्चिन्त ही हैं । कम्मेठे बाहर
 निकलठे ही तुम्हारे मार लहरकी बात मेरे कानोंमें पड़ी बे खेरके साथ मीठे
 रह रहे थे, अब मेकइक बाबाकी ठैरारियाँ कणे मी, किन्हे दोस्त-कार्यमें निपुण
 केबा गया है उनके सामने मरबा-धीका ठर्क नहीं बसनेका । मरहन हुकाकर
 मरु कर केय्य तुम देख केना ।”

तुनकर दिक्कास मारे ओकेके लपभर लप रहकर बोला —“नामंर नहीं
 कर लकता, यह जानकर ही अमर उन भाणोने यह एह्मन् रखा हो कि किन्पीके
 मनमें बेस्तककको उठनेबादी किन्पी मरुको परिहास करनेका बाहन मुस ही
 बनना पड़मा, तो मी लरकते तुम दादा मारका यह बात कह देना माम्मी कि
 उर्हे छरम भानी बाहिए ।”

उठीने कहा — कहनेके कुछ काम नहीं होगा भाबाओ, बर्दीदार हाकर जो
 रजाका मून पूना करते हैं उनकी यही नीति है । अपना काम हासिल करनेमें
 बे डोय किली लखकी इका-धरम म्हालन नहीं करत । सम्यक्तक भापे मासिक
 हाते हुए भी अब तुम्हें इनका जमीवारीसे केनेमें लकाब मासूम हाता है एवं एक
 तरक जैसे मुझे दुःख होता है जैसे ही बूछपी ओर मन कुछोले मर उठता है ।
 तुम्हाय नाम केकर मीको मैने मणेत्य दे दिया है कि उनके बानेमें निपत नहीं
 हागा तुम साथ आओगे । लीयठे मन्गी लख बापत लख भाभी काब्यकी बाहे
 तुम्हाय किठना ही मुकतान हो मी लका सब पूरा कर दूंगी ।”

दिक्कासने गुपकेने चौकीपरठे उठकर माम्मीके लीपकी धूक मयठेके ल्यार्
 और फिर बापत अपनी बयलपर का बैस ।

उठीने कहा —“जमीतक तो एउर् उम्मेरबायी ही करली थी । अब मेरा
 अपना अनुरोध मी एक है ।”

दिक्कासठे ईतकर कहा — ‘तुम्हाय अपना । यह सेकिन मुसठे नहीं हो
 सकेगा माम्मी ।’

उठी मी ईठी, बोली—“ताम्नुन नहीं कालाकी डर ल्यता है कर्ही तुम्हके

‘ना’ न कह बैठे ।”

“अच्छी बात है, तो कहके ही न देख स्ये ।”

सतीने कहा—“भरे एक म्पेष्ठ थाचा हैं,—सगे नहीं, बापूजीके चबेरे मार—के विव्यस्त गये थे । तब कहीं यह खबर इन डोगोंके कानोंतक आ पहुँचती तो इस परमें मैं आ ही नहीं सकती । मँके सुँरसे यह बात सुनी होगी थापद ।”

“बहुत दफे । बहाँतक कि औसतन प्री-येन एक बारके हिसाबसे गिना जाय तो इन पन्द्रह-सोबह साबोंमें उसकी गिनती पाब-से इबारतक अबतक पहुँच जायगी ।”

सतीने हँसते हुए जवाब दिया—“मेरा अस्त्यज भी बही है । जाथा बन्द रहते हैं । उनके एक ही खडकी है और बही बढ़ती है । अगले साल वह विव्यस्त जायगी अपनी प्यारि पूरी करने । तुम्हें जाकर उसे विवा जाना होगा ।”

“कहति ! बन्दसे !”

“हाँ । वह किलती है, आ तो वह अकेली भी सकती है, सेकिन इतनी बुरका सपर अकली बुजानेको मेरी हिम्मत नहीं होती ।”

“उन्हें पहुँचा देनेवाला कोई नहीं है !”

“नहीं, जावा भीको छुझे नहीं मिलेगा ।”

विप्रदास सहसा रात्री न हो सका, सोचने लगा । सती कहने लगी—“मेरा जब प्याह हुआ या तब वह सात भाठ साबकी बची थी । उसके बाद एक बार सिर्फ मँड हुरी थी कलकसेमें, तब इसने मैट्रिक पास करके आद० ए० पढ़ना शुरू ही किया था —इसे तो कई साब हो गये । उसे मैं बहुत ही प्यार करती हूँ लाजगी, अगर तकलीफ उठाकर उसे एक बार विवा माते । विवा जानेके लिए वह अक्सर निष्ठी विवा करती है, पर कोई मौका ही नहीं लगता ।”

विप्रदाने पूछा—“मगर अग्ने कौन-सा मौका लग गया ! मों क्या रात्री हो गई है !”

सती इस सवालका सहसा जवाब न दे सकी । और न दे सकनेकी बजहसे ही एक तरहकी सभमूचकी व्याकुलता उसके चेहरेपर प्रकट हो उठी । जग ठहरकर उसने कहा—“मँसे कहा है । अब भी ठीक रात तो उम्होंने नहीं बी है, पर जल्दी सीपवाजाको सेकर वे इतनी जाबली हो रही हैं कि आधा है इनकार न

हैं मायका परिहास, क्यों माम्मे ?”

“तूने इस ठकाहनेका बचाव नहीं किया, तुम रही।

दियू कहने लगा—“सैर, कुछ भी हो, तुम्हाय हुकम न टाखेंगा भाभी—

उन्हें निश्चिन्त रहनेको कह देना।”

उसी ईश ही, बोधी—“मुझे मेककर वे निश्चिन्त ही हैं। कमरेके बाहर निकलते ही तुम्हारे मारें छाहकरी बात भिरे कानोंमें पड़ी, वे खोरके छाव मंथि कर रहे थे, अब वेबहुक बागकी तैपारिका कपे मौं फिर दोस्व-काममें निमुक किना गवा है उनक लामने भइबा कीा लर्क नहीं पकरनेका। गरदन छुकाकर मंजु कर लेगा तुम रेल देना।”

सुनकर हिचवाठ मारे शेषके छपमर सप्र रहकर शोक्य—“नामरू नहीं कर लकटा यह जानकर ही अगर उन खेगोंने यह पद्वन्त्र रखा हो कि खिचोंके मलमे वेमलकककी उठनेबाकी फिणी लहरको परितार्थ करनका बाहन मुझे ही बनना पड़गा, तो मेरी तरफ्ते तुम दावा मारको यह बात कह देना भाभी कि उन्हें छरम खानी चाहिए।

उसीने कहा—“कहनेसे कुछ खाम नहीं होगा लालाजो, जमींदार हाकर जो मबाका लून पूया करते हैं उनकी बहो नीति है। अपना काम हासिल करनेमें वे लोम किली तरफकी दवा छरम मइवूत नहीं करते। सम्पत्तिक आपे मालिक होते हुए भी अब तुम्हें इनका जमींदारीसे छेनेम लकाथ माखूम हांवा है लव र तरफ जैसे मुझे मुजल होता है वैसे ही वूठरी खोर मन सुधीसे मर उठवा है तुम्हाय नाम छेकर मांको मीने मयेठा दे विशा है कि उनके जानेमें बिपन नई होगा तुम छाप बाभीगे। तीबसे अच्छी तरह बापस बाट भाजा धावाकी बाहे तुम्हाय फिटना ही मुकवान हो मैं लवका लव पूय कर दूंगी।”

हिचवाठने सुरकेते खोडीमरसे उठकर भाभीक पाँवकी भूत मयसे छगार और फिर बापस अपनी ब्याइपर बा बैग।

उसीने कहा—“अभीतक तो पधर उम्मेदवापी ही करली रही। अब मेव अपना अनुमोष मी एक है।”

हिचवाठसे हंसकर कहा—“तुम्हाय अपना ? यह छेकिन मुजने नहीं हो सकेगा माम्मे।”

उसी मी हँसी, बोधी—“तुम्हें नहीं लालाजी, डर लगवा है कहीं तुमके

‘ना’ न कह बैठे।”

“अच्छी बात है, तो कहके ही न देख लो।”

रुठीने कहा—“मेरे एक मेन्ड थापा है,—सगे नहीं, थापूजीके पनेरे म्भई—वे विद्यालय गये थे। तब कहीं वह खबर इन भोगोंके कानोंतक आ पहुँचती तो इस घरमें मैं जा ही नहीं सकती। मोंके मुँहसे यह बात सुनी होगी खाम्बर।”

“बहुत दफे। यहाँतक कि औसतन पी-रोज एक बारके हिसाबसे गिना जय तो इन पन्नाह-सोसह छात्रोंमें उसकी गिनती पाँच ठै इबारतक अवसर पहुँच जायगी।”

रुठीने हँसते हुए जवाब दिया—“मेरा खन्दाब मी बही है। थापा बम्भई रहते हैं। उनके एक ही बच्चाकी है और बही बढ़ती है। आगले साल वह विद्यालय जावगी अपनी पढ़ाई पूरी करने। तुम्हें खबर उस किवा खाना होगा।”

“कहाते हैं बम्भईसे !”

“हाँ। वह थिलती है, जा ले वह अकेल्ले मी सकती है, अकिन्न इतनी बुरका छान्न, अचेन्दी कुल्लनेको मते दिम्मत नहीं होती।”

“उन्हें पहुँचा देनेवाला कोई नहीं है।”

“नहीं, थापा मीको सुष्टी नहीं मिलेले।”

द्विप्रवास तहसा राखी न हो सका, सोचने लगा। रुठी कहने लगी—“मेरा जय म्भई हुआ था तब वह साठ-आठ सालकी बच्ची थी। उसक बाद एक बार सिर्फ मेट हुई थी कलकत्तेमें, तब इतने मीष्टिक पाल करके आर० ए० पढ़ना शुरू ही किया था,—इसे तो कर्ल लाग हो गये। उसे मैं बहुत ही प्यार करती हूँ बाल्यजी, अगर तकलीफ उठाकर उसे एक बार किया जाते। किया खानेके लिए वह अक्षर विष्टी खिला करती है, पर कोई मौका ही नहीं मिलता।”

द्विप्रवासने पूछा—“मगर असो कौन-ठा मीका जय गया ? मों क्या राखी हो ग- है ?”

रुठी इत जवाबका तहसा जवाब न दे सकी। और न दे सकनेकी बम्भईसे ही एक तरहकी सम्पत्तकी म्भाकुल्लता उससे बेहरेल प्रकट हो उठी। जग ठहरकर उसने कहा—“मोंसे कहा है। जब भी टीक राब तो उन्होंने नहीं की है, पर अपनी तीबसात्राके सेकर ये इतनी पावली हो रही हैं कि भाषा है इनकार म

करेंगी। इसके सिवा वे सुर सब नहीं रहेंगी तब दो-तीन महीने वह आया नीचे मेरे पास रह सकेगी।”

द्विजदासने मन ही मन समझ लिया कि आठवीं आजा न मिसनेर भी इस मौकेपर वह अपनी प्रवासिनी बहनको एक बार पास बुझाना चाहती है। उसने पूछा—“तुम्हारे आजा क्या ब्राह्मणमाजी हैं ?”

लतीने कहा—“नहीं। लेकिन दिन्नु-समय भी उन्हें नहीं अपनाता। वे सुर भी घरपर नहीं जानते कि उनका कहां स्थान है। इसी तरह दिन कट रहे हैं।”

ऐसी अवस्था बहुतोंकी है। द्विजदास मन ही मन विन्व होकर बोला—“आनेमें मुझे कोई एतपत्र नहीं मानी लेकिन मेरा कहना है कि मीके रहते तुम उसे वहाँ मत बुलाओ। मीके तो जानती ही हो, कुछ नहीं तो खाने-पीनेकी जुभा-भूतको लेकर ही ऐसा बलेशा कर दोगी कि बहनको लेकर तुम्हें इतना धर्मिन्वा होना पड़ेगा कि जिसकी इद नहीं। इससे तो बरिद हम लोगीके बले मनेर बुझानेका इन्तजाम करना सब ठगहते अच्छा रहेगा।”

वह अपनी सजाह है, इस बातको सले सुर भी समझती है; मगर उसने जब कि सुर निन्नी किलकर आनेकी प्रार्थना करता है, तब वह किंतु तब उसे किसी अनिश्चित मतिष्पकी सम्प्रबनामे मनाकी बिन्नी किल है, वह उसकी समझमें न आया। इसका संकोच और गुण क्या कुछ कम है ? उसने कहा—“अपनी बहन होनेकी बखरते नहीं कह रही आजाजी, बरिद कलकसेमें उस बार मनेरके लिए उसे बहुत ही नज्बोक पाकर मैंने निश्चित-रूपसे समझ लिया है कि रूप और गुणमें बेसी बड़की सत्कारमें बुर्बुन है। दो दिन मी अपने पाठ देल सके तो मनेर बड़कीके बारेमें उनकी चारबा ही बरब आपगी। फिर कमी उतर ममझा नहीं कर सकेगी।”

द्विजदासने कहा—“लेकिन ये दो ही दिन मीको दिलाता तो कठिन है मानी। वे देखना ही नहीं पाहेगी, वह मी ठग है।”

लतीने कहा—“पर उतका रूप मी तो देखनेम जावेगा ? उसे तो मी मीक मीनकर असीकार नहीं कर सकेगी ? वह मी तो एक परिवार है।”

द्विजदास सुर रहा। लती करने लगी—“मेरा वह निश्चित सिखाव है कि बन्दनाकी उपेक्ष या अचदेखना बुनियामें बोर नहीं कर सकता। मी मी नहीं।”

द्विज्ज्वासने अचम्भेमें आकर पूछ—“बम्बना ! नाम तो सुना हुआ-सा माखूम होता है मामी । कहीं शायद देला हो, बाष्ठा ठहरो, अलवारमें क्या—एक तरबीर भी शायद—”

बात श्रुतम भी न हो पारं कि नौकरानी आहटके साथ भीतर आ पहुँची और बोली—“बहूरी, तुम वहाँ हो ! तुम्हारे कोर काका सा ब अपनी बड़कीके साथ बम्बर्से आये हैं । बाहर कोई नहीं है, बड़े बाबू साँव भी नहीं हैं । गुम्बदाबीने उन लोगोंको नीचेके कमरेमें बिगावा है ।”

इस बम्बनाकी किसीको उम्मीद न थी । “ऐं—कहती क्या है !”—कहते कहते सती आँधीकी तरह तेजीसे कमरेसे बाहर हो गई । पीछे-पीछे द्विज्ज्वास भी गया ।



४

निर्दोष साहबी पोशाकसे भूषित एक प्रौढ़ मद्रपुरुष कुर्सीपर बैठे थे और उनके पास ही खड़ी हुई एक बीस-इन्कीस सालकी लड़की वीवारपर टंगी हुई अगडात्री देवीका विशाल चित्र बड़ प्यानसे ढल रही थी । उतकी पोशाक बिलकुल मेम-साक्षिक जैसी न होनेपर भी, देखकर सहसा ऐसा नहीं लगता कि वह दंगलीकी लड़की है । सासकर शरीरका रंग बिलकुल गोरा और साफ था । बदनका गठन और चेहरेकी भी अनन्य सुन्दर । देवरके सामने सती अभी-अभी गर्वके साथ कह रही थी कि उतका रूप तो सासकी नजरोंमें आयेगा, बौल भीयक तो वे इससे इनकार नहीं कर सकती,—तो वास्तवमें यह बात सच है । बदनकी तरफसे इस रूपपर अहंकार या गुमान किया जा सकता है ।

नीचेके कमरेमें पहुँचते ही सतीने बोक देकर प्रणाम किया, बोली—“मँहले काका, लड़कीके घर इतने दिनों बाद आखिर पौचोकी धूल पड़ी !”

सतीके काका उठके लड़े हो गये और मतीजीक खिरपर हाथ रखकर हँसते हुए बोले—“हाँ री बेटी, पड़ी ! कब, किस जमानेमें काकाको म्योता देकर लवर मिज्बार् थी जो मैंने इनकार किया था ! कमी कहा था आनेके लिए ! कुद ही अब बिना-कुस्यये आ पहुँचा तब बात क्या रही है—पौचोकी धूल पड़ी !”—द्विज्ज्वासकी तरह नजर पड़ते ही पूछ उठे—“ये तरे कौन है !”

उठीने पीठेकी ओर देखाकर कहा—“ये मेरे देवर हैं—हिम्मादास ।”

हिम्मादासने दूठे नमस्कार किया । बन्दना अपनी बहीनकी प्रणाम करते हैंस्ती हुई बोली—“भौह, ये ही हैं वे ? भिन्के मारे बापदर बर्मीबायीका टिकना मुक्तिकर हो गया है । मुझे चिन्नीमें लिखा था न ? बंधसे नियामे, योषसे नियामे ममानक स्वदेयी ।”

“ऐसी बात तुझे कब मिली थी ?”

“आमी तो उस दिन । इतनेहीमें मूक गई ।”

उठीने गरबन हिम्माकर कहा—“नहीं, यह नहीं लिखा—तुसे याद नहीं ।”

हिम्मादास अचरक, न जाने कैसे एक प्रकारके लंकोनके मारे बन्दना हो रहा था । इस विषयमें वह कुछ भी ठब नहीं कर पा रहा था कि एक जनात्मक और अपरिचित मुक्ती महिलाके सामने उठे क्या करना चाहिए । इसके पहले कभी ऐसा मौका भी नहीं आया, बरकर भी नहीं पड़ी—परन्तु इस नबागत लक्ष्मीकी आश्चर्यजनक स्वच्छन्दतासे मानो उठने आज एक नई धिन्ना प्राप्त थी । उठकी अकारण और अद्यमन कहता लक्ष-मरमे दूर हो गई; और उठने एक स्वच्छ आनन्दकर त्वाव किया । इस बातको वह अपनी बुद्धिके द्वारा बहुत समपसे स्वीकार करता आया है कि किन्नीको भी धिन्ना और स्वाधीनताकी आवश्यकता है, और मा या मार साहबसे बरस छिद जानेपर वह यही मुक्ति हैता आया है कि कभी होनेपर भी वे हैं जो मनुष्य ही, किन्नाका छिन्ना और स्वाधीनतापर उनका हक है । मूलं रत्नकर उर्दें करमे बन्द रत्नना बन्वान है । किन्तु आज इस अतिथि मुक्तीके आकस्मिक परिवर्षसे उठने कान्ने मरमे पाये-प्राक वह अनुभव किया कि उन लक्ष मामूली हक-मुक्तीकी मुक्तिसेते म्म बहुत बड़ी बात यह है कि पुरपक करम और करम प्रशेकनके लिए ही कीको धिन्ना और स्वाधीनताकी आवश्यकता है, उठे बन्धित रत्नकर पुरप अपनेको किन्ना बन्धित कर रहा है । इस लक्षको उठने इतनी स्पष्टतासे इसके पहले कभी नहीं देखा । उस मुक्तीको बरस करके उठने मुक्कणते हुए कहा—“आपकी बात ही ठीक है, मामी मूक गई हैं । पर इस विषयको छेकर बहस करनेमें कुछ फायदा नहीं ।”—इतना कहकर उठने बनावरी गम्भीरतासे पीरय गम्भीर करके सामने कहा, “मामी तुम्हारे बोरते ही ले मेय बाय बोर है, और तुम्हारी चिन्नीमें ही ऐसी बातें ! अच्छी बात है, मुझे

दुम शोम त्याग दो, और मैं भी अपना सारा अधिकार त्यागे देता हूँ। दुम शोगोंकी जमींदारी भट्ट-असप बनी रहे, दुम एक बार मुँह लोकेके हुकुम दे दो, मैं थाब ही बकीरको बुलाकर सब खिला-पदी किये देता हूँ। ये गवाह रहेंगी, देसो में कर सकता हूँ या नहीं।”

साहबने मुँह उठाकर छतीकी ओर देखते हुए कहा—“तेरे देवर कबरदस्त स्वदेपी हैं क्या !”

छतीने कहा—“हाँ, कबरदस्त।”

“तेरे कहते ही खिला पदी करके अपनी जमींदारीका हिस्सा छोड़ देना चाहते हैं !”

छतीने गरदन हिलाते हुए जवाब दिया—“बड़ी आसानीसे छोड़ सकते हैं। इनके लिए असाध्य खेई काम नहीं।”

बन्दना अपने कुत्तरेको बसा न सकी, पूछ बैठी, “सच कहते हैं ? हमेशाके लिए सबमुच ही सब त्याग सकते हैं ?”

हिन्द्यासने उसके चेहरेकी तरफ धग-भर देखकर कहा,—“सबमुच छोड़ सकता हूँ। उसका मुझे रंजमात्र भी शोम नहीं। देसके पन्नाह आने श्येगोंको एक बरत भर-येठ स्थानको नहीं मिळता, सुबहसे शामतक मेहनत करनार भी नहीं—भीर बगैर मेहनतके हमारे लिए पुष्पाव-कर्मका तैयार रहता है,—ऐसा पापका भ्रम मुझे नहीं मरता, यथेमें भटक जाना चाहता है। ऐसी सम्पत्तिका चला जाना ही अरुज है। तब देखते अन्ध सर्वेकी तरह मेहनत-मजदूरी करके गुजर कर सकू तो जो ब्यऊ ! बुढ़ गवा तो मंगल हूँ मंगल है, न सुय तो उन श्येगोंके साथ भूखी मरकर कमी थापद स्वग भो जा सकूगा, मगर इस रास्ते तो उसकी कमी खोर भाषा नहीं।”

बन्दना एकदक उसकी आर देखती हुई सुन रही थी, बाठ लतम हो आने-पर उठने कुछ कहा नहीं,—सिफ उसक मुँहसे एक कम्बो साठ निकल गइ।

तइसा छतीकी अग्रमनस्कता मनो दूर हो गइ। उसके ब्याबाबक पास इसके सिवा मना कोई बात ही नहीं। कहते-कहते यह कंठस हो गइ है। उसने कहा—“अपना यह पुणना सेकबर पीठे देना बाब्यकी इसके लिए काफी बरत मिलेगा। काकाजी ने अमीतक थापद हाथ-मुँह भी न बोच होग्य। बन्दना, पक बहन, ऊपर चकते कपड़ मरइ बरब।”

साहबने पूछा—“कुँवर साहब तो नहीं खेल पढ़ते ?”

छतीने कहा—“वे लंबे ही किसी एक कसरी कामते बाहर गये हैं, कौटनेमें साबर देर होगी।”

कन्दनाने पूछा—“बीबी, तुम्हारी साधबी मी तो नहीं बीवली ? हैं तो परीमें ?”

छतीने कहा—“अमी तो हैं पर कसरी ही कैमल-मानस-सरोबरकी तीय नाशको ब्यनेबासी हैं। सबेरेका बल तो साय उनका पूजा-आधिकर्म ही बीव ब्यावा है; अब खेड़ी ही देर बाब उन्ई खेल सकोगी।”

कन्दनाने पूछा—“वे ब्याबातर बर्म-कर्ममें ही ब्यो प्यते हैं न ?”

छतीने कहा—“हाँ।”

‘ निश्चय होनेके बाद, सुना है, वे पर-संसारका कुछ भी नहीं देखलें — सय है न ?”

“सय ही तो है। सय मुझे ही सीमाबना पढ़ता है।”

कन्दनाने ठसुक होकर पूछा—“वे तुम्हारी सीतेबी सात हैं न बीबी ?”

छती हँसके बीबी—“भौल्लेंते तो नहीं दल्प बहन, ब्योग साबर छड करते दे।”

द्विप्रवास ब्याबक तीरपर बोल उठा—“छड ही कहते हैं। यदि सीतेबी सासके मानी माई साहबकी सीतेबी-भी हैं, तो छूट बात है। सीतेबी-म्य बकर हैं, पर माइ साहबकी नहीं, मेरी। लैर ब्यने वो महाने-बिबडनेके बाद ये बाते होयी,—अब ऊपर बशिप—अच्छ, मी देम्पता हूँ आकर मामी, देर मल करो, इन्ई छेकर कसरी आमो।”—इतना बरकर बह तैयारियोंकी खेलमाछ करने का रहा ना, इतनेमें मोंडो खेलकर छिठकक लड़ा हो गया।

बहुत लाम्ब है कि ब्यामयी लबर पाछर पूजाके बीचमेंसे ही उठके लबी ब्याई हों। ठमर ब्यादा न होनेसे वे बैबम्बके बाद मी साधारणता बाहरके सरलौक लाम्बे निकलती न थीं, परदे या आरमें रहकर ही बात करती थीं, मगर आज एकादशी कसरेके मीठर आ लड़ी हुई। मावेका पक्का कम्मरतक सिखा हुआ या किन्तु बेइत सायक साय बील रहा था।

“वे मेरे मैल्ले काबली हैं मों। ब्यौर यह मेरी कन्दना।”—इतना बरकर छतीने पाल आकर सहवा सासके पीब होक बी। इस तरह वेमज्जय पीब

होक देनेकी न तो प्रथा ही है और न कोइ रीता ही है। दयामयीको मन ही मन कुछ अचम्भा हुआ, किन्तु जैसे ही वह उठके लड़ी हुई जैसे ही दयामयीने स्नेहके साथ उसकी ठोड़ी छूकर अपनी उँगलियाँ चूमकर^१ माधीर्भाव दिया। परन्तु कन्दनापर निगाह पड़ते ही उनकी दृष्टि कन्धो-सो हो गई। अपनी बहनकी देखा-देखी उसने मी पास आकर होक देके प्रणाम किया, किन्तु उन्होंने उसे छुआ नहीं, बल्कि धावत छूनेमें बचनेके लिए ही वे एक कदम पीछे हट गई और अस्फुट स्वग्ध बोली—“भीती रहो।”

फिर बोली—‘समथी साहब नमस्कार। बाळ-बच्चोंके भ्राम्य हैं कि अबा नक आपके पाँवोंकी धूल इस परमे पड़ी।’

समथी साहबने प्रतिनमस्कार करते हुए कहा—“अनेक कारणोंसे सम्व नहीं मिलता समथिन साहिबा, लेकिन बगैर करे-सुने इन तरह अचानक बसे आनेकी मूक-मूक भाफ कीजिएगा। अब अब कम्मे आर्तुंगा तब यथासमय सूचना देकर आर्तुंगा।”

दयामयीने इन बातोंका कुछ उत्तर नहीं दिया, सिफ इतना ही कहा—“अमी मेरी सपना-सूजा पूरी नहीं हुई है समथी साहब,—फिर मिलूंगी।—बहू, ऊपर से बामो, - लाने-पैनेकी कोई तकलीफ न होन पाये। बिपिन आप तो उसे मेरे पास भेज देना एक बार।”—इतना कहकर वे और किसी तरफ बगैर देते बाहर निकल गई। बाहरसे प्रचलित सौकन्यमें ग्लास कोई चुट्टि हुई हा तो बात नहीं, किन्तु भीतरकी तरफसे सबको ऐसा लगा कि चन्द्रमाकी घ्राण चाँदनी के बीनी बीच एक काला बादल निर्मल आकाशके एक छोरसे दूसरे छोरतक उड़ता निकल गया।

५

कन्दना नहा-धोकर बैठकमें आइ तो देखा कि उसके पिता परसेहीसे प्यारिग होकर तैयार बैठे हैं और एक शोफियानी आराम-कुरसीपर बैठे आँसुओंपर पल्ला चढ़ाये अलवार पढ़ रहे हैं। पाठ ही एक छोटी डेविलपर अलवारोंका डेर लगा हुआ है; और शिबदास लड़े-लड़े तारीफ़ मिला-मिलाकर उन्हें तरतीबवार लया रहे हैं। रेकमें तथा कामकी भीड़में कई दिनक अलवार वे देन न सके थे।

१. बंगालमें शिर्ष्य करनेके छोटोछो रयी तरह माधोर्षर रिवा करता है।

बड़कीको कमरेमें प्रवेश करती देख उन्होंने आँस डगाकर कहा—“बेटी, हम लोग दो बजेके गाड़ीके कचकचे पसेंगे, पर तप किया है। बहनक पर कुछ दिया खानेकी अगर दुगहारी तपीयत हो, तो बीयते बल तुम्हें यहाँ पहुँचाकर मैं सीधा बम्बई पका आऊँगा। क्यों ठीक है न ?”

“कचकचेमें तुम्हें कितने दिन हंगो ?”

“पौच-साठ दिन—या आठ दिन “तले ज़ावा नहीं।”

“येकिन उसके बाद फिर मुझे बम्बई कौन से आयगा ?”

“उतका इन्तजाम आसानीसे हो आयगा।”—इतना कहकर उन्होंने अग कुछ खोचा और कहा—“अच्छी बात है, तुम्हारी तपीयत हो तो तुम वहीं बनी खो ततोके पास, बीरते बल मैं तुम्हें साथ लेता आऊँगा—क्यों ?”

बन्दना कुछ देर चुन खरकर बोली—“अच्छा, बीयतेसे पूछ लेलू।”

द्विज्यासने कहा—“मामी रखेरपरमे गई है। शाकर उन्हें दर ख्योती।”

फिर हापका बन्दल दिप्राता हुआ खोचा—“आपको क्या हूँ ?”

बन्दनाने जवाब दिया—“अलवार ! अलवार मैं नहीं पढ़ती।”

“अलवार नहीं पढ़ती ?”

“नहीं। उतमें मैं बीरब लो पैठरी हूँ। धामको बापूजीके मुँदते बाँते हुन किया करती हूँ इसीसे मेरी भूल मिट जाती है।”

“आश्चर्य है। मैंने खोचा था आप बहुत ज़ादा पढ़ती सींगी।”

बन्दनाने कहा—“मिरे सम्बन्धमें बगैर कुछ भी खाने ऐसा क्यों खोचते हैं ! ज़ादा बेइस्माफ़ करते हैं।”

द्विज्यास घरमिखा-खा होने लगा तो बन्दना हँसके बोली, “आप लोगोंने कितने कितना देखेकार किया और बीप्रखोंने उतपर कितनी आँसे ज़ाक की—इत तपमें मुझे ज़ाद भी कुत्तरल नहीं। बापूजीका है। देखिए न लखतेके उते तमेमें हूब गये हैं, बाइखान खा ही नहीं।”

साहबके कानोंमें शपथ बड़कोका लार्क ‘बापूजी’ शय्य पहुँच गया था, पर उन्हें आँस डगाकर देखनेका बल नहीं मिया, बोले—“अग उतर जा, ज़ाता हूँ। ठीक बरी ज़ाब मैं हूँ ज़ा था।”

बड़की मुलकपती हुई गरदन दिनाकर बोली—“तुम हूँ-हूँकर दिन-मर पढ़ते खो बापूजी, मुझे ज़ाद भी ज़स्टी नहीं।”—फिर द्विज्यासकी तरफ़ ज़ान

करके बोली—“बोबीके मुँहसे सुना था कि आपके बड़ो मारी बहनेरी है, वही बख्शिय, देखू मानने किउतो किताबें रफूटो को हैं।”

“बख्शिय।”



आपनेरीका कमरा तीसरी मंजिलपर था। बीना बहू चौड़ा था; बड़ते-बड़ते द्विजवातने कहा—“आहनेरी काफी बड़ी है, पर मेरी नहीं है, मार्ल साहबकी है। मैं तो सिर्फ कहींसे क्या-क्या किताबें निकली, इसको खबर देवा हूँ; और हुसमके माफिक खरीद आया करता हूँ।”

“किन्तु पढ़ते तो हैं आप?”

“सो एक तरहसे नहींके बराबर। पढ़ते हैं वे कुर भिनकी बहनेरी है। आध्यात्मिक शक्ति है उनमें और वैसी ही मद्मुठ बुद्धि।”

“किन्तु मार्ल साहबकी?”

“हाँ। वह सच है कि युनिवर्सिटीकी छाप-छाप विशेष कुछ नहीं कमी उनकी देखपर, पर मसूम होता है इतना विशाल पाठित्व इस देशके बहुत कम लोगोमें है। शायद नहीं मी हो। आपक तो वे बहनोर हैं, कमी देना नहीं उन्हें।”

“नहीं। कैसे हैं देखनेमें?”

“थोका मुससे उठ्ये। जैठे रात और दिन। मैं काठा हूँ और उनका रंग सोने जैसा। शरीरकी ताकत उनकी इस शान्तमें मजहूर है। स्याठी, तलवार और बन्दूक पदार्थमें इतर उनकी कोर छापी नहीं। सिवा एक रॉफि और कोर उनकी चेहरेकी तरफ देखकर बात करनेकी हिम्मत नहीं करता।”

बन्दनाने ईसते हुए पूछा—“मेरी बीबी मी नहीं?”

द्विजवातने बराब दिया—“नहीं, आपकी बीबा मी नहीं।”

“बहुत क्याग गुल्मीक हैं?”

“नहीं, सो मी नहीं। अंग्रेजीमें एक पेरिस्टरैट शब्द है, मेरे मार्ल साहब शायद किनी जम्ममें उन्होंनेका राजा थे। कमसे कम मेरी धारणा तो ऐसी ही है। और गुल्मीक हैं या नहीं, आप पूछ रही थीं। सा किसी तरहका गुस्ता करनेका उन्हें अवकाश ही नहीं मिलता।”

१ Aristocrat—सम्पन्न वा पच कुलके गौरवसे बोरान्वित।

बन्दनाने कहा—“भार्य साहबवर आपकी बड़ी जबरदस्त मर्ति है ! है न !”

हिजदास चुन रहा । थोड़ी देर बाद बोला—“इस बातका जबाब आपको अगर सम्भव हुआ तो और किसी दिन दूंगा ।”

बन्दनाने कहा—“हमके मानी !”

हिजदासने हँसकर कहा—“मानी अगर अभी ही बठा दूँ तो फिर और किसी दिन जबाब देनेकी जरूरत ही न होगी । आज रहने कीजिए ।”

विद्यालयाध्यक्षी है । आठमासी, टेबिल कुर्सी बगैरह सैदा कोमली बरतवाव है बैसे ही तरतीब और सफाईसे लबा हुआ है । गैबर्-गैबर्मे इतना बड़ा आयोजन देखकर बन्दनाको बहुत आश्चर्य हुआ । बम्बई शहरमें इस चीजका अभाव नहीं; उलकी गुलनामे वह शायद कुछ भी नहीं; किन्तु एक गैबर्में किसी एक व्यक्तिका ठना क्यादा संग्रह करना लक्ष्मण आश्चर्यकी बात थी । उसने पूछा—“क्या बास्तवमें इतनी किताबें भर् साहब पढ़ते हैं ?”

हिजदासने कहा—“पढ़ते हैं और पढ़ी हैं । आठमासियों बन्द नहीं हैं, और भी एक किताब निकालके देख लीजिए न, उनके पढ़नेके निधान शायद नकर था कार्य ।”

‘इतना बल उन्हें क्या मिलता है ! दिन-रात क्या लिफ्त बही करते रहते हैं !”

हिजदासने गरदन हिलाते हुए कहा—“नहीं । कमसे कम मैं तो नहीं जानता । इसके सिवा, हमारी जमींदारी या जमीन-जाबदार बहुत-मारी न होने पर भी निहायत कम भी नहीं बही था सफ्टी । उसमें कहां क्या है और क्या हो रहा है, सब भर् साहबकी नकलमें रहता है । लिफ्त आजकल ही नहीं, बल्कि बाबूजीके सामनेसे ही बचकर बही व्यवस्था पबली आ रही है । बल मिलनेका रहस्य मुझे भी टीक दूँके नहीं मिलता । आपकी तरह मेरा आश्चर्य भी कुछ कम नहीं,—अगर ही लिफ्त बही पांचकर रह गया हूँ कि संतारमें कमी कमी घेते भी दो-एक व्यक्ति कम लेते हैं जो साधारण लोगोंके हितावके बाहर होते हैं । भर् साहब उनी मेरीक लीव हैं । हम लोगोंकी तरह शाबर इन्हें लक्ष्मीक उठाकर पढ़ना भी नहीं पड़ता, उनके हरक ऑर्नीकी यह ब्याकर मगलमें अपने आप छप ब्यापते चले ब्यते हैं । पर भर् साहबकी बात अभी रहने दो । आपने उन्हें अभीतक ऑर्नीसे देखा भी नहीं, मेरे कुरते इफतरफ

आब्जेप्सना अतिशयोक्ति मास्त्र हो सकती है।”

“मगर तुननेमें मुझे बहुत अच्छी ही लग रही है।”

“बेकिन सिफ ‘अच्छी लगना’ ही तो सब-कुछ नहीं है। संतारमें हम लोग और अल्पना साधारण और भी बहुतसे लोग हैं। एकमात्र असाधारण व्यक्ति ही अगर सारी जगह घेरकर बैठ जाय, तो फिर हम लोग क्यों कहां। मगवान्ने मुझे तो सिफ दूरतोंकी स्तुति करनेको नहीं दिया।”

बन्दना हँसती हुई बोली—“यानी वह भादको छोड़कर अब क्या छोटे भादकी स्तुति करना चाहते हैं—यही तो ?”

द्विजदास भी हँस दिवा, बोला—“आहता तो हूँ, पर शोका कहां मिलता है। जो लोग परिचित हैं वे तो ज्ञान ही न होंगे, अपरिचितोंके पास ही जरा कुछ गुनगुनावा जा सकता है। पर साहस नहीं हाता, डर लगता है कि अम्बास की कमीके कारण अपने मुँहसे अपनी ही स्तुति शायद रुक-रुक जायगी।”

बन्दनाने कहा—“नहीं भी सकती है,—आशिया कर देखिए। मेरा तो विश्वास है कि पुरुषवर्ग इस विषयमें आश्चर्यचकित होते हैं। अब डेर न कीजिए, धरु कीजिए।”

द्विजदासने फिर हिलाकर कहा—“नहीं, मुझसे न हो सफ़्त। इससे तो बल्कि यह अच्छा है कि एकान्तमें बैठकर दो-आर किताबें देखिये आप, मैं मामीको भेजे देता हूँ।” यह कहकर वह जानेको तैयार हुआ कि बन्दना डेर देकर कह उठी—“आप तो लूरे हैं। नहीं, आप मुझे अबकी छोड़कर न जाएँ। किताबें मैंने बहुत पढ़ी हैं, उनकी बस्तर नहीं। आप बातचीत कीजिए, मैं सुनूँ।”

“आहेकी बातचीत।”

“अपनी खुदकी।”

“तो जरा सज कीजिए, मैं अभी नीचे जाकर बहुत अच्छा बत्ता भेजे देता हूँ।”

बन्दनाने कहा—“श्रीजीको भेज देंगे न। उनसे बस्तर नहीं। उन्हें जो कुछ करना था, सब विद्वियोंमें ही लतम हो चुका है। वह सब सच है या नहीं—अब तो यही तुनना चाहते हैं।”

द्विजदासने कहा—“नहीं, सब नहीं है। कमसे कम रुपयेमें आर-आने लठ है। अच्छा, मुना है कि आप बहुत अस्ती ही विलासत जा रही हैं।”

कन्दना समझ गई कि वह आरम्भ करने प्रसंगकी प्चर्चा नहीं करना चाहता; और बिना करने-ब्यबन्ध पनियुक्त भी मग्योमन होगी। उसने कहा —“विद्यावाकी ऐसी ही हक़्त है। स्कून्ध विद्याका वे वहाँ जाकर समझ करनेको करते हैं। आप भी क्यों नहीं चलते ?”

द्विभ्रासने कहा—“मुझे अपनी तरफ़से कोई आपत्ति नहीं, पर रुपये कहींसे आकगे ? वहाँ बज्रक पद्मकर भी गुञ्जय नहीं किना ब्य तकता और इतना भर म्याम्भर भी नहीं ब्यर सकूँगा। वह ब्यबन्धी भाषा है।”

मुनकर कन्दना ईत बी। बोली—“द्वि. शब्. वह तो आपकी नायबीकी बात है। नहीं तो, कितना धन आप भोगोंके प्यत है। उल्लेखिर्ष आप अकेले ही नहीं, चार्हे तो आप इत गौबके ब्याबे आरमियाको छाय से ब्य सकते हैं। बन्धका तो ठीक है, इसकी ब्यबन्ध में किये देतो हूँ, आप बन्धनेसे तैवार हो चारए।”

द्विभ्रासने कहा—“तो ब्यबन्ध होनेकी नहीं। धन बहुत है, म्याना, पर वह सब म्यर साहबका है, मेरा नहीं। अमर कहूँ कि मैं ब्यबन्ध निभर हूँ तो अत्युक्ति न होगी।”

कन्दनाने फिर ईतनेकी कोटिप्य करते हुए कहा—“अत्युक्ति क्या और कीन ली होती है। छ में मौ समझती हूँ। पर वह भी नायबीकी बात है। बीबीकी बिन्धीसे एक बार म्यलूम हुआ था कि बिल सम्यतिब्य आपने कुर नहीं क्यवा उले आप सेना नहो चाहते। क्या वह बात ठीक नहीं ?”

द्विभ्रासने कहा—“अगर ठीक म्मे हो तो वह मनुष्यकी धर्मतुक्तिकी बात है, नायबीकी नहीं। परन्तु इतना ही सम्यक कारण नहीं ?”

“तत्पूर्ण कारण क्या है क्या मुज नहीं तकतो ?”

द्विभ्रासत कुप रह गया। कन्दना छत्र-भर उसके चेहरेकी ओर देखती रही, फिर आदित्से आदित्से बोली—“मैं स्वभावतः इतनी कुञ्जबी नहीं हूँ। अर मेरा यह आग्रह बुनिसते न्याय भातिदाय्य या ब्यवर्ती है, इतनी समझ मुझमें मो है, सेकिन समझ रहनेसे ही संतारकी छत्र बन्धने नहीं मिर जाती—अमाव मुँह ब्याबे ताकता ही रहता है। आपकी बात मैंने इतनी ब्यवाह सुनी है कि आप पहले-पहल ब्य मेरे सामने उत कम्मेमें बालिक हुए तो अगतिचित से म्यलूम ही नहीं हुए,—ऐसी भाषानीसे पहचान बिना कि जैसे कितनी ही बार देखा

हो। बीबीको इतनी बातें बता सके मुझ नहीं बता सकते। और कुछ न होके, उनको तरह मैं भी तो आपकी एक आत्मीय हूँ।”

बात सुनकर दिव्यदास बंग रह गया। और, अकस्मात् सारी बातें याद आ जानेसे उसके संकोच और आश्चर्यकी सीमा न रही। निकजुल अपरिचित ज्ञान स्वकीके साथ एकान्तमें इस तरह बातें करनेका इतिहास उसके लिए यह पहल्य ही था। दीवारपर ईंगी पड़ीकी तरफ देखा तो पन्धे मरसे भी ब्यापक बल बीत चुका था। इस बीच अगर किसीने उसे हँका हो तो, इस परमे ठसका जबाब क्या हो सकता है, उसे हँदे न मिल्न। हो सकता है कि भाई साहब पर वापस आ गये हों, हो सकता है कि मौकी सन्धा-पूजा हो चुकी हो - सस्ता घरीर और मन व्याकुल होकर मानो एक क्षणमें बीनेकी तरफ दौड़ गया, किन्तु कुछ भी कह न सकनेके कारण क्योंका क्यों सप होकर बैठा रहा।

“हो तो बताया नहीं। बताइए।”

दिव्यदास मानो सोतेसे जगा। बोध्य—“अगर बताऊँगा तो परसे-पहल आपकी ही कठार्किया। मायीको भी आश्चर्य नहीं बताया।”

“उसका पैसका बे करेगो। मैं छेकिन बगैर मुने—”

बताना अचित नहीं इसमें तो दिव्यदासको फार सन्देह ही नहीं था; अगर अनुपेक्षी ठपेका करनेकी भी ठठमें शक्ति नहीं रखे।

मिन्त मर इतनुदि-सा बैलता रहा, फिर बोध्य—“पिताजी मुसे वास्तवमें कुछ भी नहीं बे यये हैं।”

यन्वना बीक ठठ्री, बोध्य—“ऊँह, सुनी बात है। ऐसा हो ही नहीं सकता।”

प्रसुत्तरमें दिव्यदासने सिर्फ सिर हिलकर जताया—“हो सकता है।”

“अगर इसकी बजह।”

“बापू बीकी छाबद पारजा हो गरं थी कि मुसे दे जानेसे उनकी सम्पत्ति नष्ट हो सकती है।”

“इय पारजाके लिए कोरं सन्धा हेतु भी या।”

“या। मुसे यचानेके लिए एक पार उनका बहुत बपग नष्ट हुमा था।”

यन्वनाको याद आ गया, इस तरहका एक इच्छा एक पार सतोकी बिन्नीमें भी था। उनने पूछा—“पिताजी 'कि' (क्योरठनाज) क्लिन गये हैं।”

द्विब्राह्मणे कहा—“यह लक्ष्मी मार्ल साहबको ही मासूम है। वे करते हैं—
नहीं।”

बन्दनाने एक घड़ी सौंठ लेकर कहा,—“फिर भी गनीमत है। मैंने समझा
कि आपसे वे सबकुछ ही ‘बिस्’ लिखकर आपको बंक्ति कर गये हैं।”

द्विब्राह्मणे कहा—“उनकी इच्छा तो थी, अगर आपसे मार्ल साहबने उन्हें
बैसा करने नहीं दिया।”

“मार्ल साहबने नहीं करने दिया ? आश्चर्य है।”

द्विब्राह्मणे ईसले हुए कहा— ‘मार्ल साहबको जान लियेगी तो फिर आश्चर्य
नहीं मासूम होगा। एक दिनकी बात है, घाम हो चुकी थी, नीकर तन्तक
बस कमरेमें बची गयी रस गया था, मैं बगलवासे कमरेमें एक किताब छुँद रहा
था, अनजानक फिदाबीकी बात जानीमें आ पड़ी। मार्ल साहबने कहा, ‘नहीं।’
फिदाबी बिस् करने बने ‘नहीं क्यों विप्रवास ? मैं अपनी आप-बाबोंके बमानेले
बची आर सम्पत्तिको बस नहीं होने दे सकता। परबोकमे रहकर भी मुझे शान्ति
नहीं मिलेगी।’ फिर भी मार्ल साहबने बरी ब्याव दिया कि ‘नहीं, ऐसा किसी
तरह भी नहीं हो सकता।’ बाबूजीने कहा कि ‘फिर भी तुम्हारे ही हाथ में सब
छोड़े जाता हूँ। अगर बच्छा समझे तो दे देना, अगर बैसा न समझे तो मत
देना।’ इसके बाद भी फिदाबी दो-तीन साठक और बंक्ति रहे, पर मुझे
निश्चित मासूम है कि उनकी राय नहीं बदली थी।”

बन्दनाने मुमुक्षुसे पूछा—“इस बातको और भी कोई जानता है ?”

“कोई नहीं। सिर्फ मैं ही जानता हूँ, फिदाके मुना या इतलिये।”

बन्दना बहुत देखाक मैन रहकर अलुकर स्वरमें बोले—“सबकुछ ही
आपके मार्ल साहब अनाचारक बाहरी हैं।”

द्विब्राह्मणे धाम्त भावसे कहा—“हाँ। पर अब मैं नीचे जाता हूँ, बहुत देर
हो गई मुझे। आर बैठी-बैठी किताब पढ़ती रहें—अन्तक कि मुझका न आवे।”

बन्दना ईसली तुर्र बाबी—“इस वक्त किताब पढ़नेकी बचि नहीं है, बकि
में बकटी हूँ। कमसे कम आठ-दस दिन तो बर्बा हूँ ही,—किताब पढ़नेको बहुत
बस मिलेगा।”

द्विब्राह्मणे बन्दनेको सैवार हो गया था, पर कुछ ही मिटककर लड़ा हो गया
बोझ—“आने फिदाबीके साथ आप कककते नहीं लियेगी।”

“नहीं। अब व कलकत्तेसे वापस होंगे, तो उनके साथ ही बम्बई आऊँगी।”

द्विजदासने कहा—“बस्कि, मैं तो कहता हूँ कि उनके वापस आसे वक्त ही आप कुछ दिनोंके लिये यहाँ ठहर आर्ये।”

बन्दनाने कहा—“पहले ऐसी ही इच्छा थी, पर अब देखती हूँ कि उसमें बहुत असुविधा है। मुझे पहुँचा देनेवाला कोई नहीं है। हाँ, आप अगर यमी हा आर्य तो आपको सत्याह ही मान लूँगी।”

“मगर मैं तो उस समय यहाँ खूँगा नहीं। मुझे तो इसी सोमवारको मीको सेकर कैलाशकी यात्रा करन जाना है।”

बन्दनाकी दोनो आँसू आनन्द और उत्साहसे चमक उठी बोली—
“कैलाश ! कैलाश आर्यगी ! तुना है कि परमात्मकी भीष है। आप आर्योके साथ और कौन कौन जा रहे हैं !”

“नीक नहीं मासूम, शावर और मी कुछ लोग आर्ये।”

“मुझे मी साथ लने।”

द्विजदास धुर रहा। बन्दनाने धुग्य भविष्यतके कंडसे, बबरदस्ती हुँतनेकी कोपिध करते हुए, कहा—“भार इनामिय ही शावर ठोक उठी समय मुझे यहाँ आकर रहनेका सरदासमाँ है रहे हैं ?”

द्विजदास उसके सुँहकी धोर आँसू उठकर घान्त मावसे बोधा—“तबमुप इसीलिये परामश दिया है। मामीने आपको इतनी काठे लिनी, सिई यही नहीं किला कि हमारा यह किठना बबरदस्ती कहर इन्नु फटना है ! इसके आचार बिचारको कगेरताका काइ आमास सिद्धोमें नहीं लिप्य आपकी ?”

बन्दनाने सिर हिलाकर जबाब दिया—“नहीं।”

“नहीं ! आशय है।”—फिर जय उदरकर द्विजदासने कहा—“एक मेरे सिवा आपका पुत्रा पनोतक पीनेवाला इस परमे कार्र नहीं है।”

“मेकेन भारके मार्र साहब !”

“नहीं।”

“जीजी !”

“नहीं, वे मी नहीं। हम ल्येगेके चके जानेपर तो शावर दो-चार दिन रह मी लऊँगी, पर मीके रहते हुए एक दिन मी आपका इस परमे निवार नहीं हो सकता।”

बन्दनाका चेहरा फड़-फड़ गया, बोली—“उच कर रहे हैं !”

“उच ही कहा है।”

ठीक इसी समय नीचेके बीनेसे लतीकी आवाज सुनाई दी—“बन्धनी ! बन्दना ! तुम दोनों कर क्या रहे हो !”

“भाया मामी”—कहता हुआ द्विजदास बन्धनी-बन्धनी करम रलता हुआ बचने काय, तो बन्दनाने पीके चेहरे और दबी आवाजसे चिढ़ करतना ही कहा—
“रतनी बाँठे में नहीं जानती थी । धनबाद !”

६

बन्दनाने नीचे आकर देखा कि पिताजी मजेसे लाने बैठे हैं । उठ बैठक-लानेमें ही एक छोटी-सी टंरिकर पर पीके बाइमें लानेको फोला गया है । एक हीचालतिल अत्यन्त सुन्दर भक्ति पाठ ही लड़ा है,—उसके अक्षरका अक्षरसम्पन्न पठन और अस्वस्त गोरा रंग देखकर ही बन्दनाने पहचान किया कि ये ही विप्रदास हैं । लती भी साथ ही आ रही थी, पर वह भीतर नहीं सुसी, दरवाजेकी आड़में लपटी हो गई और बन्दनाको नमस्कार करनेका इच्छा करके कटा दिया कि ‘हाँ ये ही हैं।’

भारतीय बड़कीको वह बात सिनानेकी बकरत नहीं थी, और इसके परछे मौको जैसे उसने डोक बैठकर पनाम किया था बड़े बहनोके लिए भी बैठा कर लकती भी किन्तु लहसा न जाने जैसे उसका सम्पूर्ण मन विद्रोह-सा कर उठा । उनको अनन्वठाधारण विद्या और बुद्धिका बचन द्विजदासके मुँहसे न सुना होता तो बाबर इस प्रचलित पिछापारका अपन करनेकी बात उठक मनमें भी न उठती किन्तु इस परिचयहीने उठे कठोर कर डाला । बीबीका मान रलनेके लिए उसने हाथ उठाकर नमस्कार तो किया किन्तु उसमें उठकी उपेक्षा ही लपटत हो उगी । बात उठने सितासे ही की बोली—“तुम अचसे लाने बैठे हो, मुझे बुझा क्यों नहीं किया !”

साहबने मुँह उन्नकर उठकी जोर देला, और कहा—“मेघ थे गाड़ीका बच हो गया था बड़ी, तुम्हें तो कोई बन्धी नहीं थी ।” फिर बोले—“मेरे बसे बनेके बाद तुम लोग भी-मुझे न्या-नी लकोगी ।”

लतीने ओठसे गरदन दिखाकर इस बातका अनुस्येदन किया । बन्दनाने

उसकी तरफ ब्रह्म करके कहा—“बीबी, इतने-सारे कीमती चीजोंके बरतन क्यों बिगाड़े ? बापूजीको एनामेक या चीनी मिट्टीके बरतनमें फोड़ देनेसे ही काम चल जाता !”

साहबका पमाना रुक गया । अस्वन्त तरल प्रकृतिके आदमी ये बे, बड़की की बातका तात्पर्य कुछ भी न समझ सके; और इस तरह ब्रह्म और व्यथित हो उठे—जैसे यह उनका अपना ही कष्ट हो बोले—“हाँ, हाँ, ठीक तो है—इसका मैंने कुछ खयाल ही नहीं किया,—सही कहाँ गई—मुझे किसी बिजनेसमें ही फोड़ देनेसे काम चल जाता,—ए—”

विप्रवासका येह्य श्लेषसे कठोर और गम्भीर हो उठा । आकटक उसका इतना बड़ा अपमान करनेका किसीने साहस नहीं किया, जैसा कि इस नयागठा रिप्लेदार बड़कीने कर बाका । बरतन नष्ट होनेकी दुःखिन्ता तो मात्र एक छल है । असलमें यह उसके व्यापारनिष्ठ परिवारके प्रति निरुत्सव स्वभाव है और जहाँ तक सम्भव है उसीके उद्देश्यसे किया गया है । ऐसी दुरमिस्त्रिय किसने उसके भगवत्में क्या की, यह बात विप्रवासकी समझमें ही नहीं आई । मगर कोई भी धावा हो, इस मसैमानस बृहद्व्याप्तिको उपलक्ष्य बनानेकी अपन्यतासे उसकी विरक्तिकी सीमा न रही । मगर उसने अपने उस म्यबको दमनकर खबरबस्ती करवा ईसकर कहा—“तुम्हने अपनी बीबीसे सुना नहीं कि यह कष्ट हिन्दूका पर है ! यहाँ एनामेक या चीनी मिट्टीकी कोई भी चीज पुस सकती है मन्ना—सुना नहीं क्या !”

बन्दनाने कहा—“मगर कीमती बरतन तो मह हो गये !”

साहब स्थाकुल होकर बोल उठे—“छेफिन सुना है कि बी चुपके क्या भागमें डाल देनेसे ही—”

विप्रवासने इस बातपर कान ही नहीं दिये, और जैसे कह रहे थे वैसे बन्दनाको ही ब्रह्म करके कहते गये—“एत परमें चीजोंके बरतनोंकी कमी नहीं है, किन्तु बिशेष किसी काममें नहीं आते । तुम्हारे पिताजी रिप्लेमें मेरे कुर्ग हैं, एत परमें अस्वन्त सम्मानित अतिथि हैं, चीजोंके बरतनोंकी बाहे किठनी ही कीमत क्यों न हो उनको इरकके सामने यह निरुत्सव ही प्रकृत है,—तुम लोगीके पानके उपलक्ष्यमें कुछ बरतन अगर मह ही हो जायें तो हो जाने दो ।” इतना कहकर क्या मुसकटाकर फिर बोले,—“तुम्हारी बीबीकी तरह तुम्हारा भी

अगर किसी कष्ट-ग्रन्थी घरमें ब्याह हो तो तुम अपने बापूजीको मिट्टीके तलसेमें खाना परोस देना, पीक देनेसे वह किसीको न खटकेगा। कहीं बन्धना, क्या करती हो ?”

‘कमी नहीं। बापूजीके स्थिर मैं तो सोनेके बरतन बनना रल्लौगी।’

विप्रदासने हँसते हुए उत्तर दिया—“ओ तुम नहीं कर सकती। ओ कर सकती है वह पिताके सम्बन्धमें ऐसी बात बचानपर भी नहीं कर सकती। और तो क्या, अन्य किसीको अपमानित करनेके लिए भी नहीं। अपने पिताको तुम कितना प्यार करती हो, कोई और अन्न काकाको घायल उतरे भी ब्याह प्यार करती है।”

वह सुनकर साहबके मनपरसे सिंक एक मार ही नहीं उतर गया, सम्पूर्ण हृदय क्षुब्धते भर उठ्य। बोले—“तुम्हारी वह बात, बेया, निरनुकूल सब है। माह साहबकी जब अचानक मौत हो गई तब लती बहुत छोटी थी। मैं परदेसमें नौकरी करता था, हमेशा घर आ नहीं सकता था, और माता या छो सम्राजके शासनके मारे अकेला हो खना पड़ता था, मगर लती मौका पते ही मेरे पास दौड़ी आती थी—”

बन्धना बटसे बाधा देती हुई बोली उठी—“उन बालोंको रहने दो न बापूजी—”

“नहीं नहीं, मुझे सब बाद है,—हूठ बोड़े ही है। एक दिन मेरे साथ एक बाकीमें खाने ही बैठ गई—उसकी माँ तो वह देखके—”

“माह, बापूजी, तुम न जाने क्या कह रहे हो बिना टीक-ठिकानेका। क्या मेरी औंठी तुम्हारे साथ,—तुम्हें कुछ भी बाद नहीं।”

साहबने मूर्ख ठठाकर प्रतिवाद किया—“माह, बाद क्यों नहीं। और फिर इस बातको लेकर कहीं कोई ऊबम न उठ पड़ा हो, इस लयाबते तुम्हारी मंने उस दिन कैरे बरते-बरते—”

बन्धनाने कहा—“बापूजी, जान तुम बरर गढ़ी फेर करोगे। कितने बने हैं माहम है।”

साहबने श्वस्य होकर बेवसे पड़ी निहाली और समय देखकर निश्चिन्तताकी लौंठ छोड़ते हुए कहा, ‘तू तो ऐसा बरा देती है कि पीक खाना पड़ता है। अभी बहुत देर है,—आखानीसे माफ़ी मिल जायगी।’

विप्रदासने हँसकर उनकी होंमें हों भिन्नते हुए कहा—“हाँ, गाड़ीमें अभी बहुत देर है। आप निश्चिन्त होकर बीसिए, मैं कुछ स्टेशन पाकर आपको खड़ा आऊँगा।”—इतना कहकर वह कमरेसे बाहर हो गया।

दरवाजेकी ओटसे निकलकर छती बनों ही उसके पास आके कड़ी हुई खीं ही बन्दनाने उसके अत्यन्त मधुस्वरसे कहा—“बीबी, बापूजीने क्या काण्ड कर डाला, मुना !”

छतीने सिर हिलाकर कहा—“हाँ।”

बन्दनाने कहा—“तुम्हारी सासके कानोंतक बात पहुँच गई तो तुम्हें गुल्लक ठठाना पड़गा। है न बीबी !”

छतीने कहा—“पड़गा तो पड़ता रहे। अभी रहने दो, काकाजी सुन लेंगे।”

“लेकिन तुम्हारे पति,—वे भी तो अपने कानोंसे सब सुन गये हैं; इस अपराधके लिए सभा घायल उनके पास मी नहीं !”

छती हँस सी, बोली—“अपराध अगर उचमुच ही हुआ हो तो मैं भी उसके लिए माफी क्यों माँगने लगी ! उसके बिचारका मार उन्होंने थोड़कर मैं निश्चिन्त हूँ। अगर तुम यहाँ रहती, तो अपनी आँखोंसे ही देख लोगी। काकाजी, तुम्हारे लिए और क्या आर्क !”

साहबने मुँह उठाकर कहा—“काफी है, काफी है,—मेरा खाना ही बुझा बेटी, और कुछ नहीं चाहिए।” इतना कहके व उठ बैठे।

स्टेशन जानेका समय हो गया। नीचे गाड़ी-परामरेमें भायर लड़ी प्रतीग्र कर रही है, बिस्तर-बैग बगैरख सामान वृषी गाड़ीमें बांधा जा रहा है, साहब पास लड़ हुए विप्रदासके साथ बात कर रहे हैं। इतनेमें बन्दना कपड़े पहनके तैयार हाकर पास आ लड़ी हुई। बोली—“बापूजी, मैं तुम्हारे साथ चर्खीगी।”

विप्रदासने आश्चर्य हुआ, बोले—“इतनी धूममें स्टेशन जानेसे क्या फायदा, बेटी !”

बन्दनाने कहा—“स्टेशन ही नहीं, कलकसे आऊँगी। बार जब तुम बर्बर आओगे तब मैं तुम्हारे साथ हो चर्खीगी।”

विप्रदासको भी बड़ा आश्चर्य हुआ, बोले—“वह क्या ! कुछ दिन यही खोगी, मैं तो यही खानता था।”

बन्दनाने उत्तरमें सिद्ध इतना ही कहा—“नहीं।”

“लेकिन तुमने अभी साया भी नहीं है।”

“नहीं, बहरत नहीं। कमकसे पहुँचकर मारूँगी।”

“तुम जा रही हो, तुम्हारी जोबीका मासूम है।”

बन्दनाने कहा—“ठीक नहीं जानती। मेरे जैसे जानेपर मासूम हो जायगा।”

विप्रदासने कहा—“तुम्हारे बिना साये-पीये इस तरह जैसे जानेसे उन्हें बड़ा-भारी दुःख होगा।”

बन्दनाने मुँह उठाकर कहा—“दुःख किस बातका ? मुझे तो उन्होंने स्वीठा देकर नहीं बुझाया जो बिना साये-पीये जैसे जानेसे उनका आधोबन नष्ट हो जायगा। वे नाममल्ल नहीं हैं समझ जावैगी।”—रटना करके वह जागे बात न बड़ाकर, बन्दोते गाड़ीमें आ बैठी।

साहबने मन ही मन समझ लिया कि कोई बात हो गई है। नहीं तो अन्धा नक बिना कारण कुछ कर डालनेवाली लड़की नहीं है वह। उन्होंने कहा—“मैं भी वही जानता था कि कुछ दिन यह लखीक पाठ ही रहेगी। मगर एक बार जब गाड़ीमें बैठ गई है तो अब यह न चलेगी।”

विप्रदासने कुछ ब्याज नहीं दिया चुपचाप उसके पीछे-पीछे जाकर गाड़ीमें बैठ गये।

गाड़ी चल रही। अकस्मात् ऊपरकी ओर निगाह करते ही बन्दनाने देखा कि तीसरी मंजिलके कार्नेलियाडे कमरा खुले आयेको लड़क पकड़ दिखता लुपचाप लड़ा है। आँसे चार होते ही ठठने हाथ उठाकर नमस्कार किया।

७

स्टेशन पहुँचनेपर मासूम हुआ कि कहीं ओर एक आकस्मिक दुर्घटना हो जानेसे गाड़ी आनेमें अभी बाध है। साबर पड़े मरसे भी क्या सेंट है। परिचित स्टेशन-मास्टरके अज्ञानक बीमार पड़ जानेसे एक मद्रासी रिजिस्ट्रिय ईन्ड कलते काम कर रहा था, वह ठीक-ठिक लकर न दे सका, किर्क अनुमान ही कर सका, कि हेर एक पेंटेकी भी हो सकती है चार वा पेंटेकी भी। विप्र दासने लड़कके मुँहकी आर देखकर कहा—“कमकसे पहुँचनेम एत हो जायगी, आज कहा बयैर गये नहीं जायेगा।”

“क्यों नहीं बचना ! मेरी—”

बन्दना बीचहीमें बोळ उठी—“नहीं बापूजी, सो नहीं हो सकता । एक बार परसे निकलके बीटा नहीं जा सकता ।”

विप्रदासने बन्धुनयके स्वरमे कहा—“क्यों नहीं बीटा जा सकता बन्दना ! लासकर तुम बिना लाये चली भाई हो, दिन-भर उपासी ही रह जाओगी !”

बन्दनाने फिर हिलाकर कहा—‘तुझे भूल नहीं है । बापस दौटनेपर मी मैं न ला सकूंगी ।’

साहब मन ही मन क्षुब्ध हुए, बोले—“इन लोगोंकी भ्रिष्ठा-रीखा ही अच्छी है । एक बार बिद पकड़ लेनेपर फिर नहीं डिगाया जा सकता ।”

विप्रदास चुप रह गया, उसने और अनुरोध नहीं किया ।

×

×

×

स्टेशन बड़ा न होनेपर मी उसपर एक छेया-सा बेदिंग-रूम या बर्हा आकर देला कि एक बड़क-उमरके बंगाडी साहब और उनकी छोने पहमसे ही बलक अमा रखा है । साहब सम्भवत पैरस्टर या डाक्टर होंगे अपवा विनायत-पास प्रोफेसर मी हो सकते हैं । इस तरफ बे कहीं आये बे, सा मी एक रहस्यकी बात है । आराम-कुरसीके दोनों हाथपर रोग फसारकर बफसाये-से पड़े बे । आकरिमक अन-समागमसे सिर्फ बरु जाल लोभ दी,—मगल या घटाफत दिलखानेका उषम इससे अधिक आगे म बदा । परन्तु उनकी कुरसी छोड़कर बन्दीसे उठक लडी हो गर्न । सायद अभीतक पूरी तौरसे मेम-साहब महीं बन पाई है, किन्तु र्केने एकीगर गृते और पहनाव उदाबका आयोजन बलकर भावूम होता है कि इस नियमकी कोशिशमे कार कमी नहीं की गर है ।

कमरेमें एक और आराम-कुरसी मौजूद थी । बन्दना पिताको उमपर बिटा कर खुद एक दूसरी बेकनर या बैठी; आर अत्यस्त सम्भनके साथ विप्रदासको बुलाकर बोली—“बीबाजी, हठमूठ लड़ क्यों हैं, मेरे पास आकर बैठ जाए । बड़े काठपर बैठनेम दोष नहीं साफ्ता, आपकी बास्त नष्ट नहीं होगी ।”

सुनकर बन्दनाके भ्रिष्ठा बरु-कुठ हंस दिवे; बोले—‘ विप्रदासके पुमापूतक विचार क्या बहुत ब्यादा है !’

विप्रदास खुद मी हंस दिवे, बोले—“विचार तो है, पर क्या होनेसे ‘बहुत

प्यादा' होता है, इसे बगैर जाने इस प्रश्नका जबाब कैसे हूँ ?”

बुद्धने कहा—“यही समझ को मैठा कि बन्दनाने कहा ।”

विप्रदासने कहा—“बे बगैर जाये-यीये बहुत प्यादा गुस्तेमें हूँ । बड़किर्वा गुस्तेमें जो कुछ कह सकती है, उत्तर आये-बना नहीं बन सकती ।”

बन्दनाने कहा—“मैं गुस्तेमें नहीं हूँ,—बग मी नहीं ।”

विप्रदासने कहा—“हो, और बहुत ही प्यादा गुस्तेमें हो । नहीं तो भाव तुम कलकत्ता न आकर पर बीट सकती । इसके सिवा तुम्हें कुछ ही लपका रहता कि अभी-अभी हम सब एक ही गाड़ीमें बैठके जाये हैं, व्यक्ति मउ हुई हो तो वह प्यसे ही हो चुकी है, बेखार बैठनेकी बात करना तो किर्क तुम्हारा लक है ।”

बन्दनाने कहा—“नैर, एक ही सरी, पर आप सब तो बताइए गुन्बी-तारब, क्या हम जोगीते छू-छा जानेसे पर बीटकर आपको छिरे महीं नहाना पड़ेगा ।”

“प्यसे न, पर पककर अपनी भीखीते बेल लेना ।”

‘नहीं । आप जानते हैं कि मोंको जब मैं प्रणाम करने लगी तब बे छू जानेके डरसे डर डट गई थी !” कहते-कहते ही बन्दनाका चेहरा मारे श्लेष और लज्जाके मुर्न हो उठा ।

विप्रदासने इसे देखा । उत्तरमें उलने घाम्ब मारते किर्क इतना ही कहा—
“बात झूठ नहीं है मगर मज मी नहीं । इसका बलक कारण उनके पास बगैर खे तुम नहीं समझ सकतेगी । लेकिन उसकी तो अब सम्पन्नना ही नहीं रही ।”

“हाँ, मही रही ।”

इस ठाँव अतीकारका कारण अब आकर विप्रदासको साफ साफ मसूम हुआ । मन ही मन उसके सामने लीमा न रही । शोम नाना कारणसे हुआ । विमाताके सम्बन्धी बात आ-सक फले ही उत्प है और उसमें वह कुछ मी कुछ-कुछ टपेट किया गया है । इसपर मज्य वह कि समझकर करने-तुमनेका न तो मोक्ष है और न बल ही । दुगपी तरफ, और-बिच्छे समझन-नायक मनोहितका मी बन्दनामें किबहुत समाज है । विराय्य पुन ख जानेक सिवा और और बाय ही न था; और वह किबहुत पुन ही था ।

लोक-तारब पैर नीचे उतारकर जम्हारे लेते हुए उठ बैठे, पूछ उठे—

“आप ही जमींदार विप्रदास बाबू हैं !”

“हाँ ।”

“आपका नाम सुना है । पातके गॉवमें मेरी ज़मीनी नजसाह दे — बंगालमें जब आना हुआ ही है तो इनकी इच्छा हुई कि एक दफे भेंट-मुलाकात करती सकें । इसीसे आया था । मैं पंजाबमें प्रैक्टिस करता हूँ ।”

विप्रदासने उठकी ओर गौरसे देखा कि यह उन्हीके परावरकी उमरका है — एक-आध सालकी जमी-बेगी हो सकती है, इससे क्या रा नहीं ।

साहब कहने लगा — “कल ही आपकी बात हो रही थी । जाग करते हैं कि आप बड़े जबरदस्त, यानी बहुत बड़े जमींदार हैं । अवश्य ही हो-वार ज़ाह्य पण्डितोंने कहर-हिन्दू दोनेकी बजहसे आपकी बहुत तारीफ भी की । अब देख रहा हूँ कि बात किचकुल झूठ नहीं है ।”

एक अपरिचितकी इस विन-भाही आलोचनासे बन्दना और उछके स्तिरा दोनेको ही आश्चर्य हुआ; परन्तु विप्रदासने कोर उछर नहीं दिया । धामद से इतने मन्यमनस्क से कि लारी बाठे उनके कानौतक पहुँची ही नहीं ।

साहबने फिर कहना शुरू कर दिया — “अपने लेक्चरोंमें मैं अकसर कहा करता हूँ कि ककरत है ‘रिपब्ल’ (संसद) कीकमी, ‘सांस्ट्रिड’ (ट्रेड) शिक्षाकी, — इकोसला या कन्डीवाली नहीं चाहिए । आबको चाहिए कि एक बार योरोप घूम आवें । वहाँकी आब-इबा, वहाँकी ‘मी पयर डीर’ (स्वच्छन्द आब-इबा में लॉस डेना) वगैर किसे मनमें ‘मौडम’ (रवायिन किस्मति) आती ही नहीं, — मन कुतस्कारोंसे छुटकाय हो नहीं पाया चाहता । मैं कयातार पाँच साब्तक उस देशमें था ।”

बन्दनाके स्तिरा इस आलिरी बातपर कुछ होकर बोले — “यह बात तो सच है ।”

उत्साह पाकर नौबखान साहब गरम हो उठा, बोले — “इस डिमोनेली (प्रबलत्व) के युगमें सभी समान हैं, कोर किधीसे जोगा नहीं है; और ककरत इस बातकी है कि हर एक इपाकि अपने अधिकारको जबरदस्ती वेस्टर्ट (assert = नि-सन्दिग्ध स्पष्टसे बहे) करे, कान्सक्वन्स (consequence परिणाम) उसका कुछ भी सकें न हो । मेरे पास बपना होय ता आपकी जमींदारीमें रहनेवाकी प्रत्येक रिआवाज में अपने लखसे योरोप घुम साय ।

फिर वे इस बातको जुर ही समझ जाते कि अपना राइट (right = अधिकार) कितने कमरे हैं।”

बन्दनाको शायद बहुत कुछ लगा, उन्होंने आदिस्तेसे कहा—“श्रीमती आपनी प्रश्नपर उत्तराचार करते हैं वह खबर आपको कितने दी ? मुझे आशा है कि आपके मामा-ससुरपर कोई क्षुब्ध न हुआ होगा।”

“ओह—वे आपके बहनोर हैं क्या ? मैक्स (बन्धुवाद), नहीं, उन्होंने कोई शिकायत नहीं की।”—फिर अपनी खींचे रख करके इसते हुए बोली—“क्या तुम्हारी बहनें अगर ऐसी होतीं।”—और फिर बन्दनासे कहने लगा—“आप शायद विस्वावत भूम आई हैं ! नहीं गईं ! जाइए, भाइए। प्रीडम (रक्छन्द मनोवृत्ति), लाइम, राफि, कितने करते हैं, उछ देछकी मरिहवार्ये बास्तवम क्या है, एक बार अपनी आँसूसे देख आइए। मैं नेक्यू टारम (अवकी चार) जाते समझ इन्द् साय से जाऊँगा, वह कर सिखा है।”

किसीके कुछ शब्दनेक प्यसे ही स्टेचनके उछ रिस्वीरिंग ईचने दरबाजेके पाससे मुँह बढ़ाकर ज्ञाया कि गाड़ी डिस्टेन्स-सिगनल पर कर चुकी है,—मा ही पहुँची समझिए।

एक व्यक्त होकर प्लेसधर्मर भा लड़ हुए।

गाड़ी लड़ी होनेर देखा कि धुँहियोंक कारण मुताफिरोंकी बेगुमार मीड़ है। कहीं भी ठिक रफनेका जगह मिलना मुश्किल है। सिर्फ एक डब्बा फर्स्ट क्लासका और एक ही सेकेण्ड क्लासका। सेकेण्ड क्लासमें फिर्गी रेम्ने घरबेघ्येका दूक ठठाठस पर रहा है, जो काह जेक दलनेके लिए कमकसे ब्य रहा है; और शायद उन्हीमेंसे कुछ लोग जगहकी कमीसे फर्स्ट क्लासमें ब्य बैठे हैं। हरसे जगह शायद और ‘बीयर’ पीनेसे उन जोगोंका बेहरा भिन्ना भीख हो रहा था व्यवहार मी उतना ही बदतर और ब्य-परवाहीका था। डब्बेका दरवाजा मीठरसे बन्द करके ठबक ठब चुपे तरह पित्त उठे—हू—आमा—आमा। स्टेचन-मास्टर आवा, गार्ड साइब मी ब्य पहुँचा, पर उन जगधेने किसीको कुछ समझ ही नहीं।

प्लेसध-साइब बोली—‘अब ठगाय !’

बन्दना डरती हुई बोली—“बलिय, आज पर लौट चके।”

विप्रवासने कहा—“नहीं।”

“नहीं तो क्या किया जाय ! न हो तो रातकी गाड़ीसे—”

छोकर-साहब कहने लगा—‘इसके सिवा और बारा ही क्या है ! तकलीफ तो होगी, पर हो ।’

विप्रदासने गरबन दिखाकर कहा—“नहीं । हममें चार ही पाँच बने हैं, और मी चार-पाँच बन्नोंके लिये जगह होनी चाहिए ।”

बन्वनाके पिता आकुल होकर कहने लगे—“चाहिए, सो तो जानता हूँ, मगर न सबके सब मरनामे जो है ।”

विप्रदासका साथ शरीर मानो कठिन लोहेकी तरह धोषा हो उठा, उन्होंने कहा—“यह उन जेगोंका शौक है,—इमाज कर नहों । परसिए,—मैं साथ चर्खूँगा ।” और दूसरे ही क्षण गाड़ीका हल्का पकड़कर बोरसे पकड़ मारके दरवाजा लौक झाका । फिर बन्वनाका हाथ पकड़के उसे भीतर लींचते हुए कहा—“आओ ।’ नौबतान साहबसे कहा—“राइट ऐस्टर्ट (अधिकार पत्र) करना चाहत हैं तो छांकी छेकर आ ब्याइए । अत्याचारी जमींदारके साथ गलते हुए कोर डर नहीं ।”

मरनासे साहब शोक इस आदमीके चेहरेको सरक छन-भर टाकते रहे और फिर पुरकेसे उपरकी बेद्यपर आकर बैठ गये ।

८

घोर-गुल सुनकर बगलके डम्बेके सहपात्री साहब शोक प्रेक्षकर्मपर उठर आये; और कन्ने स्वारे एक साथ पूछ उठे—‘What’s up ?’ (“क्या मामला है ?”) उनका हाँव यह था कि सापियोंकी तरफसे वे अपना विक्रम वा शीर्ष रिकानेको तैयार हैं ।

विप्रदासने पास हो लड़े हुए गाँड़को इशारेमे पास बुलाकर कहा—“वे शोक धायप फर्स्ट बवास पैसेडार नहा हैं, आरकी ब्यूरी है कि इन जमीनोंको ठतार दें ।”

यह बेनाथ मी साहब था, किन्तु भलन्त काका-साहब । सिदाया ब्यूरी कुछ मी हो, यह बगलें साँफने लगा । बहुतसे भयग तमाशा देख रहे थे, यह मद्रासो रिजर्विंग-डैप्ट साझा वा ठसे हाथक इशारेसे पास बुलाकर विप्रदासने पाँच रुपयेका मोद्र देते हुए कहा—“मेरा माम मेरे नौकरोंसे माखुम हाँ जायगा,— आप अपने अफसरोंके पास एक तार भेज दें कि वे मरनाथ सचची जबरदस्ती

फर्लं हासमें बंद गये हैं, उतरना नहीं चाहते। और वह बात कतना हीमिय कि गाड़ीके गाइ लड़े-कड़े तमाछा देखते रहे और कोई मदद नहीं की।”

गाड़िने अपनी आनेवासी विपत्तिको समझ लिखा और फिर साहसपर सवार हो उन लोगोंसे कहा— D n'! you see they are big people। तुम लोग देखो-सुरवेष्ट हो देख 'घर' पर जा रहे हो—be careful। (देखते नहीं आप लोग, ये लोग बड़े आदमी हैं,—होशियार हो आओ।) बास मतवालीके लिए भी उपेक्षणीय नहीं थी। जिहाजा ये उतरकर बगलके इधरेमें बसे गये लेकिन ठीक बरिस भिन्नकते नहीं। रबी कबानसे बंधे कुछ कह गये, उसके मन किङ्कुल निश्चिन्त नहीं हो सका। और कुछ भी हो, पंजाबके बैरिस्टर साहबने गाड़ीको धमकाव देते हुए कहा—'आप न होते तो घायब आज हम लोगोंका जाना ही न होता।’

“ओ—नो। यह तो मेरी क्यूटी है।”

गाड़ी दृष्टिनेकी पंजी बन्धी। विप्रदास उतरनेको उछल होकर बोले—“अब घायब मेरे साथ जानेकी जरूरत नहीं। वे अब कुछ नहीं करगे।”

बैरिस्टरने कहा—“भिन्नत नहीं पढ़यी। नौकरीका भी तो डर है।”

बन्दना दरवाजा खोलकर कड़ी हो गई, बोली—“छो नहीं होगा। नौकरीका डर ही बरम गैरखी नहीं,—साथ आपको बसना ही पड़ेगा।”

विप्रदासने हँसकर कहा—“पुरुष होखीं तो समझतीं कि इसते बड़ी गैरखी संसारमें और कोई नहीं है।—लेकिन मैं तो कुछ ला-यी नहीं आया।”

“आ-यी तो मैं भी नहीं जाँर।”

“वह तुम्हारा शौक है। लेकिन थोड़ी ही देर बाद 'रोट्ट' बाक्य बड़ा स्पेचन आपंग, बहाँ जाओ तो त्या-यी छोड़ोगी।”

बन्दना बोली—“पर उसकी प्याह मही होगी। उपस में भी कर सकती हूँ।”

विप्रदासने कहा—“कर सकनेने किसीको भी अम नहीं होगा—मैं उतर आऊँ।” फिर बैरिस्टर साहबते कहा—“आप साथ हैं ही, अग देखिएगा। अगर जरूरत पड़े तो—”

बन्दना बोल उठी—“अंधीर लीककर गाड़ी लड़ी क्या है! छो छो मैं भी कर सकती हूँ।” इतना कहकर जिहाजीसे मुँद निकालकर परके मोड़तेसे कह दिया—“तुम लोग पर आकर मँसि कह देना कि बाबू साहब हम लोगोंके साथ

पडे गये हैं। कल या परसों लौट आवेंगे।”

गाड़ी छूट गई।

बन्दना विपदासक पाठ आकर बैठ गई, बोली—“अच्छा मुझमें तारब भार भी तो कम बिही नहीं हैं।”

“क्यों ?”

“आपने तो अचरदली हम लोगोको गाड़ीमें चढ़ा लिया, और वे लोग मे मल्लाखे, —अगर वे न उतरकर मारपीट कर बैठते।”

विपदासने कहा—“तो उनकी नौकरी पक्की जाती।”

बन्दनाने कहा—“लेकिन हम लोगोका क्या जाता ? देखी हकी-पत्नी ? नौकरासे वह भी तो को-तुष्ट क्यु नहीं ?”

विपदास और बन्दना दोनों ही हँसने लगे। दूसरी मदिबाने भी लहलहा कर हँसकर मुँह फेर लिया। सिर्फ उसके प्रति पंजाबके नवीन बैरिलर मुँह गम्भीर बनाने बैठे रहे।

बन्दनाके स्थाने अकतक इधर विधेय ध्यान नहीं दिया था, बाक-चीतके अन्तिम छप्प खानमें पड़ते ही वे सीधे होकर बैठ गये और बोले—“नहीं नहीं, हँसीभी बात नहीं, ऐसी चारदातों ट्रेनमें अकतर हुआ ही करती हैं, अल्लारोंमें देखता हूँ। इसीसे जोर-अचरदनी करनेकी मेरी इच्छा नहीं थी—यतकी गाड़ीसे आते तो सब तरहसे ठाँक रहता।”

बन्दनाने कहा—“यतकी गाड़ीमें भी अगर मल्लाखे साहब होते तो ?”

स्थाने कहा—“तो क्या सचमुच ही हाते बेटी ? तब तो फिर शरीर लोगोको खाना-खाना ही बन्द कर देना पड़।” इतना कहकर वे एक खेरी सुरद मुल्लानेमें क्या गये।

बन्दनाने आदिस्तेने कहा—“मुझमें तारब, ‘शरीर’ छप्पर बापूजीसे निरु मठ करने खीएगा।”

विपदासने गरजत दिआकर हँसने छुट कहा—“नहीं। तो मैं समझ गया।”

“अच्छा सुरदमें तारब, बचपनमें आपने कमी किलेके मैदानमें इन साहसीके खय मारपीट की है ? सब कहिएगा ?”

“नहीं, देवा खीमाम्ब कमी नहीं हुआ।”

बन्दनाने कहा—“लोग कहते हैं कि अपने ईश्वारोंके निरु मार एक

'डैरर' (terror = आतंक) हैं। मुनती हूँ, परके सब आपसे घेरकी तरह दरते हैं। क्या यह सब है ?”

“लेकिन तुमने तुना किसत ?”

बन्दनाने बीमे कण्ठसे कहा—“बीबीस !”

“क्या कहा उन्होंने ?”

“कहती थीं, डरके मारे देहका लून पानी हो जाया है।”

“कैसा पानी ! मस्तकाके छिद्र-गिरीको देलकर वैसा हम लोगोको हो गया था—वैसा !”

बन्दना हँसती और सिर दिक्कती हुई बोली—“हाँ, कटीब-कटीब वैसा ही।”

विप्रवास बोले — ‘ठठकी अन्तर है। नदी तो छिपोक् घासनमें नहीं रला जा सकता। तुम्हारे घादी हो जानेपर यह बिषा में मैनाबीको सिखा आर्द्धमा।”

बन्दनाने कहा—“अगर। मगर सब बिषाएँ सबके सिध्द मौर्द्ध नहीं होतीं, यह भी ध्यान रलियागा। बीबी मेरी दुकठे ही मन्दी मानस हैं, अयर में होती तो और सगोको मुझसे ही डरकर खडना पड़ता।”

विप्रवासने कहा—“अर्थात्, डरते पर मरके सगोका लून पानी हो जाया ! कोई ब्याप्य आश्चर्यकी बात नहीं। कारण, योहे ही समयमें जो नमूना बिला आई हो, उसने किन्धास करनेको ही भी बाह्या है। कम्से कम माँ तो अन्दी नहीं भूल लगेगी।”

कहना मन ही मन बरा उचेकित हो उठी, बोली—“आपकी माँने क्या किया है अन्ते हैं ? मैं छोके देन लगी तो वे पीछे इट गर् ?”

विप्रवासने बरा भी आश्चर्य प्रकट न किया कहा—“पिरी मौका सिर्द इतना ही देल आई हो अर कुछ देकनेका मौका न भिन्न। भिन्नता तो समझती कि इस बरा ही शरपर गुला होकर वगैर लावे-पीवे बडे ब्यानेके बराबर मूल कुछ हो ही नहीं लफटी।”

बन्दनाने कहा—“मनुषके आत्म-सम्मान नामकी मी तो कोई चीज हाती है ?”

विप्रवासने बरा हँकर कहा—“यह आत्म-सम्मानकी बाराण पार्द कहाँते ? स्कू-ब्यानेको म्येटी म्येटी कियाँ ही पड़के तो ! मगर माँ तो भोगतेकी नहीं धनती, कियाँ भी नहीं पड़ती। उनक अन्तक साथ तुम्हारी परवा मेक केते

या सकती है ?”

बन्दनाने कहा—“पर मैं तिरु अपनी ही धारणाको लेकर चल सकती हूँ।”

विप्रदासने कहा—“बन्दनेसे अधिकतर क्षेत्रोंमें गलती होगी, जैसे कि आज तुमसे हुई है। विदेशकी किताबोंसे जो खोजा है उसीका एकान्त रूपसे ग्रहण लेनेके कारण ही परसे इन तरह खली आ सकी; नहीं तो न आ सकती। बड़े बुद्धीका अकारण अवमान करनेमें सकोच होता। धारण-मर्यादा और आत्म-अभिमानमें क्या फर्क है तो समझ जाती।”

बन्दनाने फुफ्फुओं मजे ही न समझा हो, पर यह समझ गई कि उसके आजके आधारजने विप्रदासके हृदयमें खोटा पट्टुचार्द है। और वह अपने लिए नहीं अपनी माँके लिए।

दो-तीन मिनट चुप रह कर बन्दना सहसा पूछ ठकी—“माँकी तरह आप खुद भी बहुत कहर दिखू हैं, नहीं ?”

विप्रदासने कहा—“हाँ।”

“ठटना ही सुझा-सूझका बिचार करके चलते हैं ?”

“हाँ चलता हूँ।”

“कोर होकर प्रणाम करने क्यों तो उन्हींको तरह रोके इट खाते हैं ?”

“हाँ, इट खाता हूँ। हम श्रेणियोंको समझ-सतमझका हिताव मानकर चलना पड़ता है।”

“मेरी बीबीको मेरे शाब्द एतों तरह आशु बना डाल्य होया ?”

“ये गुम अपनी बीबीसे ही पूछना। हाँ, पारिवारिक नियम उनको भी मानकर चलना पड़ता है।”

बन्दना इसके बोली—“पानी, रोते डो बगैर चलनेका और खोई रास्ता ही नहीं।”

विप्रदास भी हँसा, और बोला—“नहीं, कार नहीं। जैसे दिनकी गाड़ीमें थोका डर हा ता आदमियोंको रातको गाड़ीसे जाना पड़ता है,—वह प्राण-धमका स्वाभाविक नियम है।”

बन्दनाने कहा—“जीजी खी हैं, स्वभावतः दुबल हैं—उनपर सभी नियम लागू किये जा सकते हैं, मगर दिखू-सुनू-गो-ला, सुना है, पारिवारिक नियम मानकर नहीं चलते, इस विषयमें ठीक महाशयका क्या अभिमत है ?”

यह प्रश्न बन्दनाने चुटकी देनेके लिए ही किया था; और वह चुप जावगा, ऐसी ही उसे आशा थी; किन्तु विप्रदासके धैर्यपर उसका कोई बिह्व ही नहीं नजर आया, उन्होंने जैसे ही बैठते हुए उत्तर दिया—“वे सब गूढ़ तथ्य हैं और इनका भविष्यकारिके सिवा अन्य किसीको बताना निमित्त है।”

“इन्हीं बाबू कुद लो जान सकेगे।”

विप्रदासने शरद्वन हिजाते हुए कहा—“तमब मानेपर जान सकेगा। पर जानता है कि रक्त-मांसके विषयमें शेरको किसी तरहका पक्षपात नहीं है।”

शुभ-मरके लिए बन्दनाका धैर्य एक पक्ष गया। इसके बाद वह क्या पूछे, कुछ सोच न सकी।

उसका यह परिवर्तन विप्रदासकी तीव्र दृष्टिसे छिपा न रहा।

इतनेमें बन्दनाक फिटाने पुकारा—“बिडिया, मुझे क्या पानी तो है, पीनेको।”

बन्दना उठी और मुगाहीत पानी लेकर बापल अपनी जगहपर बैठ गई। इसके बाद फिर हिक्कासकी बात छेड़नेमें उसे डर मालूम हुआ। अन्य प्रश्नग देखते हुए उसने कहा—“बीबीकी सासक लिए नहीं, पर स्वयं बीबीको अगर मेरे बगैर लाये-पीये सके मानेते कुछ हुआ हो तो मुझे भी कुछ होगा। मैं अब वही बात सोच रही हूँ।”

विप्रदासने कहा—“तुम्हारी बीबीको कुछ होगा—वह तो दुर्लभ बड़ी बात, और मेरी मौं जो दृष्टिगत होगी वेदना अनुभव करगी—वह हो गई तुम्हें बात। इसके मानी हुए, आदमी बसक पीबका नहीं परवान सकनेपर कैसी उबरी विन्ता करने लगता है।”

बन्दनाने कहा—“इसे उबरी विन्ता क्यों करते हैं। बसिक वही तो स्वभाविक है।”

विप्रदास चुप हो खे। उनके सुण्य मनका धैर्य बन्दनाने दैल किया।

बाहर अँधेरा होता आ रहा था कुछ भी शील नहीं पड़ता, फिर भी निवृद्ध कीक बाहर देखती हुई बन्दना बहुत देरतक चुपचाप बैठी रही। और दिन इन लम्बे गाड़ी हाकदा पहुँच आया करती थी, किन्तु आज अब भी तीन बजेकी हैर है। उसने कुछ केरकर देखा कि विप्रदास केवमेंसे एक छोटी-सी पोसेट-कुच निकालकर उसमें कुछ मिल खे है। फला—“अच्छा सखी साहब,

एक बातका अभाव हीमिया ?”

“कौनसी बातका ?”

“माप कर रहे थे न, हम बोगेंको कात्म सम्मान-ज्ञान निर्क स्तू-कालेकी-की किताबोंसे पार्द चारपा है। मगर आपकी माँ तो स्तू-कालेकीमें नहीं पढ़ी, उनकी चारपा कहाँकी सिखा है ?”

विप्रदास विस्मित हो गये, पर कुछ बोले नहीं।

कन्दनाने फिर कहा—“उनके सम्बन्धमें अपने कुतूहलको मैं अपने मनसे हटा नहीं पा रही हूँ। गुफजन है, मैं इनकार नहीं करती, पर संसारमें बड़ी बात स्वा मर बाँधते बड़ी है ?”

विप्रदास पूर्ववत् स्थिर बैठे रहे।

कन्दना कहने लगी—“भाब हम लोग ने उनके परपर विन-मुझाये मेहमान। वह तो मेरी किताबोंमें पढ़ी विदेसी सिखा नहीं है। फिर मी,— वह सब कुछ नहीं—किर्क उच्चमें छोटी होनेसे ही मेरे अपमानको आप लोग अग्रह करेंगे ?”

अब मी विप्रदास कुछ नहीं बोले—बैठे ही चुप रहे।

कन्दना कहने लगी—“फिर मी उनसे मैं क्या माँगती हूँ। मेरे भाषणके लिए बीबी हु-स मा पाँके।” फिर क्या टकरकर बोली—“मेरी माँ-बाप विद्यावत मने ने इसलिए उन बोगेंको मेम और साइकल सिखा ने और कुछ खोब ही नहीं सकते। मुना है कि इसी यजहसे जामर आकलक बीबीकी काम्कनाकी सम्पत्ति नहीं हुए है। उनकी चारपाते मेरी चारपा मेक नहीं खावेगी फिर मी उनसे कहिएगा कि मैं कुछ भी क्यों न होऊँ, अपमान सिवा अपमानके और कुछ नहीं हो सकता। बीबीकी घास करे तो भी नहीं।”—कहते-कहते उसकी आँखोंकी चारें आँसुओंसे भर आई।

विप्रदासन धीरेसे कहा—“मगर उन्होंने तो तुम्हारा अपमान किया नहीं।”

कन्दनाने और देकर कहा—“बहर किया है।”

विप्रदासने ठीकी लव अबाव नहीं रिया, करँ सब चुप रहकर कहा—

“नहीं, अपमान तुम्हारा मैंने नहीं किया। मगर, और उनके सिवा वह बात तुम्हें और कोई समझ भी नहीं सकेगा। बरत करके नहीं, उनके पाठ रहकर ही तुम्हें पर बात समझनी होगी।”

बन्दना लिङ्गोंके बाहर देखती रही ।

विप्रवास कहने लगे—“एक दिन मिठाबीके साथ मौख्य समझा हो गया था । कारण कुछ था किन्तु वह ठग बहुत बड़ा । तुमसे सब चार्जे करी नहीं था सचछीं मगर उसी दिन मैंने समझा था कि मेरी इस बिना पढ़ी-लिखी मर्का आत्म-सम्मानका खान कितना गहरा है ।”

बन्दनाने सारा मुद्दकर देखा कि अपरिचीम मातृ-गर्भसे विप्रवासका खेद मानो उन्नासित हो उठा है । परन्तु वह कुछ भी बोली नहीं और लिङ्गोंके बाहर ही रहती रही ।

विप्रवास कहने लगे—“बहुत दिनों बाद किसी एक बातके शिकशिकमें एक दिन यही बात मौसे मैंने पूछी थी—माँ इतना खबरदस्त आत्म-सम्मानका खान तुमने पाया कहाँ ?”

बन्दनाने मुँह बगैर खैर ही कहा—“क्या कहा उन्होंने ?”

विप्रवासने कहा “जानती होगी शायद कि मैं मौका अपना बड़ा नहीं हू । उनकी अपनी हो कन्तारों हैं—दिल और कन्साथ । मैंने कहा,—तुम तीनोंको एक साथ एक किछीनेकर जिन्होंने बाहरमी बनानेका मार सोंपा था उन्होंने ही वह बिधा मुझे ही भी बेदा और किछीने नहीं । उसी दिनसे जानता हूँ कि मोंक इस गम्भीर आत्म-सम्पन्न खानने ही बिलोको एक दिवके लिए मो वह जानने नहीं बिधा कि वे मेरी बनती नहीं हैं, विमाता हैं । सभस सचछी हो इसका भय !”

सत्य-भर चुप रहकर फिर वे कहने लगे—“अभिवादनके उत्तरमें किछने किछना हाथ उठाया, कौन किछना पीछे हट गया, नमस्कारके प्रति-नमस्कारमें किछने किछना फिर मचाया—इस बातको देखकर मयादाकी बड़ाई लमी शरीरमें है अहकारके नशेकी कुवाक तुममें अपनी पाठ्य-पुस्तकोंक पन्ने-पन्नेमें मिछेगी, किन्तु मैं न होकर मी पठये बड़ाकभी मैं होकर किछ दिन मैंने हमारे बड़ परिवारमें प्रवेश किया था, उस दिन आश्रित आत्मीय-परिजनोंक प्रबंध गलेमेंसे लिङ्गों केही खानो बाहर निकली पड़ती थी । परन्तु किछ पीछसे उन्होंने सारे बिषको अमृतमें परिलक्ष कर दिया वह गृहस्थाभिनीका अभिमान नहीं था, पहिलीपनेकी खबरदस्ती नहीं थी बरिच मौकी स्वकीय मर्पादा थी । वह इसकी उँची है कि उस कीर्त खपन नहीं कर सका । परन्तु यह सत्य है कि

हमारे ही देशमें। विदेशी तो इस बातकी लहर ही नहीं रखते, वे अलवारोंकी लहरें देखकर ही इन लोगोंको 'हाली' कह दिया करते हैं। अन्तापुरकी बेड़ी पड़ी बाँधी बघाते हैं। बाहरते धामद ऐसा ही वील पड़ता हो—उन्हें मैं रोप नहीं देता—किन्तु भरकी बात-दासियोंकी भी सेवाके मीचे अन्नपूर्णाकी उम्मेदरी मूर्तिपर यदि उन लोगोंकी दृष्टि नहीं पड़ती तो न लरी, पर क्या तुम लोगोंकी भी नहीं पड़ेगी !”

बन्दना अभिमूढ दृष्टिसे विप्रवासके मुँहकी ओर देखती रह गई।

वैरिस्टर साहब अकस्मात् जोरसे बोळ उठे—“ट्रेन हाथवा-प्लेटधर्ममें 'इन' कर रही है।”

बन्दनाके पिताको धायर तन्ना आ गई थी, ये चीककर बोळे—“अन बपी।”

बन्दनाने मूढ कण्ठसे चुपकेसे कहा—“मुझ कडकसे उतरनेमें अब अण्ठा नहीं बग रहा है, मुलकी साहब ! इच्छा होती है कि आपकी मीके पाठ लौट जाऊँ और बाकर कह कि, माँ, मैंने अण्ठा नहीं किया, मुझे क्षमा करो।”

विप्रवास लिङ्ग ईत्त दिने, कुछ बोळे नहीं। स्टेशनपर उतरकर पूछा—“आप कहाँ जायेंगे ?”

राव-साहबने कहा—“मैं प्रैण्ड-होटलमें उतर कर रहा हूँ, उन लोगोंको तार मी कर दिया है—वहाँ जाऊँगा।”

इस आदमीके सामने 'प्रैण्ड होटल' की बातसे बन्दनाको मानो कुछ बजा सी मासूम डान लगी।

पंजाबके वैरिस्टर साहब गाड़ीके आरम्भ सेट होनेपर हदसे ध्यादा श्लेष प्रकट करते हुए बार-बार बताने लगे कि उम्द बी एन० आर० की साहनेसे जाना है। सिद्धान्त बेदिगन्मके सिवा अब और कोर्न पाय नहीं।

विप्रवास चुपचाप लड़े हैं। रावसाहब कुर मी मानो कुछ र्शित होकर बोळे—“मेरिजन विप्रवास, तुम—तुम मी जान पड़ता है हम लोगोंके साथ—”

“प्रैण्ड हाटलमें ?”—कहकर विप्रवास ईत्त दिया, राव—“मेरि सिप्य पिन्ता न कीसिए। बटुवाजारमें दिव्वा एक मकान है,—वहाँ अकसर मामा-जाना पड़ता है—वहाँ नौकर-बाकर लमी हैं,—अण्ठा, आज वहाँ क्यों न पसिए ?”

बन्दना पुर्बकित हो उठी—“असिए लव वहाँ बसिए।”

उसक तिरसे मानो एक बोळ-सा उतर गया। आनन्दके प्रावस्से अम्ब

दोनों सहायियोंको उभरने सावर आह्वान किया और फिर उसके सब मोटरमें ब्य बैठे ।

९

बन्दनाने मुह ठठकर बोला कि इस मकानके सम्बन्धमें उठने बैठा सोचा था, बैठा नहीं है । समझा था कि मरखीक रदनेका बाता सटीक होगा; घाबर जाने-बनेमें कूड़ा करकट, सीदियोंपर धूँ, दीवारोंपर पानकी पीक, दूध-पूटा अलवार मैले-कुपेसे बिछोने, छतकी दाहलीर-कटिपोंमें धुरंधी काष्ठिन, मक दिवोंक आल—इस तरह सबन विगुंनकटाका राज्य होगा । कळ राठको मामूली रोसनीमें बोहे-से समझमें कुछ देल नही पाया था, किन्तु आज ठसे मकानकी सुगुंनकटा और स्वच्छतापर सधमुत्र ही आश्चर्य हुआ । मघी मकान है, बहुतस कमरे हैं, कई बरामदे हैं, सब-कुछ साफ-सुस्थ बमक रहा है । दरवाजेके बाहर एक अघेड डमरको बिपवा ली लड़ी था; बेलनेमें घण्ट-बघनेको ली बगती है उतके मळेमें आँचक डालकर प्रथम करते ही बन्दना मारे संकोचके पंचक हो उठी ।

उसने कहा—“बीबीबार्, आपके भिय ही लड़ी हूँ, बक्षिय नहान-पर दिला हूँ । मैं इत परको वाली हूँ ।”

बन्दनाने पूछा—“बापूधी ठठ गये ?”

“नहीं कळ ठहै सोनेमें डेर हो गई थी, घाबर ठठनेमें भी डेर हो ।”

“हम बोगोंके साथ और मी हो अने बी माये बे बे ?”

“नहीं बे मी अभी मही ठठे ।”

“तुम्हारे बड़े बाबू खरब ? बे मी तो खे हैं ?”

बाटीने हँसकर कहा—“नहीं, बे गंगाराना संप्पा-पूजाते निहृत्त हाकर आश्रितमें बसे गये हैं । ठहै लवर मेरूँ क्या ?”

बन्दनाने कहा—“नहीं, इतको बकरत नहीं ।”

नहान-पर बहसि कुछ दूर है, एक छोटेसे बरामदको पार करके बाना पडवा है । बन्दनाने असे-असे कहा—“तुम्हारे मही बाप-रुम सोनेके कमरेके

१ बँगाजमे लिवाँ देवी-देवता और मन्दाव वा पूजणके बनोंकी बनी तरह बमरकर करती है ।

पास नहीं रह सकता, क्यों ?”

दासीने कहा—“नहीं। मैं साँच कमी-कमी काठिन्यीके दर्शनके लिए कलकत्ते जाती हूँ तो वे इसी मकानमें रहती हैं न, इसीसे बैठा यहाँ नहीं हो सकता।”

बन्दनाने मन ही मन कहा, यहाँ भी वही प्रबल प्रतापी मैं ! आन्वार-अन्ना चारका कटोर घालन । वह बापस काकर रोती-अंगौठा-कुबली बगैर मे आई, फिर बोली—‘यहाँ दो-चार रोज़ रहना पड़ा था तुम्हें क्या करके कुझाया करें ? तुम्हारे सिवा शास्त्र कोई दासी नहीं है !’

उसने कहा—“है, पर उसे बहुत काम रहता है । ऊपर जानेका समय ही नहीं मिलता । जो भी कुछ जरूरत हो मुझसे कहिएगा, जोबो-बाई, मेरा नाम बन्दना है । लेकिन मैं गैबर्-गैबकी हूँ, सम्भव है, मुझसे गस्तिर्या हो जयमें, कुछ लयाव न भीखिएगा।”

उसके विनय-बचनसे बन्दनाने मन ही मन कुछ होकर पूछा—“तुम्हारा पर कहीं है बचन ? परपर तुम्हारे कौन-कौन हैं ?”

बन्दनाने कहा—“भर मेरा इन्हीके गाँवमें है, कथ्यमपुरमें । एक बड़का है, उसे इन्हीं छोड़ने पड़ा-मिलाकर काम दे दिया है, बहूको लेकर वह वहीं बेशमें रहता है । मधेमें है, जीबो-बाई।”

बन्दनाने कुतूहलसे पूछा—“तो फिर तुम कुर क्यों नीकरी कर रही हो, पाहो तो बहू-बेटाके साथ परपर ही रह सकती हो।”

बन्दनाने कहा—“पाहती तो बहुत हूँ जीबो-बाई, लेकिन बनता नहीं । तकलीफ़ दिनोंमें बाबू लोगोंको बचान ही थी कि मेरा बड़का अगर मादमी बन जाय तो मैं वृत्तोंके बड़कोंका भादमी बनानेका मार लूँगी । उस मारको माभेसे उठाते नहीं बनता । बेशके बहुतसे बड़क यहाँ परबेशमें पड़ते हैं । मैं न देखूँ, तो उन्हें बेलनेबाबा भीर कोर नहीं है।”

“वे सायर इसो मकानमें रहते हैं ?”

“हाँ इसी मकानमें रहकर कामे में पड़ते हैं । पर आपका डेर दुर्द का रही है, मैं बाहर ही हूँ, कुप्यते ही आ जाऊँगी।”

बन्दनाने बाबू-कममें जाकर देखा कि भीतर सब तरहकी व्यवस्था है । पाठ ही-मास तीन कमरे हैं, चुभा-दूतसे बचनेके लिए अिठनी तरहकी ठरकोबें आदमीके विभागमें आ सकती हैं उनमेंसे काह भी छुड़ी नहीं है । कमल गइ कि

वह सब मौके व्यवहारके लिए है। संगमरमरका पत्र, संगमरमरकी नहानेकी चौकी और संगमरमरका परिष्कार है; एक तरह तीन-चार चौकेके हथके—शायद गंगाजल रखनेके लिए,—रोम मीठने-पिलनेसे चमक रहे हैं। मैं यहाँ सब बाहर भी और फिर सब आयेगी निश्चित किसीको नहीं मासूम, फिर भी, बाहरबाहरीका चिह्नक कहाँ नजर नहीं आ सकता। ऐसे कठनके लय सस्के व्यवस्था है कि मासूम होता है जैसे वे यही मौजूद हों। ऐसी व्यवस्था कि कुछ पलाकर वा साधन करके नहीं कपट आ सकती; ऐसते ही कन्दनाने इस बातको महसूस किया कि उससे भी कोई बड़ी बात सब-कुछ नियंत्रण कर रही है। और यह मैं—यह स्त्री—इस पृथ्वीमें सर्वसाधारणसे कितने ऊँचे स्थान पर है इस बातको वह बहुत देरतक अपने मनमें लाम्ब होकर लड़ी-कड़ी खोसती रही। कहानी, निबन्ध और पुस्तकमें भारतीय नारो-बायिके अनेक कुम्भीकी बात उलने पड़ी है उनमें हीन्ताका कब्रके मारे स्वयं नापी होकर वह मन-ही-मन भर-भर गई है—यह हड मो नहीं है, पर इस परमे अकेल्ये लड़ी होकर उस सब बातोंको सत्य मान लेनेमें आज उसे सकोच होने लगा।

उसके बाहर आनेपर अजबाने ईच्छते हुए कहा—‘बहुत देर हो गई थीजी बार्, करीब दस घंटे हुए—सब नीचे रतोरुपरमें आपकी बात देल रहे हैं। पक्षि।’

‘‘तुम्हारे बड़े बाबू ऑफिसमें आ गये !’’

‘‘हाँ, वे भी नीचे आ गये हैं !’’

‘‘शाबर हम लोगोंके साथ नहीं आवेंगे !’’

अपरात हँसती हुई बोली—‘‘लावेंगे, तो मैं वह शोपहर बाद जीबी, और आज तो भी नहीं। एकादशी है,—शामके बाद शायद कुछ फल-फलवारी लावेंगे।’’

कन्दना किसी तरह मानो समझ गई थी कि वह स्त्री इस परमें ठीक बायी बैठी नहीं है; उठने कहा—‘‘वे तो थोड़े व्यस्तक परकी विषय नहीं हैं, फिर एकादशीका उपवास मन्ना क्यों करने लगे ? कुछ रत्नमें एकादशीका न सही ब्रह्मीका उपवास तो उपवास यों ही हो चुका है।’’

अपरादाने कहा—‘‘जो होने दो, उपवासते उन्हें चार्न तकलीफ नहीं होती। मैं क्या करती हूँ कि परते जनममें लगना करके बिरने इस जनममें उपवास

सिद्धिका घर पामा है। उनका खाना बेलकर दंग रह जाना पड़ता है।”

बन्दनाने नीचे आकर देखा कि उन लोगोंके अन्मासक अनुसार बहाँ पाप, पाबरोटी, अण्डे आदि सब चीजें टेबिलपर सजी हुई हैं और पिता तथा सस्त्रीक बैरिस्टर साहब मूलसे पंचम हो रहे हैं। अर्थात् उन लोगोंका अगमग दोष सीमा तक पहुँच चुका है। बन्दनाको देखते ही अखबार एक तरफ फेंककर पिताने सिकायतके स्वयं कहा—“अह—इतनी देर कर बी बेटी, इस मूल तो अब कोई काम होता नहीं शीलता।”

विप्रदास पास ही बैठे थे, बन्दनाने पूछा—“मुखर्जी साहब, आप नहीं पीयेंगे ?”

विप्रदास बातको समझ गये, इसके बोले—“चाय मैं नहीं पीता, किर्क हाक मात खाता करता हूँ। उसका अभी बस नहीं हुआ,—मेरे लिए चिन्ता मत करो, तुम बैठ जाओ।”

बन्दनाने इसका उत्तर नहीं दिया पिता और अन्य दोनों मस्तिष्कोंको बदन करके कहा— मुझसे गच्छा हो गए है; मुझे कहकर मेजना चाहिए था, मगर भूल गए। मेरी चाय पीनेकी इच्छा नहीं है, आप लोग अब देर न कीजिए,—शुरू कर लीजिए। मैं बसिक भाव योग्यता चाय तैयार किये देते हूँ।— इतना कहकर वह उठी क्षण काममें लग गई।

सब कोई मयल हो उठे। नोकर एक तरफ लड़ा हुआ था वह मारे संकोचके सिद्ध-सा गया; पिताने उठेगके साथ पूछ—“तुम्हारी तबीयत तो खराब नहीं है बेटी ?” सस्त्रीक बैरिस्टर साहब क्या करें कुछ सोच ही न सक।

बन्दनाने चाय बनाते-बनाते कहा—“नहीं बापूजी तबीयत खराब नहीं है, ऐसे ही लागेजी बनि नहीं है।”

“तो रहने दो। कम ज्यादा रात पड़े लाच था, शायद अच्छी तरह हजम नहीं हुआ होगा। इतने सिवा काफ़ी दिन बस चुका, पित्त भी बस गया होगा।”

“शायद यही बात होगी। दापहर होनेपर मुन्बजी साहबक साथ बैठके चाक-मात लार्कनी, इस परम उते शायद हजम कर सकूगी।”

उसकी बातपर और किसीने उठना खयाल नहीं किया, पर विप्रदासके चेहरेके सामनेसे खम्बरके लिए एक काही छाया-सी टैर गई।

यह सब मोंके व्यवहारके लिए है। संगमरमरका फर्श, संगमरमरकी नहानेकी चौकी और संगमरमरका परिष्ठा है एक तरफ तीन चार तोंके हण्डे—शायद संगमरमर रखनेके लिये,—रोम मोंके-पिछनेसे चमक रहे हैं। मों वहाँ कब आई थी और फिर कब आरंभगी निश्चित किसीको नहीं मालूम, फिर भी, आपराधीका विद्वतफ कहां नजर नहीं आ सकता। ऐसे कठनके साथ सतर्क व्यवस्था है कि मालूम होता है जैसे वे यहीं मौजूद हों। ऐसी व्यवस्था सिफ हुकूम बलाकर वा शासन करके नहीं कराय जा सकती; देखते ही बन्दनाने इस बातको महसूस किया कि उलते भी कोई बड़ी बात सब-कुछ निर्वन्धन कर रही है। और वह मों—यह स्त्री—दम परस्त्रीमें सर्वसाधारणते फिटने ऊँचे स्थान-पर है इस बातको वह बहुत देखकर आने मनमें खल्ल होकर लड़ी-लड़ी घोषती रही। कहानी, निबन्ध और पुस्तकमें मारखोप गापी-जाठिके अनेक हुन्सीकी बात ठमने पढ़ी है। उनकी हीनताका लज्जाफ मरे स्वयं नारी होकर वह मन-ही-मन मर-मर गई है—यह सच भी नहीं है, पर इस धरमें अकेली खड़ी होकर उन सब बातोंको तत्त्व मान लेनेम बाज उठे संश्लेष होने काम।

उलके बाहर आनेपर अचराने हँसते हुए कहा—“बहुत बेर हो गई बीबी बार्ड करीब दो घंटे हुए—तब नीचे रसोईपरमें आपकी बात देल रहे हैं। पब्लिय ।”

“उम्हारे बड़े बाबू आछिजसे आ गये !”

“हाँ, वे भी नीचे आ गये हैं !”

“शायद हम लोर्गेके साथ नहीं लार्केगे !”

अजदा हँसती हुई बोली—“लार्केगे, तो भी वह होपहर बाद लीजो, और आज छो भी नहीं। एकरदही है,—शामके बाद शायद कुछ फल-फल्लही लार्केगे।”

कन्ठना किसी तरह मानो समझ गई थी कि वह स्त्री इस धरमें ठीक दासी कैसी नहीं है; उलने कहा—“वे तो कोई मालूमक परकी बिम्बा नहीं हैं, फिर एकरदहीका उपवास मझा क्यों करने लगे ! कल रैकमें एकरदहीका न ली दसमीका उपवास तो उनका धों ही हो चुका है।”

अचराने कहा—“छो होने लो, उपवासते उन्हें चार्ड तकलीफ नहीं होती। मों कहा करती हैं कि पहले जनममें उपवास करके बिम्बे इस जनममें उपवास

हैं। सब सामान आयेगा।”

बन्दना चकित रह गई बोली—“यह कैसी बात ! यह समझ तुम खेगोंको कैसे की ?”

“बड़े बाबू खुद ही हुकम दे गये हैं।”

“मगर बहोका असाव-कुसाव ये खेग लायेंगे कहां ! इधरी मफानमे ? तुम खेगोंकी मां सुनगी तो क्या करेगी ?”

अबदा सकपचा-सी गई, बोली—“नहीं, ये नहीं सुन पायेंगी। नीचेके एक कमरेमें इन्तजाम किया गया है। वासन-बख्तन होटलवाले ही छे लायेंगे। कोई देखत न होगी।”

बन्दनाने कहा—“हुकम तो दे गये हैं, पर उधे तामीक किसने किया ! उसके पास एक बार मुझे से जा सकतो हो ?”

“चलिए।”

मुत्तबिंदीका एक बड़ा-भायी तिकारली कारोबार कम्पन्तेमें चालू है। नीचेके मंजिलके तीन-चार कमरोंमें उसका इफतर है, मुनोम-गुमास्ते, डार्क, दरवान, मैनेजर बगैर, कारबारमें बितने तरहके कर्मचारियोंको जरूरत होती है, सब वहाँ काम करते हैं। बन्दनाके पहुँचते ही सब उठके लड़ हो गये। उमर और खोहरेके लक्षणोंसे मैनेजरको उसने पहचान लिया, और इजारेस मुत्तबन्त कहा—“होडकमें क्या आप खुद आकर हुकम दे आवे हैं ?”

मैनेजरके गर्दन हिलाने स्वाकार करनेपर उसने कहा—“तो फिर और एक दके आइए, उन खेगोंको मना कर आइए।”

मैनेजर अचम्भेमें पड़ गया, बगळे सीकता हुआ बोला—“बड़े बाबूके बगैर खैटे—”

बन्दनाने कहा—“तब तो शाबद मना करनेका समय न रहेगा। मुत्तबीं साहब नयाब होंगे तो मुत्तपर हो खंग। आपको कोई खर नहीं। आइए, खेर न कीजिए।”—इतना कहकर वह बिना उत्तरकी प्रतीक्षा किये ही चलनेको उफ्त हुए।

इतबुद्धि मैनेजरने सोचा, यह लूच रही। विप्रदासका हुकम न मानना कठिन बात है यहाँतक कि उधे भसाम्मन मी कहा जा सकता है किन्तु इस अपर्याचित लड़कीके सुनिश्चित संशयहीन धासनकी अपेक्षना करना भी कठिन

नौकर न-बाने क्या खेचकर कह बैठा—“भाब एकदली है, बाबू साहब तो उठ खून फल-फलहरीके सिवा और कुछ लपेंगे नहीं।”

बन्दना अभी-अभी वह बात सुन आई थी कि भाब एकदली है फिर मी खनबान बनकर बोली—‘सिर्फ फल फलहरी ! बहुत हडकी लुपक है। वही मेरे लिए अच्छी रहेगी। क्यों, मुन्नी साहब !’

विप्रदासने हँसते हुए गरदन ठो दिखाई, पर कोई उनका इस तरह लपछ-म्यतासे उपहास कर सकता है, वह बात भाब ही उन्हें पहले-पहल माखम हुई और उठते माना वे मन ही मन दंग रह गये। और, उनके बोहरेकी तरह बेलकर बन्दनाने मी बाबू वह बात महसूस की।

बाहरका काम-काज निबटाकर जब बन्दना सिताके साथ पर लौटी तब लीला पर बात चुका था। लक्ष्मीक बैरिस्टर साहब आवूपर, विद्वियालाना, फिफेका मैदान, विक्टोरिया-मेमोरियल बगैरह फलफलेकी देखन भाबक साथे खी-देखकर अबतक महीं छोड़े थे। रातकी गाड़ीसे ही उन लोगोंके अपनेकी बात थी, किन्तु प्रोग्राम बदलकर फिफेहाक खाना उन लोगोंने स्वीकृत कर दिया है।

राजसाहब कपड़े बदलनेके लिए अपने कमरेमें चले गये। बन्दनाकी अपने कमरेके लामने अचवाते गैर हो गई। अचवाने हँसमुख हो सिखायतके स्वरमें उससे कहा—“जीजीबाबू साग दिन तो बिना लाने-पीने पिठा दिया,—अब क्या खन्दीते हाब-मुह भो खीजिए, आपके लिए फल फलहरी तब जा गई है, खतक में उठे ठैवार कर रलती हू। क्यों टीक है न !”

‘मगर बड़े बाबू—मुन्नी साहब ! वे !’

अचवाने कहा—“उनके लिए स्पाकुल होनेकी जरूरत नहीं जीजीबाबू, वह तो उनका रोजका हाल है। लानेकी बनिस्वत न लाना ही उनका नियम है।”

‘मगर वे हैं क्यों !’

‘बलिभैरव काजीजीके रहन करने गये हैं। जाते ही होंगे।’

बन्दनाने कहा—‘अच्छा तो ठीक है, उनके भानेपर ठेपारी करना। लेकिन और लप लोम ! उनका क्या इन्तजाम हुआ ? अच्छा, बच्चे तो अचवा, तुम लोगोंका रसोइपर देल भाऊ !’

अचवाने कहा—‘बलिभैरव, लेकिन इस खून उन लोगोंके लाने-पीनेका इन्तजाम रसोइ-बस्में नहीं हुआ, जीजीबाबू हादकते इन्तजाम किया गया है—

साया बन्दना ! वह गुस्सा क्या नहीं उठरेगा ?" उसके कण्ठ-स्वरो में अबकी बार कुछ स्नेहका पुट लगा हुआ था ।

बन्दनान मूढ कण्ठसे जवाब दिया—“गुरुता दिखाया क्यों था ! लेकिन सुनिए, आपके खानेकी पक-पकवारी सब भा खुकी है, तबतक आप, सन्ध्या पूजा का भीषण, इतनेमें मैं बनार-बुनूरकर धैर्य कर देती हूँ । लेकिन यदि और किसीने किया तो मैं आज भी नहीं खार्कगी, करे देती हूँ ।”

‘अच्छा, मैं जाता ।’—कहकर विप्रदास ऊपर चले गये ।

अगमग पन्धे मर बाद बन्दना एक सफेद सगमरमरके पाससे पक-पकवारी और कुछ मिर्गईं छेकर विप्रदासके कमरेमें जा लड़ी दूर । अमरदाके हाथमें भासन और पानीका गिलास था । उसने पानी छिड़ककर और सावधानीसे पोंछके भासन बिछा दिया ।

विप्रदासने बन्दनाकी ओर देखकर विरमपके साथ कहा—“तुम क्या अभी फिर नहारि हो ?”

‘आप खाने छे बैठिए ।’—कहकर उसने पाक सामने रक्त दिया ।

१०

विप्रदासने भासनपर बैठकर फिर बही खाना किया—“सबसुच ही फिरसे नहा आई क्या ! यदि तभीपत लयाव हो गई ?”

“मझे ही हो आप, पर मेरे हाथसे न-खानेकी बहानेबाजी या ठक अब मैं आपको नहीं करने दूंगी । वह मेरा प्रथ है । साफ-साफ करना पड़गा कि तुम्हारा सुआ नहीं खार्कगा, तुम म्लेच्छ-परकी लड़की हो ।”

विप्रदासने हँसकर कहा—‘कित्तबौम नहीं पढ़ा कि बुधत्माभ्येक सिध्द पक-पकवारीका अभाव नहीं होता ?’

बन्दनाने कहा—“पढ़ा है, पर आप न तो दुयारमा हैं, और न मयानक—हमारे जैसे ही गुन-दोषेसे मुक्त आदमी हैं । ऐसा नहीं होता तो मैं सबसुच ही उन बेचारेका दिनर बन्द करन न जाती ।”

“मगर सधा कारण क्या है ?”

“सधा कारण ही आपको बटा रही हूँ । आपको परिवारमें उसका पकन

नहीं आगमन पैदा ही अनम्भव है। अत्र भर विमूढ़की मूर्ति स्तम्भ रहकर वह दुःखिण्यके स्वरमें बोध—“जी, जार्ज तो फिर,—मना कर जार्ज ! कुछ पैदागी भी दिवा वा पुका है—”

“तो गया, जाने बीबिए, आप देर न कीजिए।” कहकर बन्दना ऊपर झौट झार ।

शामके बाद झौटनेर विप्लवात्मने वह बात सुनी। वह कुछ सोच ही न सके कि उन्हें कुछ होना चाहिए वा नाराज। रतोरूपमें जाकर देखा कि सैवारिवां करीब-करीब पूरी हो चुकी हैं, बन्दना छोटे-से स्टूफर बैठी हुई रतोरुपा मशाराबके साथ काम करनेमें व्यस्त है। वह उठकर लड़ो हो गए और कृषिम विनयके स्वरमें बोधी—“गुस्सेमें जाकर मैनेजर वाबूका बरखाळ तो नहीं कर आवे मुझकी लाइव !”

विप्लवात्मने कहा—“मुझकी लाइव ऐसे गुस्सेमें हैं यह खबर तुम्हीं किसने दी !”

बन्दनाने कहा—“श्रेय कहते हैं कि शेरको गन्ध एक बोकन बूरेसे भा जाती है।”

विप्लवात्मने हँसकर कहा—“मैहमानोंके लिए क्या इस्तबाय होगा ! उन सबको जो रातको दिनरका अन्धास है—उसका क्या !”

बन्दनाने कहा—“जितका बिना दिनरके काम ही नहीं पक सक्ता उन्हें किसीके साथ होटक मिळवा दीजिएगा। जितक रुपये में रूपा।”

“मजबूत नहीं है बन्दना, शायद वह अच्छे नहीं हुआ।”

“शायद अच्छा तब होता जब उन बीबोंको रैगावा जाता ! मैं झुनठीं तो क्या करतीं—बठाइए तो !”

विप्लवात्मने यह बात सोची नहीं हो, तो बात नहीं; पर वह कुछ तप नहीं कर पाये थे, बोले—“वे जान नहीं पाती।”

बन्दनाने तिर हिसाकर कहा—“जान जाती। मैं थिड़ी सिम्बके बता देती।”

“कहीं !”

“कहीं ! जो बात कभी नहीं की दो दिन इन बाहरके थोथीको सुध करनेके लिए कती आप करें ! हरगिज नहीं।”

झुनकर विप्लवात्म निक सुध ही नहीं हुए, आभयाम्बित भी हुए।

कुछ देर चुन रहकर वह बोले—“अगर तुम्हने तो कम सुधारते ही कुछ नहीं

बन्दनाने क्षणभर चुप रहकर पूछा—“लेकिन इनके बाद क्या कीजियेगा!”
 “पर ब्याकर गोबर लाले प्रायश्चित्त करूँगा।”—कहकर वे हँस दिये।
 तब उनका हँसनेपर भी बन्दना यह समझ न सकनेके कारण कि सच है या
 खिास साध रह गई।

विप्रदासने कहा—“मौके साथ ही समझीठा कुछ-न-कुछ होगा ही, पर
 ज्यारी कीबीबी सजासे वो छुटकारा पाऊँगा, वह ठससे मी बड़ी बात होगी।”
 —इतना कहकर फिर हँसकर कहा, “क्यों, विप्रदास नहीं हुआ ! अच्छा, पहले
 पाह हो खाने गो, तब तुम मुलकी साहबकी बात समझ जाओगी।”—कहते
 ए वे मेहनका याल बिजकुस सधा करके उठ लड़े हुए।

उपर फिर तो रद हुई, पर अन्याय बचिकर लालोके आपोजनमें अबहेका
 हीं की गई। खिाबा परितुतिके खिाबसे कुछ मी कमी नहीं रही। परन्तु
 उब कामोसे छुट्टी पाकर बन्दना अब बिलारपर लेटी तब सोचने लगी, उसके
 जन्ममें विप्रदासका आचरण अप्रस्यथित मी नहीं था और घाबद उसे
 रोग मी नहीं कहा जा सकता; और निकट भामीय या अन्त होनेपर मी
 जेस बजइसे अकतक उनसे पनिष्टठा और परिषय नहीं था वह मी इतने
 देनोकी पुरानी कहानी है कि उससे नये प्रकारसे आघात अनुभव करना
 साहस्य नहीं बलिक सिद्धमना है। बन्दनाके लोक बेल बलक विप्रदासको मों ओ
 ह जानेके खिारने पीछे हट गई थी तमके प्रतिबादमें बन्दना दगैर साये-दीये
 रहसिे पकी भार है। एक खिला-खिहीन नारीक उदत धर्मशनने उसे आघात
 न पहुँचाया हो सो बात नहीं तथापि तम मूइताको मी किसी दिन भूक जाना
 भासान है; किन्तु विप्रदासने वो कुछ क्रिया उसके प्रतिबादमें उसे क्या करना
 उचित है, पह उसकी समझमें न आया। विप्रदासने उसके हाथक सुए धर-
 मूक और मिगार लार् हो लही पर अपनी लकीपलसे नहीं, संकटमें पड़कर, इत
 डरमे कि सखरामपुरकी तरद कहीं यहाँ मी पैसी बेहुदा बारदात न हो जाय।
 पह एक तरदमे पागलके हाथसे आस-रणा करनेका-सा हुआ। परन्तु विप्रदासने
 वो यह अनाचार हो गया है तो पर ब्याकर वह प्रायश्चित्त करेगा—इस बातको
 म जाने जैसे तमने निमित्त सत्य समझ लिया और उससे उसकी आँखोंकी नींद
 जाती रही। और साथ ही यह बात मी उसने बहुत खोची कि बात ऐसी महस्य
 पूज मी क्या है ! हमारा उनका बहनेका मार्ग तो एक नहीं है,—छँटारमें

नहीं है। न देखके परमें, न यहाँ। फिर किसलिए आप ऐसा काम करें ?”

“पर तुम तो जानती हो वे सभी विद्यापठ-फिरता हैं,—देख लाना लानेके ही वे आती हैं।”

बन्दनाने कहा—“आती जाहे बिच बाठके हो पर वे हैं ही मारतीय ही। मारतीय अतिवि डिनर बगैर लाये मर गये हों, ऐसी तो कोर्र नधीर नहीं है। बिदाया, यह बकह अघाघ है। यह आपकी किस्मकी बात है।”

विप्रदासने कहा—“तो कामकी बात क्या है सो बताओ ?”

बन्दना—“तो मैं ठीक नहीं जानती। पर शायद यह बात ठीक है कि जो आप मुँहसे करते हैं भीतरसे आप पूरुषसे नहीं मानते। नही तो मौसे छियाकर इस तरहकी व्यवस्था करनेको इरगिज राजी न होते। काग आपसे पिरुस ही इतना डरते हैं। किनसे डरना चाहिए वह आप नहीं, आपकी मा है।”

गुनकर विप्रदास बरा मी नाचाक नहीं हुए, बल्कि हँसकर बोले—“तुम्हने दोनों कनोंको पहचान लिया। पर वह हस्तज्यम मौसे छियाकर किया जा रहा था, यह बात तुमने किससे सुनी ?”

बन्दनाने नाम नहीं बताया, लिई इतना ही कहा—“मैंने दरियापठ करके खन किया है। वह इतनी बड़ी बुर्पटना होती कि कौकी मुझे कभी मी छमा मरी करती, हमेसा अमितम्यठ करती रहती कि बन्दनाके कारण ही ऐसा हुआ। इसीसे ऐसा काम मैं आपको इरगिज नहीं करने दे सकती थी।”

विप्रदासने कहा—“तुम परम आस्थीक हो, रिप्लेसारीमें सबसे बड़ी हो। वह तुम्हारे आयक बात है। पर, बुबका-प्योटी बगैर किये तुम्हारे हाथका मैं ला सकता हूँ कि नहीं, यह बात उस आदमीसे पूछी थी क्या ? नहीं तो अब म्यकर मसूम कर आओ, तयसक मैं इन्तबार कर्जिय।” इतना कहकर उन्होंने हँसते हँसते लाम्नेके बाकको बरा अलग हरा दिया।

बन्दनाका चेहरा पहले तो सारे शर्मके मुग्न हो उठा, फिर अपनेको सँभालकर उलने कहा—“नहीं यह बात मैं उलसे पूछने नहीं जा सकती, आपको लानकी जरूरत नहीं।”

विप्रदासने कहा—“पर मुश्किल तो यह है कि अपने परमें मैं तुम्हें उपासी मी सो नहीं रख सकता।” वह कहते हुए उन्होंने लाना हार कर दिया।

बन्दनाने सगभर चुप रहकर पूछा—“लेकिन हमके बाद क्या कीजियेगा ?”

“पर जाकर गोबर झांक प्रार्थना करूँगा ।” — कहकर ये हँस दिये ।

परन्तु उनके हँसनेपर भी बन्दना यह समझ न सकनेके कारण कि सच है या परिहास स्वप्न रह गई ।

विप्रदासने कहा—“मौक साय तो समझीता कुट-न-कुट होगा ही, पर तुम्हारी कीजीकी सहासे वो घुटकाय पार्कंगा, यह उरसे मी बड़ी बात होगी ।’
—इतना कहकर फिर हँसकर कहा, “क्यों, विश्वास नहीं हुआ ? अच्छा, पहले स्याह हो जाने दो, एक तुम मुन्बर्ही साहबकी बात समझ जाओगी ।” —कहते हुए वे मोहनका पास निककुकुल सदा करके उठ लड़े हुए ।

उपर दिनर तो रद हुई, पर अन्याय्य बचिकर साधोके भावोन्मत्तमें अबहेडा नहीं करे गई । विद्याया परितृप्तिके सिंहाससे कुछ मी कमी नहीं रही । परन्तु सब कार्योंसं घुड़ी पाकर बन्दना अब बिसरपर लेटी एक सोचने लगी, उसके सम्बन्धमें विप्रदासका आचरण अप्रत्याक्षित मी नहीं था और शायद उसे बेग मी नहीं कहा जा सकता और निश्चय आरम्भिय या अन्ना होनेपर मी किस बन्धसे अबतक उनसे घनिष्ठता और परिचय नहीं था यह मी इतने दिनोंकी पुरानी कहानी है कि उसके नये प्रकारसे आपात अनुभव करना बाहुन्य नहीं बसिक विह्वलना है । बन्दनाके छोड़ देत बक्त विप्रदासको भी जो छू जानेके विचारसे पीछे हट गई थी, उसक प्रतिपादमें बन्दना परीर साये-थीये बर्हसे बन्धी बाह है । एक घिछा-विहीन नारीके उद्वत धमझनने उसे आपात न पहुँचाया हो सा बात नहीं तथापि उन मूढताको मी किसी दिन मूल जाना आसान है किन्तु विप्रदासने जो कुछ किया उसक प्रतिपादमें उसे क्या करना उपचित है, यह उसकी समझमें न आया । विप्रदासने उसके हाथक हुए धर-मूल और मित्रार्थ सार्थ तो सही, पर अपनी लक्ष्यसे नहीं चकटमें पड़कर, इत डरने कि बस्यमपुरकी तरह कहीं यहाँ मी पैसी बेहूदा बारबात न हो जाय । यह एक तरहसे पर्यन्तके हाथसं आत्म-रक्षा करनेका-सा हुआ । परन्तु विप्रदासके जो यह अनाचार हो गया है लो पर जाकर यह प्रार्थना करेगा—इत बातको न जाने कैसे उसने निश्चित सत्य समझ लिया और उससं उठकी आत्मोकी नौद आती रही । और साथ ही यह बात मी उमन बहुत सोची कि यत ऐसी महत्त्व-पूज मी क्या है ? हमाय उनका बन्दनेका भाग लो एक नहीं है,—संसारमें

होय नहीं। किन्तु सरसा जब पैतृम्य हुआ तब पूर्वका आकाश भरपूर हो गया था, और नौकर बाहर आगने हो वाले थे। तबकीर अच्छी थी जो इस बी कोर्द आकर उसके सामने नहीं आ पड़ा। अब वह नहीं ठहरी, परी थी ऊपर अपने कमरेमें आकर बिस्तरपर पड़ रही थी और पढ़ते ही गहरी नींद आने लगे और मी बेर न डगी।

हरवाजेर हाथ आकर अन्नदाने पुकारा—“बीबीबार्, बहुत दिन तक गया है, उठोगी नहीं !”

बन्दना स्पष्टताके साथ दरवाजा खोलकर बाहर आ लड़ी हुई, देखा कि आलसमें बहुत अचेर हो चुकी है, अचिञ्चत होकर उसने पूछा—“वे सब घायल आज म म मेरी बाट देखते होंगे ! अब सचेरे मुझे अगा क्यों नहीं दिया ! नहा खोकर पेटि-मरसे पहले तो पैशर न हो सऊँगी अन्नदा !”

उसके विपन्न चेहरेकी तरफ देखकर अन्नदाने हँसते हुए कहा—“डरनेको कोई बात नहीं बीबीबार्, आज वे लोग सब नहीं कर सके, सब सतम कर चुके हैं,—अब अबतक चाहो नहाओ-धोओ, कोई टोकेगा नहीं !”

मुनकर बन्दनाके जीमें भी आया। वह हँसमुख हो बोली—“तबमुप तुम लोगोंने बहुत-सी बात मुझे पसन्द नहीं, पर यह पसन्द है। सब लोग दस बीसक पड़ीका काँदा मिथ्यकर निगबने नहीं बैठ जाते, इतने बड़ा भारी मिथ्यता है।”

अन्नदाने कहा—“पर सचेरे क्या आपको भूल नहीं आती बीबीबार् !”

बन्दनाने कहा—“कभी नहीं। मगर फिर मी बचपनहीसे रोजमर्त लाती पीत रही हूँ। अच्छा, आती हूँ अब देर नहीं करूँगी।”—वह कहकर वह खड़ी गई करीब दो पेटि बाद नीचे विप्रदाससे उतकरे मड हुई। वे आधिसका कर सतम करके निकल रहे थे। बन्दनाने नमस्कार किया।

“नाप पी बी !”

“हो।”

“वे लोग ठहर नहीं सके, मेकिन तुम्हें मी—”

बन्दना रोकर बोचरीमें बोल उठी—“उसके लिए तो मैं शिक्षाकत नहीं कर रही हूँ मुन्नी साहब !”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—‘तुम्हारे मित्राजमें बहादुरी है, इस बातसे मैं

इन्कार नहीं करता, परन्तु दोनों बहनोंमें उठना ही पर्युक्त है किन्तु पन्द्र और पूर्वमें । मुना है कि तुम कभी ही विनाश का रही हो—शिलाको पक्की करनेके लिए । बाबू, —बाप आनेपर लजब देना, आकर एक बार तुम्हारी मूर्ति देख आर्त्तना ।”

बन्दना यह भुनकर हँस गी, कुछ बारी नहीं ।

विप्रदासने कहा—“मुना है कि उस देशमें लोगोंको दिनके बारह बजेतक सोना पड़ता है । बड़ी कठोर साधना है । मरिचिन तुम्हें उत साधनाक लिए वहाँ कष्ट नहीं करमा पड़गा—इत देशसे ही तुम्हने उसकी साधना शुरू कर ही है ।”

बन्दना अबकी भी हँस गी, और उठी तरह कुम्भाप विप्रदासक चेहरेकी तरफ देखती रही । निहायत सीधे सारे डंगका मद्र चेहरा है । हास्य-परिहासमें स्नेहपूर्ण, ठन्दीमेंका एक भावनी । फिर भी राजकी नीरवतामें निर्जन कर्मको उस स्तम्भ-मौन मूर्तिको कैसा रहस्यमय समझा था, उस बातको याद करके उसके कुतूहलकी सीमा न रही ।

बन्दनाने पूछा—“सुलखी साहब, सब श्रेय करो हैं । किन्तीको देख नहीं रही हैं ?”

विप्रदासने कहा—“इसके मानी हैं कि वे हैं नहीं । अपना शाब्दी साहब और सखीक बैरिस्टर साहब, तीनों कर्में हबड़ा स्थान गये हैं साइस रिजर्व कराने ।”

बन्दनाने विप्रदासके साम पूछा—“सखीक बैरिस्टर साहब तो सौर्य रिजर्व कर सकते हैं, पर बापूजी कर्में कराने लगे ? उनकी सुविधा कतम हानेमें अभी से आठ-दस दिन बाकी हैं । इसके सिवा मुझे विना बताये ?”

विप्रदासने कहा—“कहनेका समय नहीं मिला, घाबरा वापस आकर बतायेगे । सभे बन्दरके आफिससे कनरी ठार आया था,—वेहरेका माव बैरिस्टर तो बरी माधुस होता था कि बगैर गये काम नहीं कर सकत ।”

“लेकिन मैं ? इतनी कल्दी मैं क्यों जाने लगी ?”

विप्रदासने भी उतक स्तरमें स्तर मिलाकर कहा—“कह, तुम क्यों जाने लगी ? मैं भी ठीक बरी कहता हूँ ।”

बन्दना कुछ समझ न सकनेके कारण विप्रदास दृष्टिसे मुँहकी ओर देखती रह गई ।

विप्रदासने कहा—“बहनको एक तार कर दो न,—देवरको साथ लेकर
रौं जा जायें । तुम शोगोड़ी पट्टी भी खूब बैठ जावगी, और अविधि-सत्कारके
पिस्तसे सुटकारा पाकर मेरी भी ध्यान बच जायगी ।”

बन्दना डरते हुए व्यग्र स्वरसे पूछ उठी—“पेला क्या सम्भव हो सकता है
खाली साहब ! मैं क्या इस प्रस्तावपर कमी खाती हो सकती हूँ ! मैं तो उन्हें
को नहीं मुहाती ।”

विप्रदासने कहा—“एक बार कोशिश कर देखो न । कसो तो तारका एक
प्रमं भेज दूँ—क्या करती हो !”

बन्दना उत्सुक दृष्टिसे क्षण भर चुपचाप बोलती रही फिर न जाने क्या
ब्रेचकर बोली—“रहने दीजिए मुलकी साहब,—यह मुझसे न होगा ।”

“ठा रहने दो ।”

“मैं बसिक फिदाबीके साथ खली ही जाऊँ ।”

“तो ही ठीक है ।”—कहकर विप्रदास लगे गये ।

खानेकी टेबिलपर पिताके नाम आया हुआ टेलिग्राम पड़ा हुआ था;
बन्दनाने उसे खोलकर देखा कि सचमुच ही बम्बई-आफिसका तार है । बहुत
बस्वी —दूर नहीं की जा सकती ।

बन्दना अपने कमरेमें जाकर फिर एक बार अपना सामान खानेमें लग गई ।

पिता अभीतक बापस नहीं आये थे । कई घण्टे बाद अप्रधाने कमरेमें
प्राकर कहा—‘आपका नाम एक तार आया है बीबीबार्ड, यह लीजिए ।’

“भैरे नाम टेलिग्राम !”—आश्चर्यका साथ उसे हाथमें लेकर लोकके देखा
कि बम्बईमपुरसे मंनि उलोडो तार भेजा है । बड़े आग्रहके साथ अनुरोध किया
है कि पिताका साथ वह इंग्लैंड बापस न आयें; बड़ी यह द्विजदासके साथ रातकी
गाड़ीसे चलाकर आ रही है ।

११

रातकी गाड़ीमें खींचे आ रही हैं और उनके साथ है दिवदाम । बन्दना
सुनीम पूनी नहीं समाई । बीबीबी सनुराणके अपने उस दिनके आचरणक विप्र
बद मन ही मन बड़ी अस्मित थी, परन्तु उसके प्रतिशरका कोई उपाय वह नहीं
पा रही थी । आज अरबस्त अनिच्छा होनेपर भी पिताके साथ उसे बम्बई की

जाना पढ़ता, किन्तु अकस्मात् एक दिन-सोचने रास्तेसे उस सम्स्याका हल हो गया। देहिग्रामको बन्दनाने बहुत बार दिहाबा-हुलापा, भभवाको पढ़कर सुनावा और उसलुक भाषसे सिक्के जानेकी इसलिये यह देखने लगी कि उनके हाथमें यह छोटा-सा कागज रल दे। विप्रदास बरपर नहीं हैं, पुछवानेपर माथस हुआ कि कुछ देर पहले से बाहर चले गये हैं। यह स्पष्टता उन्नीकी है, सिहाबा उन्हें क्लानेकी कोर् बररत नहीं,—फिर मी एक बार कहना ही पड़गा। और उसके मीतरका हाक यह कि उनसे कहनेकी भाषा यह मन ही मन हूँदने लगी थी देला कि कोई बात ही उसे पछन्द नहीं आ रही है। आनन्द प्रकट करनेका स्वामासिक रास्ता मानो कमीका बन्द हो गया है। बहु-निन्दित बर्मी-बार भेजीका यह कड़ा और कट्टर भादमी उसे घुससे ही कुछ कग्य था, अब मी उसके लिए काफ़ी दुर्बोन्व है, फिर मी धीरे-धीरे उसके मनमें एक परिवर्तन हो रहा था। यह देख रही थी कि इस भावमीका आचरण परिमित है, बाते यह कम करता है, स्पष्टता मर और मीठा है फिर मी न जाने कैसा एक व्यवधान उसके प्रत्येक परछेपमें प्रतिक्ष्य अनुभूत होता है। एक हीन रहता हुआ मी यह सबसे दूर रहता है। आसित भोग, दात-बासिर्वा, कर्मचारी लमी इत्पर अदा करते हैं, परन्तु उससे भी आदा करते हैं मन। उन लोर्गीके मनका भाष म्यानी कुछ इस तरहका है : बड़े बाबू अन्नदाता है बड़े बाबू रक्षणकता हैं, बड़े बाबू बुरे दिनोंके अवलम्बन हैं, किन्तु बड़े बाबू किसीके आरमीय नहीं हैं। विपु-विबाग होनेपर उनसे अपनी विपदा कही जा सकती है, किन्तु पुत्रके विबाहोत्सव में जीम्मेका नियन्त्रण नहीं दिया जा सकता। इस अनियत सम्बन्धको बात से श्लेष ही नहा सकती।

कल बन्दनाने रसोर्परकी बालीको सरल और कुछ निर्वोच समझकर बाती ही बातीमें उससे इसका कारण बरिवाप्त करना पाहा था, मगर बहुत बिरह करनेके बाद मी लिर्क इतनी ही बात निष्कास सका कि यह इसका कारण महीं बनती, लव कोर् उरते हैं इसलिये यह मी उरती है, और अन्य किसीसे बूछने-पर मी छाबद नहीं उतर सिक्क्य। मुलकी-परिवारमें मनो यह एक सन्नयक व्यापि है। उत दिन रेलमें, उत आकस्मिक छोटी-सी घटमाको आस्य करके विप्रदासकी जा बनीय प्रकृति उसे जय मके लिए दिवार्ह दे गर् मी, उसने तुरन्त ही अपनेको सम्पूर्ण रूपसे लिषा लिषा था। माडीमें उत दिन पात पैठकर

हास्य-परिहासकी किठनी ही बाते हो गईं—किन्तु आब मखस ही नहीं होता कि वही भादमी इस मकानका बड़ा-बाबू है।

सहसा नीचेसे एक छोर उठा, किसी भादमीने दौड़कर लकर ली कि उसके पिता राम-साहब, स्टेशनसे लौटाये होकर लौटे हैं। बन्दनाने बंगसेमेंसे हाँककर देखा कि पंजाबके पैरिस्टर और उनकी पत्नी मिठाकी दोनों पाँहें पकड़कर उन्हें मोटरसे नीचे उतार रहे हैं। उनके एक पैरका गूदा-सुराब कुछ हुआ है और उसपर हो-तीन भीगे हुए रुमाक झिपटे हैं। प्लेटफार्मपर भीड़की बकापेक्षमें किसीने उनके पाँवपर एक मारी बकस पटक दिया, जिससे वह हाक हुआ। लोगोंने पकड़-पकड़ाके उन्हें ऊपर ढाकर बिस्तरपर लिटा दिया,—बरवान डाक्टर बुझाने दौड़ा। डाक्टरने आकर बैप्टेज बाँधा और बवा ली,—बिद्योप कोई बात नहीं, पर कुछ दिनके लिए बूमना फिरना बन्द हो गया।

दूसरे दिन तीसरे पहर सती आ पहुँची। बन्दना ककरवके साथ उसकी अम्बरना करनेके लिए नीचे पहुँची तो ठिठकके लड़ी हो गई, देखा कि मोटरसे सिर्फ उसकी ब्बी ही नहीं उतर रही साथमें सास मी है—बयामबी। बन्दना का ठण्डित आनन्द-ककरव बुझ-ता गया, वह लड़की तरह किसी प्रकार प्रणाम करके एक तरफ हटके लड़ी हो रही थी, पर बयामबीने पास आकर आज उसकी टोड़ी लूकर चूमि और हँसते हुए पूछा—'अच्छे तरह तो हो बेटी !'

बन्दनाने सिर हिलाके हामी मरी—'अच्छी हूँ माँ, अजानक आप कैसे पत्नी आई !'

बयामबीने कहा—'माती नहीं तो क्या करती बलाओ ! एक पयली लड़की नाराज हाकर पगैर ल्याये-नीये पत्नी आई है, उसे छान्त करके कबतक पर बापस नहीं से थ सफती सक्तक मुसे छान्ति करां बेटी !'

बन्दना कुपित्य हँसी हँसके बोली—'कैसे जाना कि मैं नाराज होकर पत्नी आई हूँ !'

बयामबीने कहा—'पहसे तुम्हें लड़के-बासे ही, मेरी तरह उन्हें पाक-पोतकर बड़ा करो, तब अपने आप ही समझ जाओगी कि लड़कीक नाराज होनेपर मैं कैसे जान जाती है।'

वह बात उन्होंने ऐसी मिठासके साथ कही कि बन्दनाने फिर कोई बबाब न देकर छकके उनके पाँव छू लिये। फिर लड़े होकर कहा—'बापू-भी-ही

जाना पड़ता, किन्तु अकस्मात् एक दिन सोचे राखते उठ समझाका एक हो गया। देखियामध्ये मन्दनाने बहुत बार दिखावा हुआया, अघराको पढ़कर घुनावा और उसुक्त मासते स्थिके आनेकी इत्थिए यह देखने लगी कि उनके हाथमें वह छोटा-सा कागज रख है। विप्रदास भरपर नहीं हैं, पुछवानेपर मात्स हूभा कि कुछ देर पढ़ते थे बाहर बसे गये हैं। यह व्यवस्था उन्हीकी है, लिहाजा उन्हें अठानेकी कोई जरूरत नहीं,—फिर भी एक बार कहना ही पड़गा। और उठके भीतरका हाक वह कि उनसे कहनेकी माथा वह मन ही मन ईदने लगी तो देखा कि कोई बात ही उसे पठन्व नहीं आ रही है। आनन्व प्रकट करनेका स्वाभाविक पल्ला मनो कभीका बन्व हो गया है। बहु-निश्चित जमीं दार भेवीका यह कबा और कसूर जादमी उसे घुम्से ही भुरा भग्या था, अब भी उचक लिये टाफ्री हुबोव्य है, फिर भी धीरे-धीरे उचक मनमें एक परिवर्तन हो रहा था। वह देख रही थी कि इस आबमीका आधरण परिमित है, बाते यह कम करता है, व्यवहार मद्र और मीठा है फिर भी न जाने कैसा एक व्यवचन उठके प्रत्येक पदचोपमें प्रतिष्ठन अनुभूत होता है। सबक बीच रहता हुआ भी वह सबसे बुर रहता है। आभिष्ट लोग, दात-दातिवा कर्मचारी सभी इत्तर भया करते हैं, परन्तु उससे भी ज्यादा करते हैं भय। उन लोगीके मनका म्थ मनो कुछ इस तरहका है : बड़े बाबू अघराता है बड़े बाबू रक्षणकता है, बड़े बाबू बुरे बिनोके भयभजन हैं किन्तु बड़े बाबू किसीके आरभीव नहीं हैं। विदु-विभाग होनेपर उनसे अपनी विपदा कही जा सकती है, किन्तु पुनक विवाहोत्सव में जीमनेका निम्नजन नहीं दिवा था सकता। इत धनिउ सम्मन्वकी बात वे सोच ही महा सकते।

कह बन्वजाने रत्तारपरकी बायीको करन और कुछ निर्बोव समझकर बाते ही बातेमें उठते इसका कारण बरिवास्त करना पाहा था, मगर बहुत अिह करनेके बाद भी तिर्क इतनी ही बात निकाल सका कि वह इसका कारण नहीं जानती, सब कोई करते हैं इसीलिए वह भी करती है, और अन्य कितिले पूछने-पर भी हाथव वही उत्तर भिन्व्य। मुलकी-परिवारमें मनो वह एक सन्मक भ्वावि है। उठ दिन रैलमें, उच आकस्मिक छेटी-सी घटनाको आभव करके विप्रदासकी जो बर्न्य प्रकृति उसे क्षण म के लिये दिम्भार दे गई थी, उठने तरन्व ही अपनेको सम्पूव रूपसे लिपा लिवा था। गाड़ीमें उठ दिन पल बैठकर

हास्य-परिहासकी कितनी ही बातें हाँ गरें—किन्तु आज मासूम ही नहीं होता कि वही आदमी इस मकानका बड़ा-बाबू है।

सहसा नीचेसे एक शोर ठठा, किसी आदमीने दौड़कर लखर दी कि उसके मित्रा राज-साहब, स्टेशनसे छेमाड़े होकर लौटे हैं। बन्दनाने बंगलेमेंसे सौंककर देखा कि पंजाबके बैरिस्टर और उनकी पत्नी मित्राजी दोनों बाँहें पकड़कर उन्हें मॉडरसे नीचे उतार रहे हैं। उनके एक पैरका क्ला-बुराब कुत्ता हुआ है और उसपर दो-तीन मींगे हुए रुमाक लिपटे हैं। प्लेटफार्मपर भीड़की घकापेकमें किसीने उनके पैरपर एक मारी बकल पटक दिया, जिससे यह हाक हुआ। लोगोंने पकड़-पकड़ाके उन्हें ऊपर लाकर बिसरपर लिटा दिया,—हरबान डाक्टर बुलाने दौड़ा। डाक्टरने आकर बैम्बेज बाँधा और हवा दी,—किसीप कोर बात नहीं, पर कुछ बिनके लिए बूमना-फिरना बन्द हो गया।

दूसरे दिन तीसरे पहर सत्ते आ पहुँची। बन्दना कहरबके साथ उसकी अम्बरना करनेके लिए नीचे पहुँची तो ठिठकके लड़ी हो गई, देखा कि मॉडरसे लिफ्ट ठमकी बीबी ही नहीं उतर रहीं साथमें सास मी हैं—दयामयी। बन्दना का उच्छ्वित्त आनन्द-कहरब कुस-सा गया, वह बड़की तरह किसी प्रकार प्रणाम करके एक तरफ हटके लड़ी हो रही थी, पर दयामयीने पास आकर आज उसको टोड़ी छूकर बूमी और हँसते हुए पूछा—“अच्छी तरह ता हो बेटी ?”

बन्दनाने फिर दिव्यके हामी मरी—“अच्छी हूँ माँ, अजानक आप कैसे चली आई ?”

दयामयीने कहा—“माठी नहीं तो क्या करती बताओ ? एक पगली बड़की नाराज हाकर पगैर ल्याये-यीये चली आई है, उसे शान्त करके जसतक घर बापल नहीं ले आ सखती तबतक मुझे शान्ति कहा बेटी ?”

बन्दना कुच्छित्त हैली हँसके बोली—“कैसे जाना कि मैं नाराज होकर चली आई हूँ ?”

दयामयीने कहा—“पहसे तुम्हें बड़के-बासे ही, मेरी तरह उन्हें पाल-पेसकर बड़ा करो, तब अपने आप ही समझ जायोगी कि बड़कीक नाराज होनेपर मैं कैसे जान जाती है।”

यह बात उन्होंने ऐसी मिठावके साथ कही कि बन्दनाने फिर कोई जबाब न देकर छकके उनके पोंब छू लिये। फिर लड़े होकर कहा—“बापूजीकी

लचीलत लपक हो गई है मैं ।”

“तभीपत लपक ! क्यों, क्या हुआ उन्हें ?”

“पॉलमें थोड़ा लग आनेके कइसे लाइपर पड़े हैं, उठ नहीं सकते ।”—बह
कइसे हुए उठने दुर्घटनाका कारण कह सुनाया ।

इषामयी ध्वस्त हो उठी—“इश्मकमें किसी तरहकी त्रुटि तो नहीं हुई ?
पहले तो मर, किंतु कममें तुम्हारे पिताजी हैं, मुझे छे पको वहाँ । परमे उन्हें
देख आऊँ, पीछे वृत्त काम ।” इतना कहकर वे ललीके साम बन्दनाके पीछे-
पीछे ऊपर आकर राध लाइकके कमरेमें पहुँची । आठ उनके पीछेमें बिछोर बर्
न था इन ओगोंको देखकर बिलरपर उठ बैठे और नमस्कारादि किया ।
इषामयीने हाथ उठाकर प्रति-नमस्कार किया और ईतते हुए कहा—“म्वार्यकी
साँव, रोग कैसे हुआ मी, कहीं पुत पड़े वे ?”

लली और बन्दना दोनोंने वृत्त तरफ मुँह कर लिये । राध-साइव निरौह
आइसी ट्यरे, प्रसिवाइके स्तरमें समझाने ल्यो कि कहीं पुत पड़नेके कारण नहीं,
बसिक स्टेसनके मेडिअरमेंर बिसाकनूर यह दुर्घति हुए है ।

इषामयीने ईतते हुए कहा—“ओ हाता था तो हो बुझ, अब रहिए कुछ
दिन म्दकियोंके बुझे घरमें बन्द । एक लइकीसे शासन करते न बने, इतकिय
में हुलीको भी पलाट आई है ‘म्वार्य साँव’ । दोनों बड़ी पारी-पारीसे कुछ
दिन सेवा करेंगी ।”

राध साइवने “तीरर बिसास कर किया और इत अनुग्रह और लहानुभूतिके
लिय बहुत कन्यवाद किया ।

‘ फिर मिर्झगी,—आऊँ, लप हाथ-पैर को आऊँ ।”—कहकर इषामयी
उन्से किया होके अपने कमरेमें बस्यी गई ।

वृत्त ओवरमें आ पहुँचा हिम्बास और उलझ मलीका बासुदेव । ललीके
लइकेके बन्दना उत दिन देख नहीं पाई थी । बह का पाटझाकमें और उलझी
पुठी होनेसे पहले ही बन्दना कहति पस्यी आई थी । दादीको ओइके बाद राध
नहीं, इन्हीसे लप माया है और उन्हीके लप बह पर बस्यी व्यवसा ।

आइके परिवन कर इनेर बासुदेवने बन्दनाका पायागन किया ।
बन्दनाके पीछेमें ल्ये देखकर बह मन ही मन बिसिठ लो हुआ, पर कुछ शीक्य
नहीं । आठ-सी ललका लइका है, पर बन्दना लप है ।

बन्दनाने उसे स्नेहके साथ छातीसे लगा लिया और कहा—“मुझे पहचान नहीं सके वास् ?”

“पहचान तो सिवा मौसीजी ।”

“पर तुम तो ठब लौं-लौं साइके ये बेग —याद कैसे रख सक !”

“फिर मी याद है मौसीजी,—तुम्ह देखते ही पहचान गया था । हमारे यहाँसे तुम गुस्सा होकर पत्नी भाई । मैं पाठशाळासे पर लौटा, तो तुम यहाँ थी नहीं ।”

“गुस्सा होके पत्नी भाई, यह तुमने किससे सुना !”

“बाबाजी कह रहे थे दादोजीसे ।”

बन्दनाने द्विजदासको भार देकर पूछा—‘गुस्सा होनेकी बात आपने मी कैसे खानी !’

द्विजदासने कहा—“किई मैं ही नहीं पर-मरके जानते हैं । और फिर, आपने छिपानेको कोई विशेष प्रेश भी नहीं की ।”

बन्दनाने कहा—“तब मेरे गुस्सा होनेको हो बात जानते हैं, उसका कारण क्या, तो मी काइ जानता है !”

द्विजदासने कहा—“मह न जानें, मर मैं जानता हूँ । राम-साहबको अलग देखिएपर बिम्बबा गया था इसलिये ।”

बन्दनाने कहा—“कारण यदि वही हो, तो मेरे गुस्सा होनेको आप उचित समझते हैं !”

द्विजदासने कहा—“हाँ समझता हूँ । यद्यपि उन व्येगोंके लिये मी और कोई उपय नहीँ था ।”

“आप मेरे पिताजीके साथ बैठके ला सकते हैं !”

“ला सकता हूँ । पर मर-साहबका मना कर देनेपर नहीं ला सकता ।”

“नहीं ला सकते ! मगर क्या आप समझते हैं कि आपको मना करनेका अधिकार मर साहबको है !”

द्विजदासने कहा—“यह उनकी बात है, मेरी नहीं । मेरे लिये मर साहबकी धाशा न मानना, अनुचित है ।”

बन्दनाने कहा—“जिते आप कठम्य समझते हैं क्या उसे पाबन करनेका कारण आपमें नहीं है !”

तवीरत लयब हो गई है मी ।”

“तवीरत लयब ! कहीं, क्या हुआ उन्हें ।”

“पॉइमें बोट बग आनेसे कलसे ल्याटपर पड़े हैं, उठ नहीं सकते ।”—यह करते हुए उठने दुर्पटनाका कारण कह मुनावा ।

इसामयी ध्यस्त हो उठीं—“इन्धनमें किसी छत्रकी सुविधा तो नहीं हुई ! बड़ी तो बग किच कमरेमें तुम्हारे पिताजी हैं मुझे से पत्नी नहीं । परसे उन्हें देख भाऊँ, पीछे वृत्तय काम ।” इतना कहकर ही सतीके साथ बन्धनाके पीछे-पंछे ऊपर जाकर राव साहबके कमरेमें पहुँचीं । आब उनके पॉइमें विद्येय दरं न था, इन बोग्येकी देखकर बिलतरपर उठ बैठे और नमस्कारादि किया । इसामयीने हाथ ठट्टाकर प्रथि-नमस्कार किया और ईसते हुए कहा—“बगारबी साँब, यत कैते तुहवा बी, कहीं पुस पड़े थे ।”

सती और बन्धना दोनोंने वृत्तये तरफ मुँह फेर लिये । राव-साहब निरीह आदमी त्वरे, प्रथिवादके त्वरमें समझाने बगे कि कहीं पुस पड़नेके कारण नहीं, बॉइक खेचनक प्सेइफार्मेर किनाकसूर यह दुगति हुए है ।

इसामयीने ईसते हुए कहा—‘बो हाना बा सी हो पुस, अब रहिए कुछ दिन बड़कियोंके पुम्मे परमें बन्द । एक बड़किये घासन करते न बने, इतकिये मैं इनकीको मी पसाट कर ई ‘भार्स साँब ! दोनों बनी पायी-पायीते कुछ दिन सेवा करेंगी ।’

राव साहबने इसीपर बिश्वास कर लिया, और इस अनुग्रह और सहायभूतिके लिये बहुत सम्पबाद दिया ।

“धिर मिर्खी,—भाऊँ, बग हाथ-पैर बो भाऊँ ।”—कहकर इसामयी उनसे किया होके अपने कमरेमें बधी गई ।

पूरा मोडरमें मा बनुंका द्विब्युत और उठका मतीबा बासुरेय । सतीके रुद्धकेभी बन्धना उठ बिन देख नहीं पाई मी । वह था प्यन्ठाक्यमें और उठकी सुठी होनेसे पहले ही बन्धना बहसि बन्धी भाई थी । रादीकी जोडके बासू रात नहीं, इतीसे साथ आवा है और उठीके साथ बर पर बधा ब्ययमा ।

काकाके परिवर बग देनेम बासुरेयने बन्धनाका पाब्यासन किया । बन्धनाके पॉइमें बने देखकर वह मन ही मन बिस्मित तो हुआ, पर कुछ बोला नहीं । भाठ-नी ताबका बड़का है, पर बानठा तब है ।

बन्दनाने उसे स्नेहक छाप छातीसे छग्य किया और कहा—“मुझे पहचान नहीं सके बाबू !”

“पहचान तो लिबा मीसीजी ।”

“पर तुम तो तब पौंच-सै सामके थे बेटा —याद कैसे रख सक !”

‘ फिर भी बाबू है मीसीजी,—तुम्हें देखते ही पहचान गया था । हमारे पहोंस तुम गुस्सा होकर बन्धी आरं । मैं पाटशाह्यसे पर डौड्य, छे तुम बहाँ थी नहीं ।”

“गुस्ता होक बन्धी आरं, यह तुमने किससे सुना !”

“जाबा भी कर रहे थे दाबोन्देसे ।”

बन्दनाने द्विबदासजी आर देखकर पूछ—“गुस्ता होनेकी बात आपने मी कैसे जानी !”

द्विबदासने कहा—“शिरुं मैं ही नहीं, पर मरके जानते हैं । और फिर, आपने छिपानेको कोई विशेष चेरा मी नहीं की ।”

बन्दनाने कहा—“सब मेरे गुस्ता होनेकी ही बात जानते हैं, उधका कारण क्या, तो मी काइ जानता है !”

द्विबदासने कहा—“मब न जानं, पर मैं जानता हूँ । राय-साहबको अकग देबिलपर क्रियाया गया था इसकिय ।”

बन्दनाने कहा—“कारण यदि मही हो, तो मेरे गुस्ता होनेको आप उचित समझते हैं !”

द्विबदासने कहा—“हाँ समझता हूँ । मद्यपि उन लोगोके किय मी और कोई उपाब नरी या ।”

“आप मेरे पिताजीके साथ बैठके ला सकते हैं !”

“ला सकता हूँ । पर भाइ-साहबके मना कर देनेपर नहीं ला सकता ।”

“नहीं क्या सकते ? मगर क्या आप समझते हैं कि आपको मना करनेका अधिकर भाइ साहबका है !”

द्विबदासने कहा—“यह उनको बात है, मेरी नहीं । मेरे किय भाइ साहबकी आज्ञा न मानना, अनुचित है ।”

बन्दनाने कहा—“जिसे आप कठम्य समझते हैं क्या उसे पालन करनेका साहस आपमें नहीं है !”

द्विजराज लज-भर चुप रहकर कहने लगा—“देखिए, यह टीका साहस-
असाहसिक विषय नहीं। स्वभावतः मैं डरपोक आदमी नहीं हूँ, किन्तु मार्ल
साहबके प्रकट नियेन्की शक्ता करनेकी बात मैं साह ही नहीं करता।
बचपनमें पिताजीकी बहुतेरी बातें मैंने नहीं सुनीं, दण्ड भी न पाया हो सो बात
नहीं, पर मार्ल-साहब अन्य प्रकृतिक आदमी है,—“नकी कोई कमी ठपेछा
वहीं करता।”

“ठपेछा करनेसे क्या होता है।”

“क्या होता है तो मैं नहीं जानता; पर हमारे परिवारमें यह प्रश्न आस-
सक नहीं उठता।”

बन्दनाने कहा—“बीबीकी पिढियोंसे मुझे मालूम हुआ है कि देशके लिए
आप बहुत-बहुत किया करता है, जो कि मार्ल साहबकी इच्छाके विरुद्ध होता है।
तो सब कैसे।”

द्विजराजनने कहा—“उनकी इच्छाके विरुद्ध होनेपर भी उनके नियेन्के
विरुद्ध नहीं है वह। यदि होता तो फिर मूतसे नहीं होता।”

बन्दना दाँतोंन भिन्न हुआ रही, फिर बोली—“बीबीकी पिढियोंपरसे जैसा
आपको समझा था जैसे भाप नहीं है। अब उन्हे मैं मरोछा दे सकती हूँ कि
उन लोगोंके लिए डरकी शर्त बाग नहीं। आपके स्वदेश-सेवाके अभिनयसे
मुम्बई न्यायदानकी विपुल समर्थनसे एक कब भी मुकदमान नहीं होनेका।
इससे बीबी निश्चिन्त हो सकेंगी।”

द्विजराजनने हँसते हुए कहा—“बीबीका मुकदमान होता रहे, यही चाहती है
क्या भाप।”

बन्दना संकटमें पड़कर बोली—“बाह,—तो क्यों चाहने लगी। मैं चाहती
हूँ इन लोगोंका डर मिट जाय,—सब निमग्न हो जायें।”

द्विजराजनने कहा—“आप यिन्ना न कीजिए, वे सब निर्भव ही हैं। कमसे
कम मार्ल-साहबके सम्पर्कमें वह बात बेबइक कही जा सकती है कि वे डर भय
नामकी किसी शीशको आसक्तक जानते ही नहीं। यह उनकी प्रकृतिके विरुद्ध है।

बन्दनाने हँसते हुए कहा—“इसके मानो यह कि मय-बलुओ सम्पूर्ण रूपसे
आप ही भोगोंने बाँट बिबा है उनक दिलेमें यह क्या भी नहीं पड़ी, यही तो।”

सुनकर द्विजराजनने भी हँस दिया, बोला—“है तो बहुत-बहुत देछा ही; मगर

फिर भी आपको बचिस नहीं रखा जायगा, मामूली जो कुछ बचा-खुचा है, वह आपको भी मिल जायगा। तीन-चार दिनसे एक छाप रह रही है, अभी तक उन्हें पहचान न सकीं ?”

बन्दनाने कहा—“नहीं। आपके जरिये उन्हें पहचानना सील टैंगी, इसी उम्मीदमें हूँ।”

द्विजदासने कहा—“वो परम पाठ बीजिए। इन गूँथोंको खोज डालिए।”

इतनमें नौकरने आकर कहा—“माँ आप बागोंको ठहर हुआ रही हैं।”

बचते बचते बन्दनाने पूछा—“अचानक मा क्यों बची आई ?”

द्विजदासने कहा—“पहली रात, कैलास यात्राके बारेमें मामिनीसे सम्बन्ध करना। दूसरी रात, आपको बरहमपुर वापस ले जाना। देखिए, कहीं ‘ना’ न कह बैठिएगा।”

बन्दनाने कहा—“अच्छा, बही होगा।”

द्विजदासने कहा—“माँके सामने आपको ‘मिस राव’ नहीं कहा जा सकेगा। आप मुझसे उमरमें छोटी हैं और भाभीकी छोटी बहन भी हैं, दिखावा आपको मैं नाम दिया करूँगा। कहीं नायब हाकर फिर कोई वृत्ता उपद्रव न कर बैठिएगा।”

बन्दनाने इसके कहा—“नहीं, नायब क्यों होने लगी। आप मेरा नाम लेकर पुकार करे। पर मैं आपको क्या कहा करूँ ?”

द्विजदासने कहा—“मुझे दिखू कहा कर। पर भाई साहबको आपको ‘मुसली साहब’ कहना नहीं सोइता। आप उन्हें बड़-बाबू या श्रीम-साहब कहा बीजिए। यह हुआ आपको वृत्त पाठ।”

“क्यों ?”

द्विजदासने कहा—“तक करनेमें सीला नहीं जा सकेता, मान लेना पड़ता है। पाठ बाद हो जानेपर इतका कारण बतल दूँगा पर अभी नहीं।”

बन्दनाने कहा—“इससे मुम्बई-साहब सेकिन सुर हैयन होय ?”

द्विजदासने कहा—“हाँ, उसमें कोई मुकदान नहीं। पर माँ और मामी बगैर यह बहुत सुर होगी। वास्तवमें इसको बरत है।”

“अच्छा ऐसा ही होगा।”

धीनके एक दिनारे खुले दरवारकर बन्दना दयामयीके कमरेमें जा पहुँची। पीछे-पीछे गये द्विजदास और वास्तविक। दयामयी ड्रंक खोकर कुछ कर रही

श्री और पास लड़ी दूरं अग्रयण शायद पर-परस्त्रीका विवरण दे रही थी ।
 ब्रह्ममीने बन्दनाकी तरफ मुँह उठाकर देखा और किना किसी भूमिकाके
 स्वाम्यविक्रम स्वर्गमें पूछा—“तुम कहा-भो श्री बेटी !”

“हाँ माँ, महा मी !”

“तो एक बार रत्नोईमें-आओ बेटी । इतने आश्चर्योंके लिए महाशयने
 क्या इतनाम किना होगा माहूम नहीं,—मैं तो संघ्या-पूजा करके आ रही हूँ ।”

बन्दना खुप हो उनकी तरफ देखती रही, पर उन्होंने उठकी तरफ देखा
 तक नहीं, बोली—“द्विबली तपीवत ठीक नहीं है, समझे वह कुछ सा-पीकर नहीं
 भापा है । उनका खाना क्या बस्ती हो जाता आदिप बेटी ।” इतना कहकर
 वे अन्नकाको साथ ले पूजा-भरकी ओर चले गयीं, बन्दनाके उत्तरके लिए उठती
 मी नहीं ।

बन्दनाने द्विबलाके पूछा—“क्या तपीवत खपव है !”

द्विबलाउने कहा—“अप मामूली हररत-ती है ।”

“क्या आरोगे इस तक !”

द्विबलाउने कहा—“छानू-बानीके सिवा ओ भी कुछ रं, ओ ।”

बन्दनाने पूछा—“रत्नोईपरमें आठ तो सही, पर पीछे कोई गड़बड़ी तो
 न होगी !”

द्विबलाउने कहा—“नहीं । अन्नदा-बीबीने शायद देता ही परिश्रम दिया
 है आशका । उनकी बात माँ इयमिब नहीं दाक सफर्या—बहुत आरुटी है उन्हें ।
 ‘श्लेष’का अस्वाद शायद मिर गया ।”

बन्दना कुछ देर खुप रही, फिर बोली—“बड़े आश्चर्यकी बात है ।”

द्विबलाउने स्वीकार करते हुए कहा—“हाँ । इस दरमियान आपने क्या
 किया है, अन्नदा बीबीने माँसे क्या-क्या कहा है, मुझे नहीं मालूम, किन्तु
 आश्चर्य आपसे क्याका हुआ है खुद मुझका । लेकिन अब देर मत कोबिए,
 आइए, खान-पीनेका इतनाम काबिए । फिर मेट होमी ।” और, इसके बाद
 दोनों माँके कमरेसे बाहर हा गये ।

हैं, स्वयं दयामयीको भी बिशेष उल्लाह नहीं रह गया फिर भी, कलकत्तेमें उनके पाँच-छा दिन कट गये—अभिनेश्वर काशीबाब और गंगास्नान करनेमें। कामके आदमीपर ही कामका मार पड़ता है; इस परका प्रायः साराका साथ तानित्व आ पड़ा है बन्दनाक ऊपर। सती कुछ भी नहीं करती, सब कामोंमें बहनको आगे बढ़ा देती है और खुद सासक साथ घूँसी रहती है। फिर भी कहीं बाहर जानेको होती है तो उसे पुकारकर कहती है, “बन्दना, आ न बहन हम लोगोंके साथ तेरे साथ रहनेसे किसीसे खेरे बात पूछनी नहीं पड़ती।”

विप्रदासका भी आब-कट करते-करते पर गना नहीं हो रहा है; मर्ग बार बार यही कह दिया करती है कि विपिनक पसे जानेसे उन्हें पर कौन छे ध्येगा ! उस दिन शामका वे ‘मिक्टोरिया-मेमोरियस’ रेलके पास आईं तो विप्रदासको बुलाकर उसेबनाके साथ उन्होंने कहा—‘विपिन, तू कुछ मा क्यों न कर, पढ़ी-लिखी लड़कियोंका रंग-रंग ही अकबरा हाता है।’

विप्रदास समझ गये कि यह बन्दनाकी बात है।

उन्होंने पूछा—“क्या हुआ माँ ?”

दयामयीने कहा—“क्या हुआ ! आज एक बू मारी शक-मुँहक लार्जन्टने आकर गाड़ी रोक दी। माम्मसे बन्दना साथ थी, उसने भेंप्रेजीमें दो-चार बातें समझकर कही तो साहयने उठी बल गाड़ी छोड़ दी। नहीं तो क्या होता बता छे ! या तो आसानीसे छोड़ता नहीं, नहीं तो पानेवक लीप छे आता,—कैसी मुसीबत होती ! तेरा नया पचाबी ड्रायवर है बिलकुल जानवर।”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—“क्या किया या तुम लोगोंने,—गढ़ी किसीसे उकर गइ थी क्या ?”

बन्दना आकर लड़ी हो गई। दयामयीने गरदन दिखाकर उसका समर्पण करते हुए उच्छ्वसित कण्ठसे कहा—“तुम्हारी ही बात मैं विपिनसे कह रही थी बेटी,—पढ़ी-लिखी लड़कियोंका रंग ही कुछ भार होता है। तुम साथ न रहती तो सबक सब कैसी आघतमें पड़ते ! पर साथ दोष या उसी मेमका। बकाना जानती नहीं, फिर भी चलाएगी। जानती नहीं—ठा म्मे बहादुरी दिव्यएगी।”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—“पढ़ी-लिखी लड़कियोंका रंग ही ऐसा होता है माँ। यह मेम बरुर पढ़ी-लिखी होगी ?”

माँ और बन्दना दोनों ही हँस दीं। बन्दनाने कहा—“मुसबी साहब, यह

मेम-साहबका दोष या पदाह निकारका नहीं। मैं, मैं जब रतोरूपरका बकर क्या भाऊ। कम दिनू-बाबूके लिए मोटे भाटेकी रोटी महायज्ञने जब कही कर डाली थी, ये टीकते ला नहीं सके थे।” —इतना कहकर वह चले गई।

दयामयी स्नेहकी दृष्टिसे ठरककी तरह क्षण-भर देखती रही, फिर बोली—
“तब तरक निगाह है। कड़की किण पदी-किण्ठी ही नहीं निपिन, ऐसा काम नहीं जो यह जानती न हो। और बातचीत भी उठनी ही मीठी। काम सौकर निर्मित हो आओ,—पर-गिरखोका फिर कुछ भी देखनेकी जरूरत नहीं।”

विप्रदासने कहा—“भेष्य समझके भव हुआ तो नहीं करती माँ।”

दयामयीने कहा—“तेरी तो बही एक बात। मला भेष्य क्यों होने लगी,—उसकी माँ एक बार विनयवत गई थी, इससे बीगौने मेम-साहब कहकर उसकी बपनामी उड़ा दी। नहीं तो हमारी ही तरह बंगाली-भरकी कड़की है। बन्दना खुले पहनती है,—तो पहनने को। विवेकमें ऐसे तो सभी पहना करती हैं। शोगके सामने निकलती हैं—तो इसमें क्या दोष है। बर्गमें तो पूँवट निकालनेका रिवाज ही नहीं है,—इसीसे, बचपनसे जैसा छाँसा है वैसा ही करती है। बैसी मेरी बहू है, पैसी ही वह है। बापके साथ बनी मनेका कदती है—तो मुनके भी न जाने कैसा हो रहा है बेरा।”

विप्रदासने कहा—“न जाने कैसा भी करनेसे कैसे काम चलेगा। बन्दना रहने तो भाइ नहीं,—बातिल दो-चार दिन पाव तो उठे जाना ही पड़गा।”

दयामयीने कहा—“बाबगी लही, पर कड़केकी भी नहीं पारता, हप्ता होती है कि हमेशाके लिए पकड़के रका लूँ।”

विप्रदास क्षण-भर मौन रहकर बाधे—“तो तो बाबुनमें होनेका नहीं माँ,—पराह कड़कीको इतना मठ कड़को। दो चार दिनके लिए भाई है, फली बाबगी—यही अच्छा।” इतना कहकर वह कुछ अन्यमनस्ककी मूर्ति बाहर चला गया।

बात दयामयीके क्यावा पठन नहीं आई। परन्तु यह तो सिर्फ क्षण-भरकी बात थी। बकुरामपुर बीरनेका कोह नाम नहीं देता, उनके दिन उल्लवकी मूर्ति ध्यानन्दसे बीतने लगे—इसने-लेकने, यथाप करने बीर पारो तरह बुझे-फिरनेमें। इसके पहले लवके साथ हात-परिहास करनेमें दयामयीको इतना हलका होते फिलीने भी नहीं देखा—उनके प्रस्तावरवमें मानो कहींपर एक ध्यानका लोटा निरन्तर बह रहा है और उनकी उमर आर प्रकृति-सिद्ध गाम्भीर्यको बीच

बीचमें बहा देना चाहता है। सतीके साथ आमास और इच्छारेमें अकसर उनकी क्या-क्या बातें होती रहती हैं उनका अर्थ सिर्फ सास-बहू ही जान; और भी एक बानी कुछ-कुछ अनुमान करती रहती है, वह है अम्बदा। सक्कीक वैरिस्टर चाहव इतने दिन रहकर कल अपने घर चले गये हैं, उन दोनोंहीका नाम अस्त है, इस बातपर दयामयीने अस्मते अस्त हँसी की थी; आर उनस वचन से लिया था कि बापस पंजाब जाते समय वे उनक घर होते चलेगें—चाहे कल्यामपुर हो चाहे कलकत्ता। राय साहबका पैर अम्बदा हो गया है, आगामी छप्ताह वे बम्बई चले जायेंगे। दयामयीने कुर दरबारमें हाकिम होकर बन्दनाकी कुछ दिनक लिए छुट्टी मगह करा ली है; यानी बन्दना बम्बईके बहले कल्यामपुर आकर कमस कम और भी एक महीने बीबीके पास रह सकगी—इसकी व्यवस्था पक्की हो गई है।

मुल्तियोंके मामले-मुकदमे हार्ड-कोर्टमें लगे ही रहते हैं। एक बह मुकदमे की तारीख पास ही थी, इससे विप्रदासने तय किया कि इस बीचमें घर न आकर ठठ तारीखक ठहरा जाव और फिर सबको साथ लेकर एक साथ घर चला जाव। नाना कार्योंके ठसे हर बह बाहर ही बाहर रहना पड़ता है। आज या रविवार, दयामयीने आकर ईसते हुए कहा—“एक मनेकी बात सुनी है किनि ?”

विप्रदास अदास्तक आगजात देख रहे थे, कुरसी छोड़ उठक लगे हो गये और बोले—“कौन-सी बात मौं ?”

दयामयीने कहा—“दिल्ले कोई एक सगदेकी मीटिंग थी थाव, पुक्ति उठे होने नहीं देना चाहती थी और वे लोग उठे करना ही चाहते थे। छठा कडी फिर-फुटीबल होता ही उसमें, मैं तो डरक मारे मरी—”

“बह मया है करा बहाँ ?”

“नहीं। बही बात था करने आर हूँ तुसे। किसी की भी मनाही सुन नहीं रहा था, परंतक कि अपनी भयभीती भी नहीं—अन्तमें बन्दनाकी बात उठे माननी पड़ी।”

सब्र चाहे कितनी ही मज्जेदार कैसे न हो, उसने सौकी सुपरिन्सिड मबादामें माना करी अरा पोट पहुँचाइ। विप्रदासने, मन ही मन विस्मित होनेपर भी, ईसते कहा—“क्या सबमुब ?”

दयामयीने ईसकर अबाव दिया—“देननेमें ता पही आया। कब न-जाने

उन दोनोंमें छतें हुई थी कि वहाँ रहकर एक बनी तो बूने नहीं पहनेंगी, आम-बकलमें इन परके निबम नहीं तोड़ेंगी और ठठक बरसे वृत्ते एक बानेसे उसका अनुपेक्ष मानकर चम्पू पाड़ेगा। कन्दनाने हिम्मत कम्पेमें आकर सिपै इतना कहा कि हिम्मत शर्त बाद है न! आप आम हरगिज नहीं आ सकेंगे। हिम्मे मजदू करते हुए कहा,—‘अच्छी बात है, न आरुण्य।’ मुनक मेरी तो चिन्ता दूर हो गई (विनि)। क्या करके आता, किम पनादमें फैसला,—‘तुम्हारे बापूजी हैं नहीं, कितना बर बरक उसे डेकर रहती हूँ तो कह नहीं सकती।’

विप्रदास चुप रहे। मैं कहने लगी—‘पहले तो उसके स्कूल-कासेज वा, पढ़ना-लिखना और शक्तिमान पाठ करना वा पर अब तो कुछ बका ही नहीं रही, हाथमें कोई काम न रहनेसे बाहरका कौन-सा संसट कब परतक लीच काएमा कोई नहीं कह सकता। अभीसे सोचा करती हूँ, अन्दमें आकर इतने बड़ बड़का वह एक कष्टक न बन बैठे।’

विप्रदासने हँसत हुए भरदन दिया कहा—‘नहीं माँ, ऐसा बर मत करो। हिम् कलकका काम हरगिज नहीं करेगा।’

मैंने कहा—‘मान लो, अगर आपका केव ही हो गई तो! क्या इतकी आराधना नहीं है!’

विप्रदासने कहा—‘आराधना है, सो तो मामूम है। पर केव जानेमें तो कलक नहीं है माँ कलक है काममें। ऐसा काम वह नहीं करेगा। मान लो खयर मुझे ही कमी केव हो जाय, - हाँ मी तो सचती है,—‘तब क्या मेरे लिए तुम कसिक्त होगी माँ! कहोगी कि विनि हमारे बँसका कलक है!’

इस बातने दयामयीके हृद-सा छेद दिया। क्या मामूम, कोई अस्वर्हित इच्छा तो नहीं है! इत बड़केके उम्होंने छतरीसे लगाकर इतना बड़ा किबा है, और अच्छे तरह जानती थी कि सत्यक लिये—‘धर्मके लिए ऐसा कोई काम नहीं लो विप्रदास न कर सकता हो। अन्यायका प्रतिबाद करनेमें किसी किरुत या किली पक्षपक्षी वह परबाह महीं करता। बर उसकी सिक्त अत्यय सारुकी उम्ह थी तब एक मुसलमान परिवारका पल डेकर वह अकेला ही ऐसा कस्य कर वेग था कि किते प्राण बनाकर बापस आ सका, वह आबलक दयामयीके लिए रहस्यका व्यापार बना हुआ है। कन्दनाके मुँहसे उठ निनकी

रेल्वी घरना सुनकर ये मारे शंकाके एकबारगी बंग रह गई थीं। दिक्के लिए उन्हें उठेगा रहता है, यह सब है किन्तु भीतर-ही भीतर बहुत ब्याग उर है उन्हें इस बड़े लड़केके लिए। मन ही मन यही बात सोच रही थीं। धिप्रदासने कहा—“क्यों माँ, कलकत्ता बुझिस्ता तो मित गए न। जेल तो अमानक किसी बिन मुझे भी हो सकती है।”

दयामयी सहसा व्याकुल होकर बोल उठी—“यल्लैयों हूँ अपनेकी,—भगवान् बचाएँ, ऐसी कुल्लिखनी बात न निकाल मुँहसे बेदा। उसक बाद ही कहने लगी—जेल होगी तुझे और मेरे बीते ? तो फिर इतनी उमरतक देवी-देवताओंकी पूजा क्या की मैंने ? इतनी समर्पण है किसलिए ? सारीकी सारी आयदाद बेच दूँगी ता मी ऐसा नहीं होने दूँगी बिपिन।”

धिप्रदासने छुटकर उनकी पत्तूकें ली, दयामयीने सहसा उसे अपनी छातीके पास धींचकर कहा—“दिल्लूआ जो हो सो होता रहे, पर तू कभी मेरी आँखोंसे ओझल हुआ तो मैं रीगाबीमें डूब मरूँगी बिपिन। यह मुझसे न सहा ब्यगगा, तो अज रचना।”—कहते-कहते उनकी आँखोंसे कूँ पूँर मांसु पुल्लक पड़े।

“माँ, इस बल क्या ?” कहते-कहते बन्दना वहाँ आ पहुँची। दयामयीने बेटेको छोड़कर आँलें पोंछ डालीं; और बन्दनाके बिरिम्ल चेहरेकी ओर देखकर हँसते हुए कहा—“कड़केको बहुत दिनोंसे छातोसे नहीं मयापा था, इससे अब साथ दुर्द कि मया हूँ।”

बन्दनाने कहा—“सेकिन मैं कह दूँगी तबसे कि बूढ़ा कड़का है।”

दयामयीने प्रतिबाद करत हुए कहा—“तो कह देना, पर बूढ़ा शम्भु मुँहसे न निकलना बेदी। अभी उस बिनकी ता बात ही है, मैं ब्याही हुँ आरं थी और आँगनमें लड़ी ही दुर्द थी। मेरी कुकुआ-सास तब बीठी थीं। बिपिनको उन्होंने मेरी गोदमें शकते हुए कहा था, “यह जो, अपने बड़े बेटेको बहू। काम-काजकी मीड़में बहुत बेरसे कुछ ल्याया-लीया नहीं है इसने,—पहले इसे लिखा-लिखाकर मुला दो, उसक बाद दूसरे काम हाते रहेंगे।” उन्होंने धायद बेसन पारा होगा कि मुझसे हो सकेगा या नहीं,—मखम नहीं हो सका कि नहीं।”—तना कहकर ये फिर हँसने लगीं।

बन्दनाने पूछा—“आपने फिर क्या किया माँ ?”

दयामयीने कहा—“धूपटक भीतरसे देना कि सोनेसे गढ़ा-हुआ

स्त्रियोना है बड़ी-बड़ी मौलौते आशयके साथ मेरी धोर देल रहा है। छातीके कुपटाकर मैं बड़ावे भ्रम लड़ी हुए। आचार अनुग्रह होना तब भी बहुत-सा बाकी था, तब हँ-हँ करके घोर मन्त्रा उठे, पर मैंने एक न सुनी। कर्षा पर है, कर्षा हार, कुछ बानठी न थी,—जो हाली साथ दौड़ी भारी थी उतने पर दिला दिया; उधैसे मैंने कहा, 'ज्य ला मरही, मेरे लक्षणकी वृषकी कटोरी, इसे बिना लिखाये-भिलाय मैं एक कर्म मी नहीं रिखनकी'। उक्त दिन मुहल्ले-पबोतकी औरलौंसे कितोने कहा—'बेहरा है, कितोने कुछ, लेखिन मैंने कितोकी बात जान ही न बरी। मन-ही-मन कहा, करने दो। जित रतनको गोदमें पाया है उठे वो और कोई खिन नहीं लफटा। मेरे उखी ज्यकेको तुम कहती हो कि बूया है।'"

ठीस छाम परसेकी पटना याद आनेसे आसू और हँतीने भिन्नकर उनका बेहरा बन्दनाकी छिमेि अपूर्व बना दिया, अकृषिम स्नेहका सुगमिर व्यत्यय इस तरह अनुभव करनेका सोभाव उठे और कमी नहीं हुआ। अमिभूत इक्षिते बर कुछ हेर बेलती रही और फिर अपनेको रीमाकर उतने हँसते-हँसते कहा—
"माँ, आप अपने ज्यकेमेंसे किते स्यादा प्यार करती हैं, सब-सब बराबर!"

सुनकर दयामयी भी हँस रीं, बोली—
"असम्भव तब होनेपर भी कहना नहीं पाविए बेटी, शास्त्रोंमें उसका मनाई है।"

बन्दना बाहरकी लड़की है, हाक ही उठते परिमत्र हुआ है, उनके छामने परसेकी इन सब बालोंकी अक्षयबना विप्रदासको अच्छी नहीं माख्म हा रही थी उन्होंने कहा—
"बतानेसे भी तुम समझेगी नहीं बन्दना। तुम्हारी कासेककी औपेकी पोषिकोंमें वे सब लम्ब नहीं हैं। उनक साथ मित्राकर साथ करने बैठोगी तो माँकी बात तुम्हें बड़ी अस्मुक्त-सी माख्म देसी। इस आस्नेचनाके खने दो।"

सुनकर बन्दना कुछ न हुई, बोली—
"अमेसे पोषियाँ आपने भी तो कम नहीं फीं मुन्बनी साहज फिर आप कैसे समझ पाते हैं!"

विप्रदासने कहा—
"कौन कहता है कि माँको मैं समझता हूँ बन्दना,—
महाँ समझता। ये सब बार्ठ सिर्फ मेरी माँकी पोषीमें ही लिखी है,—उपकी माप असग है, अक्षर अक्षर है, व्याकरण गा वृन्त है। उठे माँ ही समझती हैं—और कोई नहीं। ऐ माँ, जे तुम करने भारी थी खे खे अमीतक कहा ही नहीं।"

सन्तान समझ गई कि यह इशारा उसीके लिए है। बोधी—“माँ, इस ठाकुर का रसोह बनेगा, पानी में पूछने आई यो,—भर मैं जाती हूँ, पर भाप भी बरा बस्ती आना। सब मूल-मास्कर फिर कर्मी लड़केको गोदमें भिमे न देती रहना।”—तना कहकर वह विप्रदासकी ओर बरा कटाघ करती हुई चली गई।

उसके बड़े बानेपर दयामयीके दोहरेपर बुभित्ताकी छया था पही छप-भर इधर ठपर करके बुभित्ताके स्वरमें उन्होंने कहा—“विभिन, तू तो लूथ धमातमा है, जानता है पिता-माताको कमी खोसा न देना पाहिए—”

विप्रदास पीनहीमें बोल ठठे—“माँ, तुहार है तुम्हारी, इत तरह तुम भूमिका मठ बाँधो। क्या पूछना चाहती हो सो पूछो।”

दयामयीने कहा—“तूने अजानक आज यह बात क्यों कही कि तुसे मी जेठ हो सकतो है? कैवास जानेका संकल्प जमीतक मैंने छोड़ा नहीं सो टीक, पर अब तो मैं एक कदम भी नहीं हिक सकती विभिन।”

विप्रदास हँस पड़े, बोले—“कैवास मेझनेको मैं उहिप्न नहीं माँ, पर उसका दोष अन्तमें मेरे हो सिर न मड़ देना। मैंने तो तिक एक इशारा दिया था—हिक्को पात तुम्हें समझानी चाही थी कि तिक जेठ जानेसे ही किसीके बंधमें कलक नहीं लग सकता।”

दयामयीने सिर हिलते हुए कहा—“इन बातोंसे तू मुसे मुग्धा नहीं दे सकता विभिन। इधर ठपरकी फलतू बात कहनेवाला तू नहीं है—वा तो कुछ कर गुबरा है, या फिर कुछ करनेकी ताब रहा है। मुसे सब सब बता दे।”

विप्रदासने कहा—“तुमसे मैं सब-सब ही कह रहा हूँ, मैंने कुछ नहीं किया। पर मनुष्यके मनमें कितने तरहके विचार आते-जाते हैं उनका क्या कार्र टिक-टोक निर्येध दिया जा सकता है माँ?”

दयामयीने पूबकत् गिर हिलाते हुए कहा—“नहीं यह बात भी नहीं। नहीं तो बात क्या है जो आजकल तुसे देखते ही मेरा मन ऐसा खोपने लगता है? तुसे मैंने पाल-पोसकर बड़ा किया है, मेरे जीते-थी ही अन्तमें जाकर इतनी बड़ी नमकहरामी करेगा बेरा।”—कहते-कहते उनकी दोनों भाँव मर आई।

विप्रदास यही मुमोक्तमें पढ़ गया, बोला—“अमीगलकी कल्पना करके अगर तुम छुटमूठ ही करने लग जाओ माँ, तो मैं उसका क्या प्रतीकार कर सकता हूँ बताओ? तुम वा अनती हो कि तुम्हारी बिना अनुमतिके मैं कमी

को काम नहीं करता ।”

इशामनीने कहा—“नहीं करता तो ठीक है, पर कब दिव्यको बुझकर पर
करी कहा कि वह सब काम-काज संभाल दे ।”

“बड़ा हो गया, अब वह मुझे सहायता न देगा ।”

इशामनीने नाराज होकर कहा—“उसमें शक्ति ही कितनी है । मुझे मुझका
मठ दे विपिन,—तू आज इतना थक गया है कि तुझे छायापटा देनेवाला
बाहिर । तूने मनमें क्या है तो मुझे साफ-साफ बता दे ।”

विप्रवास चुप रहा उसने यह बात भी नहीं कही कि वे स्वयं ही उससे अमी-
अमी दिव्यदासक मन्थनक सम्बन्धमें सोचनेको कह रही थीं । परन्तु इतना
आभास उनकी बावली बातमें मिला । वे कहने लगी—“इसकी यह पुष्पकी
एक ही है, बर्तनका परिवार है, यहाँ अनाचार रहन नहीं होय । हमारा घर
निबन्धकी कश्चियेमें बँधा है । मैंने तेरा स्याह सपना का ही उम्परमें किया था,—
तो तेरी रात बेकर नहीं,—इस लोभके साथ हुए थी इसलिये । पर दिव्य कहता
है, वह स्याह नहीं करेगा । उसने एम ए० पास किया है, उसमें मुझसे भलाई
समझनेकी शक्ति आ गई है उसपर किर्तिका खेर नहीं पक सकता । वह ज़गर
एक ही बनता है उसपर मेरा विश्वास नहीं, वह मेरे लतुरकी मर्मात्तमें हाथ
न लगावे पावे ।”

विप्रवासने पूछा—“दिव्यने कब कहा कि वह स्याह न करेगा ।”

‘अच्छतर कहा करता है । करता है स्याह करनेवासे और भी बहुत
बादमी हैं, वे करे । वह सिर्फ़ देखाका काम करेगा । तुम कोय सोचते हो कि मैं
कदा आकर लूब घूमा-निरा करती हूँ, वह आनन्दमें हूँ । पर मैं आनन्दम नहीं
हूँ, इतपर तैने दे डाका बेकका दृष्टान्त—जैसे मुझे सम्झानेके लिये और कोर
दृष्टान्त ही ठरे पाठ न था । एक दिन मेरुन तुझे पता मग आबगा विपिन—”

विप्रदासने कहा—“उसकी म्यमीको हुसम देनेको करो न माँ ।”

“उसकी बात भी वह न सुनेगा ।”

“सुनेगा माँ, सुनेगा । लम्ब होठ ही सुनेगा ।”—द्विर अरु ईसते ईसते
बोधा—“और अगर तुझे आरा हो तो मैं भी उसके लिये पायी हूँ उकता हूँ ।”

इतनेमें कन्दना कम्पेके अन्दर चली आई और शिवायतक स्वरमें बोली—
“कहाँ, आर तो नहीं माँ । मैं कबसे बेठी हूँ ।”

“खलो बेटी मैं आ रही हूँ।”

विप्रदासने कहा—“अग्ने अशय-भाबूकी उस लड़कीकी तुम्हें बाद है मौं ! अब वह बड़ी हो गई है। जैसा रूप है, गुणोंमें भी बेसी हो है। हम लोगोंने क्षिय वह पर अपने ही घर-जैसा है, कहां तो लड़की देल आर्क, बातचीत करके ! मेरा तो विश्वास है दिवको वह नापसन्द न होगी।”

“नहीं नहीं अभी रहने दे।”—कहकर वरामयीने फल-मरके लिए एक बार बन्दनाके मुँहकी ओर देला, फिर कहा—“सठीकी इच्छा है,—नहीं,—नहीं बिपिन, बहुते पुछे कौर तुझे अभी कुछ करने परनेकी बन्द्यत नहीं।”

अब बन्दनाने बात की। अपनी सुन्दर और शान्त दृष्टिसे दोनोंकी तरफ देखकर कहा—“इसमें हर्क ही क्या है मौं ! यहीं तो है कलकत्तेमें, पक्षिय न बीबीका छेकर, हम लोग खसके देल आवें।”

मुनकर वरामयी मुसीबतमें पड़ गई; क्या अभाव हैं उन्हें कुछ हँसि न मिला। विप्रदासने कहा—“यह अल्प्य प्रत्याप है मौं। अशयभाबू स्वर्णनिष्ठ

ब्राह्मण पण्डित हैं, संस्कुतक सम्पायक है। लड़कीको उन्होंने स्कूट-कासेबनी पढ़ाकर दो पास नहीं करवाया, पर अतनसे उठे सिखाया बहुत-कुछ है। एक दिन उन लोगोंके यहां मेरा निमन्त्रण था। उस दिन मैंने उस लड़कीसे बहुत-सी बातें पूछी थीं। ऐसा लगा कि आपने जो मनकी सापसे लड़कीका नाम रला था मैंनेभी, सो असायक नहीं हुआ। आधो मौं, आकर एक बार उठे देल आओ,—तुम्हारी बड़ी बहुत कमसे कम मनमें या स्वीकार करंगी कि उनके विवा भी सगारमें सम्पत्ती लड़कीका है।”

माने हँसना चाहा, पर हँसो भाइ नहीं, और न मुँहसे कोई बात ही निकली। बन्दनाने फिरसे अनुप्रेष किया—“बक्षिय न मौं, हम लोग खसके मेरेयोको देल आवें एक बार ! गंगा बुर भी लो नहीं है।”

वरामयीने बन्दनाकी ओर गौरसे देला, देला कि उठके खेदरेपर परमेका सा वह आबन्ध नहीं रहा—मानो किसी लखाने आकर उठे टक दिया है। अब, इतनी देर बाद उन्हें अभाव हँसि मिला गया, बोली—“नहीं बेटी, बुर ब्यादा नरो है जो तो मायूम है, पर, उठना समझ भी मेरे पास नहीं है। बसो, हम लोग खसके, इस ठाक क्या-क्या रतोई बनेगी जो देखें पटक।”—इतना कहकर बन्दनाका हाथ पफड़के से कमरेसे बाहर खस्ये गई।

संभ्या-बन्धन समाप्त करके विप्रवास धामी-आमी अपनी ब्याहरीमें धाकर बैठे हैं। सबकी डाकसे जो वस्तावेज बगीच बरान्ती कागजात परसे आये हैं उनका देखना खरी है। इतनेमें मीने आकर कहा—“क्यों रे विप्रिन, तू क्या हर एक बातको पढ़ाकर ही कह सकता है ?”

विप्रवास कुरसीसे उठकर लड़ा हो गया, बोला—“कोन-सी बात मों ?”

“असम बाबुकी लड़की मैत्रेयीको हम लोग देख आई हैं।”

“लड़की क्या सुती है ?”

वधामयी क्या इतलतल करके बोली—“सही, सुती मैं नहीं बताती,— साधारणतः ऐसी लड़की देखनेमें नहीं आती, यह ठीक है;—सर्वकन तैने क्या समझकर मेरी लड़ी बहूमें उलझी तुम्हना की बता तो ! सैर, लड़की बात मी खाने के समयें क्या बन्धनाक आगे भी यह रिफ़ सकता है !”

विप्रवास आश्चर्यमें आकर बोले—“तब सायद तुम लोग और किसीको देख आई होगी। वह मैत्रेयी नहीं होगी।”

वधामयीने ईलते हुए कहा—“है तो नहीं। हम लोगोंके साथ-साथ उलझी कितनी बातें हुईं जैसे-जैसे कलनसे उसने बहू बगीचको लिम्बाया-रिम्बाया — उसके बाद कितनी कितानें, कितनी पढ़ाई-लिखाईको बातें बन्धनाके साथ उलझी होती रही,—और तू करता है कि हम लोग और किसीको देख आई हैं !”

विप्रवासने कहा—“बन्धनाके लव सचाईका सायद वह अबाध न दे लकी होगी, परन्तु मों यह भी तो खेचो कि पढ़ाई-लिखाईमें बन्धनाने स्कूल-काधे-जयें कितनी कितानें पढ़के कितनी परीक्षाएँ पास की हैं, और उसने लिख बापसे ही लव-कुल लीला है। देख लमहो कैसा मेरे साथ तुम्हारे छोटे बेटेमें कई है।”

तुनके वधामयीकी लोभों मीने मारे कौतुकक नाच उठीं बोली—“बुप रह विप्रिन, तू बुप रह। दिखू बगलक कमरेमें है, तुन कैसा तो मारे धर्मके पर लोहक भाग आबगा।”—फिर क्या डककर कहने लगी—“देटी मां मूरल है लो क्या इतनी मूरल है कि कामेजमें पाठ करनेको ही लपुर्ण मान लेटेगी। लो बात नहीं है रे, बसिक छोटे छोटे बाक्योंमें मोटे तीरसे उसने बन्धनाकी लमी बाथोंका अबाध दिबा था। गाड़ीमें आते हुए बन्धनाने उलझी कितनी लारिक

की थी। पर मेरा कहना है कि हमारे जैसे रहस्य-भरनेमें बरकरत क्या है बेदा, इतनी पढ़ी-लिखीकी ! जैसी मेरी एक बहू भारी है, दूसरी वैसी ही का काम, तो काम बल बायगा। नहीं तो विद्या के समझते वह यदि कहीं बड़-बूढ़ोंको कुछ समझने लगे ! यह नहीं होनेका !”

विप्रवास समझ गया कि बिरहका जवाब मोंते बन नहीं रहा है, गड़बड़ हुआ था रहा है उसने हँसते हुए कहा—“इसका डर मत करो मों। विद्या भिन्नमें कम होती है उन्हींमें ज्यादा समझ होता है, उसने बापसे अगर लचमुच ही कुछ सीखा हो तो आधार-आधारमें सबका विनय करके ही पढ़ेगी, यह तुम देख लना।”

इस सुझावको मों अस्वीकार न कर सकीं, बोलीं—“यह बात सेरी सच है, पर पहलेसे मासूम कैसे पड़ गया ! इसके सिवा हमारे गैर-गैरमें विद्याको कभी बेसी कोई सीखने नहीं आता, पर बहू देखकर यदि किसीने नाक चढ़ाकर कह दिया कि इत बूढ़ी-डुगारिके क्या आपन न थीं जो ऐसी बहूके पास ऐसी बहू आपके लड़ो कर ही, तो वह मुझसे न सहा बायगा बेदा।”

विप्रवास कुछ देर मौन रहकर बोला—“पर असपबाबूको तो कुछ-न-कुछ ब्याव देना ही पड़ेगा मों। उस दिन उन्हें मरेगा दे भावा या कि मेरी मों शाबद नामन्द न करेगी ?”

मुनके दबामपी बचक हो उठीं, बोलीं—“यह बात न कहता तो ठीक रहता निपिन। सैर, कुछ भी हो, बहूको क्या राय है, परसे मुन लूँ, उतक बाद उन्हें कह देना आ कुछ कहना हो।”

विप्रदातने कहा—‘असपबाबू हमारे लिए कोई गैर नहीं हैं। इतने दिनोंसे परिचय नहीं था, इसीसे बात प्रकाशमें नहीं आर है। लेकिन मैं भारतीयताके लिए भी नहीं करता,—तुम्हने अपने और एक बड़बड़का सब ब्याह किया था, अपनी ही उम्मेके माफिक किया था, और किसीसे पूछने नहीं गई थी। और इस ब्याहके लिए ही मैं इतनी रायें जाननेकी बरकरत पड़ गई मों !”

दबामपी लक्षमें हारकर हँसती हुई बोली—“पर अब जो बूढ़ी हो गई हूँ बेदा, अब और कितने दिन जीऊँगी बता ! फिर हमेशा जिसे साथ रहकर पर गिरल्लो करनी है उसकी बगैर राय लिये कैसे ब्याह करूँ बेदा ! नहीं-नहीं, दो पार राज तू हम लोगोंको विचारनेका समय दे।”—रटना कहकर बेबाहर चली गईं।

बाहर आकर दयामयी अपने कमरेकी ओर न आकर लमबीके कमरेकी तरफ चली गयी। इन कई दिनोंकी परिणतासे बन्दनाके पितासे उनका सम्बन्ध बहुत-कुछ बुर हो गया था। वे प्रायः सुब आ-आकर उनकी लम्ब से खाना करती हैं। शाम बीस चुकी थी, सप्ता-सुषार्म बैठ जानेसे फिर लम्बी उठ न सकी— वह सोचकर वे उनके कमरेमें आ पहुँची—“कैसी तबीयत है—”

उनकी बात पूरी न हो सकी। कमरेके एक तरफ एक सुवर्णन मुक्क बन्दनाके साथ बैठा हुआ गुप्तुप बाँठ कर रहा था; निर्दोष भ्रमेकी पोशाक पहने हुए इस अपरिचित आदमीके अज्ञानके सामने आ पड़नेसे दयामयी लम्बीसे पीछे हटना ही चाहती थी कि उस साहब कह उठे—“कहाँ मागी आ रही हैं ब्यान्की, वह तो अपना मुँह है। इतकी क्या घम ! इसे तो विप्रदास हिम्मासकी तरह अपने लम्बीमें ही समझे। मेरी बीमारीकी लम्ब सुनके मज्जासे मिन्नने आया है। मुँह, वे बन्दनाकी बीमारीका लक्षण है, विप्रदासकी मौ, इन्हें प्रणाम करो।”

सुवर्णनको प्रणाम करनेकी छात्र आदत नहीं है, और उस पोछकसे करना कठिन भी है, उसने पाठ आकर तिर लम्बीके किसी कदर आस्थाका प्रकट कर दिया।

इस लम्बीके साथ दयामयीका सन्तान-सम्बन्ध किस सूत्रसे हुआ, इस बातको लम्बीके लिए साहब कहने लगे—‘इसके साथ और मैं दोनों एक साथ विनाशकमें पड़ते थे तभीसे हम दोनोंमें लम्ब मित्रता हो गई थी। सुधीरने सुद भी विनाशकमें रहकर बहुत-सी विधियाँ हासिल की हैं और अब मज्जासे विनाश विभागमें अच्छी नौकरी कर रहा है। बात हो गई है कि बन्दनाके साथ ब्याह हो जानेपर कुछ दिनकी सुधी लेकर उसके साथ यह तिर विनाशक आया। यहाँ बन्दना चाहे तो लम्बीमें मरती हो जायगी नहीं ता तिर बेलकर हो दोनों साथ ब्योड आयेगे। देखा सुधीर, तुम लोग अगर दखे अगस्त-तिथम्बरमें ही जानेका तब कर सको तो मैं भी न-हो-तो लम्बीके मरनेकी सुधी लेकर पूस जाऊँगा। क्या कहती है लम्बी,—कैसा है न ?’

बन्दनाने कहते धिरे-धीरे कहा—“ठीक क्यों न होगा बापूजी, तुम साथ रहोगे तो अच्छा ही रहेगा।”

साहबने उसकाके साथ कहा—“उसके एक और सुधीता होगा कि तुम लम्बीके ब्याहके बाद भी महीने भरका समय मिल जायगा, किसी तरहकी

जस्टवासी न करनी पड़ेगी । समझ गये न सुधीर !”

इसका सुधीर और बन्दना दोनोंने सिर हिलाकर समपन किया । दयामनीने अब समझ लिया कि झड़का राय साहबका माफी जमाई है । अतएव, वह भी पुत्र-स्थानीय है । दयामनीके हृदयमें सहसा एक मारी उचल पुपल हो गई पर वे विप्रदासकी माँ ठहरीं, बकुरमपुरके स्थातिप्राप्त मूलजी-परिवारकी स्वामिनी, उन्होंने अपनेको समाज लिया और उस झड़कसे पूछ—“सुधीर, तुम्हारा क्या कहना है ?”

सुधीरने कहा—“अभी तो बम्बई समझिए । लेकिन प्यारके मुँहसे सुना था कि दुर्गापुरके रहनेवाले वे हम लोग पर अब वहाँ शाब्द हम लोगोंका कुछ भी नहीं है ।”

“कोन-सा दुर्गापुर ? वर्तमान जियेका ?”

सुधीरने कहा—“हाँ, फिदाजीसे ऐसा ही तो सुना है । कारनाके पास एक कोई छोटा-सा गाँव है, अब तो सुनते हैं कि मैसूरियासे वह निकलकर प्यस हो चुका है ।”

दयामनीने धप-भर मौन रहकर पूछा—“तुम्हारे फिदाजीका नाम क्या है ?”

सुधीरने कहा—“फिदाजीका नाम श्रीरामचंद्र बसु है ।”

दयामनी थोड़ा ठहरी, बोली—“उनका बापका नाम क्या था, हरिहर बसु ?”

प्रश्न सुनकर राय साहबका आश्चर्यान्वित हो गये, बोले—“आप उन लोगोंका जानती हैं क्या ?”

“हाँ, जानती हूँ । दुर्गापुरमें मेरी मनसाक है । बचपनमें मैं अपनी नानीके पास ही रहा करती थी, इसलिए वहाँके प्रायः सभी लोगोंको पहचानती हूँ । इन लोगोंका घर हमारे मुहल्लेहीमें था । पर, अभी तो बात करनेका समय नहीं सुधीर, सम्प्रा-पूजाका देर दूर आ रही है । मगर कुछ लाये पीये बगैर तुम बड़े मत्त खाना, मैं अभी सब टोक कर देनेके लिए कहे देती हूँ ।”

सुधीर इलता हुआ बोला—‘भवतक बाको थोड़ा ही है,—विप्रदास बाबूने पहलेहीसे वह काम निबटवा दिया है ।’

“निबटवा दिया ? अच्छा तो मैं अब जाती हूँ ।” कहकर दयामनी वहाँसे चल दी । बन्दनाकी तरफ एक बार हैजातक नहीं बाततक नहीं को ।

दूसरे दिन लबरे स्नान-आहिक आदिसे निबटकर विप्रदास प्रतिदिनके अम्नातके अनुसार माँकी पदचूँकि सेने उनक कमरेमें पहुँचा तो उतक आश्चर्यका

टिकाना न रहा; देखा कि उनकी आनेकी तैयारी हो रही है, पीज-बख्त बौंधी जा रही है।

“बह क्या माँ, कहीं जा रही हा क्या !”

दयामयाने कहा—‘तू मिला नहीं इतने इत्तबीसे पुछवाकर माखूम किमा कि तावे-नौ बजेकी गाड़ीम आनेसे छामते पहले ही पर पहुँचा जा सकता है। लेकिन परतों तैरे मुकदमेकी तारीख है, तू तो संग जा नहीं सकगा, हिम्मे कर है, बह मुझे पहुँचा आयेगा।’

विप्रदासने मोके चेहरेकी तरफ देखा तो माखूम हुआ, उनकी बौलें ब्यछ हो रही हैं, मुन्ध खुल गया है; देखनेसे माखूम हाता है कि उनके ऊपरसे यानो एक बौंधी-सी बह गई है।

विप्रदासने डरते-डरते पूछा—“अबानक क्या कोई जरुरी काम आ पड़ा मी !”

मौने कहा—“दो दिनके लिए आई थी जाठ-बल दिन बीत गये वहाँ ठाकुरजीकी संवाका क्या हो रहा होगा—माखूम नहीं। पीज-ठे गामे विवाने बार्की थी उनको भी कुछ लखर नहो मिली कि क्या हुआ। बाखुकी पढ़ाई मी बूट रही है,—इतलिय बच देर करना ठीक नहीं लिफिन।”

बह लच है कि ये सब बातें दबावपीके लिए तुच्छ न थीं, किन्तु फिर भी अलग कारण उन्होंने प्रकट नहो किया, विप्रदास इस बातको ताड़ गये और बोले—‘ता भी क्या आब बगैर गये काम न पलेगा माँ !’

“नहीं बेच्य तू मुझे रोक मत। हिम्मेको लाम आनेके लिए कर है; न हो तो बार कोइ हम लोणको पहुँचा आवे।”

“ऐसा ही होगा माँ।”—कहके विप्रदासने उनके पौधोंकी पूछ फिरते बगारें आर वहाँसे चले आवे। अपने लानके कमरमें आकर देखा कि लठी अखन्त ब्यछ है और पात बैठे हुए अमदा ‘लन्देरा’ फल-भूक और बड़केकी वृषका बन्दे (छेये लुटिवा) संभालकर अकबरीमें रख रही है।

लठी माखेर रूपर लीबकर उनके लड़ी हो गई। विप्रदासने कहा—“अप्रदा वाली, बात क्या है, माखूम है !”

“नही मश्या कुछ माँ नहीं माखूम। लबेरे मौने मुझे बुलाकर कहा, बन्दे और बहूको लाने-वीनकी तकलीफ न हो, ये नौ बजेकी गाड़ीसे बर जा रही हैं !”

विप्रदासने सहीसे कारण पूछा तो उसने भी फिर हिचककर बताया कि यह ठ नहीं जानती ।

मुनकर विप्रदास स्तब्ध रह गया । अम्रदा न भी जानती हो पर सासकी ठ यह न जाने, इससे क्यादा आश्चर्यकी बात और क्या हो सकती है ? ये ठ सग पुनचाप लड़े रहे फिर नीचे चले गये; और ठरेगक साथ बही जोखते हुए गये कि यह तो मॉके बिलकुल स्वभाव-बिच्छ बात है । क्या माछम क कौन-सा गहरा कुल ठनके इस विपरीत आचरणक पीछे छिपा रह गया, उसे किसीपर भी उन्होंने प्रकट नहीं किया ।

दयामयी तैयार होकर अब नीच उठती तब भी ट्रेन छूनेमें बहुत वक्त था तन्नु आज उन्हें किसी भी तरह रेर नहीं मुराती मयाना किसी तरह रवाना हो शय तो उनक अंमि बी आये । सामन मारर तैयार है, और एक वृत्ती मोटरमें नीच-बस्त लानकर नौकर बगैर सवार हो चुक है शैग हाथम छिय विप्रदासको माते रैल उन्होंने आश्चर्यके स्वरमें पूछा—“दिगू कहाँ है ?”

विप्रदासने कहा “यह नहीं ज्ञायग मॉ मैं ही तुम्हें पछुंचाने माठा हूँ ।”

“क्यों, यह जानेकी गम्भी नहीं हुआ थायव ?”

विप्रदासने निनवके साथ कहा—“उतक छिय ऐसी बात तुम्हें न कहनी पाछिय मॉ । तुम्हारे हुकम देनेपर अब उतन हुकम-उतुली की है बतानो तो ?”

“सा हो क्या गया ? जाया क्यों नहीं ?”

“मैंने ही जानेका नहीं कहा मॉ !”—इतना कहकर विप्रदास हँसते हुए बोले—“जिब बातके छिय तुम इतनी उछिम हो उठी हो, अपने टाकुरबी—अपनी गायें,—उनकी सखमुप क्या हाणठ हूरें, अपनी आँसुसे रैग जानेके छिय ही मैं जा रहा हू । और कोन बात नहीं मॉ ।”

और कोन समय होगा तो थायव दयामयी कुन मी हँसकर लड़केसे कितनी ही बातें कहती पर इन समय ब चुप रही ।

अम्रदा बन्दनाके कुलान गर भी यह अमी-अमी नहा चोकर पिठाके कम्ममें जा रही थी, अम्रदाक पुकारननर अन्ही अन्ही मोचे उतर आर और बहाँका हरर दलकर हठकुछि-सी हो गर । दयामयीने कहा—“आज हम कोव घर जा रहे हैं बन्दना ।”

“पर ? वहाँ क्या हुआ मॉ ?”

“नहीं, दुभा कुछ भी नहीं। पर दो दिनके लिए आई थी, दस-बारह दिन बीत गये, मक तो नहीं रहा अब सकता। तुम्हारे पिताजीके साथ मैं न हो सकी—उपराध बे उठे नहीं ये—कह देना, मेरी बुद्धि खारि साब याद कर दे। यहाँ हिन्दू रह गया, अथवा है ही, तुम भी हो, देखना उनकी दैत-देवतामें कोई कमी न रहे। अच्छे बहू, अब देर मत करो।”—इतना कहकर बे गाड़ीमें जा बैठी।

सनी पीछे थी, वह पास आकर बहनका हाथ पकड़ते ही रो ली, बोझी—“इस लोग का रही हैं बम्बना।”—इससे ख्याल उसके मुँहसे और कुछ निकल ही नहीं। मौल पौडतो दुर रह गाड़ीमें अपनी सासक पास बैठ गई।

बन्दना लजब-विरमयते निर्बाह लड़ी रह गई,—कैसे परवरकी मूर्ति हो,—अकरमात् वह हो क्या गया।

बाबूने आकर जब उसके पौबीक पास प्रणाम करके कहा—“मैं अब रहा हूँ मौलीकी, तब उसे पीठन्य दुभा कि उसने तो अभीतक किसीको प्रणाम ही नहीं किया। सटपट बाबूके मायेकी खूमकर वह गाड़ीक दरवाजेके पास पहुँची और हाथ बढ़ाकर दबामयी और बीबीके पाँव छुए। सनीने चुपचाप उसके ठोड़ी दुर और मँने अत्युन्न स्वरमें आशीर्वाद दिया, पर क्या कहा तो समझमें न आया। मोटर चल ही।

अप्रदाने कहा—“अबो बीबीखार, अरु अबें।”

उसके स्नेहपूर्ण स्वरसे बन्दना लजित हो उठी, शय मरमें विह्वलताको खोरसे झड़-झड़कर बोझी—“तुम अबो अप्रदान, मैं खरीरका काम कलम करवाकर आती हूँ।” कहकर वह लची तरह लखी गई।

कल शामका ही पाठ दुह थी कि राय साहबके बम्बर खाना हो जानेक लख एक साथ बन्धामपुर पसंने। किन्तु आज उसके अलग अलग नहीं, सुपूर मखियमें किसी दिनके लिए मौलिक आह्वानतक नहीं।

पदे-भर बाद अपने हाथमें चापका सामान छेकर बन्दना अपने पिताके कमरेके पहुँची तो वे अत्यन्त पक्षात्पाके साथ कहने लगे—“म्यानजी बगैर खली गई, लखरे उठ न लका बेयी, छि-छि, म खने उन्होंने क्या समझा होया मनमें।”

बन्दनाने कहा—“बाबूजी, बम्बर कब पसंने।”

पिताने कहा—“तुम्हारी तो बरकरामपुर जानेकी बात थी बेटी, तुम नहीं गईं !”

बड़कीने कहा—“तुम्हें अकेला छोड़कर कैसे जाती बापूजी, तुम जो अभी तक अच्छे नहीं हो सके ।”

“अच्छा तो मैं हो गया बंदी । ध्यानबीको बचन दिया था कि तुम लामोगी । तबो-तो, आठे बत्त में तुम्हें बरकरामपुर छोड़ता जाऊँगा । क्यों बेटी !”

“नहीं बापूजी, धो नहीं होगा । तुम्हें इतनी बुरा सहर में अकेले नहीं करने दूँगी ।”

बड़कीकी बात सुनकर पिता पुनःचित्त निश्चये उसका तिरस्कार करते हुए बोले—“बस पगबी, मुझाकात होनेपर ध्यानबी तेरी ऐसी उड़ाती दुर्ग करेगी, बूरे बापको यह बड़की अपनी धाँसोने भासल नहीं कर सकती । छि-छि—”

“तुम बाब भीभो बापूजी, मैं अभी भार ।”—करकर बन्दना वहाँसे पळ दी ।

१४

संजा भीत पळी थी । बन्दनाने आज शिवदासके कमरेके सामने लड़ी होकर आवाज दी—“एक बार भीतर आ सकती हूँ शिजू बाबू ! भीतरसे आवाज आया—आ सकती हैं । एक बार नहीं, छठ-सहस्र-असंख्य पार आ सकती हैं ।”

बन्दनाने दोनों किनाड़ोंको कुछ इदतक लोचकर भीतर प्रवेश किया और वह कमरेकी सबकी सब वस्तुवाँ लम्पकर लुपे हुए जगलेके पास एक कुरसी लोचकर बैठ गई ।

शिवदासने हाथकी किठाव एक तरफ ओंथी करके रज पी और वह बिस्तरपर उठक बैठ गया; बोला—“क्या हुआ है !”

“क्या पद रहे ये !”

“भूँकी कहानी ।”

“अतिबि बड़ हैं वा भूँकी कहानी !”

“भूँकी कहानी ।”

बन्दना नाकुप होकर बोली—“हर बत्त हँसो-महाक अच्छी नहीं होती । हम लोग आपठ पर ठहरे हुए हैं, इस बातका दोष आपको है !”

शिवदासने कहा—“तुम लाम भरे भार-साहबक अतिपि हो, इस बातका

ज्ञान मुझे पूर्णरूपसे है। और, परके मासिक आदेश दे गये हैं कि तुम शेरोंकी खातिर-ठकन-बहमै अग भी खाभी न रहने पाये। कबगप ही खाभी अग मी न जाने पाठी, अगर इस भूखीकी कहानीने मुझ आत्मविश्मृत कर दिया जित्ते किमित् चौबिस्य हो गया। जिहाअ अतिपिते छमा चाहता हूँ।”

“मेरा हाथ दिन कियनी मुसिककसे बीता है—जानते हैं ?”

“बकर जानता हूँ।”

“अकर जानते हैं ? और फिर भी मतीकारके लिए आपने कोई उपाय न किया ?”

हिजदासने कहा—“न करनेका प्रथम कारण पहले ही निकैरन कर चुका हूँ, दूसरा कारण यह है कि उसका मतीकार करना मेरी शक्तिक बाहरकी बात है।”

“क्यों ?”

“सा मुझे नहीं कहना पारिए।”

बन्दनाने पूछा—“मैं और बीबी इस तरह अज्ञानक दौर क्यों पडी गई ?”

“बीबी आपकी गई हैं प्रबल-प्राधान्त सासुकीके आदेशानुसार अम्यप्य के निशेष हैं।”

“लेकिन मैं क्यों गई ?”

“मैं ही जान।”

“आप नहीं जानते ?”

हिजदासने कहा—“बिनादुक ही नहीं जानता, कहना तो सउ होगा। कारण, मासुने किजित् अलुमान कर किया है और उसका बसिकित् अंग मुझे मी मास हुमा है।”

बन्दनाने कहा—“यह बसिकित् अंग ही आपकी मुझे बताना पड़ेगा।”

हिजदास अग-मर मान रहकर बोला—“तब तो तुमने मुझ पम सफटमें अग रिया बन्दना। क्या उठे तुने बगैर तुम्हाय काम नहीं चल सकता ?”

“नहीं तो नहीं चल सकता। आपकी कहना ही पडगा।”

“न सुनो, तो हल क्या है ?”

बन्दनाने कहा—“वैलिय दिव् बाबू, हम शेरोंमें अरुं हुई थी कि इस परमें आपकी सब बात में तुर्नुये अंग मेरी लव बातें आप तुर्नुये। आप जानते हैं कि आपकी एक मी आशा मैंने उम्बपन नहीं की ?”—कहते-कहते ठककी

मौलें मरी मा रही थीं कि उसने दूसरी ओर देलकर किसी तरह अपनेको रक्षित किया ।

द्विजदासने स्मथित होकर कहा—“विराजुस हो ग्ययकी बात है, इसलिये उसे कहनेकी इच्छा नहीं थी । मैं तुमपर ही ग्यराज होकर खडी गई हूँ, यह ठीक है, मगर नसमें तुम्हाय बय मी हाप नहीं । ताउ दोष मौका अपना ही है । ग्यमीका भी योडा-सा है, कारण मुस सन्देह है कि प्रत्यक्षमें न होनेपर मी परोक्षके पश्यनमें उन्होंने मी साय दिया है । परन्तु सबसे ब्यादा निरपराय है बेबाय द्विजदास कुद ।”

बन्दना अभीरहो उठी, बोली—“कतारुप न बन्दी, पश्यन काहेका य ?”

द्विजदासने कहा—“पश्यन शब्दका प्रयोग शायद उचित न होगा । बात यह है कि माने मन ही मन कर किया या सोनेकी बंकाका बटयाय परन्तु हिसाब की गळीसे बय भाग्यम भावा शून्य, तब उन्हें सारे संसारपर गुस्ता आ गया । ‘गुस्ता’ मं टोक नहीं कहा य सफता, बरिक्त भाशा दूद जानेका शुभ्य अभिप्यन कहना चाहिये ।”

बन्दना बुपबाप उतकी तरह देलवी रही । द्विजदास कहने लगा—“तुम लो ध्यानलो हो कि एक दिन तुमपर उनकी भितनी ही ब्यादा नघरत या बरनि थी, बादमें और एक दिन तुमपर उनका उठना हो गहर स्नेह हो गया । रूप-गुणमें, विद्या बुद्धिमें, काम-काज और दया-म्ययामें तिर्क एक म्यमीके सिवा मौकी दल्लिं कोर मी तुम्हारी मोडका नहीं रहा । किसकी मबाक कि तुम्हें कार स्लेप्ट कर दे । उली बल्ल मो कमर बाँककर प्रमाप्लत करने बैठ बातों कि इतना बड़ी निडाबली भासागतनया शाय मारतबप ईदु म्यरनेपर मी न मिम्येगी ।”—कहते कहत द्विजदास अपने मबाकक आनन्धम ठटाकर हंस पड़ा ।

उतकी वह रंभी बन्दनाका बहुत ही बुरी लगी, फिर मी वह कुद मो हंस पड़ी ।

द्विजदासने कहा—“हंसती क्या हो बन्दना, अलकमें बही लो हा गई है तपक किये भापठ ।”

बन्दनाने कहा—“दसमें भापठकी क्या बात है ?”

द्विजदासने कहा—‘ता द्या पूर्वक भक्त करे । दयामयीके लो पुत्र हूँ— एक श्येड भार दूसरा कनिड । श्येडक प्रति भितनी अगाध भाशा भार मपठा

है, कनिष्ठके प्रति ठठना ही अग्ररिखेम सन्देश और सब है। उनकी धारणा है कि अकर्मव्यवर्तमें सकारण कोई भी कनिष्ठका मुखाभिया नहीं कर सकता। पर, आसिर है तो मैं ही, अपने गर्भमें धारण करके सन्तानको सहजमें उजाड़ति नहीं दे सकती—विहाय मन ही मन पुत्रकी उद्गतिका उग्रय निर्धारण किया कि बन्दनाक कन्धोंपर उसे सुप्रतिष्ठित कर देनेक बाद वे संसार-भङ्गमूर्तिको निर्ममताके साथ पार कर सकगी। परन्तु विवादा विमुक्त थे, अकस्मात् कछ संभ्रा-समय पता लगा कि उसके कन्धोंपर आन नहीं है,—बह आपन्त छोटी नैसा है,—भावाय यह कि दयामयीक समस्त संकल्प, समस्त सज्जन ज्ञानको प्यसा विप्लव करके कोर सुषोत्कन्ध वहाँ परहते ही समास्य है, किसकी मन्दा कि उन्हें उसके मन कर लके।”—कहते-कहते वह फिर एक बार उहाका मरके हंस पड़ा जिससे धारा कमय गूँज उठा।

बन्दना कुछ धन पुत्रपाप उसके मुँहकी ओर देखती रही, फिर बोली—
“आपके इस तरहकी विकट हँसी इसनेका कारण क्या है? मैंको खोम वा निपटा दुर्ग है रहते, या मुद्र आपको घुटकाय सिद्ध गया इससे यह आनन्दो क्या है? कौन-सी बात है?”

हिबदास मुतक्यता हुआ बोध्य—“पद्यि इनमेंसे कोई भी नहीं, फिर भी वह कुत्र करनेमें कोई हर्ष नहीं कि अकस्मात् पदस्पर्शनमें मौ-जननीकी इस वपशापिनी मूर्तिको देखकर एक बहकको हैसियतसे मैंने किञ्चित् निर्मल आनन्द-रसका उपभोग किया है। मगर हाँ, हानि उनकी विशेष कुछ भी न होगी मगर देखने उन्होंने कमसे कम इतनी नसीहत भी हो कि संसारमें बुद्धि नामकी चीज सिर्फ उनकी ही अपनी नहीं है, बल्कि उसपर भोरेंका भी हावा हो सकता है। कारण मुझे न लगी, मार खाहबन्ध भी अगर वे करने पर्व्वकका आम्न्य है देती तो और कुछ हो या न हो, इस कर्ममोगसे उन्हें घुटकाय सिद्ध सकता था। माह साहब और मैं दोनों ही जानते थे कि तुम घुटकी बागूदवा बन् हो, परन्तु प्रप्य-बन्धिरसे आबद्ध हो, विहाय उस व्यवस्थासे अन्वया होना न सम्भव है और न बाँधनीय ही।”

बन्दनाने पूछ—“आप व्यगोंने वह किससे सुना?”

हिबदासने कहा—“तुम्हारे पिताजीसे। पहाँ हम जोगीके आनेक दिन ही राय साहबन तुम जोगीके प्रेम, बाग्दान और धीन होनेवाले विवाहकी मनोर

आलोचनासे हम दोनों माइनोंके पारों कानोंमें सुधा-वर्षण किया था। नहीं नहीं, नाराज मत होओ बन्दना, पिताजी सीधे-साधे निरीह आदमी हैं, चित्तकी प्रकृत्यामें उन्होंने इस सुसंवादको आत्मीय बनौंसे छिया रखनेकी कसूर ही नहीं महसूस की।”

बन्दनाने कुछ देर मौन रहकर पूछा—“इसीलिये क्या मुल्की साहबने मैत्रेयीको देखनेके लिए हम लोगोंको भेजा था ?”

द्विप्रदासने कहा—“तो मुझे ठीक नहीं मासूम। कारण यह साहबके मनकी पूरी बात देवताओंके लिए मी अज्ञात है। फिर इतना जानता हू कि उनके मठसे मैत्रेयी देवी सर्वगुणसंपन्न कन्या हैं। बख्शमपुरके धनी और महामानवीय मुल्की-परिवारके अयोग्य नहीं।”

बन्दनाने पूछा—“मैत्रेयी देवीके सम्बन्धमें आपका क्या अभिमत है ?”

द्विप्रदासने कहा—“इस परमेश्वर प्रसन्न भवैष है। मैं तो तृतीय-पुरुष (यह परसन) हूँ। प्रथम और द्वितीय-पुरुष अर्थात् माँ और भ्रातृ साहब, किसी भी नारीके गलेसे मुझे बाँधेंगे और उछीके कष्टसम्पन्न होकर- मैं परमानन्दसे अटकता रहूँगा। यही इस परकी उनातन रीति है, इसमें परिवर्तन नहीं हो सकता।”

उसके बोलनेके संगपर बन्दना हँस दी, बोली—“और मान लीजिए कि मैत्रेयीके बन्धे से बन्दनाके गलेसे ही आपको बाँध दें तो !”

द्विप्रदासने तकरोरको हाथसे छीकते हुए कहा—“उनकी आशा हुआ है। कुछ राहुन पूज्य पन्द्रको मसजद कर डाला है, न-जाने कहाँसे एक सुधीरचन्द्र उपक पड़ा और उसने प्रासादमें आग लगा दी, द्विप्रदासकी स्वयं-लंका आँसुओंके सामने झलते-झलते भरम हो गई। इस प्रसंगको बन्द करके कन्याणि, इस अमा गीका हृदय विवीच हो आबगा।”

उसको नारद्वीप उकिसे बन्दना फिर एक बार हँस पड़ी, बोली—“छोनेकी लंकाका सर्वका सब तो भरम हुआ नहीं दिख बाबू, अयोध-कानन बच गया है। हृदय विवीच नहीं भी हो सकता है।”

द्विप्रदासने गिर दिखते हुए कहा—“यह हुआ आभातन है। श्रीरामचन्द्रके मग्नमें ओर था, किन्तु मैं तो सबबादिसम्पन्न हतभाम्य द्विप्रदास हूँ। मेरे रम्य अहसमें सारीकी सारी आशा उसके ल्याक हो चुकी है,—कुछ मी बाकी

सही क्या ।”

“नहीं, नहीं दुर्र ।”

“क्या नहीं दुर्र ।”

बन्दनाने और देकर कहा—“कोर्र भी आधा बक्क ल्याऊ नहीं दुर्र । दिव्यास इतनाग्य है तो क्या, बन्दना तो इतनाग्नी नहीं है । मेरे मायको ब्याके लाऊ कर है, ऐसी धाँडि मुझीसे नहीं है । ससारमें किसीके भी नहीं है, आपकी माँक भी नहीं मर्राँ साहबके भी नहीं ।”

उसके ध्यान और हृद कण्ठस्यसे दिव्यास रंग होकर उसकी तरफ बेलता रह गया ।

“जुप रह गये ब्ये ! मेरे मनकी बात आपको नहीं माखूम—आज क्या बही उऊ आप करना चाहते हैं ।”

“नहीं, मैं कुछ करना नहीं चाहता बन्दना । हाँ, इतना मयनता हूँ कि अगुमन बन्दर किया था, किन्तु सन्देह भी बहुत था ।”

बन्दनाने कहा—“बह सन्देह अब भी बना रहे ।”—फिर लज-भर उसके चेहरेकी ओर देखती रही और बोली—“मगर सन्देह मुझ से न था । उस पहले दिनसे ही नहीं था । बन्दरामपुरसे गुस्से होकर पक्षी मर्राँ आप बन्दरके ऊपरके कमरेमें खिचकीक पाठ लड़ थे और वहींसे आपने हाथ उठाकर इधरसे मुझे किया द ही, सिर्फ एक लाकका परिचय था तो भी क्या आप समझते हैं कि उसका भय मेरे लिए अत्यन्त रह गया है ।”

दिव्यास जुप हो उसकी ओर देख रहा है, वह देख बन्दनाने क्या—
“मया सन्देह ।”

‘दिव्यासने कहा—“माखूम होता है और भी क्या लबेदनेसे क्या आपगा । पर मैं सोचता हूँ मेरे संघम निवारणके लिए क्या बही पद्यति हमेशा काममें लार्राँ आवगी ।”

बन्दनाने कहा—“इमेशाकी व्यवस्था पहले आए ही सही । लेकिन सब-कुछ जानकर भी जो इस तरहका अमिन्न करता है उसे समझानेके लिए मेरे पास कोर्राँ रहता ही नहीं ।”

‘मगर वह मैं नहीं हूँ मों हूँ । उन्हें समझावणी देते ।”

बन्दनाने कहा—“मैं खुद ही समझ आवगी । मुझे बड़कीकी उख चाहती

हैं। आज आपानक वे कितनी ही चंचल होके क्यों न खली गई हों जो कुछ वे जानके गई हैं वह सच नहीं है—यह बात अगर सँका ही नहीं समझा सकी तो मैं और किस बातकी आशा रख सकती हूँ बताइए तो ! मुझे कुछ चिन्ता नहीं दिखे, एक-न-एक दिन सारी बातें उन्हें मैं समझाऊँगी और अक्षय समझाऊँगी।” —कहते कहते आस्तिरकी तरफ सहसा उठका गया रूँच आया और आँसुओंमें आँसू भर जाये।

सब ओर झुंकी दुबिधा हिजदासकी मिट नहीं खी थी, परन्तु इन आँसुओं और कण्ठस्वरके निगूढ़ परिवर्तनने उठका सारा सद्यः मिटा दिया,—यह तो सिर्फ परिहास नहीं है। विस्मय और व्यथासे आच्छोदित होकर वह कह उठ—
“यह क्या बन्दना, तुम रो रही हो !”

प्रसुत्तरमें बन्दना कुछ बोझी नहीं, सिर्फ आँसू पोंछकर दूसरी तरफ देखने लगी।

हिजदास खुद भी बहुत देरतक चुप रहकर धीरे धीरे बोला—“सुधीरने तो तुम्हारे प्रति कोई भी दाप नहीं किया बन्दना !”

बन्दनाने मुँह फेरकर इधर देखा नहीं, सिर्फ मुँहसे कहा—“बोधव्य विचार किसलिये किया जाए बताइए तो ! मैं क्या उनके अपराधका बदला लेने पीठी हूँ !”

हिजदासको इस बातका जवाब हँसि न मिला, उतने समझा कि यह प्रश्न किन्तुकुल निरपेक्ष किया गया है। फिर कुछ देर चुप रहकर उतने कहा—
“मगर सुधीर तुम लोगोके अपन समाजका है,—धीर इधर वह कि पिशा, सत्कार, सम्भाव, आचरण किसी भी बातमें सुन्धी-परिवारके साथ तुम्हारा मेल नहीं खाता। तो फिर किसलिये तुम इन लोगोके कारणारमें हमेशाके लिये घुमने आओगी बन्दना ! मेरे लिये ! आज सपर न समझेगी, पर एक दिन जब तुम अपनी गळती समझ आओगी तो तुम्हारे पश्चात्तापकी सीमा न रहेगी। मुझे तुमने किस रूपमें समझा है, नहीं जानता; मगर मामी, माँ, माई साइब हमारे देवता, हमारी अतिथिगला, हमारे आत्मीय-स्वजन—आस्तिर इन्दीमिने तो मैं एक हूँ। इनसे अलग करके तो तुम कभी मुझे पा नहीं सकोगी। काही मझे समरतक वह सब क्या तुमसे सहा जावगा !”

बन्दनाने कहा—“न सरे बनेर भारमीके मरनेका गस्ता खे २”

रहता है हिन्दू था, उसे तो कोई भी कैदखाना बन्द नहीं कर सकता ! मुझे आपने क्या समझा है मैं नहीं ब्यनती परन्तु मेरी साठ, मेरी बेटानी, मेरे बेटे, हमारे टाकुरगी और अतिपिशाचा, हमारे आरमीब-स्वजन-सम्पन्न—इन सबके अलग करके अपने पतिव्रतों में एक दिनके लिए भी नहीं पाना चाहती । वे सबके साथ एक होकर ही मेरे बने रह सकें ।”

हिन्दुस्ताने आश्चर्यमें आकर कहा—“ये सब धारणाएँ तो तुम स्वयंके पतियोंकी नहीं हैं ये तुमने किससे सीखी बन्दना !”

बन्दनाने कहा—“किसीने मुझे सिखाया नहीं हिन्दू था, पर मौके पास रहकर, मुल्की ताइबको देखकर—वे सब बातें मुझे अपने आप ही प्यारी हैं । इस घरमें सब बातोंमें सबसे बड़ी मौ है, उसके बाद मुल्की ताइब, उसके बाद बीबी उसके बाद आप;—यहाँ अजदाका भी एक विशेष स्थान है । इस घरमें अगर कभी जमाह पाऊगी तो इनसे छोटी होकर ही पा सकेगी, परन्तु वह मुझे बच भी अलग न माकूम होगा ।”

वह सुनकर हिन्दुस्तानको अजिना अजिना माकूम हुआ उठना ही उसका मन मचाते भर उठा । परन्तु बन्दनाके मनकी बात इस तरह जान लेना अन्वय है,—वह आश्चर्यना बच ही बनी चाहिए । उसने अबरदली अपनेको फटार बनाते हुए कहा—“अगर मौका ये सब बातें जाननेके कोर काम नहीं । यह मैं ब्यनता हूँ कि ये तुम्हें सड़कीकी तरह चाहते हैं, इसीसे उनके मनकी यह प्रकृत जगह थी कि तुम इस घरकी छोटी-बहू होओ तुम होनी बहनीके हाथ अपने होनी सड़कीको सीपकर वे बनी आरगी कैलाठ, बीरमेका अगर मौका न भी आए, तीर्थवावाके उस दुगम आर्गमें ही अगर उनके लिए परबोककी पुकार आ पहुँचे—तो भी इस बातको मनमें छिप हुए वे सब निश्चिन्त और निर्भय होकर भाषा कर लेंगी कि उनके बहू पर-संसारका दायित्व इस्तान्तरित होनेमें किसी प्रकारका थोसा सा संशय नहीं है । अगर कैला होनेका नहीं, उनके मठसे वाग्दानका अर्थ ही है सम्पन्न । प्रेम का प्यार करके जिते सम्पत्ति है वही हो बही तुम्हारा पति है । बिबाहके संघ नहीं भे गये इसलिए उन्हें तुम त्वाय भी लक्ष्मी हो, पर उस तुने आठनपर इबाम्पीका टङ्का आकर नहीं बैठ सकता ।”

तुनकर मारे बन्दनाके बन्दनाका वैद्य पीला पड़ गया, उसने पूछा—“मैं

क्या ये सब बातें कह गई हैं दिवू बाबू !”

द्विजदासन कहा—“कमसे कम, उनके पेशा कहनेसे मैं असम्भव नहीं समझता बन्दना । मामी कह रही थी कि मौको सबसे ज्यादा इस बातसे शोच पहुंचो है कि मुचीर अपनी बात-बिरादरीका नहीं है,—और तुम लोग व्यत-पांत नहीं मानते । वह इतना बड़ा बजरदस्त मंत्र है कि इसे किसी भी तरह पाटकर एक नहीं किया जा सकता ।”

“आपका भी क्या यही कहना है !”

“मैं तो तृतीय-पुरुष हूँ बन्दना, मेरे कहने-न-कहनेसे क्या बनता विमङ्गता है !”

राज साहबके मोहनका समय हो गया था । बन्दना उठ लड़ी हुई । कमरेसे बाहर निकलनेसे पहले उसने कहा—“बापूजीकी सुधी परतम हो चुकी, कल से उसे जायगे । मैं भी क्या उनके साथ चली जाऊँ दिवू बाबू !”

द्विजदासने कहा—“यह भी क्या मेरे कहनेका बात है बन्दना ! अगर जाओ, तो मुझ गुरुव समझकर न पथी जाना । तुम्हारे ब्यनक बाबू, तुम्हारी तरफसे मैं भीमे तुम्हारी सारी बातें कहूँगा, धरमाऊँगा नहीं । उसके बाद, रह गई हमारी आजकी सप्याची स्मृति, और रह गया हमारा बन्देमातरम्का मंत्र ।”

बन्दनान इसका कोई उत्तर नहीं दिया; चुपकेसे परसे बाहर निकल चली ।

१५

अपने कमरेमें और जानेके बाद बन्दनाको अत्यन्त धमनि होने लगी । उसने क्या नशा कर लिया है जो निबन्ध उपपाशिकाकी तरह वह इस तरह अपना हृदय त्यागकर अपनी सारी भाव-संपादाको बलाञ्छित करे और ! उत्तर मजा यह कि द्विजदास पुरुष होता क्या भी जैसा रहस्यमय था पैसा ही बना रहा । उसके चेहरेके मासमें न आसुर था, न उग्र, उम्ने न तो आशा ही थी, न साहस्यना । बरिफ, परिहासके बहाने बार-बार उसने यही बात बताई कि वह तृतीय पुरुष है । उसकी इच्छा अनिच्छा इन परसे अनाश्रित विषय है । और क्या शिष्ट इतना ही ! उसने माका माम सेकर कहा, बाम्बानका अथ ही है सप्यान, आर निरस्यय मुचीरक सूने भावनपर हयामतोका अइका बकर नहीं पैठ सकता । परन्तु अयमानका पदा इतने भी नहीं मय उग्र्य जालीमें /

कर अन्तमें उसने दयार्थ बित्तसे सिर्फ इतना ही बचन दिया कि बन्दनाभी यह बेहवासनाभी कहानी यह मौजे यह खगा ।

और फिर, यही अवसर थोड़े ही है । हिन्दुस्तानी बातके अन्तमें उसने स्वतः प्रवृत्त होकर कहा, इस परिवारमें जो भी बर्तों हैं उन सबसे छोटी होकर यह जानना चाहती है । आगे उससे सोचा न गया, बर्तों बैठी थी बर्तों स्तम्भ म्पबसे बैठी रही; और बार-बार उसे ऐसा लगने लगा कि वास्तवमें यह अस्वन्त छोटी हो गई है इतनी छोटी कि आत्मघात करनेपर भी उस हीनताका प्राबलित्त नहीं हो सकता ।

बाहरसे किसीने आकर कहा कि राम साहब लुब्ध रहे हैं । उठके यह फिटके कमरेमें चली गई । बर्तों उसने बार-बार बिल्ल करके फिटको राखी किना कि कक ही शोनों बम्बईके बिल्ल खाना हो चार्बगे । हाकों कि बात यह तब थी कि विप्रदासके अन्त आनेस रातकी गाड़ीसे वे खाना होये । छद्सा इस तरह बन्ना बन्ना अन्त न खेगा इतमें खद्बको फार् सन्वेह न बा — युष्टे भी थी, आतानीसे रहा भी बा सकता था, मगर फिर भी, लड़कीके प्रस्तावपर उन्हे राखी होना पड़ा ।

बिस्तरपर लोई ले बन्दनाको आँसूसे आलू बहने लगे । बाहमें मामूम नहीं कर उठे नींद आ गई । सबेरे उठकर उसने अपनी और फिटकी पीब-बस्त रसमाकर वैचारिबों कर ली परेन करके लीदूत रिक्बर्न कर खिचे और बम्बईको तार गो मेव दिवा । गाड़ी ले शामक खद्गी, पर उठे किसी मो तरह हेर नहीं सुगती ।

छबेरेके तब नौ बजे थे; अन्तदा कमरेके अन्दर पैर रखते ही ताकतुके ताम बोली — 'यह क्या !'

बन्दना मैसे कपडोंको सँभलकर एक टूकमें रख रही थी; बोली—'आज हम भोग जा रहे हैं ।'

'छा आबका दिन बोडे ही है अेबी-बार्न, कब जानेकी बात थी ।'

'नहीं, आज ही अन्त होगा ।'—कहकर बन्दना अपने काममें लगी रही, रुँह नहीं खया ।

अन्तदा एक क्षण चुप रहकर बोली—'आप उठिए मैं सँभले देती हूँ । आपको तकलीफ हो रही है ।'

“तकलीक देखनेकी बख्तर नहीं अपने कामसे आओ तुम ।”

इस परके तमाम आदमियोंसे उसे पूछा-सी हो गई है ।

अप्रदाओ कारण मासूम न होनेपर भी, इतना तो मासूम ही था कि कोई गुस्सा-गुस्तीकी बात बक रही है । अपनाक माँ अभी गई और आज बन्दना भी उसी तरह अकस्मात् बन्धी जानेको तैयार है । परन्तु गुस्सेके बढेले गुस्सा करना अप्रदाओ पक्कित नहीं है, वह झिन्ती ही सविष्णु है उठनी ही भद्र । कुछ देर चुप खाड़ी रही, फिर कुच्छित्त स्वरसे बोली—“मेरा कसूर हो गया जीमो-बार्, आम डीक बकपर मैं उठ न सकी ।”

बन्दनाने मुँह उठाकर उसकी ओर देखा, फिर बोली—“मैं तो उसकी केन्द्रित नहीं पाहती अप्रदा, अकस्मात् हो तो अपने माकिरको देना । दिवू बानू अपने कमरेमें ही हैं, उनसे कहो जाकर ।”—इतना कहकर वह फिर अपने काममें लग गई । बन्दना अपने बापकी इकठ्ठैली सन्तान होनेसे क्या कुछ ब्यावा खाइ-प्यारमें ही फली-पनपी है । उसनेकी शक्ति उसमें कम है । किन्तु इसका मतलब यह नहीं कि कहुँ बात कहनेमें कुच्छिष्टा भी उसे मिळी हो; बल्कि यों कहना चाहिए कि शायद इतनी बड़ी कठोर बात भी उतने अपने जीबनम कभी किलीसे नहीं करी । इतकिण, बात कह चुकनेके बाद ही वह मन ही मन शायद अगिष्ठ हो रही थी; इसनेमें अप्रदा स-बन्ध मूदु-कण्ठसे कहने लगी—“बापदर बगैरह चले गये थे, यौ फटनेको थी कि सोचा, अब न सोऊँगी, सोई भी नहीं, पर यौबापका सहाय भेकर पैउले ही म मासूम जैसे जाल लग गई जब दिन चढ़ गया कुछ पता ही नहीं बसा । आप माकिरोंकी बात कह रही हैं जीमो-बार्, पर आप मो क्या मेरी माकिरिन नहीं हैं ! बताइए मन्ना, ऐसा कसूर क्या और कम्ते मुससे हुआ है ! उठिए, मैं सब डीक किये देतो हूँ ।”

आजिरकी बात शायद बन्दनाके कानोंतक नहीं पहुँची, अप्रदाके चेहरेको देखते हुए उतने कहा—“बापदर बगैरह चले गये, मतलब !”

अप्रदाने कहा—“कल रातको दिवूकी तपीपत बहुत खराब थी । यहाँ आनके दिनसे ही उतकी तपीपत खराब थी, पर उसे कुछ परबाह ही नहीं । कल माँ बगैरहको पहुँचानेक लिए उतके साथ जानेकी बात बली तो उतने बुझाकर कहा कि माई लाइवते कहकर मेरा जाना माक करवा हो पर माँको मासूम न पढ़ने पावे—आज मुससे उठा नहीं जाऊ,

हो रहा हूँ।”

फिर कहने लगी—“उसे मैंने अपनी गोदीमें लिज्ज-रिज्ज कर बड़ा किया है, उसकी सब बातें मुझसे ही होती हैं। मैं डर गई, बोली—पह कैसी बात है। तभीसब लखन है तो छिया क्यों रहे हो ! उसका स्वभाव ही ठर्य—बातको हँसके उड़ा देना, फिर वह कितनी ही बड़ी क्यों न हो। उठने बेसे ही हँसते हुए कहा—तुम उन लोगोंको बिदा कर दो न दीदी, उसका बाद मैं अपने आप ही खया हो उठूँगा। मैंने सोचा, गौंफ साथ उसकी बन्दी नहीं, उनके साथ वह करी जाना भी नहो चाहता, इसीलिए बहाना कर रहा है। इससे मैंने फिर कुछ कहा नहीं। बड़े-बाबू सा'ब उन लोगोंको लेकर चले गये। इसका बाद दिन-भर वह पढ़ा खटा ही रहा, कुछ लाजा-खीया नहीं। शोहरको मैंने बच्चे पूछा, 'कैसी लकीरत है हिन्दी ?' उठने कहा, 'अच्छी है।' मगर उसका खेद देसक पेसा नही माहूम हुआ। मैंने डाकटर बुलाना चाहा, पर उठने बुखाने ही न किया बोला, क्यों हठमूठको मारें साहबको अय-दण्ड दिखाना चाहती हो बीबी, तुम्हारी इस फिज्ज-खींसे एहिपी नाराज होगी। मीठ पेसा रुठा कि अकतक अभिमान बना ही हुआ है। दिनभर लाया नहीं, बिस्तरपर ही पड़ा रहा। घामको जाक मैंने पूछा 'हिन्दी, लकीरत अगर सबसुख लखन नहीं है तो खेरेसे बिस्तरपर क्यों पड़े हो ?' उठने उठी तरह हँसते हुए कहा, 'अनुदी, शाब्दोमें लिखा है कि खेते रहनेके समान पुण्य कार्य अश्रम वृत्तय नहीं है, इससे केवलखी प्राप्ति होती है। जब कुछ पारस्योकि मगलकी खोस्य कर रहा हूँ। तुम करो मत।' सब बातोंमें उसको तो हँसी ही सृष्ट करती है, बातोंमें उसके कोई नहीं बित सकता। मैं गुत्था होकर खीं तो आर, पर मनमें जो डर पैदा था वह वूर नहीं हुआ। उठने एक कितान उठाकर पढ़ना शुरू कर दिया।”

अधरा अण ठरकर कहने लगी—“उठके सब करेव बारह बजे होये, दरवाजेतर बक्के पढ़ने लगे। मैंने पूछा, 'कीन है रे ?' बाहरसे जवाब आया—'मैं हूँ अनुदी, दरवाजा खोलो।' इतनी घण पड़े हिन्दी बजे सुन्य रहा है, पर एहटके साथ बरते ठठके किबाड़ जोक बाहर पहुँची तो देला हिन्दी बह कैसी मूर्ति है ! आँख मीकर मुठ गई हैं, यकेका स्वर बैठ गया है धारर काँप रहा है,—मगर फिर मी हँस रहा है। बोला, 'बीबी, तुम्हारी गणमें खेब हूँ,

इसलिए तुमको जगाया है; अगर ऑलैं मूँवनी ही पड़ी तो तुम्हारी ही गोदमें फिर रत्नके मूँवूंगा।” —कड़ते-कड़ते अन्नदा सर-सर आँसु गिराती हुई ये उठी। उसका रोना मानो ठहरना ही नहीं चाहता, भीतरसे ऐसा अव्यक्त आघेग उमड़ रहा था।

अपनेको सँभालनेमें उसे बहुत देर लगी। सँभलनेके बाद फिर कहने लगी—“छाठीते जगाकर उसे कमरेमें ले गई, पर जैसी हो के मेरा ही पेटमें दर्द—ऐसा लगने लगा जैसे रात भय पीतेगी ही नहीं, न-जाने कब हाँस बन्द हो जाय। डाक्टरोंको लखर बी गई, वे आ पहुँचे। सूर्यपर सूर देने लगे, गरम-पानीका सेक बहने लगा, मौकर-बाकर सब जगते रहे,—घोरके बल आकर दिग्गुको नींद आई और सो गया। डाक्टरोंने कहा कि भय डरनेकी कार्र बात नहीं। लेकिन किस तरह रात बीती है बीबी-मार्, सोचती हूँ तो—दुःस्वप्न-सा माखम होता है, सच्ची बात नहीं माखम होती।” —दरना कहकर अन्नदाने औचकसे अपनी आँसु गीछ डाली।

बन्दनाने आहिलेते कहा—“मुझ कुछ भी नहीं माखम, मुझे जगाया क्यों नहीं अन्नदा !”

अन्नदाने कहा—“तबेरे वह अघान्ति बुर हो गई, फिर तुम्हें परेशान नहीं किया जोशो-बार्। नहीं तो दिग्गुले तो कहा था।”

बन्दनाने इस प्रसंगको छोड़ दिया, बोली—“दिग्गु बानूकी इस बल उपीबत कैसी है।”

अन्नदाने कहा—“अच्छी है, सो रहा है। डाक्टर लोग कह गये हैं, घामसे पहले घायद नींद न डूरेगी। बड़े-बाबू आ जार्ये तब जीमें जो आये जोनी।”

“उन्हें क्या लखर दे दी गई है।”

“नहीं। दृष्टजिने कहा कि इसकी जरूरत नहीं, वे खुद ही मानेवासे हैं।”

“उस कमरेमें आदमी तो हैं।”

“हाँ, दो आदमी बैठे हैं।”

“डाक्टरर अथ कब आँगे।”

“घामसे पहले ही आँगे। कह गये हैं, अब डर नहीं है।”

चिह्नितक-नाथ अम्य दे गये दे, इतनी ही बन्दनाक शिष्ट शान्त्वना है। इसके शिवा, उसके शिष्ट करनेको और है भी क्या।

हो रहा हूँ।”

धिर कहने लगी—“उसे मैंने अपनी गोदीमें लिम्ब-पिम्बकर बड़ा किया है, उसकी सब बातें मुझसे ही होती हैं। मैं डर मर्दा, बोली—यह कैसी बात है! तभीकत सचब है वो किष्प क्यों रहे हो! उसका सचब ही टहरा—बातको हंसके उड़ा देना, फिर वह किठनी ही बड़ी क्यों न हा। उसने बैसे ही ईच्छे हुए कहा—तुम उन स्नेहको विवा कर दो न दीदी, उसके बाब मैं अपने बाप ही बंगा हो उठूंगा। मैंने सोचा, माके साथ उसकी बगटी नहीं, उनका साथ वह कही जाना भी नहीं चाहता इसीलिए बहाना कर रहा है।” उसे मैंने धिर कुछ कहा नहीं। बड़-बानू साँब उन सागीको बेके पछ गये। इसक बाब दिन-मर वह पड़ा छोटा ही रहा, कुछ लावा-श्रीषा नहीं। दोपहरको मैंने आके पूछा, ‘कैथी तबीयत है हिम्?’ उसने कहा, ‘अच्छी है।’ मगर उसका येहर देकत ऐसा नहीं मात्स्य हुआ। मैंने डाकर कुम्पना चाहा, पर उसने कुम्पने ही म किया; बाब, ‘कौं शठमूठको माई साहबको अम-इण्ड दिखाना चाहती हो दीदी, तुम्हारी इस किम्ब-सर्षीते गृहिणी नायक होगी। मीठ ऐसा कटा कि अचतक आमिमान बना ही हुआ है। दिनमर लाया नहीं, बिस्तरपर ही पड़ा रहा। शामको आके मैंने पूछा, हिम् तबीयत अगर सचमुच सचब नहीं है तो लकेसे बिस्तरपर क्यों पड़े हो?’ उसने उछी तछ ईच्छे हुए कहा, ‘अनु त्नी शक्योम किला है कि सते रहनेके तमान पुष्प कार्प अगर्मे इतय नहीं है, इससे कैबस्मकी प्राप्ति होती है। बरा कुछ पारलोकिक मयककी कोच्छ कर रहा हूँ। तुम डरो मत।’ सच बालीमें उसको तो हँसी ही लजा करती है, बालीमें उससे खेर मही नीठ सकता। मैं गुल्हा होकर बली लो आर, पर मनमें जो डर बैठा था वह डर नहीं हुआ। उसने एक किष्प तछकर पढ़ना शुरू कर दिया।”

अध्या क्य उहरकर कहने लगी—“उसके तब कथेन बाह्य बने होंगे, दरबाबत बकक पढ़ने लगे। मैंने पूछा, ‘कौन है रे? साहरते कथाब आता—‘मैं हूँ अनुदीदी, दरबाबत लोभ्ये।’ इतनी घट पड़ हिम् क्यों हुआ था है, पक-राहक साथ चरते उडके किष्प लोक बाहर पहुँची ल देला हिम्मी वह कैसी मूर्ति है! बाली मीठर सुठ गर है, गभेका स्वर बैठ गया है, अघर कीन रहा है,—मपर फिर भी ईठ रहा है। बोब, ‘दीदी, तुम्हारी गृहमें लोभ्य हू,

इसलिए तुमको जगना है; अगर मौलें मूँदनी ही नहीं तो तुम्हारी ही गोदमें फिर रखके मूँदूंगा ।” — कहते-कहते कमला सर-सर आँसू गिराती हुई रो उठी । उसका रोना मानो ठहरना ही नहीं चाहता, भीतरसे ऐसा अदृश्य आवेग उभर रहा था ।

अपनेको सँभालनेमें उसे बहुत देर लगी । सँभलनेके बाद फिर कहने लगी—“छाठीसे जगाकर उसे कमरेमें ले गए, वर बीती हो के पैसा ही पेटमें रई—पेसा कमने लगा जैसे रात अथ बीतेगी ही नहीं, म-अने कब खँस बन्द हो जाय । डाक्टरोंको लखर ही गर, वे धा पहुँचे । छुपर छु रहे लगे, गरम-पानीका सेक पकने लगा, नौकर-चाकर लथ जगते रहे,—भोरके बल जाकर दिख्खा नींद आई और सो गया । डाक्टरोंने कहा कि अथ करनेकी काह बात नहीं । लेकिन किस तरह रात बीती है बीबी-बार्, सोपती हूँ तो—दुःख-पन-सा माख्म होता है, लखी बात नहीं माख्म होती ।” —इतना कहकर अन्नदाने आपकल अम्नी मौलें प्येठ करी ।

बन्नाने आदिलेसे कहा—“मुझे कुछ भी नहीं माख्म, मुझे जगना क्यों नहीं करवा !”

अन्नदाने कहा—“तबेरे वह अस्थानि दूर हो गई, फिर तुम्हें परेधान नहीं किना बीबी-बार् । नहीं तो दिख्खे तो कहा था ।”

बन्नाने इत प्रथमको खेड़ दिया, बीबी—“दिख् बाबूकी इत बल उबीबल केती है ।”

अन्नदाने कहा—“अच्छी है, सो रहा है । डाक्टर काम कर गये हैं श्याम-से पहले शाबद नीब न टूटेगी । बाड़े-बाबू मा अर्थ लव बीमें जो आवे बीबी ।”

“उन्हें क्या लखर दे दी गर है ।”

“नहीं । दलबीने कहा कि इछकी अस्तरत नहीं, वे खुद ही आनेवाले हैं ।”

“उस कमरेमें आदमी तो हैं ।”

“हाँ, सो आदमी बैठे हैं ।”

“डाक्टर अथ कब आयेंगे ।”

“श्यामते पहले ही आवेंगे । कह गये हैं, अथ कर नहीं है ।”

विकलक-गण अमव दे गये हैं, इतनी ही बन्नानेके लिए अन्तना है । इतके सिवा, उतके लिए करनेमें और है मी कथ ।

बन्दनाने पिताको आकर हिम्मासकी शोभापिका समापार झुनावा, पर
बचावा नहीं बोली । वे इतना ही मुनकर पत्रा उठे बोले—“सो, सो,—सुते
तो कुछ मामूम ही नहीं पड़ा ।”

“नहीं, हम लोगोको जगाना किमीने उचित नहीं समझा ।”
“मगर वह छो अच्छा नहीं हुआ ।”

बन्दना चुप रही वे लज मर बाद फिर बोले—“ठिक्क लेने आदमी मेज
बिना गया सीट रिजर्व हो चुक,—हम लोगोके जानेमें अब तो तित होवा
दीसता है ।”

बन्दनाने कहा—“क्यों, किन क्यों होने लगा बापूजी, हम भोग रहकर
ही कौन-सा उपकार कर सकने ।”

‘नहीं उपभारकी बात नहीं, मगर फिर मी—’

‘नहीं बापूजी, इछ तख बराबर बेचं ही होठी पत्नी का खी है अब व
अपना निश्चय मत बदल्ये ।—’तना कहकर बन्दना उनके कमरेसे बाह
निकल आई ।

दिन दबता जा रहा है । बन्दनाके कमरेमें आकर अमला कमरेनपर बैठ
गई । उन लोगोके रवाना होनेमें अब मी जगामग हो बन्देकी देर है । बन्दनाने
पूछा—“हिम्मासकी तबीयत ठीक है ?”

“हां बी.बी.नार्स तो रहा है ।”

बन्दनाने कहा—‘बाटे वछ हम लोगोकी किमीसे मेट न हो सकी,—
एककी दो घाबर सतक नौर न सुयेगी और बूखे अब नही आके पहुँचेंगे
सकतक हम भोग बहुत बुर पहुँच जायगे ।’

अप्रधाने उसकी बातका समर्जन करते हुए कहा—“हां, बड़े बाबू तो
करीब नौ बजे घातक आँवेंगे ।”—कुछ देर बाद फिर बोली—“वे आ बायें
तो सबकी ध्यानमें आन आने सचोका डर मिट जाव ।”

“मगर हरकी तो कोर बात नहीं असदा ?’

अम्नवाने कहा—“नहीं है या तो ठीक है, पर बड़े बाबूका घरमें जोकर
रहना कुछ और ही बात है बी.बी.नार्स । फिर और किसीपर जिम्मेदारी नहीं
रहता सब ठानीर रहती है । उनको जैतो बुद्धि है वैसा हा विवेक, जैतो हिम्मत
है वैसी ही गामोरता । सबको देवा लगाने जगता है जैते बरमदके पेड़की छायामें

बैठे हुए हैं।”

वही पुरानी बात, वही विद्यार्थियोंकी मरमार। अपने माहिकके निरसमें यह बात माना इन लोगोंके नस-नसमें रम गई है। और कोई बक्त होता तो बन्दना चुटकी लेनेमें रिआयत नहीं करती। लेकिन इस बक्त चुप रही। बन्दना कहने लगी—“और यह दिखू! दोनों माइयोंमें इतना फर्क है जितना कि जमीन और आसमानमें।”

बन्दनाने आश्चर्यमें आकर पूछा—“क्यों?”

असदाने कहा—“और नहीं तो क्या! न तो बुद्धेदायी आनता है, न किसी ससटमें रचना आहता है और न गम्भीरता ही है। उसकी माभी करती है कि वह तो छद्म कदुका बाबल है, न उसमें बिकारी है न पानी है। उदय उदता फिरता है और भी बात आदे जितनी ही पड़ी क्यों न हो, उठे वह ईस सेकके ही उड़ा देगा। न तो संतारी है, न बैरागी, किन्तु किताब-कर्मदार उससे घरस-तो लिखा ले गये हैं किमका ठीक नहीं।”

बन्दनाने कहा—“मुन्हीं साहब नाच नही होत।”

“नही होते! लूट होते हैं। त्यासकर मा तो और भी क्यादा। पर लव यह बिलार्थ कहाँ देता है? कुछ लिफ लिफ देता लाफ्त हा आता है कि भासीजी रीना-रीना शुरू कर देती है, लव फिर लव मिफक ईद-दौदके से पकड़ आते हैं। पर, इसी तरह तो सारे बिन्दगी नहीं बिठा लकता जीजी-साई, उसका भी म्याह होगा कन्वे होने, लव तो फिर इस तरहकी काररबाह किसी दिन बिलकुल दिवाकिया बना देगी।”

बन्दनाने कहा—“बड बात तुम लोग उनस बढ़ती क्यों नहीं?”

असदाने कहा—“बहुत कहा व्य बुधा है, मगर यह खान ही नहीं देता। कह देता है, तुम लोगोंको टिकर क्यों है? दिवाकिया अगर हो भी आउं तो माभी तो मेरी दिवाकिया नहीं हानकी, लव सब मिफके उम्दीके फिर पड़ आनेगे।”

बन्दनाने मुसकराते हुए कहा—“जीजी क्या करती है?”

असदाने कहा—“दिवापर उनके लाद-प्यारकी हद नहीं। करती है कि हम लोग लाकेमे पीकेगे आर डिखू क्या ठपाना एदा करेगा? मेरी खैब-खौ रुपये म्दीनेकी आमदनीको लो कोई मिटा नहीं लकता गतेकी बाबले हम लो की उलीम गुबर हा आपणो। बड़े बाबू अपने म्याग-म्याल रुपये

रहें, हम लोग उनसे माँगने न आयेँगे।”

तुनके बन्धनाओ ऐसा अच्छा लगा कि बिचारी हट नहीं। कितने कहा है वह है तो आखिर उसीकी पहन। मजा यह कि जिस समाजमें, जिस आब-इशामें रहकर वह कुछ इठनी बड़ी दूर है वहाँ ऐसी बात कोई नहीं करता, धानव कोई खोसता भी नहीं। करनेकी जरूरत भी पड़ती होगी वा नहीं, तो भी कितने मासूम !

परन्तु अच्छा जो कुछ कह रही थी वह मानो प्राचीन ब्राह्मणों कोई एक कहानी हो। इन लोगोंका संयुक्त परिवार है—सिर्फ बाहरकी आकृष्टिमें ही नहीं, भीतरकी महत्तिमें भी। जसरा महा सिद्ध शक्ती ही नहीं है दिग्बिदाओकी भीही भी है। सिद्ध कहानी ही नहीं उसकी छत्र चारों इलाके छाम होती हैं। अथवाछ बाप इसी परिवारमें नौकरों करता हुआ मरत है, उसका अड़का भी यही पद बिलकर ओबिका अछन कर रहा है। अथवाओ खाने-पहनेकी कमी नहीं, फिर भी भोग छोड़कर उठते जाते नहीं बनता। इत लम्बे बड़े परिवारमें कितने ही कर्मचारियोंका ऐसा ही पुण्यानुभविक इतिहास मिलता है। बकामची-का अनाशकरी पुत्र दिग्बिदाओ भी कम कर रहा था कि उसकी माँ, माँसाहब, म्यामी, यदवेस्ता, अतिपिछावा इन सबके साथ उसका अस्तित्व है, इनसे पूरक करके बन्धना उठे कमी नहीं था लकड़ी। तब बन्धनामे बचपि उठ जाते इनकार नहीं किया था, फिर भी उस बातका मध्याय तारतम्य आज उसकी समझमें आया।

बात फलम नहीं हुई थी, बहुत-कुछ जाननेका आधार उसका अन्तर प्रकल हो उठा पर बाधा आ ग। नौकरने आकर खबर की कि यय-साहब अन्दी मन्दा रहे हैं छै बह गये हैं। खाना होनेका समय बटे-मरते अचारा नहीं है। विद्यावा वैशर होनेके लिए बन्धनाओ उठना पड़ेगा।

बकामचय राय साहब नीचे उठे। उठते उठते अड़कीको नाम लेकर पुछाए बन्धनाने उठे तुन सिद्ध। अन्वास चाहे कितना बड़ा हो और अतिच्छा चाहे कितनी हो कठोर ही उठे जाना ही पगग। बार-बार बिद करके भी अथवाओ कुछ उछीने तब करचार है उछम रहाबरत नहीं हो सकता। अब वह धरते निकली तो उसके मनमें सबसे पहले धरी बात आरं कि मरिष्यमें, अर्थात्क र्थि जाती है, कितनी दिन कितनी भी छत्रसे बड़ी फिर उसके अनेकी लम्बबना नहीं है, किन्तु फिर भी इस बातको वह कमी नहीं भूल सकयी कि यह पर

उसके अनेक सुत-स्वप्नोंसे परिपूर्ण रहा। उतरते समय बन्दना सीधा रास्ता छोड़कर शिबदासक कमरेके सामनेवासे बरामदेसे, उसके कमरेके बन्दर एक निगाह फेरती हुई निकली, परन्तु जो लिङ्गी कुर्ची हुई थी उससे शिबदासको वह दैल म लगी।

मोटरके पास दसवीं लड़के राय साहबने उन्हें अपने पास बुलाकर नौकरों को इनाम देनेके लिए उनके हाथमें कुछ रुपये दिये और अमानक माना पड़ रहा है इनके लिए रोद प्रकट करते हुए अनुरोध किया कि शिबदासको लखर उन्हें सुरन्त ही मिठनी चाहिए, नहीं तो पकी मित्ता रहेगी।

गाड़ीमें बैठनेके पहले बन्दमाने भयवाका पास बुलाकर कहा—“हिम्न बाबूकी दम बीटी हो, उन्हें तुमने मोहम लिखावा है,—वह भंगूठी तुम हिम्न बाबूकी आनेवासी नह बहूको भद कर दना, फद देना वह इसे ककर पहने।”—इतना कहकर उसने भंगूठी लौटकर उसके हाथमें द दी और सुरन्त ही मिताके पास जा बैठी।

मोटर चल रही। हपर-उपर लड़े हुए कुछ नौकर-बाकर और दसवींने उर्गे नमस्कार किया।

बन्दना वनैर इरादेके ऊपरको देल उठी; परन्तु आज बर्हा, और-एक दिनकी मंदि लरके भगापर लड़ग हुआ, बुनयाप संयेठसे विवा देनके स्थिर शिबदास नहीं था। आज वह बीमार है,—आज वह नौदम बैरोध पड़ा सो रहा है।

१६

दरामरीके आचरणमें बन्दनाके प्रति जो प्रच्छन्न खण्डना और अमल शिरकारका भाव था, लकीकी वह गहररठक चुम गया था। परन्तु साससे कुछ कहना-सुनना उसके लिए लहज नहीं था; इतकिये उसने एक चिट्ठी लिखकर बन्दनाको देनेके लिए पत्रको अपने कमरेमें बुलवा भेजा। बोधरकी गाड़ीसे विप्रदास कलकसे रहाना होमा। इसी समय दरामरी उसके कमरेमें आ पहुँची। देला वे कमी नहीं करती—इससे लड़का और बहू दोनोंको ही आम्पप हुआ। लती मायेपर ईगठ गीनकर कमरेने बाहर निकलने लगी तो दरामरीने कहा—“नहीं बहू, मत जाओ। तुम्हारी गीमीबूनीमें तुम्हारी बरनकी मित्ता

कर्मणी, वय ठहर आओ । विपिन, जानता है तू, क्यों मैं इतनी बन्दी पकी आर !'

विप्रदासने कहा—“टीक नहीं जानता मैं, पर कहीं कुछ गड़बड़ी बकर हुई है, इतना अन्धा-आँसु मीने लगा लिया है ।”

मौने कहा—“गड़बड़ी हुई नहीं पर हो सकती थी । उलट मैं दुर्गति मुझे बचा दिया । एक शर्दही ला'व बन्दर' वाले शर्दगे मीर उलके बाद तब हुआ था कि बन्दना यहाँ आकर कुछ दिन रहेगी अपनी बदनके पाठ । लेकिन कड़कीके म्यामेँ अगर वय भी बुद्धि होगी, तो भय वह यहाँ न आरगी और बापके साथ छोपी बन्दर' बन्दी आरगे । अगर न वय तो तू जानेके मिय कह देना । बहुत, तुम मनमें कुछ मठ करना बेटी ऐसै बदनको बनवाठ दिया था सक्ता है, परम लाकर नहीं रत्ता जा सक्य ।”

विप्रदास निबत्त हो उनकी ओर देखते रहे, उनके आश्रयकी छीसा नहीं रही । दयामयी कहने लगी—‘मेरी फूटी तकरीर कि मैं उसे प्यार करने लगी थी । सोचा था कि वह अपनीमेंसे ही एक है । उसके पाक-पकनमें गन्धिकाँ हैं—सोचा कि यह तब स्तब्ध-अपेक्षे पढ़नेका पक है, पौरुषर जैसे उड़ते हुए बाइक आते और इट आते हैं, बैठे ही ये गन्धिकाँ भी समय पाकर इट आरगी । कुछ भी हो, आश्रित है तो छतीभी बदन । मगर उसने जानी मिय पति पुन किया काबलकेँके पाका । कौन जानता था विपिन, कि आश्रयक पर कम केकर उन आश्रयका इतना अपस्तन हो गया है ।”

विप्रदासने कहा—“कस इतनी-सी बात है । मगर मेँ अंगे छी बात-पौरुष मानते नहीं, और यह बात तुम मुन मी बुझी थी मी ।”

दयामयिने कहा—‘मुना था पर आँसुसे नहीं देखा था और धारक मनते समझ मी न पा' थी । मानीकी कहानी जैसी यण म्यत्तम हुई थी । पर आँसुसे देखनेसे किमीस किमीकी इतनी बरबि और हुआ मी हो सकती है तो मुझे सचमुच ही नहीं माकूम था बेय ।”—कहते-कहते सारे हृदयक मानो उर उर पुरी-सी आ रत्, बोली—“मरने द । जो मनमें जाये छी करे, कीन-सी मेरी वह—पर कम मेरे पर नहीं—”

विप्रदासको पुन दोरकर कह उठी—“ज्याव क्यों नहीं देल ।”

“ज्याव तो तुम्हने रीखा नहीं मी । तुकन दिया है कि क्यरा भव इत परम

आने पावे,—न आपनी ।”

वह सुनकर दबामपी कुचिपामे पड़ गई, बोली—“तुझमें क्या भेषा दे रही हूँ, समझता है ।”

“समझता क्यों नहीं मैं । बन्दनाने खम्बाय कुछ नहीं किया । खमाबिक्र साधारण व्यवहारमें उनका इमाज मेक नहीं लाता, वे भोग जात-प्राप्त—”

मानते वह खनकर ही तुमने ठहरे बुझाया या और प्यार भी करने बगी । तुम्हारे मनमें शायद आशा थी कि वे भोग मुझसे ही कहा करते हैं, धम्मल करते,—वही तुमसे गमती हो गई, बार दलोकिए लक्ष्मी भी उठाया ।”

दबामपीने कहा—“शायद वह बात ठीक हो, पर उसके ब्याहकी बात तुम क्या तुझे क्या नहीं दोतो विधि । क्या तु क्या कहना चाहता है ।”

विप्रवास मुसकणते हुए बोले—‘उसका ब्याह कभी हुआ नहीं है, और पानेपर भी मुझे क्या न करनी चाहिए । बसिक वह सोचकर मैं अठा ही कि कि उन लोच्येका विवास सत्य कायम प्रचलित हुआ, उन लोच्येने किसीको नही दिया । मगर मा, कलकत्तेमें मैंने एसे बहुतोंको देखा है जो खोरी का पटाटोपमें मानते तो कुछ भी नहीं, खाति भेदपर भी विवास नहीं करते, पु

खपामबागोंको बन्धी-बन्धी भी लूत सुनाया करते हैं पर काम पडते ही मा मही कहा जा हुअते हैं, पता ही नहीं लगता । उन्हीं लोच्येपर मेरी लक्ष्मी का खम्बा है । नाराज मत होना, मैं, तुम्हारा विश्वास उठी जातका है ।”

सुनकर दबामपीने मोलरमें नाकुश हुए ही, तो पाठ नहीं । शिखरातक सम्म बोली—“वह इसी तरहका भोलेपात्र है । लेकिन बेदा, नू अगर बन्दनासे । नहीं करता तो फिर उसका सुभा लाय क्यों नहीं । तलको रसोदरमें मेरे । तो मैंने वहाँ पाना ही छाड़ दिया, मेरे भावमें लाने क्या । और खोद समझे म समझे, क्या मैं भी नहीं समझ सकती ।”

विप्रवासन कहा—“तुम न समझोगी, तो ‘स्ये’ क्यों हुए स्ये । लेकिन मैं वास्तव्य खाति-भेद मानता हूँ, इन्मिष्य तलके हायका सुभा नहीं ला-ये लक्ष्मी दिन नहीं मारुंग टल दिन, लक्ष्मी सामने ही उसके हायका लार्किया, मैं दुबका-बोरी नहीं करनेका ।”

दबामपीने कहा—“तुझे नहीं मालूम विधि कि किस तरह मैं तलके बात सिगामे-टके रखती था । वह यहाँ भाण पा न आय, पर प्याय रखना

बात उठे भाव्य न होनी चाहिए । उसे बड़ा सदम्य पहुँचेगा । तुझपर वह बड़ी भया रलती है ।"—उसके अन्तिम क्षण मनो छटा स्नेह रखे मींग उठे ।

विप्रदासने हँसते हुए कहा—“तुझपर वह भया रलती है कि नहीं, ता तो मैं नहीं जानता, पर उतका पुत्रा मैं नहीं खाटा,—वह बात वह जानती है ।”

‘ऐसी अभिमानिनी स्वकी वह अनन्तर भी तुझपर इतनी भया-मालि रलती है ? इसके मानी ?”

“अब मालि की बात तुम्हीं लोग जानती होगी मीं, मैं तो सिर्फ इतना जानता हूँ कि वह अत्यन्त बुद्धिमती है और तुम लोगोका तमाम छिपाना-दखना उतके निकट स्वर्ग हो गया है ।”

दयामयी शत्रु-भर चुप रहकर न जाने क्या सोचने लगीं, फिर बोली—
“दूसरे शास्त्र वह इतनी चिन्त किया करती थी ?”

“कालेकी चिन्त मीं ?”

दयामयी कहने लगीं—“मैं विख्या उहरी मेरा ता काम सिर्फ नमक-मालि ही एक लकटा था पर वह एक मी न मुनती थी । बाजारसे नित नई-नई सरकारियाँ जाती अपने हाथसे बनार-मुद्रकर बाम्बनी-मुद्राको देती बार स्वकी लव सरकारियाँ बबरदस्ती बनवा देती लव उनका पीछा छोड़ती । माक्स होता है वह जानती थी कि सामने आकर चिन्ते महीं किया था लकटा तसे दूसरेके हाथसे रिशत पहुँचानी पड़ती है । कभी, खाकर क्या तू समस महीं लकटा था कि बैठी खोई मुद्रा कमी लाल-जनमसे भी महीं बना लकटी !”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—“नहीं मीं, इतना लवाब नहीं किया मीं । लिक बीच-बीचमें अथ लम्बे होला था कि तुम्हारे अतिथियोंके उठ लोई परके मारी आचोकनमिं इमारी इत लोईमें भी शाबर कुछ छिरककर आ पड़ता है । पर वह देवकृत नहीं था, किली अतिथिका इच्छाकृत था, यह जानन्व की बात है । लैकन अथ तुम अपना आलितो तुकम है हो मीं । गाड़ीका बल हो चला, मुझे अभी मगना है स्टेशन,—कम्पनाका निर्मजब तुमने रखे दिया था बास्त ले लिया, बला हो ।”

दयामयीने ललीकी लक लक्स करके कहा—“तुम्हारी क्या राय है वह ?”

अदकपनमें लली लालके सामने ललिके लाल बात करती थी, पर अथ नहीं करती । अकलर इधर उधर पकी आती है या निबलर रखती है । परन्तु आज

उठने बात की, सीसे बोधी—“उठने दो माँ, अब उठे परों जानेकी बरत नहीं।”

जबकि सुनकर साठ सुय न हो सकी। उनकी भूमिकाया कुछ और थी, साठ ही मुँहसे वह कह भी नहीं सकती थी। उन्होंने कहा—“बड़े बादमीकी बड़कीको आभिमान हो क्या क्या।”

“नहीं माँ, आभिमान नहीं; लेकिन हम लोग किस तरह बहोसि बसे माये हैं उसे देखते हुए उसे यहाँ फिर नहीं बुलाया जा सकता।”

“क्यों नहीं बुलाया जा सकता बहू ! यदि कोई ऐसा बात हो भी गई, तो क्या उसका फिर सुधार नहीं हो सकता।”

“नहीं हो सकता, यह मैं नहीं कहती पर बरत क्या है माँ ! पहले भी उसन कई दफे परों माना जाहा था, पर हम लोग यकी नहीं हो सक वे और अब भी पैनी ही सब पापाएँ मौजूद हैं। बद खोरम बुकती थी, इसलिए हमोंने उस रखरखे ही तास्तुक छोड़ दिया था,—उस क्या बरत है उसे यहाँ बुलानकी।”

विप्रवासेने कहा—“यह शिक्षावत उसक करनेकी है, तुम्हारी नहीं।” और वे हँस दिये, बोले—“फिर भी बन्दनाकी मुसपर प्रकथ बदा-मर्दि है, पूर माँ हत बातकी गवाह हैं।”

सत्रीने मुँह उठाकर देखा, भकरमात् घाबर यह भूक गई कि साठ सामने ही खड़ी है, बोली—“लिफ माँ ही क्यों, मैं भी गवाह हूँ। सिचो सब बदा-मर्दि करने लगते हैं उस शिक्षावत नहीं किया करती। देखी-देकता भी कम कर नहीं देते, फिर वे मे पूरा बन्द नहीं करती, बरतो हैं—दुःख उठाने अण्डेक लिए ही दिया है।” फिर सासत कहने लगे—‘जुर्द भी माँ, बन्दना कम बदा-मर्दि मही करती, तुमले भी उसका कम प्रम नरी है। तुम्हारी कारण है कि तुम्हारी खोरमे वह लाने पीनेकी तैयारियाँ लिफ इनके लिए कर दिया करतो थी। यह बात नहीं, तुम दोनोंके लिए ही वह करती थे,—तुम दोनोंको वह बहुत पारती है। उसपर तुमने खोद परका भार सौया था, और सबको लिखाने-लिखानेका काम; पर तुम्हारी भबदेकना करव वह बूजयेको पुलाव कतिवा नहीं लिखा सकती थी। फिर तो समीको नमक-म्यत लाना पड़ता। मगर अब फिर क्यों उठे हत रीकथानमें बाकना चाहती हो माँ ! हम लोगोंने भी साठकी

थी वह जाती रही,—भव बीमार नहीं था लक्ष्मी।” इतना कहकर लक्ष्मी कन्दीसे बहसि बस दी।

आत्मत आनन्दसे दोनोंके दोनों हठकुटिले हो गये। लक्ष्मीके स्वभावको देखते हुए ऐसी उक्ति और ऐसा आचरण इतना असामान्य और आश्चर्यजनक था कि वह सोच ही नहीं था सका कि वह अपनी सामान्यिक प्रकृतिमें है।

विपदासने माते पूछा—“बात क्या है मों ?”

बधामनीने कहा—“माझम नहीं बेरा।

“कितलिय बन्दनाका तुम खेग्येने धारा था ? कौन-सी आधा जाती रही ?”

बधामनी मन-ही-मन धारे धरमध मर गई, किन्ती मी तरह बधामनपर न था लक्ष्मी कि ठमध कदा इरादा था। बोली—“बे शठें फिर किन्ती दिन हींणी विपिन, आज नहीं।”

“मों, अक्षर बाबूकी लड़कीके बारेमें तुम्हने क्या ठप किया ? उन खेग्येको कुछ-न-कुछ बधाव ले देना चाहिए।”

“तुझे कोई आपत्ति नहीं विपिन, तुम खेग्यकी यम हो तो ठेक है। विपिने भी पूछ सेना वह क्या कहया है।”—इतना कहकर बे मी कमरेसे बाहर धकी गई। विपदास संशयमें पड़ गये। बात विधेय स्वयं नहीं हुई, पर दृष्टके लिए समझ मी न था।



विपदासने कलकलसे पहुँचकर देखा कि मकान लाम्बी है। बन्दना और लक्ष्मी पिता छोड़ी बेर पड़े रवाना हो चुके हैं। ऐसा संघर्ष उन्हें किन्तुक ही न हो, धी बात नहीं, पर इतनी ध्वारा आर्षका न थी। अप्रत्याक्ष कारण नहीं माझम, जसे तिकें इतना ही माझम है कि जानेकी इच्छा राव साइबकी नहीं थी, तिकें लड़की ही बिल करके बापको रक्षि ले गई है। बन्दनापर किन्तीक कुछ दावा नहीं रहनेकी बुझेरायी मी नहीं, बर्रा अतिथि मद्र थी, फिर भी वह खे खेरीर मुप्यकात किने और बीमार दिव्यदासको बेरोध छोड़कर अमारण कन्दाकी करके पकी गई—इत बातका स्वभाव करते हुए विपदासको बड़ा खेय माझम हुआ। बहुत-कुछ प्रोथोक समान—निर्वच निवृत्त करकर मन्ने दण्ड देनेकी इच्छा होने लयी। फलतु प्रकट करना उनकी प्रकृतिमें न था, वह भाव मन्ने ही रह गया।

चार-पाँच दिन बाद विप्रदास हाइकोर्टमें वापस आये बड़े औरफा कुत्तार सेफर । शायद ममेरिया हो या और मी कुछ हो सकता है । आपन कम-मुर्त हो रही थी, माथेमें अरबन्त दर हो रहा था । अन्नवाके पास जानेपर उन्होंने कहा—“अनु-दीदी बीमार छे मैं कमी पड़वा नही, बहुत मिनीसे अरामुरको भोला देता आया हूँ, पर अबकी मासूम होवा है वह अ्याअसमेत सब वसूम कर लेगा । जान पड़ता है कुछ दिन तकस्थीक हेगा, माथानीसे छुटकाय न हांगा ।”

हालत देखकर अधदा चिन्तित हो गई, परन्तु फिर मी निमपताके स्तरमें साहस दिखती हुई बोली—“नहीं मइया, तुम्हारी इस पुण्यकी देहपर देस्य दानवका जोर ब्यादा नहीं पक सकेगा, तुम हो ही दिनमें अच्छे हो जाओगे । लेकिन डाक्टर कुत्तारने किसीको भेज दूँ—मैं आपरबाही नहीं कर सकूगी ।”

“ओ कुत्तार छे ।”—कहकर विप्रदास पसगपर पड़ रहे ।

अधदा बड़ी आफतमें पड़ गई । ठहर देखसे अन्नानक बामुदबकी बीमारीकी लवर पाकर दिअवास घर लभ गया, आर दत्तजी मी घरमें नहीं हैं—मास्कि-के कामसे लाका गये हुए हैं । अकलो क्या करे, कुछ समयमें न आनसे सबेरे ही उठने आकर कहा—“बपिन, एक बात कहू, तुम गुस्ता छे न होओगे ?”

“तुम्हारी बातपर कमी गुस्ता हुआ हूँ दीदा ।”

अन्नदा पास बेगी हुई उठके सिपर हाथ फेर रही थी, बोली—“घाब देकर रोगीको सेवा ही कर सकती हूँ, परन्तु मूल्य औरतकी बात ठहरें, ओर कुछ जानती नहीं । देस मी लवर नहीं भिजवा सकती, बन्ना बीमार है,—उसे छोड़कर बहू माएगी केते,—साबती हूँ बन्ना ओमीको लवर कर दूँ तो सेवा ?”

विप्रदासने हंसते हुए कहा—“बम्बई, क्या यह-मुहल्ल आर बह-मुहल्ल है दीदी, कि लवर पात हो बह देखने आ जायगी ? उसक भाते भाते—नमक पीते जानमें पहले ही दाल लतम हो जायगी । इनकी अरत नहीं ।”

अन्नदाने अपनी बीम दवाते हुए कहा—“बडैर्षा हूँ, मगवान् बचार्द, ऐसी बात अन्नानपर न आओ, मइया । बन्ना ओमी, कतकसेमे ही हैं, लमी उनका पम्बई जाना नहीं हुआ ।”

“बन्ना कतकसेमे है ?”

“हां, अपनी मौल्यके पर, बाम्बेगोत्रमें । उनक मौला पंआपके एक पद डाक्टर हैं, लड़कीका शाह करने आये हैं । अन्नानक हाजदा स्टेयनर में हो

मर्द,—वे लोग उतर रहे मे गाड़ीसे और वे लोग प्यार-प्यारमें मुस रहे थे । मौसी बहरबली ठाँई अपने पर छे गई । बाबू—बैबसे अब कि मिस ही गई हो तो बड़कीका ब्याह होनेतक हागिब नही छोड़ सकती । और उनके पिछानीको सिर्फ एक दिन राककर बम्बई पठा जाने दिया ।”

विप्रवासने कहा—“मौसी क्या, बान-पहपानकी पो !”

“हाँ, उनकी सगी बड़ी-मौसी है । दूर-दूर रहना होता है, रससे हरहमेधा मैर-मुझकाय नही होती; पर है सगी मौसी ।”

“तुम्हें इतनी बातें कैसे मालूम हुई अनु-बीबी !”

“कल वे लोग बूमन आई थीं यहाँ, दिल्ली रबर सेज । बोपहरके वक्त ऊपरक बरामदेमें बेठी मैं नातीक छिप कबड़ी-ली रही थी, देखती हूँ तो बाहर बाकें लॉगनेमें दा-गाड़ी आदमी आकर खड़े हैं—भोरतै-भरए बहुतसे लोग थे । कौन हैं—उसककर देखा तो अपनी बन्दना-बीबी मी बीस पड़ी । पर पहनाब उदाब देखा बहक गया था कि अजानक पहपाना ही नहीं आ सका, जैसे वह बड़की ही न हो । क्या करूँ, कहाँ बैठारूँ,—बबरा सी-गई । कुछ देर बाद बीबी-बार्ड ऊपर आर, सबकी लवर मी; अम्नी दुनार्ड,—उन्कि मुँहसे दुना कि कमसे कम अम्नी महीने मर कलकत्ता रहना होगा । बोली—बड़े मजेमें हैं बिपटर, सिनेमा, बन मोशन, बाग-बगीचोकी कैर—यही सब होता रहता है, नित बका कुछ-न-कुछ ।”

विप्रवासने पूछा—‘बाबूकी बीमारीके बारेमें उससे कुछ कहा था क्या !’

“हाँ, कहा कहीं नहीं । तुनके बोली—देवी कोई जित्ताकी बात नहीं, अच्छ हो आसगा ।”

विप्रवास लब-भर चुप रहकर बोले—“उसे लवर बेकर क्या होगा अनु बीबी । मैं मी अच्छ हो आऊँगा । कुछ दिनतक तुम अकेली मेरी बैल-माम न कर सकोयी !”

अनराने खेर देकर कहा—“तईयी कहीं नहीं मरवा, लेकिन तो मी मुझे बगता है कि एक बार जया देना ठोक है, नहीं तो वह बाबर बहुत दुल्न करेगी । कुछ मी हो, आखिर दे तो बदन ही !”

“पर जानती हो !”

“अपना छोकर जानता है । उन लोगोंने बहाँ पहुँचा आया था ।”

विप्रवास बहुत देर तक चुप रहकर बोले—“अच्छा, वे दो एक बार खबर। पर इतना आश्रय-प्रसन्न होकर क्या वह था सकेगी ! मासूम तो नहीं होता सीदी ।”

अधदाने कहा—“मासूम तो मुझे भी नहीं होता मरणा, अब तो उनके पहनाव-उड़ावकी ही बात नबर आ रही है मुझे। फिर तो एक बार कहवा मेरे।”

विप्रदानेने निरुत्साह और थक हुए कण्ठसे कहा—“कहवा मेरो सीदी, अब कि तुम्हारी ऐसी ही इच्छा है तो ।”

१७

अकस्मात् हावड़ा स्टेशनपर मौसीके साथ बन्दनाकी भेंट हो गई तो उसका बर्नई जाना स्वागत कराना और उसे भय पर से जाना मौसीके लिए कहवापन न हुआ। वे अपनी लड़कीके विवाहके लिए पठित कार्यात्मक पत्रावसे अपने देश आ रही थीं। बन्दनाका अपनी मौसीके प्रस्तावपर राज हो जानेका, असह्य कारणके लिये एक और कारण था, जिसे यहाँ प्रकट कर देना आवश्यक है। बचपनसे लेकर अबतक बन्दनाका जीवन सुदूर प्रवास ही प्रथातमें बीता है, उसकी पिछा-बीछा आदि सब यहाँकी है और महा वह कि वह किस समय अकेले अन्तगत है उस समाजका अनिश्चर अनुदाय कल्पकतम रहता है, उसका साथ आश्रय उसका धर्मग्र परिचय हुआ ही नहीं। सामूची परिचय से कुछ उसे हुआ या वह कि क भ्रमरायें, मासिक-गर्भ और साधारण उपवास-कानिपोंके सहयोगसे। कल्पकसे किनका हर कल जाना-धना बना रहता है उनके मुँहसे अनेक वचन उठे बोल-बीचमें मासूम होते रहते थे—येनिग बंदना एम्. ए., विनिटा सैनरी बी. ए.—अनुसूच, विप्रभगा, विप्रमन्ना आदि अनेक लड़कीसे नाम और पसन्दी करानिपों—बीतरी लड़ीक अत्याधुनिक मनोभाव और सम्राज्यकारी जीवन-यत्राका विवरण इत्यादि; परन्तु उसमें कितना यथाप है और कितना बनाबरी, इन बातका नि-संशय रूपसे अन्दाज्य जगाना उनके लिए कठिन था। इसीसे जाने समाजका कोर विप्र उसमें मनमें अठिरहित और पुष्य है ता कोर अत्याधुनिक रूपसे पीछा; उन्ही विपोंकी प्रसन्न परिवर्तसे सब और सब कर सेनेके लिए सब उठे मौसीकी लड़की प्रकृतिक ज्ञान वैद्य मुनाग मित्र गया तो वह उसकी

उपेक्षा न कर सकी; स्वर्गहीमें छाडी होकर उनके शारीरिकके मकानमें पहुँच गई। अपने समाजके बहुतेके साथ उन बोगोकी अम-पहचान थी, सासकर प्रकृति यहीके स्फुट-कालेमेंमें प्यकर थी० ए० हुई थी, उसके अपने मित्र और कली-सहेलियोंकी सफ़ा भी कुछ कम न थी। वहाँ आनेके बाद बन्दनाके उसी समुदायमें कई दिन बीत गये। मित्र अनायनाय रात बन्दई चले गये, परन्तु सुधीर रह गया कलकत्तेमें ही। आसप्त-विवाहका आनन्दोत्सव रोब ही चल रहा है। उस दिन केम्परक एक बण्डेमें तिकनिक करके लौटते वक्त बन्दना दिव्यासाक्षी लवर लेने उन बोगोके घर पहुँच गई थी। वही लवर उस दिन लखवाने विप्रदासको सुनाई थी।

मौलीके मकानमें उनका एक वा समाजके बोगोका आना-बाना, खाना पीना, गपचप, लख-बखत बगैरका एक रोब भी नामा न होता था। कतिपि वा पहुँचे और ऊपरके बड़ कमरेमें महा समारोहके साथ बालके बीरपर शोर चलन क्यो; इतनेमें विप्रदासकी माँ मरकम मोटरने आकर रोहके भीतर प्रवेश किया। नीकर-बाकरोका हुँड साथवान हो उठा परन्तु घोघरके गाड़ीका दर बाबा लोक देनेपर जो प्रौढ़ की मोटरसे उठरी उतकी पोसाककी सामान्यता और स्वस्थगते कब-कोई भिस्सत और परेधान हो उठे। मोटरके साम उठ क्योका कोर भी सामंस्व नहीं था अथवाक पदनाकेमें एक दिना किनारीकी सफ़ेद थी। बैली ही सफ़ेद मोडो साबर, नगे-नीच लाली हाथ और तिरका पद आये ललाटतक विवा हुआ — वह खुब भी मनो लख-संकोचो विमर ली गर। नीकर पाकरीकी आकन-पगड़िनी देलकर वह समझना कडिन है कि कौन कित्त रैयका है, फिर भी सामनेके एक नौकरकी बगाली समझकर अथवा ने पूछा—बन्दना-बीजी करार है ?

वह बंगाली ही था, बोला—“हाँ, है। लख ऊपर पाय ली रहे हैं, आप भीतर आकर बैठिए।”

“नहीं मैं वही लकी हूँ उन्हें बरा लख नहीं दे सकते।”

“दे सकते हैं। क्या बन्दना शाय ?”

“बहो आकर कि विप्रदास बाबूके घरते अन्नवा मार है।”

बेइरा अन्न गवा। लौनी देरते बन्दना नीचे उतर मार और अन्नदाका

इस एकदके उसे कमरेमें आकर बिठाया । ऐसा उसने कभी नहीं किया था, वह मूल गई कि सामाजिक दृष्टिकोणसे यह विधवा उससे बहुत छोटी है — वह विप्रदासके पक्षी एक दासी मात्र है । बिना कारण उसकी ओरसे भर भार, बोझी— 'अनु-दीदी, तुम मेरी लखर-मुच सेने आयोगी, इसका मुझे क्याक न था । माया था मुझे तुम भुल गई हो ।'

"मुझेगी क्यों बीबी-बार, भूखी नहीं । बड़े बाबूने मुझे आपके पास भेजा है यह कहनेको—"

"नहीं अनु-दीदी 'भाप' कहोगी तो मैं बचाव न दूंगी ।"

बन्दनाने इसार खोर्द आपसि नहीं की, सिध इससे हुए कहा— "उन लोगेको गोदमें लिखावा-रिखावा है इतकिय 'तुम' कहा करती हूँ, नही तो इस परको मैं दासीके सिवा और कुछ नहीं ।"

बन्दनाने कहा— 'सो होने दो । मगर मुझसे ताहको तो कबकचे आय पोंच-सै रोज हो गवे कुछ क्या एक दिनके लिये न आ सके ? वे तो जानते हैं कि मैं बर्बाद नहीं गई ।"

"हाँ, मेरे लिये ही यह लखर उन्हें मिला चुकी है । पर जानती तो हो बीबी-यार, उन्हें किचना काम खता है । उन्हें अर भी बक नहीं मिला ।"

वह मुनकर बन्दना सुन न हुई, बोझी— "काम तो सभीको रहता है अनु-दीदी । हम लोग यह भी इछालिए भइताक बहाने तुम्हें मेव दिया, नही तो बाद भी नहीं करते । उन्हें करना जाकर कि मेरी मौसीक पास उनके बराबर धन-सौकरत नहीं है फिर भी यदि एक बार मेरी लखर-मुच सेने इत परमें पदापव करते तो उनकी जात नही मारी जाती और मान-मर्वादाकी भी हानि नहीं होती ।"

इन सब उवाहनीका ज्वाव देना मझाका काम नहीं था । उनने वहाँ बहनेके लिये अनुपेव किया, पर बन्दनाको मुननेका धैर्य न था, मझाकी बात काटकर यह बीचहीमें बोल उठी— "नहीं अनु-दीदी, सो नहीं होनका, वही भी जाने-मानेका मेरे पास बक नहीं । कलके बाद परखे मेरी बहनका ज्वाह है ।"

'परखे !'

"हाँ, परखे ।"

अप्रदा सोचने लगी कि इस समय बीमारीकी सखर देना उचित है या नहीं, किन्तु बन्दना उठी बच्च बूछ बैठी—“मुझे बुझानेका तुम्हें हुकम कितने दिया ! छोटे बाबू तो मुझे मात्तम है, हैं नहीं, छाबब बड़े बाबून दिया होगा । मगर उनसे कह देना जाकर कि हुकम बन्ध-बन्धकर उम्होंने अपनी आवय विगाड़ ली है, मैं न तो उनकी कर्मधार हूँ, न उनकी समीचीनीका कोई कर्म-धारी । मुक्तम अनुपेय करना चाहिए उम्हें छुद जाकर । बीबी अम्मी तय हैं ?

“हो अम्मी तय हैं ।”

‘और तय ?’

अप्रदाने कहा—‘खबर भारी है कि बन्धा बीमार है ।’

‘कीन बीमार है—बाबू ? क्या हुआ है उसे ?’

‘तो मुझे डोक नहीं मात्तम ।’

बन्दना प्रसिक्त चेहरेसे बोली—“बन्धा बीमार है फिर भी छुद न जाकर मुलकी साहब नहीं पीठे हैं । मम्मके-मुकदमे और अपने-पैतेका निष्काष ही उनके स्थिय इतना मदकर है अनु-दीकी ! हिताहितका भी तो कुछ बोध रचना चाहिए ।”

अप्रदाने कहा—“अपने-पैतेका निष्काष नहीं बीबी-भार्य, भाव हो बिनते से छुद भी लायपर पड़े हैं । बन्धेकी बीम्ययेसे देखये तब परेषान हीने, इतने खबर भी नहीं तो का सक्ती और नहीं यह हाल है कि बचकी भी कर नहीं हैं—शाका गये हैं । अकेली भ हूँ मूरख औरत, कुछ समझती बूझती नहीं, बर क्या है कि बीमारी कहीं कठिन न हो उठे । बिस्मिके कमी कुछ होता-इबायत नहीं इतने बिन्या और प्याहा है । प्याहा हो मुकनेके बाद एक बार ब्य नहीं तकागी बीबी-भार्य !”

मारे आघातके बन्दनाका चेहरा फूट बड़ गया, बोली—“डाक्टर जाने से ? क्या करते हैं वे ?”

‘करते हैं, बरकी कोई बात नहीं, मगर ताय ही किसी दूसरे आस्तरकी बुझानेकी बात भी कह गये हैं ।’—कहते हुए अप्रदाकी आँतें भर भारी । उसने बन्दनाका हाथ दबाते हुए कहा—‘ये हो बिन तो किसी-न-किसी करर काठ हूंगी पर प्याहा हो मुकनेपर भी क्या न आभोगी ! हम जोगीपर गुस्ता ही बनी रहोगी क्या ! तुम जोगीके बीच कहीं क्या हुआ है, मेरे बाननेकी बात

नहीं, मैं जानती भी नहीं, पर इतना जानती हूँ कि शोष और धारे किसीने भी किया हो, बिपिनने इर्गिज नहीं किया। उसे न पहचाननेसे धासद गलती हो शय, पर पहचान जानेसे ऐसी गलती नहीं होगी बीबी-बाद।”

बन्धना कुछ देर चुप रहकर बैठते उठ लड़ी हुए, बोली—“बन्धो, मैं चलती हूँ।”

‘जमी चल्नेगी?’

“हां, जमी तुलत।”

“धरपर कह नहीं आभोगी! ये शोग फिर करने जो!”

“कहने-कहवानेमें डेर हो आबगी मनु बीबी, तुम चलो।” इतना कहकर वह उत्तरको प्रत्येक्षा किने बगैर गाड़ीम आकर बैठ गई। एक बेहदको द्यारेते कुलाकर कह दिया कि वह मौसीबोते आकर कह दे कि मैं अपनी बदनक पर था रही हूँ, बहा विप्रदास बाबू सोमार हैं।

बन्धनाने आकर वह विप्रदासके कमरेमें प्रवेश किया तब दिन छिप रहा था पर बत्ती बन्धनेका समय नहीं हुआ था। विप्रदास कर लकड़ीके लदारे इत लंगसे बैठे हुए थे कि बेहद देखकर कोई यह नहीं कह सकता कि वे बहुत क्याबा सोमार हैं। बन्धनाके मनमें क्या लसकी आ गई; बाक्य—‘मुलकी साहब, नमस्कार। बीबी मोगद होती छो कहती, बहोंक पीव सूकर हो प्रथाम करना चाहिए। पर घुनेमें डर लगता है, कहां घुन न लय शय।’

विप्रदास मुँहसे कुछ न बोलकर तिर्क हँस दिये। बन्धनाने कहा—“तुल-बाया क्यों था,—सेवा करनेको? मनु-बीदी कह रही थी क्या देनका बक हो हा गया है। मगर वह क्या? बैयलजकी गाबिबा कहां है? बाकडर कुन्धनेकी मुदि किसने सी आपको?”

विप्रदासने कहा—‘हमारे यहाँ ‘हीठ’ एक धन् है, उलके मानी जानती हो बन्धना!’

बन्धनाने कहा—“जानती हूँ महाधर, लूव जानती हू। मनुष्य हाकर जो मनुष्यसे दया करते हैं, घुते नहीं, उन्द करते हैं। उनसे बहकर ‘हीठ’ लंवारमें और को- है क्या?”

विप्रदासने कहा—“है। जिनमें लब-हटकी फीमा करनेका बीरज नहीं होता, मार को बिना धरम निर्दोषीका लंक मारकर अपनी बहादुरी दिखाते

फिरते हैं वे। और उनके मुँहकी पाशा तुम खुद हो।”

“बिना अरब किस निर्दोषके संक मारा है ध्यान बता तो शीघ्रिये ?”

“मुझे नहीं बताया पाशा कन्दना, कसब मानेपर खुद ही ध्यान आयोगी।”

“अच्छ, ठीकी निनकी प्रतीक्षा किसे खुँगी।” — बह करकर कन्दना लपटके पास एक कुरसी खींचकर बैठ गई, बोली—“अब वह बताएँ कि आपकी कमीकत कैसी है ?”

“अच्छी है, पर कुत्तार है। यतको और मी कुछ बढ़ जावगा मयतम होता है।”

“मगर मुझे क्यों कुत्तवा मेजा है ? मेरी आपकी किसलिये अच्छत है ?”

“अच्छत मुझे नहीं कतु-बोरीकी है वह डर गई है। उसके मुँहसे तुना है कि परतो तुम्हारी बहनका म्हाह है, तो म्हाह हो जानेपर एक दिन धाना। मेरे माच्छ तुम्हारी जीजीने कुछ संवेधा मेजा है वह तुनाना है।”

आज नहीं तुना लकगी ?”

“नहीं आज नहीं।”

कन्दना दो-एक मिनट चुप बैठी रही फिर बोली—“तुम्हारी ताहब, आपकी लकीकत ऐसी कुछ म्हाह लपकत नहीं है, वो ही पार निनमें डाक हो जयगी। मैं जानती हूँ कि आपको मेरी अच्छत नहीं, फिर मी आपकी सेवाक्य बहाना लेकर यहाँ रहुँगी, यहाँ नहीं आऊँगी। मैंने अपना डूक जानेके लिये आहमी मेज दिया है, आप खेर आपकी नहीं कर लकते।”

विमर्शने हलते हुए कहा—“किस बातकी आर्षित बम्बना, तुम्हारे रहने में ? मगर तुम्हारी बहनका म्हाह है जो ?”

“म्हाह तो मेरी लाव नहीं होगा,—मेरे न जानेपर मी बहनका म्हाह हो जावगा, बकेगा नहीं।”

‘कतनुप तुम छामिन न होयी म्हाहमें ?’

“नहीं।”

“यार ठीकी किये तो तुम यहाँ बकी थी ?”

“अ रही थी बम्बर्, स्टेशनसे पाफन बकी आई, पर ठीक इतीके लिये नहीं। पूर यतो हूँ अपने सम्यकके माका किचीको नहीं जानती, मुह-अवानी बहुरीके बहुर-वी बात सुना करली थी तप्यात-कहानियोंमें म-जाने बसा-सा

पदा करती थी, उन लोगोंके साथ अपनेको मिलाकर एक न कर सकी थी,—
 ऐसा श्रमता या जैसे हम लोग समाजसे अलग गतिष्पुत-स हों। सो जब
 मौसीजीने आपसे किया तब मैंने सोचा कि प्रकृतिके ब्याहमें देवयोगसे एक मौका
 मिल गया है, जो फिर मिलनेका नहीं; इससे रुक गए मुसक्री-साहब।”

विप्रदासने मुसकराते हुए कहा—“मगर वह ब्याह तो अभी बाकी है।
 अपने समाजके लोगोंको पहचाननेका मौका कहाँ मिला।”

“मौका पूरा नहीं मिला, यह सही है, पर कितना मिला है उतना ही मरे
 किए काफी है।”

“तुम्हारे साथ इन लोगोंका कितना मेक पैठा बन्दना ! मैं भी सुन सकया
 हूँ क्या !”

बन्दना हँस ली, बोली—“भाप अच्छे हो लीबिए, उसके बाद विस्तारसे
 सब सुनाऊँगी।”

नोकर बत्ती जलाकर चला गया। सिखानेकी लिफ्टकी बन्द करके बन्दनाने
 हवा लियाई; भार कहा—“अब भाप बैठे मस्त रहिए, सेट जाए।”—कहकर
 उसने सिमटे हुए विस्तरका झाड़ फटकारकर साफ कर दिया, तर्किये बहाँके
 तहाँ टीकसे लगा दिये। फिर बिना लक सेट जानेपर उन्हें पैरसे गले तक अच्छी
 तरह चादर उठाकर कहा—‘अच्छे हाकर अपनेका शुद्ध करनम न जाने
 आपको कितने गेबर-न गाबलकी जरूरत पड़ेगी।’

विप्रदासने अपने खानों हाथ पैदाकर कहा—“रुठनेकी। पर आक्षय तो
 यह है कि तुम्हें सवा-जठन करना मा बोधा-बहुत आता है।”

‘बोधा-बहुत आता है ! नहीं महाशय, एसा नहीं कह सकते। हम ल्योगिक
 बारिम आपको अरा भार भी ब्यादा साज लखर रत्ननी पन्गी।’

“यानी—”

‘यानी मगर आप हम ल्योगिकी निम्दा ही करना चाहते हैं तो आपको
 वह पूरी ज्ञानकाराक साथ करनी हागी। इस तरह आँल मौसक अरुमंड बात
 मैं नहीं करने दूँगी।’

विप्रदासक खेरेपर परिहासनी मुसकराहद आ गर, उन्होंने कहा—“तुम्हारे
 ये ‘हम लोग’ कौन है बन्दना ! जिन ल्योगिक बारिम मुझ आर भी अरा ल्यक-
 लखर रत्ननी पन्गी ! जिन ल्योगिके पासस तुम अभी-अभी

योगीके बारेमें ?”

“किन्तु कहा मैं मया आई हूँ ?”

“मैं कहा हूँ ।”

“आफ्ने कैसे जाना ?”

“जाना तुम्हारा मुँह देखकर ।”

बन्दनाने क्षण-भर उनके मुँहकी ओर देखा और फिर कहा—“हिन्दू बापूने एक शोक कहा था कि माइ साहबकी नबरेते कुछ विषयना नहीं था सफ़्त । तब मैंने विश्वास नहीं किया था कि बात उनकी इतनी लम्ब है । आपकी बीमारी मैंने नहीं चाही संकित, इसने लक्ष्मण ही मेरा उद्धार कर दिया है । लक्ष्मण वहाँ मया आई तो मैंने अपनेको बचा लिया । जितने दिन आप बीमार हैं मैं आपके पास ही रहूँगी, उसके बाद छोटी बापूजीके पास चली आऊँगी, —मोतीके घर अब न आऊँगी । बूझे, किन्तु योगीको देखना पारा था उन्हें मैंने देखा था । ऐसी इच्छा अब नहीं है कि एक दिनके लिए भी उनमें आकर रहूँ ।”

विश्वासात कुतूहल उभकी तरफ़ देखते रहे । बन्दना कहने लगी—“उनके वहाँ लिटल गाड़ी, लाड़ी और बड़े प्यारके किस्ते हैं । मैं नहीं जानती कि कहीं मैनीलास है और कहीं मन्त्रीका होरक लेकिन उनकी बालोंमें बर्बाद बारेमें कैसे-कैसे गन्ने इपारे हाते रहते हैं,—सुनते-सुनते ऐसी लचील होती है कि कहीं मया आऊँ । आज इस परमं यैके सम्बन्ध हो रहा है मनो इपरके कर दिन मेरे लक्ष्मण धूम बाबूकी आँधीके बक़रमें बीते हों । उसके बन्दर बे बीबा कैसे करते हैं मुम्बई साहब !”

विश्वासातने कहा—“यह ख़तब मेरा जाना हुआ नहीं है । मन्त्रिमिमें कपरं लिख तरह ठिकी रहती है चापप उठी लम्ब ।”

बन्दनाने एक लीक छोड़ते हुए कहा—“दुलका बीजन है । उन योगीके न तो धार्मिक है और न बम-कर्मकी कोर् बन्ध । कुछ भी विश्वास नहीं करते, सिर्फ़ बहस करते हैं ।” फिर क्या ठहरकर बोली—“अलवार पदा करते हैं, इतने गन्ते बहूत हैं । बुन्तयामें येक कहीं कहा हो रहा है, उनसे लिखा नहीं । पर मुम्बई तो वे कैसे महीं जाते, इतने आधी बार्ते समय ही नहीं पाती । सुनते-सुनते अब भी उकता ज़्यादा लम्ब और कहीं आकर लक्ष्मीकी लीक लिखा करती । मगर उन योगीको बकाबद नहीं आती, बकते-लकते लम्बके

ब मानो उन्मत्त हो उठते हैं।”

“पर पिताजी पाम होते तो तुम्हें बहुत-बुद्ध सहूलियत होती बन्दना। लक्ष्मीकी सारी लखरें तुम उनसे पूछकर जान सकती, —उन व्यक्तियोंके सामने यमिन्दा न होना पड़ता।”

बन्दनाने हँसकर उनकी बातका समर्थन करते हुए कहा—“हाँ, चापूरीको इ बीमारी है। सारोकी सारी लखरें बन्दनाके सान-बीनके साथ नहीं पढ़ लेते बल्कि उन्हें सुनि नहीं जाती। पर हम लड़कियोंके लिए उनकी बख्श कर है। तब ही तो ! क्या हागा जानकर कि बुनियातमें कहाँ क्या हो रहा है !”

“यह बात तुम्हारी बीबीके मुँहसे साम्य दे सकती है बन्दना, तुम्हारे मुँहसे नहीं।”—कहकर विप्रदास वहाँ से चले गये।

बन्दनाने कहा—“वे लोग क्या मेरी बीबीसे क्यादा जानते हैं आप समझते ! ! क्या भी नहीं। रीत्ये-भागर होनेसे ही मुँहसे आवाज निकलती है। उन लोगोंको और कोह बात जानी हो या न जानी हो, मगर इतनी बात तो समझ ली है मुझकी साहब।”

“मगर शन तो चाहिए ही !”

“नहीं, नहीं चाहिए। शनकी उल्लूक-कूटमें उनका मुँहका मधु फिर होता जा रहा है। जानते हैं वे मेरी बीबीकी तरह लखको प्यार करना ! नहीं जानत। कर सकते हैं वे बीबीकी तरह मरिक्त ! मरिक्त कर सकते। उन लोगोंके यहाँ किसीका कोह मित्र भी है ! मास्म हाथ है नहीं है, ऐसा ही उन लोगोंमें पास्तारिक विरोध है। उन लोगोंके यहाँ अभाव भी क्या कुछ कम है ! बाहरके टाठ-बाइसे मास्म ही नहीं हो सकता कि उनके अन्दर इतना पास्तारिक है ! फिर कितनीए उनके साथ इतना रोचक किया क्या ! भीतरसे तो सायका साय पुनकर चकनी हो गया है !”

विप्रदासन हँसते हुए कहा—“हो क्या गया है बन्दना तुमको, इतना गुन्ना क्यों ! कितनेने बोलते रुपये तो नहीं से लिये !”

“नहीं, लोगोंसे नहीं लिये, उधार लिये हैं।”

“कितने !”

“बरादा नहीं, चार-पाँच ली।”

“उनके नाम तो मास्म हैं !”

“मासूम से, पर मूल गई हूँ।”—कड़कर बन्दना हँस पड़ी, बोली—“छि-छि, इतनी कम बान-गहवान होनेपर भी कर्तुं कितीसे कस्ये उधार माग लफटा है, वह मो में सोच ही नहीं पथी। माँम्नेमें पुचानका बरु भी संकोष नहीं होय, जालीमें कनबाको छापाकक नहीं सककती, मासूम होता है जैसे वह उनका रोकमर्राका काम है। वह कैसे सम्भव होय है मुन्हीं लाइए ?”

विप्रदासका चेहरा गम्भीर हो उठा, कुछ देर स्तब्ध रहकर बोले—“तुम्हारे मनाका उन बोगीने बहुत पपावा विप्यक्त कर दिवा है बन्दना, मगर समी ऐसे नहीं होते, तुम्हारी पीलीका समाज ही तुम बोगीका साथ समाज नहीं है। उसके बाहर जो लोग बसे हुए हैं, उनमें ईदोगी तो थायव उम्हें भी किता दिन देख जोगी।”

बन्दनाने कहा—“देख खूँगी उन अपनी पारचाफ्रे भी तुम्हारे खूँगी, लेकिन कि-ई देख लिया है वे सभी विप्यक्त हैं, आर सभी ऊँचे हबोंके म्पकिचाके आसमी है। उम्पनास-करानिबोंकी हैंगी दूर भागासे मुलभिकत होकर वे ही बोग दूरते मेरी हबमें जैसे आसर्वजनक सुन्दर मनाहर बग रहे थे ! मेरे भी गपकी सीमा न रही थी। मैं सोचने लगी थी कि हम म्परिबोंकी किछकी छानेकी बन्दनाभी अब मिट गई। मेरी वह गपकी अब दूर हो गई मुसली लाइए।”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—“गपकी कैसे ? ये तो बड़ी तेजीसे बड़ी आ रही हैं—वह तो छूट नहीं है।”

मुनकर बन्दना भी हँस ली, बोली—“नहीं, छूट क्यों होने लग्य, लच ही है। फिर भी मेरे किप्र इतनी म्पस्थना है कि छक्कामें ये लोग बहुत थोड़ा हैं—इनका ऊँची सीनारकी बायेर बड़ाकर धारगुल मचा बेना मित निम्प्य है जैसे ही दाम्पात्यर भी।”

विप्रदासने कहा—“तुम्हारा वह एक बार डंगका दकिवानूपेन है। अपने धर्मका छोड़नेमें विप्यक्तता ही धाम्ना करना पड़य है बन्दना, लचथान करना।”

बन्दनाने उनकी इत बातम म्पान नहीं दिया, करने लगी—“इत पगण्य समुनाबक बाहर ब्याकका विद्याल मारी लजब भीख है। उनको मैंने आक-कक ईला नहीं, बाहरसे धारब देला भी नहीं जा सकय, फिर भी मासूम होता है हबाकी छप उलीका अरिगत है समाजक नि-स्थापन। वह जानता है कि

ठलमें छोटी भी हैं और बड़ी भी—जो बड़ी हैं उनका दृष्टान्त मौजूद है मेरी बीबीमें, उनकी सासमें—अबकी कलकला आना मेरा सायक हा गया मुन्बई साहब ।—भाप हंस क्यों रहे हैं ?”

“सोच रहा हूँ, क्योंका जोक भाग्यीको किस कदर मुन्बर बना आया है । यह धोप मेरे अन्दर भी है न ।”

“कौनस कपड़ोंका साक—उन पाँच-सोका ?”

“मासूम तो सही होता है ।”

बन्दना हँसती हुई बोली—“इसके लिए अब कोई चिन्ता नहीं । भापकी सेवा करनेकी मजदूरीका तिल देना करके अब वूना बसूल कर लूंगी तब पिण्ड छोड़ूंगी । आप नहीं बेंगे तो मैंने बसूल कर लूंगी ।”

इतनेमें अन्नदान कमरेके अन्दर आकर कहा—“भाठ बज रहे हैं, विपिनके खानेका बफ़ हा गया है ।”

बन्दना व्यस्त होकर बोली—“सबसे अनु-दीनी, भाई मैं । क्यों, आरुँ मुन्बई साहब ?”

विप्रवासने हँसते हुए कहा—“जामा । मगर सेवामें बुद्धि हुई तो मजदूरी काट ली जायगी ।”

“बुद्धि नहीं होगी महाशयबो, नहीं होगी ।”—कहकर हँसती हुई बन्दना बाहर चली गई ।

१८

बन्दनाने कहा—“जाना ठैवार है, से भाऊ ?”

विप्रवासने हँसते हुए कहा—“तुम बराबर मेरे जात भारनेकी काशिष कर रही हा । अभीतक मैंने संध्या-बन्दना नहीं की, परते तलकोम्बरणा क्या हों ।”

“मैं पुत्र हो कर हूँ मुन्बई साहब !”

“जरी तो और सही जान है का कर दगा ! पर मॉकि पूज्य-वरतक न का छूँगा—घरीरमें ताबत नहीं है—इसी कर्ममें इस्तभाम करना होगा । परते मैं देखूंगा कि कैसा भायोबन करती हा, दार बुद्धि पकड़नेकी कर्म यात है कि नहीं, तब तमसक बघाऊंगा कि मेरा ग्यना तुम जाभोयी या महाशय ।”

मुनरु बन्दना पूथी न तमार, बोली—“मैं इन्ने छठार राखी हूँ । लेकिन

परीलामें पाम अगर हो गई तो फिर आप मुझे बड़े छठे पेटल नहीं कर सकेंगे।
बचन हीलिय।”

“बिना बचन। पर मुझे अपने हाथों लिज्जनेमें मुझे काम क्या है।”

‘तो मैं नहीं बताऊँगी।’—कहकर बन्दना अस्तीते तर्किते चल दी।

कोई बस मिनट बाह, बन्दना नहा बोके तैयार होकर बन्दते मय एक लोट
हाथमें थिय हुए विप्रदासके कमरेमें बालिक हुई। कमरेमें जित तरह सुल्ये हुई
लिङ्गकीमेंसे पूर्व दिशाकी धूप आ रही थी उसी तरहके स्थानको पानीसे बण्ड्ये
उरह रगड़ बोकर अपने आँसुसे पोंक दिया पूजा-परते आठन और कोष्ण
कुम्भी आदि काकर जहाके तर्क तमा दिने पूजानी काकर धूरको बलिपी
सुलगा ही और फिर बाँधी अगोष्ण हाथ-मुँह बानेके थिय पानी और बरतन
बगौरह काकर विप्रदासके सामने रखती हुई बोली—‘आज पूरु चुनकर भाव
गुँकनेका समय नहीं रहा नहीं तो गुँब बगतो कल यह कमी न रहने वृगी।
देकिन आज-बटेका समय देती हूँ इच्छे ब्याया नहीं। अभी बजे हैं नौ—ठीक
छात्रे-नौ बजे फिर आऊँगी। इस बीच आपको कोई नहीं छेड़गा मैं ब्यती
हूँ।’—इतना कहकर वह बरवाना बन्द करके चल दी।

विप्रदास मुँहसे कुछ न बोलकर उरकी आर देलते रहे। आध पटे बाह
बन्दना बल बापस आर तब सभ्या-पूजा समाप्त करके वे एक आधमकुरकीपर
आधामने बैठे हुए थे।

“पाठ हुई या पेटल मुलझी-साहब।”

“पाठ करटें दिबीजनमें। मेरी मौकी मी माठ कर दिया हमने। जिसकी
मशाल कि अब तुमसे थ्येच्छ करे कौन कह सकता है कि तुमने थ्येच्छोंके स्क्रू-
कालेझी पढ़कर थी-ए पाठ किया है।”

“तो अब लानेको ब्यर्क।”

“अच्छो। अगर उरके परछे इन लवको रख आओ।”—कहते हुए

विप्रदासन पूजाका सामान लिजा दिया।

“वह मुझे न बताना होगा, मैं जानती हूँ।”—कहकर उरने पूजाके

बरतन आरि उठाये ही थे कि इतनेमें कमरेके बाहर एक साथ बसुतसे ऊँची
एड़ीबाने झूँकी लद-लद आवाज सुनाई थी; और दूसरे ही सव अपदाने

८. बलने काकरके लीनेसे बसे छोटे-बसे घाब थिनसे पूजाके बल बताना बता दे।

हरबाबूने झोंककर कहा—“खीची-बाह, आपकी मौनीजी—”

आगे कहनेकी जरूरत नहीं पड़ी; मौनीजी और उनके साथ दो-तीन कम-उमरकी लड़कियाँ कमरेके अन्दर दालिज हो गई । विप्रदास उठके लड़े हो गये और अम्बरनाक स्वरमें बोले—“भाइए ।”

मौलीने कहा—“नीचे ही सावूम हो गया है कि विप्रदास बाबूकी ठकीपत सीक है—”

विप्रदासने कहा—“हां, मैं जख्ता हूँ ।”

आगन्तुक लड़कियाँ बन्दनानाको देखकर इतने ज्यादा विरिमत हुए पैरोंमें खड़े नहीं, बदनपर धमडम नहीं भीगे बालोंसे रेशमकी छटेर साड़ी मीग रही है, जिससे हुए काठे बालोंका भारो बास पीठपर पड़ा हुआ है, शानो हाथोंमें पूज्यक बरतन-भासन आदि हैं,—उसकी यह मूर्ति उन लोगोक लिये अदृश्य और अपारिचित ही नहीं, बल्कि अचिन्तनाय और अकल्पनीय भी थी । बन्दनाने कहा—“आप लोग दरवाजा छोड़कर जरा इटक लड़ा हो जायें, तो मैं इन्हें रस मार्क ।”

एक लड़कीने कहा—“यू आभोगा क्या इतलिये ।”

“हां ।”—दरकर बन्दना बाहर जाती यर ।

एक मर बाद उसी बेरामें वह और आई और विप्रदासकी कुलीते लटक कर पड़ी हो गई । मौलीने कहा—“हम लोगोंसे मीर कह-मुने तुम खसी आई इसके लिये मैं नाराज मरी होती, पर आज तुम्हारी बदनका ब्याह है—तुम्हें बचना पड़ेगा ।”

दोनों लड़कीोंने कहा—“हम पकड़ने के जानेके लिये आई हैं ।”

बन्दनाने कहा—“नहीं मौलीजी, मेरा जाना न हो सकेगा ।”

“यह कैती बात है बन्दना । मरी बख्शते प्रहरीतको कितना दुःख हागा, जानती हो ।”

“जानती हूँ, फिर भी मैं न जा सकूंगी ।”

तुनकर मौली विरमय और धोमसे बचीर हो उठी, बोली—“मगर इस ब्याहके लिये ही तो तुम बभर जानेस रुकी हो,—इलीलिये तो तुम्हारे पिता मेरे पल छोड़ गये हैं । वे मुनेगे तो क्या करेंगे बठामो ।”

इस लड़कीने कहा—“इसक लीजा मुजीर बाबू—मिररर बाग (बल)—बहुत नाराज हो रहे हैं । आपका क्या जाना उन्हें कठई पकन्द नहीं है ।”

बन्धनाने उस कड़कीकी तरफ देला, किन्तु ज्वाब दिया मौखीको, बोली—
 “मेरे न जानेते प्रकृतिका स्वाह नहीं रुक सकता पर जानेसे मुन्सुर्नी-महाधपकी
 सेवामें मुक्ति होगी । इनकी देख-भाल करनेवालय पहाँ कोई नहीं है ।”

‘पर ये तो अच्छे हो गये हैं । इन्हें चाहिए कि तुमसे जानेके लिए कहें ।
 बसिक न जाना ही अनुचित होगा ।’

बन्धनाने फिर हिम्मतें हुए कहा— ‘नहीं, अगुचित होगा ऐसा मैं नहीं
 मानती । फिर भी आप कहती हैं बन्धनेको, तो मैं ज़मी पड़ती, मगर रातको
 बापत ज़मी आऊंगी, वहाँ नहीं रह सकूंगी । इतनी अनुमति आपको देनी
 ही पड़गी ।’

‘एक रात भी न रह सकोगी !’

‘नहीं ।’

‘अच्छा, ऐसा ही ठही ।’—कहकर मौखी मन-ही-मन नाराज होकर
 दब-दब सहित वहाँते चक दी ।

×

×

×

विप्रदासने कहा— “देला नहीं तुमने, मौखीकी नाराज होकर ज़मी गई ।
 पर अबानक ऐसा सामकवासी निश्चय क्यों कर बैठी !”

बन्धनाने कहा— “नाराज होकर गई हैं सा मायूम है, पर मैं किसी लय-
 लयालीसे बह निश्चय नहीं कर बैठी हूँ । उन व्योमक वहाँ ज़-कुल भी है उत
 सबसे मुझे नफरत हो गई है, अरुचि हो गई है । इसीठ जब वहाँ नहा जाना
 पारही मुन्सुर्नी-महाधप ।”

‘बह कर प्यारली हो रही है बन्धना ।’

‘बातबमें ब्याबती है या नहीं, कहना कठिन है । इत विषयमें मैं हमेशा
 ही जाने जान्ते पूछती रहती हूँ, साथ ही अच्छी तरह समझ भी सकती हूँ कि
 उनक बीच खनेठ न मुझे तुल्य मिच्छा है और न शान्ति । एक बार बन्धनेमें
 मैं एक करणको मिल देखने गई थी, बार-बार मुझे उसीका ललाक भा बाटा
 है—उसमें कितनी मशीन, कितने चकके अगल-बगल, सामने-पीछे ब्यातातार बूम
 रहे थे जिनका श्रुमार नहीं, ऐसा लगता था कि क्या भी अताबधानी हुई कि वे
 गोड़ मूड़ मरोड़कर अपनेमें लीजेंगे । देखनेमें वे सब अच्छे न कम रहे हो तो
 बात नहीं, फिर भी मनमें बही आटा था कि वहाँसे निकल मार्ग तो जान

बचे !—पर अब देर नहीं करनी चाहिए, आपका पप्प ले आऊँ ।” —कहती हुई वह बाहर जाने लगी तो देखा कि दरवाजेके सामने पैरोंकी धूल और जूतोंके दाग पड़े हुए हैं । वह छिन्नककर लड़ी हो गई, बोली—“पप्प खानेमें बिप्ल आ गया मुन्नी साहब अब सत्र करना होगा । नौकरसे इस अगइको चुम्बा चुम्बा लें ।” —इतना कहकर वह जा हो रही थी कि विप्रदासने बिरमपके साथ पूछा “इतनी कसर-नुक्सका बातेँ तुमने सीखीं किससे बन्दना !”

सुनकर बन्दना खुद मी अचम्भेमे आ गई, बोली—“किसने सिखाया मुझे पाद नहीं मुन्नी साहब ।” और फिर अच चुप रहकर कहने लगी—“छापद किसीने सिखाया नहीं । अपने-आप ही मुझे ऐसा लगता है कि ये सब बातेँ आपकी सेवा करनेके लिए अपरिहास हैं भार न करनेसे बुरि होगी ।” —इतना कहकर वह चली गई ।

×

×

×

शाम होनेके पहले सोखे पहर बन्दना अपने अम्मासके अनुसार यथाचित पोषक पहनकर विप्रदासके कमरेके चुप हुए दरवाजेके सामने आ लड़ी हुई और बोली—“मुन्नी साहब, मैं आ रही हूँ बहनका स्याह देखने । मौसीजीने पीछा नहीं छोड़ा, हमसे खाना पक रहा है ।”

विप्रदासने कहा—“आशीर्वाद देता हूँ कि तुम बहुत अस्द उन लोगोंसे इस अत्याचारका बदला से सको और अपनी मासिको पचावसे पतोडकर बम्बई लीन ले जाओ ।”

“मौसीपर मुझे इतना गुस्ता नहीं है, पर आपको बकर फीटक ले जाऊंगी । टरनेकी कोई बात नहीं, रेक-डिपया हम ही भोग हगे, आपका स्वर्ण नहीं चरायेंगे ।” —कहती हुई बन्दना ईस दी और बोली—“बोटनेमें मुझ स्यादा रात हो पायगी । लेकिन, सब इन्तकम करक जाती हूँ, अब म्ये गइबइ हुई तो आकर गुस्ता होऊंगी ।”

‘ ली कथे न हाभागी । न होनेसे तपत्रो आभर्ष होगा । सोचेंगे वसीपठ ठाक नहीं है, स्याह-शादीमें आकर स्यादा ग्या लेनेसे छापद बीमार हो गई हो ।’

बन्दना मुलकराती और तिर दिक्ताती हुई बोली—“बस-बस हो चुकी मेरे गुणोंकी स्यापमा । ऐसे रहने दोबिप, और आप संप्पा-पुञ्ज करने नीचे न आइएगा । अनु-बीदी इसी कमरेमें सब आ हँदी । उसक भाव-धरे राद

महाराज जगा जावेंगे पाही-पारा, और खानेके पटि भर बाव होइ रहा बैकर बची मुटाके दरवाजा जगाके बजा आयगा। ऐसा हुकम मैं लवचरे दे पची हूँ। समझे।”

“हो, समझ लिया।”

“तो जाती हूँ।”

‘जाओ। पर इतना तो मानना ही पड़ेगा कि तुम इस पोशाकमें हील बड़ी बन्धी रही हो बन्दना, कारण, जो पोशाक तुमने पहन रखी है, वही तुम्हारे लिए स्वभाविक है जो वहाँ पहन रहती हो वह कृत्रिम है।’

“यह क्या मुन्नी साहब,—और तब तो कहते हैं कि बिलोंका एबीदार खूब पहनना आपको देख नहीं सुझाता।”

“जो कहते हैं वे गलत करते हैं, जैसे वह कहते हैं कि मैं तुम्हारे हाथका पुन्ना नहीं ला सकता।”

बन्दनाने आश्चर्यके साथ पूछा—“गलत क्यों होने लगा बनाब, मेरे हाथ का पुन्ना खानेमें आपको आपसि तो सपमुच ही थी।”

विप्रदासने कहा—“आपसि थी फिन्दु आपसि अगर लवमुचकी होती तो वह भाव भी रहती, मिठली मही।”

बात बन्दनाकी समझमें थ आरि परन्तु विप्रदासकी इस ठकिके अत्यन्त समझना भी उसके लिए कठिन है, बानी—‘दिव्य बाबूने एक दिन कहा था कि माई-खाइबके मनकी बात कोई नहीं जान सकता जो बाहरकी बात है ज्येस चिर्क उसीको जोड़ा बहुत समझ लते हैं, पर जो अतःकरपकी है वह अंतरमें ही एबी-बकी रहती है,—क्या यह सब है मुन्नी म्हाछन।’

उत्तरमें विप्रदास लिह जरा-खा ईस दिने, फिर बासे—“तुम्हें देर दुर्र का रही है बन्दना। अगर सपमुच ही वहाँ जानेको इच्छा न हो तो मत जाना, पची जाना।”

“बकी ही जावेंगी मुन्नी साहब, रह नहीं सकेगी।”—इतना कहकर, और ब्यादा देर न करके बन्दना नीचे उतर गई।

X

X

X

दूसरे दिन मेट होनेपर विप्रदासने पूछा—“बहनका ब्याह निर्दिष्ट समय हो गया।”

“हाँ, हो गया,—कोई विप्र नहीं आया !”

“अपनी ही विप्र कायम रखी, मौखिका अनुरोध नहीं माना ? कितनी रात बीते लौरी थी ?”

“तब करोब तीन बजे होंगे। मौखिका काठ नहीं रखी जा सकी, रातको ही स्लैट आना पड़ा।”—फिर बरा बरकर, शायद विचारकर देखनेके बाद कि करना उचित होगा या नहीं, कहा—“निर्क कुछ ही पच्चे रखी थी, पर काम बहुत-सा कर आई। एक साम्मी ओ न कर पाइ थी, वह पौव-ठात मिनटोंमें ही कर गुमरी। मुषीरके साथ लातमा कर आई हूँ।”

विप्रदासको आश्चर्य हुआ, बाला—“कहती क्या हो !”

“हाँ, ठोक ही कह रही हू। पर उसे ईतबारमें नहीं हुआ आर हूँ। कब लबेरे बित्त कइकोको आपने देखा था उसका नाम है हेम,—हेमनिकिनी राय। उसीके बिम्मे मुषीरको कर आई हूँ। फिर मुझे उसी बगईकी मिच्छा लवाल ठठ आता है, टीक उसीके समान उन लोगोके यहाँ प्रेम-शैलिके खाने-बानेमें देखते देखते आदमीका भ्रमिष्य बनने लगता है और फिर टूट मी जाता है।”

विप्रदासन पहलेकी भाँति ही बिस्मयके साथ अचानक पूछ—“बात क्या हुई ? मुषीरके साथ अचानक लातमा कर आनेके मयनी ?”

बन्दनाने कहा—“लातमा करनेक मानी लातमा करना और यहाँ ‘अचानक’ नामकी कोई चीज नहीं है। उन लोगोंके यहाँका काम अतम्भ पड़त होता है, इतौसे बाहरसे ‘अचानक’ का भ्रम हो जाता है, पर असलमें ऐसी बात है नहीं। मुषीरने मुझे बुलाकर कहा कि ‘तुम्हने बहुत अनुचित किया है,’ मैंने कहा, क्या अनुचित किया मुझे भी तो ?’ उसने कहा, ‘किसीते बगैर करे-सुन मानी उत बगैर ज्ञाये—अचानक यहाँ चम्भ माना अत्यन्त गरिष्ठ चार्ब हुआ है। म्वासकर, जब कि, यहाँ विप्रदास बाबूके सिवा आर कोरें दूसरा है नहीं।’ मैंने कहा, ‘यहाँ अचानक-सीरी है’ मुषीरने कहा, ‘पर वह वालीके सिवा आर कुछ नहीं।’ मैंने कहा, ‘यहाँ उते सच सीरी कहके पुकारते हैं।’ मुनकर बरी हेमनिकिनी मुँह बिसकाकर आठी-सी-ओयमें ईसती हुए बीचमें ही बोल उठी—‘गैबर-गौबम इस तरह पुकारनेका रिवाज है। मुना है, इसते मौखिकनिगोका पनाइ मर बड़ जाता है आर कुछ नहीं। पर इससे वे बड़ी नहीं बन जायें।’ मुषीरने कहा—“इन सागैते तुम्हने कहा है कि

तुम यतको न रह सकागी, यतको ही बापत पत्नी आओगी; मगर वहाँ उस धरमें तुम्हारा अकेला रहना हमसे कोर मी पसन्द नहीं करता—सुद तुम्हारे पिता ही सुनेंगे तो क्या कहेंगे ?' मैंने कहा—'पिता क्या कहेंगे, इसको चिन्ता करना तुम्हारा काम नहीं, मेरा है। पर, और जो शोग पसन्द नहीं करते, उनमें तुम सुद मी हो क्या ? हेमने कहा—'बस्तर हैं, त्योंको छोड़कर ये अलग योंके ही हैं।' उठ लड़कीके इस विन-चाहे मन्तव्यका उत्तर देना मुझे प्यो नही; न देनेकी इच्छा ही हुई, इसलिये मैंने सुधीरसे ही कहा—'तुम्हारी इस बातक अबाधमें मी मी कह सकती थी कि बेस्तवकी सुद्विर्षी छोकर तुम्हारा कककलेमें रहना मी पसन्द नहीं करती, पर मी ऐसी बात नहीं कहना चाहती। तुम्हने जो गन्ना प्यारा किया है, नीच समझमें ही उतका चलन है; मगर तुम जोग्येक बड़ दन्में मी उतका चलन है वह मुझे माख्म नहीं था; रीर, अब मेरे पास बच नहीं है; गाड़ी लड़ी हुई है, मी जाती हूँ।' वह लड़की शोक ठरी—'जो अछोमन है जो अनुचित है, उतकी आस्यचना छोटे-बड़ तमी रहींम हाती है इतना समझ रलिये। मैंने कहा—'आप जोग चितनी चाहे आस्यचना करते रहें मुझ काइ भापीत नहीं। मी जाती हूँ।' सुधीर अफरमात् न जाने कैसा हो गया, उतका चेहरा लखेर छक पड़ गया—अपनेको संभाव कर शीत—अपनी मौसीके भा अशक न आमागी। मैंने कहा—'उन्हें क्यापा हुआ है कि म्हाइ होते ही मी लकी आउंगी चाहे चितनी ही एत क्यों न हो जाय।' सुधीरने कहा—'क्या कक तुमसे एक धार मुलाकात हो सकतो है ?' मैंने कहा 'नहीं।' उसने पूछा—'परतौ ?' मैंने कह दिया—'परतौ मी नहीं।' उतके बादके दिन।

'नही, उतके बादक दिन मी नहीं।'

'कब तुम्हें समझ मिलेगा ?'

'कुल अब समझ नहीं मिलेगा।'

'पर मुझे तो एक बहुत बकरी कामके बारेमें बातपीत करनी है।'

'तुम्हें शाबद करनी हो, पर मुझ नहीं करनी।—इतना कह कर मी बहलिये उठ लड़ी हुई।'

बम्बना विप्रदासका चुप देल फिर कहने लगी—'सुधीर मुझे पहचानता न हो, हां बात नहीं; मेरे लान आनेकी उते दिम्मत न पही, बहाँका लयी स्तम्भ-ता

कहा रहा । मैं आकर गाड़ीमें बैठ गई ।”

विप्रदासने मुसकरते हुए कहा—“इसके मानी क्या सातमा कर माना है कन्दना ! अरु-सा कहइ मर हुआ समसो । इसमें अगर सन्देह हो तो मुझकाठ होनेपर अपनी धीनीसे पूछ लेकना ।”

कन्दना हँसी नहीं, गम्भीर होकर कहने लगी—“किसीसे पूछने-ताछनेकी जरूरत नहीं मुझमें साहब । मैं जानती हूँ, हम श्लेष्मैका सम्बन्ध खतम हो चुका, अब नहीं सुझनेका ।”

उसके मुँहकी ओर देखकर विप्रदास इतबुद्धि-से हो गये, बोले—“कह क्या रही हो कन्दना, इतनी बड़ी नीच क्या इतनी आसानीसे इतनी छोटी-सी बातसे खतम हो सकती है ! मुँह के सदमेकी बातको भी क्या सोच कर देखो ।”

कन्दनाने कहा—“सोच देना है मुझ १ साहब । इस सदमेको सँभाल लेने-में मुँहको ज्यादा दिन नहीं चमके; मैं जानती हूँ, वह हेम-नखि ही ठके रहता बला होगी । मैं तो अपनी बात सोच रही थी । सिर्फ गाड़ीमें बैनी-बैनी ही नहीं सोचती रही, आकर बिस्तरपर लेटी तब भी सोचती रही, रातभर नींद नहीं आई । अधान्ति अकर रही, पर कुछ मुझे नहीं हुआ ।”

“कह होगा गुस्ता दूर होनेपर । तब फिर मुँहके लिए ही यह देना फरेगी ।”—यह कहकर विप्रदास हँस दिने ।

इस हँसीमें भी कन्दना छरीक नहीं हुई । घाम्त मावसे बोली—“गुस्ता मुझे नहीं है । सिर्फ अनुताप होता है कि बर्तोंसे चले आते बक्त अगर फरार बात मेरे मुँहसे न निकलती तो ठीक था । मैं विचार भार हूँ कि दोष मानो उछीका है, क्या भार हूँ कि मानो मैं मर्माहत होकर बिरा हो रही हूँ । मगर साप वह नहीं है मुझमें साहब, और फरार बात नहीं ।” बातचीतक अन्तमें उसकी आँसुँ मानो भर आर ।

विप्रदासक मनक विस्मय कई-गुना बढ़ गया, अब वह समझ गया कि वह छल नहीं है । बोला—“मुँहको क्या लक्षमुष ही तुम अब नहीं चाहती !”

“नहीं ।”

“अबतक तो चाहती थी ! इतनी आसानीसे वह प्रेम क्या कैसे रहा !”

“इतनी आसानीसे जाता रहा, इतनीसे इतनी आसानीसे उसका उत्तर प्य गई । नहीं तो आम्से झूठ बोळना पड़ता ।”—इतना कहकर वह कुछ देर चुपचाप

बेसती रही, फिर बोली—“आपने जानना चाहा है कि कितनी दिन सुधीरको चाहती थी या नहीं। उस दिन खेपती थी कि सबमुच ही चाहती हूँ। किन्तु उसके बाद ही एक और ब्या गया आँसूके आगे,—सुधीर हो गया विधीन। अब बेसती हूँ कि वह भी विधीन हो गया है। तुनके शायद आपको कृपा होगी, आप जानोगे कि ऐसा तरल मन तो कभी नहीं देखा। और मैं जानती हूँ कि कड़कियोंके लिए यह धर्मकी बात है। कोई भी कड़की यह स्वीकार नहीं करता चाहती—वह तो मानो उसके चरित्रको ही कड़कित कर देता है। शायद मैं भी कड़कीके आगे इसे नहीं मान सकती, मगर मादम नहीं क्यो, आपसे कोई भी बात कहनेमें मुझे धर्म नहीं लगती।”

विप्रदास चुप रहे। बन्दना कहने लगी—“हो सकता कि यह मेरा स्वभाव हो, हो सकता है कि यह मेरी उम्रका स्वभाव हो। अन्तःकरण शुद्ध नहीं रहना चाहता और चारों तरफ उद्येग्य फिरता रहता है। अपना ऐसी ही शायद सब कड़कियोंकी प्रकृति हो प्रेमका पात्र कौन है जो किन्दगी-भर हँस ही न पाती हो।”—इतना कहकर वह स्थिर होकर मन-ही-मन न जाने क्या सोचने लगी, उसके बाद वह ठठी—“या शायद हँसकर पानेकी वह चीज ही न हो मुक्त ?—साहब,—मटोपिचा ही हो।”

विप्रदास परदेकी मॉति मीन ही रहे। बन्दनाकी मनो मनकी अर्ग्य कुछ गर्द, कहने लगी—“इस सुधीरक साथ ही एक लाल पहले मेरा ब्याह होना था हो गया था, तब इसकी मौक बीमार हो जानेसे न हो सका था। कल बर्हाते बापत आकर सोच रही थी कि ब्याह अगर उस दिन हो जाता तो आज क्या मेरा मन उसे इसी तरह कचेकके गिरा होता ? तब मनको कित्त थीकसे अपने बघमें रखती ? धर्मकुदिते ? सत्कारसे ? ऐबिन स्वच्छन्द मन अगर शासन न मानना चाहता तो फिर क्या होता ? किन लोगोंके बीच रहकर इसके कई दिन बिता आर हूँ, क्या ठीक उर्हाँकी तरह हो जातो ? उसी तरह पहलून और बुवकापोरिसे मनको परिपूण करक चुली हली ओट्टैतक लीच-नौकर लोगोंको मुलाका देती फिरती ? ठली तरह परस्पर एक-दूसरेकी निन्द करके, धनुता करक ? मगर आप बोक क्यों नहीं रहे हैं मुलकी साहब !”

विप्रदासने कहा—“तुम्हारे मनके अन्दर जो आँपी पल रही है उसकी तेज रफ्तारक साथ मैं चल नहीं सकता बन्दना, इसीसे चुप हूँ।”

बन्दनाने कहा—“नहीं, सो नहीं होगा, इस तरह आपको बचक न निकल जानें हूँगी। अन्धाव दीखिए।”

“पर शान्त हुए बिना अन्धाव देनेसे फयदा क्या है तुम्हारी आज्ञाकी यह अवस्था सामाजिक नहीं है, इस बातको समझोगी कैसे ?”

“क्यों न समझोगी मुन्बई साहब, बुद्धि तो मेरी नष्ट नहीं हुई ?”

‘नष्ट नहीं हुई किन्तु पनकरसे पड़कर पुँबली हो गई है। अभी रहने दो। घामके बाद जब स्थिरतासे बैठोगी तब बातें करेगा। इतना तो सभी इसका अन्धाव हूँगा।”

“तो यही ठीक है। इस बचक मुझे मी फुरकत नहीं है।”—करकर बन्दना बहसि खली गई। अमलमें देखा जब ता उस इतना काम जाना था कि शिश्की इह नहीं। सभसे अप्रवा सुर्हा सेकर काकीपाठ गई है, उसके करनेका काम भी आज बन्दनाको ही करना है। कितने ही नाकर-नाकर हैं और कितने ही लड़कें यहाँ रहकर स्तूअ-अप्रवेजमें पढ़ते हैं,—उनका न जाने कितना काम है। कामकी भीड़में उसे माहम ही नहीं हुआ कि वह कब यत सोर नहीं है और बहुत बकी हुई है।

×

×

×

बन्दनाके बाद विप्रदास जब यतका साना लाकर निहत्त हो चुके तब नीबका सारा इश्राम करके बन्दना उनके फर्माक पास एक कुरसीपर आकर बैठ गई, आर बोले—“मुन्बई साहब, एक बातका सब-सब अन्धाव होंगे !”

विप्रदासने कहा—“साधारणतः ऐसा ही तो दिया करता हूँ। प्रश्न क्या है।”

बन्दनाने कहा—“जीजीको आप क्या सबमुष हो प्यार करते हैं ! जब पनमें आप अग्येका स्वाह हुआ है—बहुत दिनोंकी बात है वह—कमो क्या इसम अग्यय नहीं हुआ !”

विप्रदास हंग रह गये। ऐसी बात मी कितोंके मनमें उठ सकती है, इसकी उर्ह कल्पना भी न थी। परन्तु अपनकी सँभालकर उभोंन ईसत हुए कहा—“बल्कि यह प्रश्न तुम अपनी जीजीसे ही करना।”

बन्दनाने कहा—“ये फते अज सकती हैं ! आगक मनकी अलकी बात तो मुना है कि फोई मी नहीं अज पाता। न बठाना अर्ह तो मठ बतारण, मैं

किसी-न-किसी तरह समझ लेंगे पर बतायें तो आपको तब बात ही करनी पड़ेगी।”

“तब बात ही बताऊँगा, पर मुझपर क्या तुम्हें खदेहर होता है।”
 “होता है। आप बहुत बड़े भादमी हैं, फिर भी हि भादमी ही। मासूम होता है कहींपर आप मानो किन्तु कुछ भकेले हैं, वहाँ आपका खेद भी संगी-साथी नहीं है। क्या वह बात तब नहीं।”

विप्रदासने उसकी बातका ठीक-ठीक उत्तर नहीं दिया, कहा—“क्योंको प्यार करना ही मेरा बर्मा है बन्दना।”
 बन्दनाने कहा—“बर्मा कहींतक पैदा हुआ है वहाँतक आप लाकिल है, पर उससे भी बड़ा क्या संतारमें और कुछ नहीं है।”

“हेल्नेमें तो नहीं जाता बन्दना।”
 बन्दनाने कहा—“मुझे दिखार पड़ता है मुलकी साहब पताऊँ वह बात।”

विप्रदासका खेहरा सरता मानो पीछा पड़ गया —बन्दि गोरे खेहेपर कैसे लूनका बिहठक न रह गया हो; उन्होंने दोनों हाथ सामनेकी ओर बढ़ाते हुए कहा—“नहीं नहीं, अब एक बात भी मत कनो बन्दना। आज तुम अपने कमरेमें बन्धी जानो —कूब हो, परसों हो—जब तुम शान्त साम्याधिक भवस्थमें आ जाओगी, अपनेमें आलोचना करनेकी सुदि या जाओगी तब मैं तुम्हें हलका बचाव दूँगा। या फिर, हो सकता है कि अपने आप ही तमस जाओगी कि तुम्हारी मौलीके परपर किन लोगोंने तुम्हारी सुदि को आच्छन्न कर दिया है वे ही सब कुछ नहीं हैं। फम बिनाक बिप अत्याम्ब है वे मो हैं, संतारमें उनका भी अहित है। नहीं नहीं भव तक बितक रहने दो —तुम जाधा।”
 बन्दना समझ गई कि यह आदेश है, भवहेबनाकी पीब नहीं। परी घायद वह पीब है जिससे पर-भरक लोग डर करते हैं। बन्दना उपबाप बतासे थक ही।

×

×

×

१९

दुसरे दिन शामको बन्दनाने आकर कहा—“मुलकी साहब, फिर का खरी है मौलीके पर। भवकी बार कुछ पंयोंके बिप नहीं, बरिंक बरतक मौली

मुझे पम्बर खाना करनका इन्तजाम नहीं करतीं तपतकके लिए ।”

“यानी !”

“यानी अरजेय्य इलियाम बापा है । पिताजीका हुक्म है । कल ही सुबह मौसी गाड़ी मेंगी मुझ बिबानेके लिए ।”

बिप्रदासने कहा— ‘यानी समझ लिया जाय कि तुम्हारी मौसीमें बदका देनेका अम्बबतान और बुद्धिमत्ता है । यह घाबद उन्हींके जवाबी तारका खवाब है । कहीं है दल्लू तार !”

“नहीं, बापको मैं नहीं दिन्ना सकती ।”

मुनकर बिप्रदास हाथ मर स्तम्भ हो खड़े, फिर जय मुसकराकर बोले— “मगवान् किमीका हर्ष कायम नहीं रहते, यह उसीका नमूना है । अबतक चारपा पी कि मुझ किसी बातम जपेय्य नहीं जा सकता, पर अब देखता हूँ जपेय्य जा सकता है । कमसे कम ऐसे आदमी मी है । तुम्हारी मौसीके दिमागमें जाक मी आ गई । सो न जय, पढ़ देखूँ कि अभियोग कितना गहरा है ।” — करकर उन्हींने हाथ बढ़ा दिया ।

अबकी बार बन्दनाने तार उनके हाथमें दे दिया । राय साहबका कम्बा चौड़ा तार था,—छुस्त आस्तराक सब पढ़क उस बापस देते हुए बिप्रदासने कहा—“जुल-जमा तुम्हारे पिताजीने असंगत कुछ भी नहीं लिन्ना । निःस्वाय फोपकारम आपत्ति भाषी है, बीम्बर रिष्तेदारको सीमारदापी करने जाना भी संसारमें आसान काम नहो है ।”

बन्दनाने पूछा—“मुझे क्या भाप मौसीके घर ही सौट जानेके लिए कहेंगे !”

“यही तो तुम्हारे पिताजीकी आज्ञा है बन्दना । वह तो बज्रयमपुरका मुस्ताबिकीका घर महीं है,—इस मामलमें हुक्म देनेके मालिक मुन्बजी साहब मही है—मासी है—और फिर हुक्म दिन्नापा है पिताके मारफ्त, जिहाज मानना ही पड़गा ।”

बन्दनाने कहा—“पर तो आपके मामूली बचन हैं । पिताजीको यहाँका हाक कुछ भी महीं मावूम, फिर उनके आदेश है, इसलिए न्याय-अन्याय कुछ भी क्यों न हो मानना ही पन्ना । मौसीका घर क्या है सो तो भाप जानते हैं ।”

बिप्रदासन कहा—“जानता तो मही, पर तुम्हारे मुँहस मुना है कि वह अन्धो बगह नहीं । मैं स्वस हाता तो लुब बाकर तुम्हें बम्बर पंहुँचा जाता, पर

उठनी चाँकि कामी नहीं है।”
 “इस हादसे में आपको छोड़के सबी चार्ज ! बिन मौसीको पढ़वान्सीतक
 नहीं उन्हीकी जिद बड़ी हो जावगी !”

‘मगर उपाय क्या है ?’
 “उपाय यही है कि मैं नहीं जाऊँगी।”
 “तो रवो। मिताबीको एक तार दे दो। पर मौसी बिबाने आवैमी तो उनसे
 क्या कहोगी ?”

बन्दनाने कहा—“सिक बही कि नहीं जा छूँगी। इससे ब्याबा नहीं।”
 विप्रवासने कहा—“तुम्हारी मौसी लेकिन इतनेसे ही शान्त न होगी।
 सबकी बार शाबद मेरी मौँको तार देंगी।”

यह समझाकर बन्दनाके मनमें नहीं आइ थी। विप्रवासकी बात सुनकर
 वह उदास हो उठी बोली—‘आप ठीक ही कह रहे हैं मुलकी शाबद और
 शाबद यह काम बे कर भी चुकी होगी—मौँको खबर देना मौसीने बाकी न
 रखा होगा। मगर क्यों, जानते हैं ?’

विप्रवासने कहा—‘बन्दना तो समझ नहीं, पर इतना अन्धाज जगाया जा
 सकता है कि उनका इतना क्या उपाय निस्तार्थ नहीं है, और तुम्हारे विरोध
 करनाक लिए भी नहीं है। शाबद उनके मनमें कोई खास बात हो।’

बन्दनाने कहा—“क्या मनमें है तो मैं जानती हूँ। उनके मन्तीने शाबद
 भावे हे शैरखरी पात करके,—मौलीने उनका मुलमे आकाप-परिच्छ कर
 दिया है। उनका हृद विधास है कि बही मेरे लिए बोध्य बर है। कारण अपने
 मिताबी एकदौती बड़की हूँ, और जितनी लग्नित बे छोड़ जायेंगे उलकी
 आमदनीसे कुछ उपायन बगैर किने भी—उनके मन्तीनेकी किन्दगी आघानीसे
 भीत जावगी।”

विप्रवासने कहा—“मन्तीनेकी दित-चिन्ता करना तुम्हारे लिए कोई दोषकी
 बात नहीं। बड़का देखनेमें कैसा है ?”
 “मच्छा है।”

‘मेरे कैसा होगा ?’

बन्दना रस ही बोली—“यह तो आपकी अरिंकारकी बात हुई। मनमें
 खूब मच्छी छर समझे हैं कि इतना रूप बुनियायें और किराक नहीं है। मगर

ऐसी तुम्हना करने बैठेंगे तो संसारकी सब अड़कियोंको क्योंगी यह जाना पड़ेगा मुझकी साहब । तब आपकी तरफ देख देखकर ही उन्हें अपने दिन काटने पड़गे । फिर मो कहूंगी कि देखनेमें अशाक अगुठा है, शोच-तुष्टिर्षा देवना कसते काम मेरे लिए तो न सोइगा ।”

“तो पत्न्य है, यों कहो !”

“अगर हुआ मी तो उस पत्न्यको कोइ शोच नहीं दे सकेगा, इतना कह सकती हूँ ।”—इतना कहकर बन्दना ठन्क लड़ी हो गई, बाबी—“पौन बच रहे हैं, भासका वाली पीनेका समय हो गया—आऊँ, से आऊँ । इस बीच आशोककी बात भार मो बरा शोच रक्षिण ।”—कइक कह वाली गई । पौनेक मिनट बाद वह आपन आर्; उसके हाथमें चाँदीक कदोरेम वाली थी—बसके अन्दर रत्नके टाडी को हुई—उसमें जोबू जिनाइली हुए बर बोझी—“यह सबकी सब पी सेनो होगी, छोड़ देनेमे काम न सकेगा । संशकी त्रुटि दिनाकर कोइ मुझसे कैशियत मनीं सो मैं नहीं होन सूंगी ।”

विप्रवाहने कहा—“कुम्भ करनेकी विषा तुमने सोलहो आने सोल मी है, किञ्चोक सामन दबना नहीं पड़ेगा तुम्हें, इतना ता मैं कह सकता हूँ ।”

बन्दनाने कहा—“नहीं । कोइ पूछेगा तो कह दूंगी, मुझकी साहबरा हाथ बहाकर पकड़ी हो गई हूँ ।”

×

×

×

बाबी थी पुझनेके बाद नून करारा हाथमें फिर बन्दना पधी आ रही थी, आते आते मुड़कर लड़ी हो गई, बोले—“मेरी एक बातका जबाब देंगे मुझकी साहब !”

“कोन-सो बातका बन्दना !”

“संभारमें सबसे बडादा आपको कोन प्यार करता है, यता सकते हैं !”

“बता सकता हूँ ।”

“बताइए तो क्या नाम है उसका ।”

“उसका नाम है बरना देवी ।”

तुलत ही बन्दना जहमे मरमें बरने बाहर पधी गई । परन्तु पत्रह-बीठ मिनट बाद ही फिर आकर कुम्भी गीषके विप्रवाहक बिलारक पास बैठ गई । विप्रवाहने हेतव हुए पूछा—“इत तरह बरसे मय क्यों गई थीं बताना तो !”

बन्धना पहले तो कुछ जबाब न दे सकी, फिर धीरे-धीरे बोली—“बात मापकी बुझानक मुझसे लगी नहीं गई मुलकी साहब, माखम हुआ जैसे मेरी कोई मही खोरी आपने पकड़ ली है।”

“खीते अकतक मेरी तरफ तुम्हसे देखते नहीं बनता, क्यों ?”
 “सो क्यों न बनेगा ?”—कहकर वह खबरदस्ती मुद्र उठाकर हलने लगी, किन्तु फिर भी मारे धरमके उलका बेहद काम-सुख हो उठा। बादमें कामनेको संभावते हुए उठने कहा—“कैसे आपने वह बात जान ली, सो बताइए ?”

विप्रदासने कहा—“यह पूछना बिलकुल फिद्दस है बन्धना। मुझे क्या तुम्हने बिलकुल पापाव ही समझ लिया है कि इतनी-सो बातको मैं न समझ सकूँ ? इसके लिहा तन्देह अगर कमी रहा भी हो तो आज तुम्हारी तरफ देखके नहीं रहा।”

बन्धनाने फिर मुद्र घाका लिया। विप्रदासने कहा—“किन्तु इससे तुम वह नहीं कर सकती, तुम्हें मुद्र उठाकर देखना ही पड़ेगा। धरमाने व्यवक काई काम तुमने नहीं किया, और फिर मेरे सामने तुम्हें धरमानेकी कोई अकतक भी नहीं। देखो मेरी तरफ मुद्र उठाओ, सुनो मेरी बात।”

वह बही आरेख है। बन्धनाने मुद्र उठाकर देखा, फिर कुछ देर चुप रहकर कहा—“आप छायद मुत्तार बहुत नायब हो गये हैं न, मुलकी साहब।”
 विप्रदासने मुत्तारते हुए कहा—“अप मी नहीं। वह क्या नायब होनेकी बात है ? तिक मेरे मनकी भाषा इतनी-सी है कि इस भूखको तुम छुट ही किसी दिन पकड़ लोगी और उसी दिन इसका प्रतीकार होगा।”

“मगर पकड़ाइ अगर किसी भी दिन न पड़े तो ? इसे भूख ही कमी न समझ पाई तो ?”
 “पामोयी ही। इससे संसारमें फितने बनबोंका सूर्यगत हो सकता है—रत बातको अगर न समझ सको तो मैं समझूँगा कि तुम्हने मुझे प्यार ही नहीं किया। सुधीरको प्यार करनेक समान यह भी तुम्हारे एक सामक्याही है—मनके व अन्दर किसीको खीब आकर सिद्ध अपनेका बहकाना है, इससे बहादा नरा।

बन्धनाका बेहद एक समयमें ज्ञान हो उठा वह अकतक अकतक कम्पसे बोली—“सुधीरके साथ तुम्हना न कौबिद मुलकी साहब, यह मुझने न सहा आबगा। पर इससे नगारमें मनबोंका सूर्यगत हो सकता है, यह बात मापकी गार्नेयी। मारनेयी कि यह अमगकको खीब जाना है, पर इतकीयइ इसे छूट नहीं

मान्यगी। इन्हीं ही अगर होय तो क्या-सा मो प्यार क्या आपका या सकती थी ? नहीं पाया क्या मैंने ।”

संत राके हुए विप्रवास ठमको बातें सुन रहे थे, बात लहम होते ही क्यों ही बन्दाने मुँह उठकर विप्रवासकी तरफ देखा त्यों ही ये थोँक पड़ और बोले— “पाया क्यों नहीं बन्दना, तुमने बहुत-सा पाया है। नहीं तो तुम्हारे हाथ-का मैं जाता कैसे ? तुम्हारी रात-दिनकी सेवा मैं किस बोरसे ले सकता ? मगर इससे क्या मैं ध्यनिमें या अर्धमें उतर आ सकता हूँ, या तुम्हें उतार ला सकता हूँ ? जो लोग मेरे तरह देखकर हमेशासे विधायक बल्लर सिर ऊँचा किये हुए हैं, सर-कुछ तोड़-घड़कर क्या मैं उन्हें नीचा कर दूँगा ? क्या तुम बरी करना चाहती हो ?”

बन्दाने इस स्वरमें कहा— “तो आप मो स्वीकार कीजिए कि आज बिते आप छोड़ नहीं सकते वह है आपका दम्भ। बताइए सब-सब, उन लोगोंकी हृदयमें बड़ा बनकर रहनेके माइको आपने बड़ा मान लिया है। नहीं तो और किस बातको आनि है मुलकी साहब,—किते हम अर्ध मान ? मनुष्यकी एक मनयदन्त स्वस्वाका—मनुष्यन ही बार-बार बिते माना है और बार-बार छाड़ा है—उत्तेका ? आप मझे हा मान क, पर मैं नहीं मान सऊँगी ।”

विप्रवास गम्भीर हो उठे, बोले— “तुम्हारे न माननेपर भी मैं मान सऊँगी और मानूँगा, उत्तेसे मेरा काम बच जायगा। अर्धभी किताने तुमने बहुत ही पदी है बन्दना, मौलीके पर आधेपनाएँ भी बहुत सुनी होयी, उन सबको मूकनमें सम्य बजोगा, मासम हाठा है ।”

बन्दाने कहा— “आप तो मेरा मझाक कर रहे हैं, बेइकन मैं जरा भी मझाक नहीं कर रहा मुझकी साहब, जो मो कुछ कहा है, मैंन सब सच कहा है ।”

“तो हा सम्य गया; पर इस पागलपनको अगळमें मर बिसने दिया ?”

“आपने ।”

“कहती क्या हो ? पद अर्ध-बुद्धि आतिर ही सुद मैंने ही तुमको ?”

“हो आपने ही दी है। हापद कम-मानमें दी हा, पर आपक सिवा और किसने नहीं दी ?”

इस बार विप्रवास विवाक बिरमयते उसकी आर देखते रह गये। बन्दना बन्दने आयी— “अर्धम बताकर जल पीजकी आपने किया की है उते तो मैं

मानती नहीं—मैं जानती हूँ कि जिसे आपने एकाम्र विच्छेद वम वमसके स्वीकार किया है वह बर्मे नहीं सिर्फ एक संस्कार है। अत्यन्त दृढ़ संस्कार है, उससे अधिक कुछ नहीं।

विप्रदासन तिर हिमकर स्वीकार किया और कहा—'हो सकता है कि वह बात दुग्वारी लय हो बन्दना यह मेरा संस्कार ही हो—सुदृढ़ संस्कार। परन्तु मनुष्यका धर्म अब इस प्रकार संस्कारका रूप धारण कर गेठा है बन्दना, तभी वह बर्माय हो जाता है तभी वह सख स्वाम्भिक चीज बन गेठा है। बीबनके कर्तव्यमें फिर कोई चरण वा टकर नहीं होती, उसे माननेके लिए अपने ही साथ लड़-लड़कर नहीं मरना पड़ता। लव बुद्धि शान्त हो जाती है, अबाब बक-सोठके समान वह लहज स्वाम्भिक तरीकते बहती रहती है। चायद इसीको मैंने उस दिन कहा था—यह है विप्रदासका अत्याज्य धर्म—इसमें किसी तरहका परिवर्तन नहीं है।'

'कभी किसी भी दिन इसमें परिवर्तन नहीं आ सकता मुलकी लाहब !'
'अबतक तो ऐसा ही जानता हू बन्दना। आज भी मैं यह नहीं सोच सकता कि इस बीबनमें इसमें काह परिवर्तन हो सकता है।'

इतनी देरमें बन्दनाको मौल भर भारें विप्रदासन बड़े स्नेहसे उसका हाथ खींचते हुए कहा—'लेकिन परिवर्तनकी बकुरत क्या है बन्दना ? प्यार दुमसे किया है मैंने—वह प्यार तुम्हारा भै मनके मीतर रहेगा—अबसे वह देगा मुझे तुलमें जानबना और कमसेसेमें बक। भार अब अकेले मुसले न दोबा जायगा तब तुम्हें पुकारूंगा। वह भी आकते तुम्हारे लिए सुरक्षित रल दिया है ऊँची बगह। आभोगी तो लव ?'

बु नान बायें हाबने अपनी धीर्बैं पीछते हुए कहा—'बाई १, अगर जानेकी छिंक रही—रास्ता भी अगर तबतक खुल रहा, नहीं ले नहीं आ लूँगी मुलकी लाहब !'

बात सुनकर विप्रदास मानो चीक पड़े, बोले—'ठीक ही तो है ! ठीक ही तो है। जानेका रास्ता अगर खुला रहा—इसेणके लिए अगर कर न हो गया। तब माना बकर लेकेन; धर्ममानते मुँह मर मोड़ लेना।'
बन्दनाने फिर अपने बाँधू पीछते हुए कहा—'मेरी एक भील लेनी रही—मुलकी लाहब, मेरी बात आप कितासे कई नहीं।'

“नहीं, नहीं करूँगा। मेरा पैसा कोई ब्यादमी नहीं, भित्ते में मनकी बात बँठाऊँ, यह तो तुम जान ही चुकी हो।”

“हाँ, जान चुकी हूँ।”

इसके बाद दोनों कुछ देर चुप रहे। फिर विप्रदासने कहा—“इत विद्याल जगतमें मैं इतना ब्यादा बचला हूँ यह बात तुमने कैसे समझी थी बन्दना ?”

बन्दनाने कहा—“क्या मासूम कैसे समझी थी। आपके घरते जब नाराज होकर बड़ी आह तब आप लाय भाये थे। गादीके उन मठवाले साहबोंकी बात पाह है ? ऐसी कुछ लास बात नहीं थी—फिर भी उस बरु मासूम हुआ कि किन्हें हम लोग अपने पारों तरफ देखा करते हैं उनमेके आप नहीं हैं, अचखे ही कोह मार अपने सिर ब्यदनेमें आपको बुविषा नहीं होती। यही बात कही थी उस दिन दिम्नू पाबूने,—मैंने मिळा-मिळूरु हला कि आप किसीं भी कोह प्रयाघा नहीं करते। रातका विस्तरपर पढ़-पढ़े आपका ही लयाक भाटा रहा—किसी भी तरह नींद नहीं आई। आँखी रातमें उठी तो देला कि नीचे पूजा घरमें बत्ती जल रही है और आप बैठे हुए हैं प्यानमें। एकदक देखते-देखते म्मेर हो गया। बड़ी नोकर-बाकर न देखे, इस डरसे अपने कमरेमें म्ग्य आई। आपकी उस मूर्तिको फिर भूल ही न सकी मुलजी साहब, आँखें मीनते ही मुझे दिग्घाई देने लगती है।”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—“बेग या बग मुझे पूजा करते हुए ?”

बन्दनाने कहा—“पूजा करते हुए तो आपकी माँको भी देला है, पर वह यह नहीं। वह अलग चीज है। आप कितना प्यान करते हैं मुलजी साहब ?”

विप्रदासने हँसते हुए जबाब दिया—“यह ब्यानकर तुम क्या करोगी ? तुम तो करोगी नहीं।”

“नहीं करूँगी तो नहीं; फिर भी जाननेको इच्छा होती है।”

विप्रदास चुप रहे। बन्दना कहने लगी—“मुझे उठ बिन परसे-परक यह मासूम हुआ कि लकड़े बीय रहते हुए भी आप अलग हैं, अचखे हैं। बाहर आपका साथी बना था सचता है वहाँ उठनी ऊँघारपर ये लोग कोह भी नहीं बह सकते। और एक बात पूरूगी मुलजी साहब बँठायेगे ?”

“कोन-सी बात बन्दना ?”

“नारीके प्रेमकी बज शायद आपका अरुत नहीं है न ?”

“इत प्रभुके मानी !”

“मानी नहीं मानती, येमे ही पूछती हूँ। इतकी धारद अब आप कामना नहीं करते,—आपकी उधिमि मज यह बीज बहुत ही दृष्ट हो गई है।—सब है वा नहीं, बताइए !”

विप्रदासने जबाब नही दिया, सिर्फ मुनकपते हुए उलकी ओर देखते रहे। इतनेमें नीचेके प्रांगणमें सहता गाड़ीकी आवाज सुनाई दी, और, हिजदास-का कष्टस्वर सुनाई दिया। दूसरे ही सज दरवाजेके पाठ आकर अथवाते कहा—

—“हिज् मा गया बिपिन !”

“अकेला ही है क्या। या और भी कोई साथ है !”

“नहीं अकेला ही बीज पढ़ता है। और कोई नहीं है।”

मुनकर बनना संभव हो उठी, योबी—“जाती हूँ, मुझसे साहब, देखें उनके लिए खाने-पीनेका इन्तजाम ठीक है वा नहीं।” और वह उठके पानी गए।

सबेरे हिजदासने आकर जब विप्रदासके पाँच दूकर प्रणाम किया, बन्दना तब कम्बरेके एक कोनेमें पूजाकी तैयारी कर रही थी। हिजदासने कहा—“इसी पंचमीके दिन मैं वाक्यबकी प्रतिज्ञा करवा रही हूँ। बड़ा-मायी समारोह है माह साहब।”

“सोका समारोह तो बड़ा-मायी ही हुआ करता है हिज्। इतमें बिल्लाकी क्या बात है !”—कहकर विप्रदास हँस दिया।

हिजदासने कहा—“सो तो है ही। जबकी बार संयोग मिल गया है बाबुके आयोग होनेको मजद-पूजाका—उते भी एक तरहका अथमेध-यज्ञ ही समझिए। बाप्यापक-वंशिलेकी विद्वार्थकी केदरिल तैयार हो रही है,—कुनुपी लम्बन और अलिबि-अम्बागलेंकी जो सक्रिय खूबी मारमीके ईश्वरे मुनी है उच्छे आशका हो रही है कि जबकी बार आपके बनार से लोग अब गए पंजा मारेंगे। लम्बन रहते साबधान हो जाइए।”

बन्द ने मुँह नहीं उठाया पर अनेको सँगाळ न लकनेसे हँलते-हँलते खोद-खोद हो गए। विप्रदास कमीदार और दुनिबरी आदमी हैं, कम्बल हैं—सिधा एक मीके इत बदनामीके प्रचार करनेका मौका मिल जब तो कोई रिमापत नहीं करता। विप्रदास भी इत हीलौमें शामिल होते हुए सोके—

“लेकिन अब तेरी पाटी है। अबकी बार लख लेग होगा।”

“मुझे कार्र भापति नहीं अगर मेरे पास कुछ हो। लेकिन लख व्यवस्थामें कुछ रहो-बदक करना होगा। निदार जिन जोगीको हो जावगी वह ‘टोको’ या चरशाखाओंका पण्डित समझ न होगा, बल्कि ‘टोको’ का दरवाजा बन्द करके जिन्हें बाहर दफेक रखा गया है—वे हींगे।”

विप्रदासने पूबबत् ईसठे हुए कहा—“टोकोपर तेरी इतनी नाराजगी क्यों है? लोगके मुँहसे उनकी सिर्फ निन्दा-ही निन्दा सुन बी है, खुद तो कभी उन्हें आँसोंसे देखा नहीं तैने। उन जोगीके दखमें-धामिक हानेसे घायब मुझे भी तेरे शासनमें आनेको न भिसेगा।”

त्रिबदासने पास आकर और एक बार पाँव छुट, और कहा—“वह बात मत कहिए। आप दोनों दखेंसे बाहरक हैं, और तौसर स्थान बोन-छा है तो मुझे माझम महों। मैंने तो सिफ इतना जान रखा है कि मेरे मार-साहब हम जोगीकी बिचारबायक बाहरके हैं।”

विप्रदासने उसकी बातको दबा दिया। पूछा—“मेरे बीमारीकी बात मोंको तो नहीं माझम हुए?”

“नहीं। पर माझम हो जाता तो अच्छा हाँवा, तालबकी प्रतिज्ञा क्यते कम स्पणित हो जाती।”

“नाते-रिखेशायोंको बुझानेका इन्तजाम हो गया?”

“हो रहा है, भूत, मन्त्रिण, बतमान समी रिखेशायोंको बुझानेका। सक्रम्या क्षयप बाबूफ लिए भी आमंत्रण पत्र भेजा गया है। म्यंकी धारणा है कि इत विरयद् आपा बनमें मैने रोको अग्नि परीक्षा हो ब्यवगी। मेरे ऊपर मार पड़ा है उन जोगीका यहाँसे ले आनेका।”

“मौने और कितोका मिश्र ले आनेको नहीं कहा?”

“हाँ, अनु-शोदीको भी ले जाना होगा। कालेजके बड़भ्रोंमेंसे अगर कोई बलना पावे तो वे भी सब सकते हैं।”

“तेरी मामीकी कोर्क-कलाइय नहीं है?”

“नहीं।”

१. प्राचीन काकरी संस्कृत-शास्त्राचार्योंके संघकेने ‘टोको’ कहने है। इनमें जिन जातिके छात्रोंके लिए स्थान बंदी हीना।

नीचे फिर मोटरकी आवाज सुनाई थी। हॉनकी परिचित आवाज कानमें पड़ते ही बन्दाने लिफ्टकीसे हाँककर कहा—“मौलीजीकी गाड़ी है। मैं देखूँ बाहर। आप सज्ज्या-पूजा कर ब्येजिए—देर हो रही है।”—कहकर वह नीचे पत्नी गई।

“मैं भी डाऊँ, हाथ-मुँह धोऊँ बाहर, पच्चे-भर बाद आऊँगा।”—कहकर दिव्यदास भी चला गया।

विप्रदासकी सज्ज्या-पूजा समाप्त हुई। आज एक-मूक बगैरू दे गए अबदा। मौलीके परते जो बड़की बन्दनाको छेने मार है, बन्दना उसीके साथ ब्यस्त है—वह लखर भ्रमदाने ही थी।

दिव्यदास ब्यासमय बापस आ गया। हाथमें उसके एक बन्नी चौड़ी फेरिल्ल है, उसकी सारी पीज कड़कसेने लट्टीरकर गाड़ी मरके खानान करना है। दोनों मारै जब कि उस फेरिल्लका सेकर ब्यस्त से, तब दरवाजेके पाठसे मापना बाह—“मुल्जी लाहब, भीतर आ सफती हूँ क्या? पैरोंमें छेकिन छोटे हैं।”

“बूँते! लो पहने रखो, बाब्यो।”
बन्दना कम्पेक भीतर आ गए। किस बेधमें उसे पहले-गहल बह्यमपुरमें देखा था, वही बेध था। विप्रदासने आपत्त आशयके साथ पूछा—“कहीं आ रही हो क्या?”

“हाँ, मौलीके पर।”
“कब लौटोगी?”

“दौटनेकी बात तो नहीं मामूम मुल्जी लाहब।” इतना कहकर अपने छक्के प्रयास किया, किन्तु भीर दिनकी तरह पीव नहीं घुर और बगैर मुँह उठाये मापेने हाथ लगाकर दिव्यदासको भी नमस्कार किया उठके बाद वह कम्पेस बाहर निकल गई।

×

×

×

२०

दिव्यदासने पूछा—“बन्दना अबानक कैसे पत्नी गई? क्या मेरा आ जाना। इतका कारण है।”

विप्रदासने कहा—“नहीं। इसके मिठाने दार मेबा है कि जबतक बम्बई नहीं आती तबतक मौसीके पर आकर रहे।”

“पर बखानक मौसी कहाँसे आ गई? बन्दनाने मेरे साथ तो समयग बात ही नहीं की, बपसे आया हू तबसे बखानक-बखान ही रही, उसके बाद सबेरा होठे-न-होते बखान ही। एक नमस्कार करके कर गई, लेकिन वह भी मुँह फेरकर। मेरे विरुद्ध हो क्या गया उसे!”

विप्रदासने प्रश्नको टाक दिया और मौसीकी बात संक्षेपमें सुनाकर कहा—“मेरी बीमारीसे डरकर अनु-दीदी उसे मौसीके परसे ही लिबा ब्यर थी—मेरी बीमारदारीके लिए। काफ़ी सेवा-शुभ्रुग थी उसने। उसके प्रति तुम लोगोंको कृपण होना चाहिए।”

द्विप्रदासने कहा—“नहीं चाहिए, यह मैं नहीं करता, पर आपकी सेवा करनेका मौसा मिस्त्रा भी तो एक सीमावधिकी बात है। हम मूल्यको अगर वह भी मद्सूल कर सकी हो तो कृपणता उसपर हम लोगोंकी खनी रही।”

विप्रदासने हँसत हुए कहा—“तु बड़ा मराधम है।”

द्विप्रदासने कहा—“नराधम हूँ पर नियोज नहीं। मेरे बात खाने दीक्षिए। पर इस सेवा करनेकी बात माक कानौतक पहुँच गई तो वह हमेशाके लिए हमारी मौको ही खरीद लेगी। यह क्या कुछ कम समदा है।”

मुनक विप्रदास हँस दिव, बोटे—“मौको हसने दिनोंक बाद तू पहचान गया माधम होता है।”

द्विप्रदासने कहा—“अगर पहचान गया होक तो इस बातको सिर्फ आप ही खन रखिए। मैं मौसा कुपुत्र हूँ, कुसाकार हूँ—उनके तर यही परिधय रहने दीक्षिए। इसे अब दिखाने कुपानकी बहरण नहीं माई साहय।”

“अगर क्यों? मैं तुझपर विश्वास कर सकूँ, तुझ भ्रष्टा समझने खीं—यह क्या तू सधमुष ही नहीं पाहता। इस अभिमानसे नाम क्या खे तो बता।”

“नाम क्या है सो माई जानता, पर भोम विशेष नहीं है। मुझ आपका स्नेह मित्रा है, माधीका प्यार मित्रा है, यही मेरे लिए सात राजाधोका धन है, तात-अनममें शान्ति दाखीते बॉरकर भी इसे खठम नहीं कर सकूँगा।”—यह कहते-कहते ही उसका खेदय सारे घरमके मुन्य हो उठा। दरपके इन आधैग-

उष्णायुषीको प्रकट करनेमें वह हमेशासे ही प्याबुल रहा है,—हमेशा निरदरताके आचरणसे अपनेको उड़के चमना ही उसको प्रकृति है,—एक क्षणमें अपनेको सेमाकटा हुआ बोला—“पर इत तरहकी आभेचना करना किम्विध है। जिस बातको बन्दरत है वह यह है कि मेरे दृष्टिमें बन्दनाका इस तरह चमना जाना उसकी नाराजगी ही मासूम होती है। इसके मानी बता दीजिए।”

“मानो याबद वही है कि तू अब आ पहुँचा था कि फिर उसका वहाँ बन्दरत नहीं रही। अबतै सेवा-सुभुयका मार ठेरे ऊपर है।”—इतना कहकर धिप्रवास हँसने लगे।

त्रिभुवाग्ने कहा—“भाप मन्वक कर रहे है, सेकिन मैं सत्य कहता हूँ कि वे सब भोग्यो-नवीन छद्मकिर्पा इसी बर्म्ममें एक दिन मर मिटगी। भापको सेवा करनेका दिन कसो न भाये, पर भा जानेपर वह प्रमाणित हानेमें हेर न कोगो कि मार-ठाहबकी सेवा करनेमें त्रिभुवा इय देना दस-दस बन्दनाभाके भी बूँते वाहरकी बात है। यह बात ठठमे कह दीजिएगा।

स्वैह-वास्तवे धिप्रवासका खेदका प्रतीत हो उग्न बोले—“बच्छा कह दूंगा; पर वह बिस्वात कोगो या नहीं सो नहीं मासूम। सेकिन, परीसाको बन्दरत मेरे लिए नहीं है—है सिद्ध एकके लिए और वे हैं मीं। तुम दोनोंमें समझौता हो जाना याबिए, समझा तू।”

त्रिभुवाग्ने कहा—“नहीं मार-ठाहब नहीं समझा। सेकिन मों अब हैं तब अगर किन्वा खा, तो एक दिन समझौता ही ही जावगा पर अभी बन्दरत क्यों भा पड़ी, यह समझमें नहीं भा रहा है।”—कहकर कुछ हेर पुप खा, फिर कहने लगा—“मेरी तकवारमें लम्बे-कुछ ठमझा है। शिवाग्ने जन्म दिवा, पर वे दे नहीं गये एक कानीकोड़ीको सग्यति,—सो ही भापने। मीने गममें कारण किया, पर पाक-योगकर बड़ा किचा मप्रदा-दीरोने; और बाक्यका सब मार उग्रकर माहमी बनावा भाग्रीने,—दोनोंने ही पयमे परतेसे भाकर सप-मुछ किया। शिवा स्वयं पित्त बर्म्म मार ‘स्वगाहनि गतपल’—ये खोके पड-पड़कर मनको मर करतक बंगा मनावे रतूँ मार-ठाहब, भाप ही बताइए।”

त्रिभुवाग्ने कहा—“मींके मामलेको सेकर मर बकाकत नहीं करूँगा, पर तू अपने भाप ही किन्ती दिन समझ जावगा, पर शिवाग्नेक संभवमें सो पारण्य

सेरी है—बढ़ गच्छ है। आभी सम्पत्तिका सचमुच ही तू मादिक है।”

विप्रवासने कहा—“हां सफ़टा है सब, पर मिठाईके मरनेके बाद, कम्पेका दरवाजा बन्द करके उनका ‘कर्मोपतनामा’ क्या आपने नहीं कहा थावा ?”

‘किसने कहा तुमसे ?”

“अबतक जो मेरी सब तरफ़से रक्ष करती आई हैं उन्हींके मुँहसे मुना है यह।”

“सो हो सफ़टा है, पर तेरी माँसे तो यह बर्तीपतनामा पढ़ा नहीं। ऐसा भी तो हो सकता है कि मिठाई तुमको ही सब दे गये हों और इत्योष्यि गुल्लेमें आकर मैंने उसे खाया हो। यह भी तो असंभव नहीं।”

तुनकर शूद्रलक्ष्मी ईसासे पहले तो यह लूच हँस दिया, फिर बोस्य—“माई साहब, आप तो कभी छूट नहीं बोलते। हापरमें युधिष्ठिरके छूटको नोट कर गये हैं वैदव्यास, और कर्णियुगमें आपके छूटको नोट कर रसेगा यह विप्रवास। दोनों ही समान होंगे। सैर, कुछ मो हो, इतना समझ लिया कि कमरके निपाकमें पड़ जानेत सब-कुछ तम्मब हो सफ़टा है। अब और क्यादा पाप न बढ़ाईगा, बहारए अबसे मुझे क्या-क्या करना होगा।”

“हम श्लोका कायेवार और वर्मीदायीका काम सब-कुछ तुमसे ही देखना मानना पड़गा।”

“मगर क्यों ? किनलिए इतना मार मैं दौऊँ, मुझे समझ दीजिए। क्या अकले भापसे तमान्ते नहीं बनता ? असंभव बात है। मैं निहम्मा माहायक हुआ जा रहा हूँ इत्यलिए ? नहीं, सो बात नहीं, फिर भी मैं पूछें तो उनसे कह दोजिएगा कि आपकोकी मुझे बकरत नहीं, मैं नाचापक रहकर ही दिन काट दूँगा, उन्हें सोच-फिकर करनेकी बकरत नहीं। आपके रहते हुए रुपये-दौनों और जमीन-व्ययणाका सोस मैं नहीं दौऊँगा। अन्तमें क्या मैं भी भाप ही बैठा प्यारतर सम्पत्तिका दुनिपची हो जाऊँ ? श्लोक बहेंगे, इसकी निपधों में खुन नहीं बरता, बरता है श्लोकको खोत।” —परन्तु करते-करते ही ठकने देखा कि विप्रवास अत्यमनस्क होकर न जाने क्या सोच रहे हैं, उसको बातोंपर उनका ध्यान ही नहीं। नाचगन्तः देखा मही होता,—विप्रवासका देखा स्वभाव नहीं। इत्यलिए उसे कुछ बारपर्यं हुआ बोस्य—“माई साहब, तनमुच ही क्या आप चाहते हैं कि मैं काम-धम्मा देता हूँ, उस स्वदेउ-लैकाको बसाइजि

देकर बाँ मरत हमेशाका स्वप्न है !”

विप्रवासने उसके चेहरेकी ओर गीले देखते हुए कहा—“अम्माजि दे दे, देखी बात तो तुझसे कभी नहीं कही शिद्दू। जो तेरा स्वप्न है वह बना रहे,— हमेशा बना रहे, फिर भी मैं कहता हूँ कि पर-गृहस्थीका मार लू ले ले।”

“पर क्यों, वो तो बढाइए। कारण बगैर जाने मैं हरिज यह बात नहीं माननेका।”

विप्रवास एक क्षण मौन रहकर बोले—“इसका कारण तो बहुत ही सरल है शिद्दू। भाब मैं इ पर देता भी ता हो सकता है कि मैं न रहूँ।”

शिबरास और देकर कह उठा—“नहीं, देता नहीं हो सकता। आप न हो—कही भी न हो वह मैं खोब ही नहीं सकता।”

उसके विभासकी प्रकृताने विप्रवासको थोटा पहुँचार् परन्तु उन्होंने हँसते हुए कहा—“तुम्हारे लव कुछ ही सकता है दे, यहाँतक कि असम्भव भी। इस बातको सोचते हुए जो लोग करते हैं वे अपनेको थोला देते हैं। और ऐसा भी तो हो सकता है कि मैं एक गया शर्क, मुझे पुरीकी बकरत हो—तो भी बुझी न होगा लू।”

“नहीं मारै ताइत न है लईगा। इतने तो बहुत आसान होगा आपका आदेश पालन करना। बढाइए, कबसे मुझे क्या करना होगा।”

“आजसे इस घरका सारा भार तुमसे लेना पड़ेगा।”

“आजसे ही। इतनी बरती। अच्छी बात है, बही सही। आपकी हुस्न-उपूषी न कर्नागा।”—वह कहकर वह चला गया, पर मारिक के शब्द सुनता गया—“तेरे करनेकी जरूरत नहीं है दे, मैं जानता हूँ कि मेरी आज्ञा मंग करनेवाला लू नहीं है।”

×

×

×

दिब्रवातने काम करना शुरू कर दिया। वह आज्ञासी है, बर्कर्मण्य है, उदारमीन है वही लवकी हमेशाकी शिक्कावत थी; पर अपने माइ-साइबके आदेश से माँके अल-प्रतिग्रानुग्रानक लम्बूष भावात्मनका सारा भार वह बनेजे उतीपर था पड़ा लव अपनी उल पदनाथीको अप्रमथित करनेमें उसे क्वादा समथ न बगा। इत तरहका अन्मथ्यल भारी कार्बग्यर वह इतनी आतानीसे उठा लेगा, इतनी आघा विप्रवातको न थी; उलकी भावस्वरीन शृंगलावह कावपतुताको

देसकर वे एकपारसी आदर्यभंगित हो गये । ज्ये कुछ खरीदके मेजना या उसे गाड़ीमें रखवाकर उमने देण मेत्र दिया ज्ये कुछ साथ ले जानेका या वह साथ से जानेके लिए रम छोड़ा, भारतीय कुटुम्बी जनोंको इकट्ठा करके पयापोम्य आदर-सत्कारके साथ उन्हें मी रखाना कर दिया । यहाँका सारा काम पूरा करके भाब पर जानेक दिन वह माइ-साइबसे आभिरि उपदेश ग्रहण करनेके लिए उनके कम्पेमें गया तो देखा कि वहाँ बन्वना बैठी है । उस दिनसे वह यहाँ नहीं आइ थी । काम-काजको मोहमें उसको बाठ दिप्रदास भूल ही गया था । भाब अजानक उसे देखकर मन ही-मन उसे आदर्यव हुआ परन्तु उस माबको प्रकट न करके, उससे किर्त एक मामूली नमस्कार धियाधार करके विप्रदाससे बोला—“माइ सादर, भाब रातकी गाड़ीसे मैं घर आ रहा हूँ, साथ का रहे ई अग्रय बाबू उनको ली आर पुत्री मैत्रेयी । आपक कालेजक मइके हापक कल-परलोकक जायेंगे उन शोगेंको मैं किराया दे खटा ह । अतु-दोदीको क्या आप ही अमने साथ आइएगा ? पर तीन-चार दिनसे क्यादा दिन न बगए ।”

“मुझे क्या जाना ही पड़ेगा !”

“हाँ । न जानेका विचार हा तो एक जोड़ी लड़ाई खरीद लीजिए, ले जाकर मरतकी तरह सिंहासनपर रम देंगा ।”

विप्रदासने हँसत हुए कहा—“बानुनियोंका सिरताब हो गया लो । पर आदर्य होता है अग्रय बाबूकी बात मुनके । वे कैसे जायेंगे ? उइ ली चुड़ी नहीं मिले—गैर-हाकिमे हा जायगे अ ?”

दिप्रदासने कहा—‘तो हो अयगी; पर मुकसान नहीं होगा,—उपर उससे भी बहुत बड़ा काम हो अयगा वह परम बड़की परगानेका । पैसकाया अम्यर् मरिष्यक लिए बहुत मयसको स्वीत्र है,—कालेजको बेपी दुई धनत्याठ बहुत बड़ी बात है ।”

विप्रदासने नाउब होकर कहा—“तरी बात मैत्री कम्पी हाठी है पैसी ही ककय । किनी आदमीका गम्मान रखते हुए बात करना ल जानता हो नहीं ।”

दिप्रदासने कहा—‘जानता हूँ या अँ, जो मामीम पूठ रलिर । साअ्यका रिजक भरअप नहीं करता, बिह पही मुसमें दाग है ।”

मुनकर विप्रदाससे गैर हसे न रहा गया, याते—“तेरी एक हो गवार है,

नहीं मानी। जिसे शराबीका गवाह कह्यार।”
 हिम्मासने कहा—“सो होने दो, पर आपकी भी बात बहुत छार-छोटी नहीं मावम हो रही है मार्य साहब। कारण, न तो मैं शराबी हूँ और न ये शराब छप्यार करती हैं। देती है अमूठ; और देती है छिने-छिने बहुतीको अघ, जो बहुत बड़े आबमो भी नहीं दे सकते।”

विप्रवासन कहा—“उन्हें दे सकनेकी जरूरत भी नहीं। साइ देकर देकरको जानवर बना आकनेके अगवा बड़े मावमियोंको और भी काम है।”

बन्दना मुँह नीचा किये हुए हँसने लगी हिम्मासने उठे ताइते हुए कहा—
 “इस विषयको लेकर अब बहस नहीं करूँगा मार्य साहब। आपके कोई मायमी नहीं है—मालीबोंकी बर पदस्तीमें उनका स्लेह क्या चीज है सो आपको कमी मावम नहीं हो सकता। अजेको विभा दिलानेकी कोपिछ करना निम्कक है।” —फिर अर्य हँसके कहा—“बन्दना मुँह डिपाने हँस रही है, पर मौसीके परके बासे कुछ इन हमारे पर लिता आलों तो शायद मेरी बात समझ जायी। पर जाने तो इन सब बातोंको। आप कब पर आ रहे हैं तो बता ‘ए।’

‘मैं बहुत बड़ा दुष्मा हूँ हिम्मा, मोंको समझक कह नहीं लकेगा क्या।’
 विप्रवासका चेसा निर्वीच निस्पृह कठखर उठने कमी नहीं हुना, वह चीक पड़ा, देला कि चील् हली अभीतक छोटीपर गयो हुई है—पर वह माना उसके मार्यसाहबकी नहीं, और फिरीकी है। विस्मय और ध्वपाते वह अभिभूत हो गया, बोला—“आपकी तबीयत क्या अभीतक अच्यमी नहीं हुए मार्य-साहब।”

नहीं, अच्छी तो हो गई।”
 ‘तो फिर मोंको कैसे समझऊँगा कि आप पर नहीं आ सकेंगे। उरकर कही वे यहाँ चली मार्य तो उनकी लारी तैयारियों नर-प्रय हा मार्यपी।’
 विप्रवासने खय-खर लोबा, फिर कहा—“दू मुस कब आनेके दिव्य करता है।”

हिम्मासने कहा—“मात्र, कम, परलें,—अब हो। मुझे माका की-अप, मैं खुद आकर ले जाऊँगा।’
 विप्रवास कुछ देर पुरपाप मुलकराते रहे फिर बोले—“अच्छी बात है, बरी लरी। मैं खुद ही आ जाऊँगा, हरे आनेकी जरूरत नहीं।”
 हिम्मासक बड़े जानेपर पन्दाने हुआ—“बह बड़ा दुष्मा मुलच्यी साहब,

पर जानेमें आपसि क्यों की ?”

विप्रदासने कहा—“कारण तो तुम अपने कमनोंसे ही मुन चुकी हो।”

“मुना तो सही, पर यह बनाव तो वृद्धोंके लिए है, मेरे लिए नहीं। बवाइए, क्यों आप पर नहीं जाना चाहते ? आपको कहना ही पड़ेगा।”

‘मैं पका हुआ हूँ।’

“नहीं।”

“नहीं क्यों ? बकनेसर समीका दासा है, नहीं है तो सिद्धं मेय ?”

“आपका भी है, लेकिन यह सन्मुखका होता तो सबसे पहले समझ आती मैं। और सबकी दृष्टिको आप पोसा दे सकते हैं, सिर्फ मेरी दृष्टिको नहीं दे सकते। आते बल्ल भीषीका मैं चिट्ठी लिखती बाऊँगी कि आपको बीमारो समझनेकी अगर कमी नकरत हो, तो ये मुझे बुका लिया कर।”

“तुम्हारी बीबी खुद बीमारी नहीं पहचान सकेंगी, और तुम उन्हें पहचानना होगी।—यह बात मुनक बे मुन न होगी।”

बन्दनाने कहा—‘मुन मने हो न हो पर कृतज्ञ बनर होगी। मेरी बीबी टपरी ठस मुगकी मनीमानस बी, उन्हें पतिको रूँदना-मुनना नहीं पड़ा, मगवान्ने आशीबादकी मति उनकी अंजुल भर दी थी। तपसे स्वस्य तबल आदमीके ताव ही उनका काराबार चक रहा है। पर ठस आदमीका भी किसी दिन हृदय दूट सकता है, वह बे रीने जान सकती हैं।’

विप्रदास मुहसे कुछ बनाव न देकर निरुत्तर हो गए।

बन्दनाने कहा—‘आप इसे कैसे ?’

विप्रदासने कहा—“हैंसी अपने आप ही आ जाती है बन्दना। पति रूँदने मुननेक अविमानमें आकृतक तुमने किन आर्गोंका रण्य है उनक बाहर भी काह है—यह तुम लोग जान ही नहीं सकती। तकारक साधारण नियमोंको सिद्ध मानती हो तुम लीय, उनक अतिश्रमको नहीं मानना चाहती। अगर मन्व यह कि इस अतिश्रमक बलपर ही टिका हुआ है धम, टिका हुआ है पुण्य काय्य सादित्य, अविचलित धन्य और विधास, तब कुछ। इसक न रदनसं तो रूँपकी बिलुप्त मरभूमि हो जाती। इन तपका तुम आकृतक नहीं जानती।”

बन्दनाने स्वयंके स्वरमें कहा—“अतिश्रम शायद आप खुद हैं मुनकी मदासन ! मगर उम्र दिन तो आपने कहा था कि मुझे भी आप प्यार करते हैं !”

विप्रवास

“तो मात्र भी करता हूँ, परन्तु प्यारका सिर्फ एक ही रास्ता हम लोगोंको दिखाना होता है, और सब रास्ते बन्द दिखते हैं, इसीसे उस दिनकी मेरी बातें हम समझ नहीं सकी हो। एक बार देर आगे दिख और उसकी मामीको। यदि बन्धी न होगी तो देख सकेगी कि किस तरह प्रजा ब्याकर मिली है प्यारके साथ। इसी-समयकमें, आसोद-आह्लादमें ब्यङ्ग-प्यारमें, निविड पनिपटलमें वह सिर्फ उतखी मामी ही नहीं है, वह उसकी मित्र है, वह उसकी माँ है। बही सम्बन्ध तो तुम्हारा हमारा भी है—ठीक उनी तरह ही क्यों नहीं मुझे प्रहल कर खर्ची बन्दना !”

उसके बन्ध-स्वयमें या गहरा स्नेह और उसके साथ मित्रा हुआ था तिरस्कारका सुर। बन्दनाको उतने बड़ी गहरी खोद पडुपार। वह कुछ देर सिर छुकावे हुए बैठी रही फिर लहला भौल उठाकर बोली—“भापको मैंने गलत समझा था मुलकी साहब। मेरी बीबीको अगर भाप तबमुच ही प्यार करते होते तो मुझे कोई दुःख न था किन्तु आप से उन्हें प्यार नहीं करते। भाप पावन करते हैं किर्त परम। सिर्फ कर्तव्यको मानकर पकते हैं। कठिन है भापकी प्रहृष्टि—बो किलीकी प्यार करना नहीं जानती। पारे कितना भी डकके खलिप यह खप एक-न-एक दिन प्रकट हागा ही।”

छत्र-मर सिर रखकर फिर कहने लगी — मात्र मेरी भी गळती पूर हो गई। मात्र मुझे भाप वही भाषीबाद दीखिए कि मैं अब एन्वमें मादमी हूँपने न आऊँ।”

विप्रवासने हँसते हुए हाथ ऊँचा करके कहा—‘दिवा तुम्हें बाधीर्बाद। आकळे मादमी हूँपनेका काम तुम्हारा समाप्त हो भाप और वो तुम्हारा सिर काकका है उसे वे ही तुम्हें बान करें।’

विप्रवासकी बातको अगम्यनजनक परिहास समझकर बन्दना नाचन हो गई, बोली—“भाप गळती कर रहे हैं मुलकी साहब मादमी हुदते फिरना मेरा पेषा नहीं है। वे कोई और हो होगी। परन्तु भवानक मात्र क्यों भापके पास आए थी से भापते कह ही न पाए। एक दिशामें तबमुच ही मेरी एक बही मारी गळती पूर हो गई। वहाँ भाप श्लोकोक संलगमें खेबा था कि वह सब हापद तबमुच ही अन्ध्र होगा, पूजाहूतका नियम म्मनके बन्दना, पूज बुनना, बन्दन बगाना, पूजाका भाषाबन करना,—और भी न जाने क्या

क्या—समझा था कि यह सब शायद सबमुच ही मनुष्यको पवित्र बनाता है किन्तु अबकी बार मौसीके घर जानेपर यह मूढ़ता मंगी दूर हो गई। कई दिनों तक बैठा पागलपन किया था मैंने मन्वर्गी साहब। मानो सबमुच ही ठन बाँटी पर मेरा विश्वास हो मानो हमारी मित्रा में सत्कारोंमें सबमुच ही कही इससे कोर प्रमेद न हो।—इतना कहकर वह बचन हैसने श्या।

उसने सोचा था कि उसकी इन बातोंसे विपदासको बड़ी गहरी चोट पहुँचेगी किन्तु दया कि अब मो नहीं पहुँची। उसकी छत्र हैसामें शामिल होते हुए विपदासने कहा— 'मैं ब्यनता था बन्दना। तुम्हें क्या पाद नहीं कि मैंने सावधान करते हुए एक दिन तुमसे कहा था कि यह सब तुम्हारे लिए नहीं है, तुम मठ करा यह-तब। वह मूढ़ता तुम्हारी दूर हो गए, यह ब्यनकर मुझ लुगी हुई। तुमने शायद साधा शाय कि तुम्हारे यह बात सुनकर मुझ बड़ा कष्ट होगा, मगर सा बात नहीं। जिसके लिए आ स्वाभाविक नहीं है उसे वह न करे तो मैं बुगी नहीं हाता। तुम्हें तो पाद है कि अब तुमने पूछ कि मैं जिसका प्यान करता हू, तो मैं दुप रर गया। कहनेमें कोर बाधा हो सा बात नहीं, पर ब्यस था कहना। पर अभी इन तब बातोंका रहन बा। तुम्हारा बम्बर जानका करा कोर दिन तब हो गया।'

मारे आभिमानके बन्दनाका पररा मुप हो उठा, विपदासकी बातके उबाप में उसने मिक कहा—'नहीं।'

'उस दिन तुम अपनी मौसीके मलीके अघाकरी बात कर रही थी। करती थीं मङ्कका तुम्हें भङ्गा ही बग्य है। इन कई दिनामें उसके विरपमें करा और कुछ जान लकी हो।'

'नहीं।'

'तुम लोगोंका अगर बग्य हा, तो मैं आधीबाद हूँगा, पर मौसीकी बन्द बाकीमें कुछ कर न बैउना। उनको हाकोरम करा बकच पन्ना।'

बन्दनाकी आँखोंमें मन्सू आ गये, पर मुँह नौवा किये हुए उसने अतनको हैमान निपा, कहा—'अच्छा।'

विपदासने कहा—'मैं परनों पर आर्कंगा। दो-तीन दिन्ते बग्यरा वहाँ रह न लहूँगा। मेरे बाफ्त भानेयक अगर कलकत्तमें ररो, तो एक बार आना यहाँ।'

बन्दना मुँह मीथे किये हुए थी मिर हिलाकर उसने कुछ उबाव तो दिया,

पर उतका अर्घ्य स्पष्ट समझनेमें नहीं आया ।

विप्रदासने कहा — “सुन मित्रा न, मेरे बुझी मंगल हो गई है, अबसे तारा मार हिम्मत रहेगा । पर-गृहस्थीको पानोमें बापूजीने मुझे बचानसे ही अंत दिया था, कभी फुरसत नहीं पाई थी कहीं जानेको । आज मासूम हो रहा है जैसे सुधी इधामें लौस डेकर ज्ये उठेगा ।”

अबकी बार बन्दमाने मुह उठाकर पूछ — “तबमुच ही खों सेनेको ऐसी बन्दत आ पड़ी है मुझको चाह । तबमुच ही क्या आज आप इतने पके हुए हैं !”

विप्रदासने इस प्रश्नके उत्तरसे अपनेको बचाते हुए कहा — “हाँ, एक बात तो तुम्हें बतार ही नहीं बन्दना, मेरी बीमारीमें तुम्हारी सेवाका उल्लेख करके मैंने हिम्मेत कहा था कि तुम बेगीको बन्दनाका कृतज्ञ होना चाहिए । उससे आधी भी सेवा तुममेंसे कार्र न कर सकता । हिम्मेत कृतज्ञता स्वीकार करते हुए भी तुमसे कह देनेके लिए कहा है कि अगर फिर कभी ऐसा समय आ जाय, तो अपने मर्राकी सेवामें उतके भागे हल-दल बन्दनार्ये भी लज मारेंगी ।”

बन्दनाने कहा — “उनसे भी कह दोखिएगा कि मुझे वह धर्म मंगल है । अगर पत्नीका दिन अगर कभी आ जाय तो उनके बचन भिन्नने चाहिए ।”

सुनकर विप्रदासने मुसकयते हुए कहा — “दशन भिन्नने बन्दना, वह पीठ दिशानेबाध्य आदमी नहीं है । उसे तुम पदबानती नहीं ।”

“पदबानती हूँ मुझकी चाह । वह मैं अबकी तरह बानती हूँ कि आपसे किए उनकी प्रतियोगिता करना तबमुच ही बन्दनाके बूतेक बाहरकी बात है ।”

आनृगर्भसे विप्रदासका चेहरा प्रदीप्त हो उठा, उतने कहा — “बानती हो बन्दना हिम्मेत चाहु-गुण है ।”

“आपसे भी क्या कहा ।”

“हाँ, मुझसे भी क्या ।” — इतना कहकर विप्रदासने क्षण-भर इधर उधर करके कहा — “पर वह कह रहा था कि तुम बाबर उतपर नायब हो । तुम उतसे बोली क्यों नहीं ?”

“बाननेकी बन्दत नहीं पड़ी थी मुझकी चाह ।”

विप्रदासने ईतते हुए कहा — “तब तो रेल रहा हूँ तुम सबमुच ही मायब हो । पर एक बात आज तुमसे कहता हूँ बन्दना, हिम्मेत ध्यबहार बला होया

है, उसकी बातचीत भी हमेशा लूथ मुकापम नहीं होती, पर उसके इस कर्कश आचरणको इत्याकर अगर कभी उसके वास्तविक दृष्टान या आश्रो, तो देखोगी कि ऐसा मजूर आरथी भी तुम्हें आसनासे बूढ़े न मिल्हेगा ।”

बन्धना दूसरी तरफ बैलठी रहा, कोई जवाब नहीं दिया । इसका बाद अक स्मात् उठ लड़ी हुई और बोली—“गाड़ी बहुत देरले लड़ी है मुलकी साहब,—मैं आ रही हूँ । अगर रह सको तो, आपके बाफ्त आनेपर मिल्वूँ । और अगर नहीं रह सकी तो बही मेरा आश्रितो नमस्कार है ।”—इतना कहकर उसने छुटके विप्रदासके पाँच घुर और हाथ मायेने लगाकर तेजीसे बहसि थल ही । विप्रदासको कोई बात कहनेका अवसर नहीं दिया ।

×

×

×

बन्धनाने बरामदा पार करके बनेके पास आकर आश्चर्यके साथ देखा कि दिवदास हाथ-आड़े लड़ा है ।

बन्धना हँस पड़ी बोली—“यह क्या बात है ?”

“एक प्रायना है । भारं साहबको साथ लेकर एक बार आपको हमारे देखासे पर बन्धा पड़गा ।”

“मुझ साथ ले आना पड़ेगा, इतकी बजह !”

दिवदासने कहा—“बही करनेके लिए लड़ा हुआ हूँ । एक दिन बिना आह्वानके ही आपने हमारे पर पदार्पण किया था, आज फिर बही बया आपको करनी होगी ।”

बन्धना खज-भर बगळे लौकटी रही, फिर बोली—“मगर मुझे निर्मन्त्रण दे कौन रहा है ? माँ, भारं साहब या आप खुद ?”

“मैं खुद ही दे रहा हूँ ।”

“मगर आप तो उस फरमें ‘दृष्टीय पुरष’ हैं, आपको इसका अधिकार क्या है ?”

दिवदासने कहा—“और काह अधिकार हो या न हो, जीनेका अधिकार बन्द है । उन्ही अधिकारने मैं प्रायना-गण पेश कर रहा हूँ । करिय, मजूर किया । अस्वन्त आचरणक दृष्ट बगैर मैं कोई भी प्रायना कित्तीक आग पेश नहीं करता ।”

बन्धना बहुत देरतक दूली और देगली रही, फिर बोली—“मन्था, हा

ही छोड़ी, आर्सेनी भी पर मेरी मान-अपमानकी बुझेबायी सब आपर रहेगी ।”

विप्रदासने कृतप्रतापूर्व स्वर्गमें कहा—“मेरी छक्ति बहुत ही मामूली है, फिर भी बी मैंने वह बुझेबायी ।”

बन्दनाने कहा—“आरति-काष्ठमें वह बात मूक न व्यरएगा ।”

“नहीं, नहीं भूर्खी ।”

×

×

×

२१

बहुत दिन बाद विप्रदास नीचेके ऑफिस-रूममें आकर बैठे हैं । सामने टेबिलपर कागडोंका ढेर है—कितने दिनोंका काम बाकी है, कोई ठीक है । छत पर आन्त है, पर दिव्दके भरोसे छोड़ रखना भी ठीक नहीं । एक लावभाकी बिस्तरबार बही उठाकर वे बैठ खड़े थे, इतनेमें बाहरसे मोटरका शार्न सुनारं दिया, और उतक बोड़ी दर काह ही पूरबके मुपे हुए दरवाजेसे बन्दनाने प्रवेश किया । आस वह आकेसे नहीं थी, उतके साथ एक अरिणित युवक भी था । पदनाथमें पीठी-कुरता, पॉन्में कुम्हार करकी बसि और कंधेसे डेकर हुजनेतक एक सप्रेद मोरी चादर लिरछे ढंगसे पहि हुई है । उमर तीवरे कम, देहकी मट्टन और मो बरा दीर्घता किये-हुए शोली लो बचक तसे सुपुण्य करा व्य तकल था । विप्रदास अम्भर्पना करनेकी गरकत कुरछी छोड़कर उठ लड़े हुए ।

बन्दनाने कहा—“मुकडी साहब, वे ही हैं मिस्टर चाउड्री बार-रट्-बैं । पर यहाँ आणोक बाबू कहनेते भी वे कोई आन्टेस न से लकेंगे—इस छतपर आपसे परिषय करानेको राजी करके इन्द साथ लार हैं । आबाप-परिषय लो होता रहेगा, पर उतक पहसे मैं आम्ना करकव पूरा कर लूँ ।”—कहते हुए उतने पात आकर हुकके विप्रदासको प्रणाम किया, और कहा—“पॉबकी भूक सेकिम इनके सामने न से सकी इतकए कि कहीं वे पेला न समस बैठें कि इनक समानका कटक हूँ मैं । पर इसके मानी वह नहीं कि आप पेला समस से कि यह नवा कापरा मौतीक बर्काका लीला हुभा है । उतके बाद फिर आपकी प्रताप्रताकी यहराईका माप मुसे माखूम है न ।”

विप्रदासने कहा—“अम्नी मौलीकीके सामने इली तए मेरा गुन-गन

किया करती हो क्या !”—फिर अशोककी तरफ देखकर कहा—“बन्दनाने मुझे आपकी बात इतनी ज्यादा सुन चुका हूँ कि बीमार न होता तो खुर ही आपसे मिलता । देखत ही ऐसा लग्य जैसे चेहरा आपका परिवर्तित हो बहुत बार देना हुआ हो । अच्छा ही हुआ जो धर्ममें डर न करके ये स्वप्न ही साथ ले आई आपको ।”

प्रत्युत्तरमें अशोक कुछ कहना ही चाहता था कि उनके पहले ही बन्दना शासनकी शैलीसे उबनी उठाकर बोल उठी—“दुसरीं साहब, आप अस्मुक्ति और अतिशयोक्तिको लौपकर समझग असत्यके कोठेमें आ चुके हैं,—अब बक जाइए, नहीं तो दंगा शुरू कर दूंगी ।”

“इसके मानी !”

“इसके मानी यह कि हम अति-साधारण लोगोंकी तरह आप भी तब छड़ जा मनमें आने बनाकर कह सकते हैं । आप तनिक भी असाधारण व्यक्ति नहीं हैं,—क्योंकि हम ही लोगोंके समान साधारण मनुष्य हैं ।”

विप्रदासने कहा—“नहीं । सबको पूछ देखो, वे सब एक स्वस्ते गवाही देंगे कि तुम्हारा अनुमान अशुद्ध है, अमान्य है ।”

बन्दनाने कहा—“अबकी बार उनही लोगोंके पास ले जाकर आपके इस सिंह-धर्मको दानों हाथोंसे पाड़-फूड़कर भङ्ग कर दूंगी । तब असल मूर्ति उन लोगोंको हीरा पड़गी,—उनअब भव दूर हो जायगा । फिर वे मुझे आशीर्वाद देते हुए कहेंगे—तुम राज-रानी होभा ।”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—“आशीर्वादमें मुझे कोई आगति नहीं, बहों-तक कि मैं खुर भी देनेको तैयार हूँ, मगर आशीर्वाद तो तुम स्वयं चाहती नहीं, कह देती हो—कुसत्कार है यह, ठिक बालकी बात है, रुढ़ि है ।”

बन्दनाने फिर उगल्यै उठाकर कहा—“फिर पुटकी घेनेको कोशिश ? कौन करता है कि बड़ीका आशीर्वाद हम नहीं चाहती—किसने कहा है यह कुसत्कार है ? लेकिन अब सचमुच गुला आ रहा है मुम्बई महाराष्ट्र ।”

विप्रदासने गम्भीर होकर कहा—“सचमुच ही गुला आ रहा है क्या ? तो रहने दो इन गड़पड़ीकी बातोंका । पर वह तो बताओ कि—अपानक सबर ही कैसे आनिमाव हुआ ? कार काम है क्या मुसते ?”

बन्दनाने कहा—“बहुत । परना काम है आपसे जेदियत तक करना ।

बनो आपने किना मेरी इजाजतके नीचे आकर काम शुरू किया ?”

“किया नहीं अभी, करनेका संकल्प-मग्न कर रहा था। ये रहा काम।”
—करते हुए विप्रवासने मोदी बहीको अलग करवा दिया।

बन्दानाने प्रसन्न होकर कहा— ‘डेफियत Salt factory (सन्तोष बनक) है; अभावपता (आश्रय न मानना) मग्न की गई। मरिच्यमे इत्थी तरह अनुगामी बने रहनेसे मेरा काम बल आपणा। अब सुनिए मज बग्यकर—उस तक इनके साथ बैठके गपचप कीजिए—मुखजिपोक वैभर्नका विवरण, प्रजा शासनकी अनेक रोमांचकारी कहानियाँ—जो सुधी आने। मैं ऊपर आ रही हूँ, अनु-दीदीको लेकर सब वैचारिक करने। कम खेरेकी गाड़ीसे हम लोग बक्यम-पुर रहाना होंगे, दिन ही-दिनमें पहुँच जायेंगे, ठंड कमनेका डर नहीं रहेगा। मिस्टर आउट्रीकी इच्छा है कि वे भी साथ चलें—बड़ परका बड़ दगाका याग यह किचा-कचप और दीकता सुम्बता आदि कमी आँसोंसे देला-बेला नहीं—और हलते भी कहेंगे—”

विप्रवासने पूछा— ‘तुम्हें कब अक्स ही बहुत देला होया—”

बन्दानाने कहा— ‘यह प्रश्न सम्पूर्णतः अस्पष्टिक और मह-बचिकी सीमाके अधिगत है। इन्होंने नहीं देला, यह बात हो रही थी। मुँ ए, इन्हीं अनुपति से दी गई है कि साथ चल सकते हैं। इससे इतन से कुछ हुए हैं कि उसके बाद मुझे बम्बरतक पहुँचा आनेका रास्ती हो गये हैं।”

विप्रवासने बेहद अस्वन्त गम्भीर बनाकर कहा— ‘कहती क्या हो ? इतना प्यादा त्याग-स्वीकार हमारे सम्बन्धमें नहीं देलनेमें आठा, यह किच तुम्हारे ही नहीं पाया था सचठा है। मुनकर आपबर्न हो रहा है।”

बन्दानाने कहा— ‘आपबर्नकी बात ही है। आप-तर भी है और सोझों आने ईर्ष्या भी है।” —कहके वह अपनी निगाहोंसे विकम्पीकी एक सलक पारों और विलेरी की दूर ऊपर आ रही थी कि विप्रवासने झककर कहा— ‘वह तो ‘क्यामामा’के ठठ कुसेकी-ली कहानी है जो मूलीपर परप दे रहा था। न तो लुर ग्याता था और न लौंको ही यकैते मुँह मरने देता था। आदमी धीने बेदे, कताओ मन्ना !’

बन्दाना दरवाजेक पास टिचके लड़ी हो गई और कृत्रिम रोपते मीहं विप्रवासकी बोली— ‘विप्रवास इमारे जैसे धाधारण आदमी हैं आप,—अप भी

घर नहीं। लोग व्यर्थ ही डर कर मरते हैं।”

‘तुम जाकर भवकी उनका डर दूर कर माना।’

“हसीते तो आ रही हूँ। और, भूयंक साय उपमा देनेकी बुद्धिदिका बदला छेके छोड़गी”—इतना कहकर वह बीत कटाघके साय फिर विजयी-सी बरताती हुई तेजासे अदख हो गई।

×

×

×

विप्रदासने कहा—“मिस्टर—”

अधोक्ष्णने विनयके साय बाधा देते हुए कहा—“नहीं नहीं, सो नहीं होगा। इसे निकाल देनेमें खेर बाधा न हो, इतीकिए तो पोती-बादर और पही पहनके माना हू विप्रदास बाबू। और बन्दना दधीने भी भरोसा दिया है कि—”

विप्रदासने मन-ही-मन कुछ होकर कहा—“अच्छ ही हुआ अशोक बाबू, लम्बोक्ष्ण कर आसान हो गया। गैबर्-गोबका आदमी उदय, न तो बाह ही रहता है और न अम्बाल ही है। अब आम्बालीक साय बातकीत कम्य सकूंगा। जैसा कि मुना, आप हमारे गौब ज्यना चाहते हैं, लपमुच ही अगर कार्य तो मैं हूतार्य होऊंगा। हमारे परकी बड़ी-बूढ़ी स्वामिनी मेरी मां हैं, उनकी तरफसे मैं आपको सादर निमन्त्रण देता हूँ।”

विप्रदासक विनय-बचनस अशोक पुनश्चित्त हो उठा, बोला—“अब आऊंगा। अस्तर आऊंगा। चितने शक्ति अनाय आनुर आयेगे निमन्त्रित होकर, चितने अस्पापक-पण्डित उपस्थित होंगे विदार सेने—आनन्द उत्तव, लाना-पाना, खाना-खाना, चितना विचित्र आयोजन—”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—“वह लप बदार् हुर्न बाते हैं अशोक बाबू, बन्दना लित्त मयाक कर रही है।”

“मयाक करनेसे उन्हें घानहा क्या विप्रदास बाबू ?”

“एक जायता है मुसे शरमिन्दा करना। बलरामपुरके मुन्बजी-पयनेसे वह मन-ही-मन नापुण्य है। दूसरा नाम है अशोक वह कितो बहानेसे बम्बर पसीट छे खाना चाहती है।”

अशोकने कहा—“अकरत पइनेत्त बम्बरित्तक मुसे ताब खाना होगा, वह बात तो हुर्न है पर मुन्बजी-पयनेसे ये नाकुण्ड हैं, आप लोयेको शरमिन्दा करना चाहती है—वह नही तो लक्या। कलठक बलरामपुर जानेका लप नहीं हुआ

उनकी निजी प्रसन्नताकी अपेक्षा मुझे बहुत ज्यादा जरूरत है आपकी प्रसन्नता की। वह जिस दिन मिस्र जावगी उस दिन मेरे लिए न मिस्रनेवाला कुछ न रह जायगा।”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—‘मेरी प्रसन्न हस्ति वह परीक्षा निर्वाचन करेगी,—यह अद्भुत इरादा आपको किसने दिया ?—बन्दनाने खुद ! अगर दिया हो तो उतने महाब मजाक किया है, मैं सिर्फ इतना ही आपसे कह सकता हूँ बापोक बाबू।’

“नहीं, मजाक नहीं, वह सच है।”

“किसने कहा !”

बापोक सप-भर चुप रहकर बोला—“वह सब मुँहसे कहनेकी चीज नहीं विप्रदास बाबू। उस दिन मोतीक साथ शगड़क मेरे कमरेमें आई—देखा दे कभी नहीं करती—एक कुर्सी लीथकर बैठ गई और मुसस वाली—‘मुझे बन्दरं पसुंवा देना होगा। मैंने कहा—‘बस तुकम रँ ही तमाँ छेपार हूँ।’ उन्होंने कहा—‘मामी का रही हूँ बन्धनपुर, बस मानेपर आपसे कहूंगी।’ मैंने कहा—‘बहिएगा, पर मोतीको आपसे क्यों हठमूको नाराज कर दिया ? उन लोगोंके पूजा-घाठ, होम-यज्ञ, देवी-देवताओंपर तो बालकम आपका विश्वास नहीं है !’ फिर भी उन्होंने यही कहा—‘विश्वास करने जग तो भी जाऊँ।’ मैंने पूछा—‘देखा कभी करती है ! उन्होंने कहा—‘हउ नहीं करती बापोक बाबू, उन झोयेकी तरह लम्बे विरवासक साथ अगर मैं उन बालको प्रहण कर सकूँ तो कल्प हो जाऊँ। मुम्बई साहबकी बीमारीमें मैंने उनकी सेवा की थी, उनसे किसी दिन मैं विश्वासक बन जाँगी।’ इसके बाद शुरू हो गई आपकी बातें। इतनी सदा भी काह किसीपर करता है, किसीकी शुभ-कामनामें कीर हर बस इतना मान रह सकता है, इसके पहले मैंने इसकी कल्पना भी न की थी। शाली-बी-बालीमें उन्होंने एक दिनकी एक परनाका उल्लेख किया। तब आप बीमार थे, आपकी संभा पूजाकी तैयारी से ही किया करती थी। उस दिन अचैर हो गई थी अन्दी-अन्दी आनेमें पाँचसे थोड़ा थोड़ा शुरू करें कितना ही उन्होंने अपनेको समझाना थाहा कि ऐसी आई बात नहीं, इतने पूज्यमें कीर बापा नहीं आ सकता उतना ही उनका मन समझमते इनकार करने जग कि करी किसी भी रास्ता आपक काममें खुद न हो बाप। इसकए दुचाप बहाकर

फिर आपकी पूजाकी ठैमारियाँ कीं। आपने सेकिन उस दिन नाराज होकर कह दिया था कि 'बन्दना, मुझ अंगर तुम न अंग सको तो अमदा-बीबीसे पूजाकी ठैमारियाँ करवा देना।' याद है आपको विप्रदास बाबू ?"

विप्रदासने फिर हिलाकर कहा—“हे।”

अधोक कहने लगा—“इसी तरह कितने ही दिनोंकी कितनी ही छोटी-छोटी बातें करते-करते उस दिन बहुत रात हो गई, अन्तमें उन्होंने कहा—मौलीने उन बोगोंके कुसंस्कारकी बात कहके चुटकी ली, - मैंने सुद भी एक दिन ऐसा किया था,—पर आज कौन-सा अफ़्सा है और कौन-सा बुद, इसके समझनेमें उच्छन्न हो जाती है। खाने-पीनेका विचार तो कभी किया नहीं, आबन्मका निश्वास है कि इतम शेष नहीं, पर अब किसक-सी जाती है। बुद्धिकी ओरसे कस्य जाती हूँ, बोगोंसे छिपाना चाहती हूँ पर अब कभी मनमें लवाक आता है कि वह सब उद पसन्द नहीं ठमी मन मानो उस तरहसे मुँह पेट बैठता है।”

सुनते-सुनते विप्रदासका चेहरा खीका पड़ गया, उन्होंने अबरवस्ती होनेकी ओछिग करते हुए कहा—“बन्दनाने क्या अब खाने-पीनेमें सुभादूतका विचार करना शुरू कर लिया है ? नर उत दिन तो वह यहाँ आकर हमके साथ रह गई थी कि मौलीके पर आकर उतने अपने समाज और अपनी त्वाभाविक बुद्धिका पुनः प्राप्त कर लिया है और मुन्नी-परिवारकी हवाये तरहकी हृषिमता से सुदकारण पाकर बह ली गई है।”

अधोक आश्चर्यक साथ कुछ कहना ही चाहता था कि इतनेमें बिम उपस्थित हो गया। परदा इयाकर बन्दना बर्ही आ पहुँची। उतने कहा—“मुन्नी सादर, तप कुछ ठीक करके रख जाती हूँ। कल सबरे नो बजेकी गाड़ीसे पसना है। पूजा-ऊजा बाहियात काम सब उतके पहले ही कर लीजिएगा। इतनी निहम्बना मी मगवान्ने आपकी तकदीरमें लिख ली है।”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—“पेता ही हो घायर।”

“घायर मरी, निभय। लोना करती हूँ कस्य कोर आपकी इन सब बातों को मिया तकता। अफ़्सा सुनिए—कल लवरेके स्थिर खाने-पीनेकी व्यवस्था मी कर ली है,—मैं सुद आकर लिख्यऊँगी, फिर कपद बगीर पदनाऊँगी, उसक बाद आपको अपने साथ ले आकर पर पहुँचा दूँगी। कमजोर रागी आदमी उरते, इतीते।—बसिए अधोक बाबू, अब हम लोग यहाँ। पैरोंकी

पूज लेकिन बच न सुँगी मुम्बई साहब,—बढ़ कुंठस्कार है। मज्र समाजमें न चलनेवाला छोटा सिद्धा है।”—इतना कहकर वह ईश की ओर दोनों हाथोंके मधेसे झग्यकर कमरेसे बाहर निकल गई।

X

X

X

२२

बूतरे दिन सबरे ही सब-कोई बरगमपुरके सिध्द रवाना हो गये। वहाँ मकानक 'घघ पहुँचनेपर देला गया कि शिबदासने पाब' राजसूप-बड सरीली धूमधाम कर रही है। सामनेनामे मैदानमें शोषड़ियोंकी कठार लगी है,—कुछ बन चुकी हैं, कुछ बन रही हैं;—इसी बीचमें आहुत और अनाहुतोंके घर भर टठा है और सभी कियने लोग और आर्यगे उसका पता लगाना कठिन है।

विप्रदासको देखते ही मीं चौंक गई, बोलीं—“बढ़ क्या घरीर हो गया है बेदा ! किन्तु आबा रह गया !”

विप्रदासने मींके पाँव सूकर धिरसे हाथ जग्यते हुए कहा—“अब कोई बर नहीं मीं अबकी तन्मुक्ता होनेमें देर न जोगी।”

“पर अब कककठा मैं नहीं ब्याने दूँगी तुसे, कियना मो कयों न हो। अबते मीं अपनी भीलोंके सामने रलूँगी।”

विप्रदास चुप रहकर मुलकरता प्या।

कन्दनाके प्रणाम करनेपर दबामयीने उसे आशीषाद देते हुए कहा—“आओ बेरी, आओ—बोली रहो।”

परन्तु उनक कंडल्वरमे टरताह नहीं था, समझमें आ गया कि वह सिध्द विद्याचार है, उससे प्याबा नहीं। उसे आनेक सिध्द नियमन नहीं दिया गया, वह अपनी इच्छासे आर्य है,—मींको सिद्ध इतना ही म्यत्तम हुआ। उन्होंने मैदरीकी बात छोड़ी। उस इच्छाके गुणोंकी सीमा नहीं, दबामयीको दुःख इत बातका है कि एक मुम्बसे उनकी सूची रखकर शान्तिज करना सम्भव नहीं हो सकता। बोली—“बापने सिध्दावा न हो देला कोर्न सिध्द ही बाकी नहीं। देला कार्य काम नहीं को वह न जानती हो। यहूकी तनीपत भी अच्छी नहीं पक रही है—इसीसे उत व्येज्यीने ही म्यनो साय भार धिरपर क्यद किया है। भाग्यते

उसे बुझ लिया था, नहीं तो क्या होता, चोखते मी डर लगता है।”

विप्रदासने आश्चर्य प्रकट करत हुए कहा—“कहती क्या हो मी !”

दयामयीने कहा—“सच्ची बात है वेदा। सड़काका काम फन्ना देलकर माख्म होता है कि ठेरे बाप जो बोस मेरे ऊपर छोड़कर चले गये हैं उसके स्थिर रूप कोई ठिकरको बात नहीं रह गई। बहूको ऐसी देखरानी मिल जाय तो बहू धारा मार मझमें ठडा सकेगी, कहीं मां काई खोर कर नही रहेगी। इस साल तो अब हो न सकेगा अर बोतो रही तो अगले साल निश्चित होकर कैलास-दहनको आ सकूगी।”

विप्रदास बुज रहे। दयामयीकी बात संभव है कि सड न हो, हो सकता है कि मैत्रेयो ऐसी ही प्रणसाके पाम्य हो, किन्तु फिर मो पशोयानकी एक सीमा होती है, स्थान-काल भी देखा जाता है। उनका रूप पाई कुछ मो हो, पर ठण्डन मी लिया न रहा। एक तरफकी अकल्प अचरिण्य दुखवाने उनकी सुपरिषित मवादाको मानो लक्षित कर दिया। उरुधा सड़कक मुँहकी ओर देलकर दयामयो अपना इस मूकको वा समस गई, पर जैसे इसका प्रतिकार किया जाय,—यह उनकी समझमें न आया। दिव्यास कामकी भीड़में अन्यथ स्थिर हुआ था, लवर पाते हो वहाँ आ पहुँचा।

विप्रदासने कहा—“बहुत मारी काम सेइ दिया है टने, सँगायेगा कैसे !”

विप्रदासने कहा—“मार ता आपने खुद अपने ऊपर नहीं किया मारै साहय, मुसर दिया है। आपको क्या डर है !”

बन्दाने इसका जबाब दिया, कहा—“इन्हें तो इस बातकी चिन्ता है कि एतर्बका तमाम रुपया अगर प्रयासे बचक न हुआ तो मूल-धनमें हाथ लगाता पदथा। क्या बह डरको बात नहीं दिखू बाबू !”

सबके सब इस पड़, आर इत ईलीके मीठरसे मौका मनामार माना कुछ पद गया, उन्दाने प्रसन्न मुग्धने कृपेम रोपक स्वरमें कहा—“इस परधान करनमें तुम भी क्या ठीक अपनी बहन जैसी हो गई बन्दाना ! बिस्मि मेरा परम धार्मिक सड़का है, सब मिलक हउमून्की पुरकिपी लिया करती हो, ता मुझसे नहीं लडा जाता।”

बन्दाने कहा—“हउमून्की पुरकिपी लरका नहीं करतीं मय, उनसे नाराज भी न होना चाहिए।”

माने कहा—“नाराज तो वह होता ही नहीं, हँस देता है।”

बन्धनाने कहा—“इसकी मी एक बच्चा है मों। मुलकी चाहप आनते हैं के पेट पड़े तो पीठकी सह खी खाती है, नाराज-नाराज इना मूलता है। टीक न मुलकी लाहव।”

विप्रवासने हँसते हुए कहा—“क्यों नहीं। मूलकी बातपर नाराज होना निन्द्य है, शास्त्रोंमें उसकी मन्व भ्यवरण है।”

बन्धनाने कहा—“जीजी लेकिन मुससे भी ज्यादा मूल हैं मुलकी चाहप। प्रबन्ध आपके धाड़की इती भयलताक कारण सब आपकी इतनी मर्ख करते हैं।”—इतना कहकर उसने हँसते हुए मुँह खेर लिया। द्विक्रमात ऐसी बातनेके रूप बूली मोर देखने कम्य और वकामपो बुर ही हल दी, खेबी—“बन्धना इती मुस बड़की है, इसके लाव बालोंमें कोई नहीं जीत सकता।”

कुछ देर खरकर अरु गम्भीर होकर फिर कहने लगी—“मगर देखो बेटी, मूलकीक कम्यनेमें प्रबन्धपर ऐला कठोर न इता हो ला मैं नहीं खरती, पर तुमसे खे मैं कह चुकी हूँ कि विभिन्न मेष परम बायिक बड़का है—जो मन्वाय है, अस्तपर उसका बन्धाय इक नहीं, उसे वह किली भी हाकलमें नहीं ले सकता। मर डर है मुझे इतने वह ले सकता है।”

विप्रवासने प्रतिकार करत हुए कहा—“वह तुम्हारी बेजा बात है मों। इतद् प्रजाको बड़ दंग। प्रजाका पक्ष लेकर उसन हमारे ही विरुद्ध एक बार उन खोलीको व्यस्ममुखरी देनेकी मन्वाही कर दी मौ ला क्या तुम्हें बाव नहीं।”

माने कहा—“बाव है, इतोन्विय तो कह रही हूँ। जो मन्वायका कर्म देनेकी मन्वाही कर सकता है, वह मन्वायका बन्धन भी कर सकता है विभिन्न, बूलीय नहीं कर सकता। इया-मन्वा इतके है—और कुछ मन्वा हो है, यह मैं मानती हूँ—मगर फिर भी तू बेपेगा किली दिन कि उलीक हापसे प्रजा मन्वाया मुस्य प रही है।”

“नहीं मों, नहीं पावेगी, रोज बेगा।”

बन्धनाने कहा—“मरोलेकी बात ठिप इतनी ही है कि तू है। नहीं तो उतके लिए किसी पेटेकी बकरत है जो उसे टीक घस्तेपर लडा से का लके। यही ला वह किली दिन बुर भी बूलेगा और बूलीको भी कुशवेगा।”

द्विक्रमात अचटक हुए पा, अरु उसने बात खी, बाबा—“तुम्हारी

व्यक्तिरी बात ठीक नहीं हुई मों । खुद हूँगा, यह बात शायद किसी दिन सब हो सकती है, पर दूसरीकी न हुआईगा, इतना तुम निश्चय जान को ।”

मौने कहा—“तुम्हारे एक भी सुनकी बात नहीं दिख, एक भी आनन्दकी बात नहीं । असलमें तुझे ख्यानेवाला कोई-न-कोई होना ही चाहिए ।”

द्विज्वासने कहा—“यही बात ताफ-ताफ करी भिखते सबकी चिन्ता दूर हो । मुझ ख्यानेवाला कोई एक चाहिए ही, सा ठीक है, पर रसका बुयाइ मी तो तुम लगमग कर चुकी हो ।”

माने कहा—“भयर सचमुच ही कर चुकी होई तो तू अपना भाग्य समझ ।”

तर्क-वितर्कका मूल तात्पर्य अब उनके सामने स्पष्ट-सा हो पड़ा ।

मा कहने लगी—“इतना बड़ा जो फायदा कर आता है, किसीकी बात मुनी ! कह दिया—आद-साहबका हुकम है । पर भाइ-साहबने क्या यह कह दिया या कि अश्वमेध-यज्ञ कर आता ! अब संभालेगा कौन इसे, क्या ! मास्से मैनेही क्या गइ है, उसीका थोड़ा-बहुत भरोसा है ।”

द्विज्वासने कहा—“काम पहले पूरा हो जाने दो मों, उसके बाद बिजे धारो सन्द किलफि दे देना, मैं जय भी आपसि न करूँगा अभीते उसकी कम्ती क्या है ।”

बन्दनाने पूछा—“तब छन्दपर दस्तखत कौन करेगा द्विज्वास, तृतीय-पुरुष तो नहीं !”

द्विज्वासने कहा—“नहीं, तृतीय पुरुषको क्या मजबूत है ! आजकल महा पराक्रान्त प्रथम और द्वितीय पुरुष क्योँक स्त्री को विद्यमान हैं ।”—करते-करते दोनों ईत पड़े ।

विमर्शास और उसकी मों परस्पर एक-दूसरेका मुँद देखने लगे, उनकी कुछ समझमें न आया ।

इतनेमें अमरदान आकर कहा—“जीसी-बार, बने बापूजी दवापें कल जिलमें सेभालकर रानी थी वह कामबड़ा बचन तो नहीं मिल रहा है,—तो-ता तो नहीं गया ।”

बन्दनाने कहा—“नहीं, गोया नहीं, कलकत्तेके मकानमें ही रह गया है ।”

द्विज्वासनी डर-सी गई, बोली—“अब क्या होगा बन्दन, बड़ी मारी

हो गई वह तो !”

बन्दाने कहा— ‘गस्ती नहीं हुए मों, भाते बह उसे बान-बूतकर ही छोड़ आर हैं ।”

“बान-बूतकर छोड़ आरें ! इसके मानी !”
 ‘तोबा कि बहुत वी चुके हैं, अब रहने दो । तब मों पाठ नहीं वी हसीसे दबाभीकी बकरत पड़ी वी, अब बीर दबाके ही बच्चे हो जायेंगे, अब भी डेर न जनेगी ।”

उसके ये शब्द दयामयीको बहुत ही बच्चे जने फिर भी उन्होंने कहा—
 “लेकिन बच्चा नहीं किया बेरी, गैबर-गौब उरए यह, डाक्टर-बैच कैसे यहाँ मित्रते नहीं, बकरत पड़ गई तो—”

भद्रवा बीचहीमें बोळ उठी— ‘अब बकरत नहीं पड़ेगी मों । पड़ती तो ये उन्हें हरिज न छोड़ जाती । बन्दना-बीबी डाक्टर-बैचसे भी ब्यावा बानती है ।”

दयामयी प्रशंसापूर्वक दृष्टिसे पुरबाप बन्दनाकी ओर देखती रही । बन्दाने कहा— “भद्रवा-बीबीका बवा-बवाका करनेका स्वभाव है मों, नहीं तो हर जलम में कुछ नहीं बानती । जो कुछ बोबा-जा पीला है, तो मुलजी साहबकी सेवा करते हुए ।”

भद्रवाने कहा— “वह कैसी तोबा भी मों तो फिर मैं ही बानती हूँ । भवानक एक दिन मैं ऐसी भावतमें पड़ गई कि कुछ कहनेकी नहीं । परपर कोरं या नहीं,—बाबूकी बीमापीका तार पाकर दिख तो बस माया बर्रा, बसबी बसे गये वे टाका, बिम्बिणको बड़ा तुम्हार । छुटक हो दिन तो किसी तरह कर गये, डाक्टर तुम्हारे, उन ब्योगीने दबा री, पर डर दिख गये पौतुना । मैं मूल भोरतकी बात क्या करूँ कुछ समझमें ही न आबा । तुम ब्योगीको भी खबर नहीं है सफली वी, बिम्बिने कर दिया मना,—भाबुक-क्याकुल डाक्टर रोड़ी यह बन्दना-बीबीके पाठ इनकी मौसीक घर । रोकर कहा—बीबी-भारं, नागजी टाङ्को, पसो मेरे साथ । तुम्हारे मुलजी साहब बहुत बीमार हैं । ये कैसे बेटे वी कैसे ही ठठक पसी आरें हमारे यहाँ, मासीसे कहन-मुननेका भी बह न मिला हूँ । पर भाकर बिम्बिणका साथ मार हरोने उठा लिबा । दिन रातमें एक संघा मी उन दिनों ये भायम नहीं कर लकी । तिक दबा लिपना ही तो नहीं था,—सधेरे सव्या-बूबाकी टैबापीठ सेकर रातकी

मगहरी डाककर मुला आनेतक बो-कुठ काम या, एव ये ही करती थीं। अब ये अगर दबा नहीं देना चाहती माँ, तो रहने दो, बिपिन ऐसे ही अम्भ-पगवा हो उठेगा।”

विप्रदासने उसी बख इस बातका समयन करते हुए गंभीरतापूर्वक कहा—
“सबमुच स्वल्प हो उठूँगा माँ, तुम लोग अब बन्दनाके काममें बाधा न डालो, इसके सुशुद्धि हो और मुझे दबा पिछाना बन्द कर दे। मैं मन-बचन-कायते आशीर्वाद बूगा—बन्दना राज-रानी होवे।”

दयामयी चुपचाप देखती रही। उनकी दोनों आँसोंसे मानो स्नेह और ममता छटकी पड़ती थी।

एक मगहरीने आकर कहा—“माँ, बहुरानी पूछ रहा है, कककसेसे वो बमी चीज-बस्त आई है वह किस कमरमें रखी जायगी।”

दयामयीके बवाब देनके पछे ही बन्दना बोळ उठी—“माँ, मैं आपकी म्हेच्छ-कड़की हूँ या क्या आपक इतने बड़े-काममेंसे मुझ कोर मी मार नहीं मिसेगा, किर्क चुपचाप बैठी रहूगी। ऐसी मी तो बहुत-सी थीं हैं जिनक छूने छनेसे कुछ बनव्य-बिगड़ता नहो।”

दयामयीने हाथ पकड़क ठसे बिलकुल छातीसे ढग्य किया, और ओपकठे पावियाका एक गुच्छा लोळकर उसक हाथम धरये हुए कहा—“चुपचाप तुम्हें बैठी रहने क्यों दूँगी बेटी। यह ही तुम्हें अपने मगहारकी आशी किसे सिखा बहूके मैं और किसीको नही दे सकती। आजकल इतका धर तुम्हीपर रहा।”

“नया है माँ, इत मगशरमें।”

आशियोंका यह गुच्छा आसन्न परिधित है। विप्रदासने तिरछी आँसोंसे ठसे देखते हुए कहा—“य कुठ है तब तुभाएतकी हदके बाहरकी चीजें हैं—सामा-बाँदी, रुपये-देते, रेशमी कपड़,—किर्क बड़-बड़ धार्मिक ध्याक भी तिरार आदनमें आपत्ति नहीं करगे—तुम्हारे छू देनेपर मी।”

बन्दनान पूछा—“क्या करना होग्य माँ मुझ।”

दयामयी करने लगी—“अप्यापक-पण्डितोंको बिदाई, अतिथि-अम्भगतोंकी सम्मान-रक्षा, आत्मीय-स्वजन्यक लक्ष्यका इन्तज्याम, धर साय-साय इस कड़केपर कथ कड़ा घासन—यही काम है।”
उभोंने विप्रदासकी तरफ इशारा किया धर फिर कहा—“मैं

समझती इससे मुझे ठग-ठगकर यह इतना रुपया फञ्च लूना है कि
 कितनी हद नहीं बेची। इस फञ्च-लूनीका तुम्हें बन्द करना पड़ेगा।”
 दिव्यदासने कहा—“माई साहबके सामने तुम देखो बातें मत करो माँ।
 नहीं तो वे सब ही मान लेंगे। लूनाके लालसे माकाबहा लूनाका हिसाब
 क्यामपीने कहा—“मिन्ना क्या रल्लू! लूनाका हिसाब लिखा था रहा है
 तो तो मानती हूँ, पर फञ्च-लूनाका हिसाब कौन लिख रहा है तो बता! मैं
 पही बात बन्दनासे कह रही थी।”
 बन्दाने कहा—“मैं जानकर ही क्या करूँगी माँ! उनके रुपये, वे ही
 लूनाकरे तो मैं कैसे रोक सकती हूँ!”
 क्यामपीने कहा—“तो मैं नहीं जानती। तुमन मार सेना खाहा था, मैं
 र देख निश्चिन्त हुए। पर एक बात करती हूँ बन्दना तुम्हें भी कितने-न
 वही दिन पर-परलकी इरनी पड़ेगी, तब अगर फञ्च-लूना क्यानेको बुझेबारी
 इमारे हाथ आ पड़ी तो फिर नाही करनेसे सुनकारा नहीं मिसेग।”
 बन्दाने दिव्यदासकी तरफ देखकर कहा—“तुन श्रिया न माका हुकम।”
 दिव्यदासने कहा—‘तुना बसो नहीं। पर माई साहबने मुझ दिया है लूना
 करनेका मार, और मीने तुम्हें दिया है लूना न करनेका मार। किहा-आ लूना
 मुद हागा ही, तब मुझे दोप देनेसे काम न चलेगा।’
 बन्दाने फिर दिव्यदास और मुतकरते हुए कहा—“दोप देनेकी जगह न
 पड़ेगी दिव्यदास, सगड़ा हम लोयोंमें नही होनेका। व्यापक हो रुपयोंक बारेमें
 आपकी-स माक-प्यारद (नकली सड़ाह) हुक करनेका बलपन मेरा पद्व गया
 है। वंगलकी माकर यह विधा मुझे मिला बुझी है। सगड़ा होनेके पहले माँका
 दिया हुआ मार मोक हाथ ही लौकर रिकतक जाऊँगी।”
 क्यामपी ठीक न समझ सकनेपर भी समझ गई कि वह अभिमान खाया
 कि है। व्यपित कंठसे फरने लगी—“मार मैं बापस नहीं सेनेकी बसो, तुम्हीको
 होना पड़ेगा। पर अब यहाँ नहीं, मीतर बसो; तुम्हारा काम तुम्हें समझ
 हूँ।”—इतना कहकर वे उठे हाथ पकड़कर मीतर से गई।
 उन दिन बन्दना इस परसे कुछ पद्व ही रही थी। क्यां क्या है, देलने-
 माकनेका माका नहीं मिला था। माक उठन देला कि मकानक मीतर लपटके

बाह्य रूप आते-जाते हैं कोई अन्त ही नहीं। आभित आत्मीय ऊर्जा की संख्या भी कम नहीं; यह बेटियों और नाती-पोतोंको लेकर प्रत्येककी अलग अलग एकत्री है। बाहरकी तरफ है कचहरी और उसने सम्बन्धित सब तरफकी व्यवस्था परन्तु भीतरकी तरफ इस दिस्तिमें है टाकुरछारा, रखेरपर, दशामयीकी वेष्टक गौ घाटा, ऊँची चहारदीवायेबामा बगीचा और उसके बीच वास्तव। दुर्माँकेकी पूरबकी तरफक कमरे दशामयीक हैं, उन्हींमेंसे एकके सामने से आकर उन्होंने कन्दनासे कहा—“बेटी, यह कमरा तुम्हारा है, इसका सारा मार तुम्हारा छोड़ती हूँ।”

उपरक बरामदेमें पैठी सती और मैत्रेयी कुछ बीजे यह ध्यानसे देख-गाम रही थी, दशामयीकी आवाज सुनकर हजर दंग उठी, और कन्दनाको देखते ही दोनों काम छोड़कर उसके पास आकर लड़ी हो गई। कन्दना सबकुछ ही मायेगी, यह आशा किसीको न थी। सतीके पाँच छूकर कन्दनाने मैत्रेयीको नमस्कार किया। मौन कहा—“मेरी यह स्पेष्ठ कड़की भी किसी कामका भार सेना चारही है यह, बुज्याप पैठी रहनेस नायज है। तुम लगाको बहुत सा काम द रगा है, इसे हठी हूँ मैं अपने भण्डारकी चाची।”

मैत्रेयीने पूछा—“ग डारम क्या है माँ ?”

मौन कहा—“इसम ऐसी चीजे हैं जिनमें स्पेष्ठ कड़कीच एतेपर भी छूठ नहीं आती।”—इतना कहकर दशामयीने कौतुककी हँसी हँसकर कम्पा लाव्य और उसके भीतर जा लड़ी हुई। ऊमीनपर बहुतस चीनीक पाक रले हुए थे—शासन-यण्डियोंको विदाईमें देनक स्पे। एक जगद कलकसेते घुनाकर मंगाये हुए रुपये भार अठ्ठभ्रियौषा हर क्या हुआ था। कीमती रेशमी बस्त्रदि अभीतक खोच लों बंधे पड़े हैं—लोरपर कन्दनका सबकास ही नही मिया। इसक अलावा दशामयीकी अपनी आलमायी और सन्दूक भी इती कम्पेस है। हायस लज दिनाते हुए उन्होंने हँसकर कहा—‘कन्दना, इनमें मेरा क्या-सबल है; आर इनपर झिन्का सबसे ज्यादा काम है। यहाँ तुम्हें सबसे ज्यादा पहा देना होगा बेटी।’

कन्दनाक मुँहकी तरफ देखकर लतीने कहा—“इतने बड़े कामका भार क्या दसस लता आ लरहा है माँ ? बहुत ब्यादा रुपये-पैठका मज्जा है”—उसकी बात पूरी भी न हो पाई कि दशामयी करन लधि—“बहुत ब्यादा

पैसेका मामला होनेसे ही तो इतके हाथमें पायी लौपी है यह। नहीं तो फिर मुझ दिवाळिया कर देगा।”

“पर यह तो बाइरसे आर है मों।”
 लठीकी यह बात मी पूरी न हो पाइ और वयाम्मी ईसली दुर्ग बोली—

“बाइरने तो किसी दिन तुम मी आर यों यह, और उसके मी बहुत पहले इसी तरह मुझ मी बाइरने ही आना पड़ा था। यह कोई उल्ल नहीं है। पर अब मेरे पास बच नहीं है, मैं बाली हूँ।” — “तुना कहकर ये कम्मेसे निकलकर नीचे बसी गई।

बन्दनाने कहा— “तुम्हारे बरमें आकर यह कैसे ब्याजमें कैस गई बीबी। मुझे तो अब लौस सेनेका भी बच न मिलेगा।”

“मावूम तो पेसा ही पड़ता है।” — कहकर लठी फिर गए हुए सी।

×

२३

संगरमें विपत्ति कहैते और किल रात्तेसे आकर कब अपना स्वरूप दिखायी है, इतका लबाब करनेसे आश्चर्यमें पड़ना पड़ता है। काम-काजके बीचमें कम्पाबिलि आकर राते हुए कहा— “मों ये कर रहे हैं कि उनके साथ मुझे अभी दुरन्त घर चबना पड़ेगा। माहीका अभी बच नहीं हुआ, — स्वेथानपर आकर कैते रँते तो अच्छा, — पर इत बरम अब एक बल मी नहीं रहना पाइत।”

साभाबकी प्रतीत्यकी याचीय किया अभी-अभी समाप्त हुए है और अभी दुरत ही वयाम्मीने मन्वसे आकर परमे पैर रहला है। कबरदला म्पलतामें बड़कीकी बात मुनके वे ठिठककर लड़ी हो गई, उसकी बात कण्ठी तरह समझ न लकी इतकुदि ली होकर बोली— “कोन कर रहा है तुम्हें ब्यानेके विष, — छापपर ! क्यों म्मा !”

“बड़-भरपाने उनका बड़ा-मारी अपमान किया है — परसे निकाळ दिया है।” — कहकर कम्पाकी उपनते हुए आबेगते ये पड़ी।
 बायीं तरफ मी पुरुषेकी मीड़ है, — कहीं ल्पाने-पैनेकी ठियारिकों हो रही हैं तो कहीं गाने-बजानेका आवाजन, कहीं मिन्तारिकोंका परस्पर विलखाबाव हो

रहा है तो कहीं ब्राह्मण-परिवर्तोंका शास्त्रार्थ—भगवन्ति जोगीका अग्रिमेष कोला
रक हो रहा है, उसीके बीच अकरमात् यह उपद्रव उठ खड़ा हुआ ।

सती और मैत्रेयी भी आ पहुँचीं, बन्दना भण्डारके दरवाजेमें ताका लगाकर
पाठ आ लड़ी हु, नाते-रिपतेदारोंमें भी बहुतने स्त्री पुरुष कुतूहली हो उठे ।
छापरने आकर प्रणाम करते हुए कहा—“माँ, इम लोग पल गिये । आनेके
लिए आजा भी थी मो आ गये थे, पर टिक नहीं सक ।”

“क्यों बेदा ?”

“विप्रदास बाबून अपने कमरेमेंसे मुस निकाल दिया है ।”

“इतकी बज्र !”

“बज्र शायद यही होगी कि ये बड़े आदमी हैं । मरे अर्हकारके आँस
कानसे कुछ दिल्दार-सुनाइ नहीं देता । सोचा होगा कि अपने पर बुलाकर
अपमान करना आसान है । लेकिन अपने रुइकको बरा समझा दीजिएगा, मेरे
बाप भी बमीवारी छोड़ गये हैं और बह निदायत छोटी म्य नहीं है । मुस भी
मौस मौसकर गुजर नहीं करनी पड़ती ।”

बयाम्पी म्याकुल होकर बोली—“बिर्मनको बुलाती हूँ बय, क्या हुआ
है तो पूछती हूँ । मेरा काम अभी पूरा नहीं हुआ है । ब्राह्मण मोहन बाकी है,
पेणक-मिहामुओंकी विदा भी अभी नहीं हुई है । उसक परसे ही अगर तुम लोग
नाराज होकर पसे जाओगे छापर, तो किस खानाबकी अभी प्रतिश्र हुर है
मैं उलीमें हूइ मर्गी, यह तुम लोग निश्चय समझ लेना ।” कहते-कहते उनकी
आँसोंमें भीतर भर आये ।

आसक आँसुओंका विशेष कोरे पल म हुआ । मद्र-सन्तान होनेस भी
छापरकी आर्हत और प्रर्हत दोनोंमेंसे कोर मद्रोचित नहीं है । उनके पाठ
आकर लठके लड़ होनेमें मन संतुचित हो उठता है । उसका विपुल शरीर और
विपुलतर मुल-मद्रल मुद्रविशारकी तरह पूरन जगा, बोला—“रह सकता हूँ,
अगर विप्रदास पाहू यहाँ आकर लठके सामने हाथ जोड़कर मुसम माने माँग ।
मही तो नहीं ।”

उसका वह प्रस्ताव इतना अधिक अचिन्त और असम्भव था कि
मुनकर लव आश्चर्यत रंग रह गये । विप्रदास मापी माँगता हाथ जोड़के । अ
सके सामने । कुछ देरतक ठमी सुन रह सरला आसकसे कई

बिनवके साथ खी बोझ उठी— 'ननदाहरी, अभी ठहरो। काम-काज सब निबट करने दो रातको मौ बरकर रहका पैलखा कर वगी। दुष्प्राय अपमान क्या कमी किया जा सकटा है? अन्याय किया होगा तो ये बरकर माप्री मौग होंगे।'

बन्दनाकी ओल्लोकी कोरें बरा सुखित हो उनी, किन्तु उसने घाण्ट खरमें ही कहा— 'ये अन्याय तो कभी करते नहीं बीबी।'

खीने डोंट किया कहा— 'तू दुप रह बन्दना। अन्याय समी करते है।'

बन्दनाने कहा— 'नहीं, ये नहीं करते।'

मुनकर मैथेयी मानो अह-भुन उठी, उसने तीखतरते कहा— 'कैसे बाना भापने! बहाँ तो आप थीं नहीं। ये क्या बानाके कह रहे हैं।'

बन्दनाने झल-भर टककी तरफ देखा, फिर कहा— 'बानाके कहनेकी बात में नहीं कर रही। मैंने सिर्फ यही कहा है कि मुलकी छारब अन्याय नहीं करते।'

मैथेयीने इतने उचरमें कैसे ही बर-भयंमके साथ कहा— 'अन्याय समी करते है। कोई म्माधान नहीं है। अठम्यान करनेमे तो उन्हीने मेरे पिताकी भी नहीं छोड़ा।'

बन्दनाने कहा— 'तब तो फिर छपार बाबूकी तरफ उन्हीं सी बला बाना बाहिय था, रहना नहीं बाहिय था।'

मैथेयीने तीख-खरमें ब्याव किया— 'एकी कैदियत आपको नहीं देनी है इसका पैलखा होगा बिबू बाबूके साथ आ निमत्रण हैकर कामे है।'

खीने खेपके लाब तिरकर करते हुए कहा— 'धरे पैरी पड़ती हूँ बन्दना, तू था यहाँते, आपने काममें क्या।'

छपारने बयामतीका बरस करक कहा— 'लेकिन मैं ग्याव-अन्यायका पैलखा-कराने नहीं आया थी, आया हूँ यह बानाके लिए कि आपक बड़क हाब बाइकर मुसते माप्री मैथेयी का नहीं! नहीं तो मैं क्या—एक मिनट भी नहीं रह कटा। आपकी बरकी बन्दना बादे तो मेरे साथ पक सकती है, न बाना बादे तो न छरी, अगर टकक याद फिर छमुपकका नाम बवानपर न बाने।

परीस, आज ही, तब प्रथम कर बैना है।'

पर कैली बबनापकी बात है। छपारके लिए कुछ अरंभ नहीं है,—

लड़की ज़मार्को पर बुलाकर यह कैसी भीख विपत्ति मोक्ष से ली। सामने लड़ी-लड़ी कसबाणी रोती ही रही। सबाह देनेवाला कोई नहीं, सोचनेका भी बख नहीं। प्रातः, सबा और गहरे अपमानसे दयामयीकी कतम्ब-मुद्रिपर परवा-सा पड़ गया। वे कुछ सोच न सकी और डरती हुई बोली—“तुम क्या उदरो बेठा, मैं विपिनको बुलाती हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि तुमसे कहीं-न-कहीं कोई खबर दस्त मूक हो गई है; पर इन सब पर भरोसा आगोंके बीच यह कलक प्रकट हो जानेसे मुझे आत्महत्या करके मर जाना पड़ेगा बेठा।”

शशधरने कहा—“मैं लड़ा हूँ, मुझसे उठें। विप्रवास बाबू खूब ही कह दें कि यह काम उन्होंने नहीं किया।”

“खूब कह योकरता नहीं शशधर।”—इतना कहकर दयामयीने विप्रवासको बुलवा भेजा। कोई पाँच मिनट बाद विप्रवास आके लड़ हो गये। बैस ही घान्त गम्भीर और आत्म-निमग्न। सिरिं आँसुओंम एक तरहकी उदास झान्तिकी छाया सज्जक रही है,—पर उसका पीछे कौन-सी पात लिपी हुई है यह बताना कठिन है।

दयामयी उफनते हुए आभेगके साथ कह उठी—“तेरे सिद्धांत शशधर क्या बात कह रहा है विपिन? कहता है तैने उसे अपने कमरेमें निकाल दिया है यह क्या कमी सब हो सकता है?”

विप्रवासने कहा—“सच ही तो है माँ।”

“कमरेसे सचमुच ही निकाल दिया है तैने मेरे ज़मार्को! मेरे इस काम-काजक परमेंने!”

“हाँ, सचमुच ही निकाल दिया है। कह दिया है कि आरन्दा फिर कमी मेरे कमरेमें न आवें।”

तुनकर दयामयी बज्राहतकी भोंठि निलम्ब हो गई। कुछ देर बाद यह अभिभूत भाव बूर होनेपर उम्होंने पूछा—“क्यों?”

“उस गुन्गण न तुनना दो भयङ्ग है माँ।”

सनी सिर न रह सनी, स्याकूक होकर बाक उठी—“हम जोग तुनना भी नहीं चाहती, पर ननदार्दीकी कसबाणीसे मकर इसी पक्ष पसे जाना चाहते हैं। इतने आदमिषोंफ बीच, जरा साच देखो कि कितनी खबरदस्त पभीहत होगी,—इनसे क्यो कि तुमसे भवानक भय्याप हो गया है, कहा इन आर्गसे रहनफ लिप।”

विप्रवासने भय-मरके लिए अपनी स्त्रीके मुँहकी ओर देखा, फिर कहा—
“मुझे अमानक अन्धाय नहीं होता सती।”
“होता है, होता है, अमानक अन्धाय लगीसे हो जाता है। कहां न इनसे
खनेको।”

विप्रवासने फिर दिखाते हुए कहा—“नहीं, अन्धाय मुझे नहीं होता।”
पत्नी-स्त्रीकी बातचीतके बीचमें इयामकी स्तरब हुए लक्ष्मी जी, अकस्मात्
किसीने मानो उन्हें सकसोर कर लपेट कर दिया तीव्र कष्टसे कह उठी—

“न्याय-अन्यायकी लकरार रहने दो। अन्धकी-अन्धारी मेरे हमेशाके लिए वीर हो
जावेंगे—वह मुझे नहीं सहा जायगा। हाथबरसे तुम माफ्य माँग ओ विनिय।”
“वह नहीं होगा मैं यह असम्भव है।”

“सम्भव-असम्भव मैं नहीं जानती। माफ्य तुसे माँगनी ही होगी।”
विप्रवास स्थिर होकर लड़े रहे। इयामकीने मन-ही-मन समझ लिया कि इस
असम्भवको अब सम्भव नहीं किया जा सकता। अब तो उनके शोषकी सीमा

न रही, बाकी—“पर तुम्हारा अकेलेका नहीं है विनिय। किसीको निकाक बाहर
करनेका अधिकार तुम्हारे पास नहीं दे गये। मैं लोग इस परते रहूँगे।”
विप्रवासने कहा—“देखो मैं, मुक्त वीर तुम्हारे अगर तुम यह आदेश दे

देती तो मैं खुद ही बना रहता, पर अब नहीं रह सकता। हाथबर खेगा तो मुझे
पर छोड़कर पत्न्य जाना पड़गा। फिर मुझे बापत नहीं तुम्ह लकोगी। कौन-ही
बात पारही हो, बताओ।”

बीचमें ऐसे मयानक प्रश्नका उत्तर देनेके लिए कभी किसीने उन्हें नहीं
पुकारा, न इतनी बड़ी दुर्घटनासे समस्याका सामना करनेको ही कभी किसीने कहा।
एक तरफ लक्ष्मीकी ओर अन्धारी है और दूसरी तरफ लक्ष्मी है उनका विनिय—
भित्तका उन्होंने छापीसे लगाकर इतना बड़ा किया है, जो समस्त आत्मीयोंसे
बड़ा आत्मीय है दुर्लभमें सान्त्वना है, विपत्तिमें आश्रय है—और ओ उनको
प्राप्तसे भी प्यार है। यह समयका उन्हें मृत्यु देखी, किन्तु संकल्पकुल न
करेगी। समझ गई कि लक्ष्मीका अकस्मात् गह्वर उनका पैरोंके नीचे आ
गया है, इस मूलका प्रतिधार नहीं है, गर बातके फिरसे बापत मानेका भी
बाँर रहता नही, परिणाम इसका दिवके समान ही अमोघ है, निर्मम है,
और अनन्वयशक्ति भी। फिर मैं, अपनेको वे इमान न कर लकी, अदम्य श्रेय

गौर धमिमानके तूफ़ानने उन्हें सामनेकी ओर ही धकेल दिया, कट्ट कपठसे लड़ी—“बह तुम्हारी अम्पामपूर्ण बिन्द है विपिन तुम्हारे लिए मैं कड़की-जमाईको नम-मरके स्थिर पधया नहीं बना सकती बेरा । तुम्हारी जो इच्छा हो सो य । छापपर, आभो तुम भोग भेरे साथ आभो —इसकी बातपर प्यान देनेकी स्वत नहीं । मकान इसका अकेलेका नहीं है ।”—इतना कहकर वे छापपर गौर कस्मातीको अपने साथ लेकर चली गईं । उनके पीछे-पीछे गईं मैत्रेयी, वे बह उन्हीं लोगोंकी अपनी कोइ हो ।

मासूम होता था कि सतीका हृदय मन अब विलकुल चकनाचूर हो जायगा । कस्तु उसकी अचेन्नक दृष्टा देखकर पन्दना और विप्रदास दोनों ही आश्चर्यसे ग रह गये । उसकी आँसुओं आँसू न थे, किन्तु खेहरा पीका-बर्ष पड़ गया था । ली बोली—“ननशोईंभीने क्या किया है हम नहीं जानती, पर बिना कारण मने भी इतनी बड़ी बारवात न की होगी सो निश्चयसे जानती हूँ । साँच-विचार ल करो, अपने मनमें मैं तुम्हें रक्षय्यथ भी दोष न हूँगी ।”

विप्रदास चुप रहे । सतीने पूछा—“तुम क्या आज ही चले जाओगे ?”

“नहीं, कल चालेंगा ।”

“अब न जाओगे इस परमें ?

“जान तो नहीं पड़ता ।”

“मैं ? बानू ?”

“जाना तुम लोगोंको भी होगा । कल न अब तक, तो और किसी दिन लही ।”

“नहीं, और किसी दिन नहीं—हम जाग मो कल ही चलेंगे ।”—इतना

कहकर सतीने पन्दनासे पूछा—‘तू क्या करेगी पन्दना, कल ही जायेगी ?”

बम्बानन कहा—‘नहीं । मैंने तो सगाड़ा किया नहीं खोभी, जो हल बौचकर कल ही जाना पड़े ?”

सताने कहा—“सगाड़ा मैंने भी नहीं किया बम्बाना, म हनोंने किया है । पर जहाँ इनके लिए जगह नहीं है वहाँ मेरे लिए जगह नहीं है । एक दिनक लिए भी नहीं । तेय ग्याह दुमा होता था तू भी हल बातको समझ जाती ।”

पन्दनाने कहा—“ग्याह नहीं सोनेरर ज्ये समझता हूँ खीजी कि पतिके लिए जहाँ जगह नहीं होती वहाँ खीक स्थिर भी नहीं हो सकती । पर भूल तो

स्वीकार करना स्वीकार है—दुम्हारी

होती ही है। बगैर समझे उसीको यह बात में नहीं मानी।
 घातके प्रति सतीके अहिमानकी सीमा नहीं थी, बोधी—“पति होते तो मान खाली।” और मौजूद दवानेके लिए तेजीसे बहते पड़ी गई।

बन्दनाने कहा—“यह क्या किया मुलकी छाह ?”
 “बगैर किने कोई उपाय न था बन्दना।”
 “लेकिन मौके साथ बिच्छेद रहती तो कल्पना भी नहीं की जा सकती।”

विपदासने कहा—“नहीं की जा सकती यह सत्य है, किन्तु नया प्रश्न आकर जब रास्ता बेर डेठा है तब नये समाधानकी ही बात सोचनी पड़ती है।
 बच्चे निकलनेका दराल नहीं रहता। दुम्हारी बीबी मेरे साथ ही जायगी—
 रोकना फ़सूल है। मगर तुम ? और भी दो पार दिन रहनेका इरादा है क्या ?”

बन्दनाने कहा—“कितने दिन रहना पड़ेगा, मुझे नहीं मालूम। नये प्रश्न आपके जागे चाहे जितने भी आप, पर मैं तो उस पुराने रास्ते ही ठठका
 “नर ईदती पुँगी—जो रास्ता पहले दिन मेरी नक़्शोंमें पड़ा था अब कि
 जानक इस करमें आकर लड़ी हुई थी,—किसको टुटना कही भी नहीं देली,
 तने मेरे मनकी पार ही हपेयाके लिए बरक ही।”

विपदासने इसका कोई जबाब नहीं दिया, सिर्फ़ उनके ओंठोंके किनारेपर
 मान हँसीका अच-सा आयास दिखाई दिया। उठ हँसीमें जितनी बेदना
 भी उतनी ही निराशा। उन्होंने कहा—“मी बाहर जा रहा हूँ बन्दना, फिर
 मुझकाट होगी।”

बन्दनाकी आँखोंमें मौजूद भाव बनकर पुमड़ रहे थे वह बोधी—“मुलकाट
 अगर कभी हुए तो उठ समय मैं दूरने ही आपको प्रणाम करूँगी। कठोर है
 आपकी प्रकृति कर्टन है आपका मन—न उसमें स्नेह है, न लामा। तब
 आपद न कर लूँ छाकद सौका न भिमे रहल्लिए अभीसे करे रखती हूँ मुपकी
 लाहव कि किनको लेकर हमारी पर-परकी, हँसना-पौना, मान-अहिमान परल
 करता है हम उन्हींको साथ लेकर पल्ल लडें—उन्हींको हम एत बीकनमें
 बान्ना खेचना-जमसना सील लडें मीपिकाके पीठे-पीठे हमें न भरकना
 पड़।” फिर जब ठरकर बोधी—“दूरे जब कभी आप बाद आपमें लमी
 एकात्र मन्से यह संभ जगा करूँगी—वे निर्मल हैं, वे निपाप हैं, वे महान् हैं।

मनकी पापण-शिक्षापर उनका प्रेषमात्र भी दाग नहीं पड़ता। जगतमें वे व्येते हैं, किसीके अपने नहीं हैं,—संसारमें कोई उनका अपना नहीं हो सकता।”—यह कहकर आँसुओंपर आँसु बरसाकर वह बहाँसे चली गई।

×

×

×

उस दिन काम-काज बहुत रात बीते लतम हुआ। इस परकी मुश्लकित धारामें कहीं भी कोई व्यापार नहीं हुआ, बाहरसे कोई जान ही न सका कि आज उस शूलसाकी लपटे बड़ी कड़ी डूटकर बकनाचूर हो गई है। लपेट होनेमें व्यादा शेर नहीं है। काम काजसे पका हुआ विद्याल मयन विमनुक नीरब है—किसे जहाँ जगह मिल गई वह वहीं नीरमें पड़ा छो रहा है। मच्छागकी मारी बुझेदारी निभाकर बन्दना आस्त कयमोंसे अपने कमरेकी तरफ च्य रही थी उसकी निगाह पड़ गई कि टपरके बरामदेके पास द्विजदासके कमरेमें बर्षा बस रही है। बुविष्य उठ लड़ी हुए कि इस समय वहाँ क्या उचित है या नहीं किसीकी निगाह पड़ गई तो वह उसके साथ म्याप नहीं करेगा और निन्दा शाब्द सो-सो मुँहसे पैल जायगी; मगर फिर भी वह रुक न सकी, जिस ठहरेम्ने उसे दिन-भरसं बचक और अछान्त कर रक्ता है वह उसे उसी ओर लपेस से गया। बन्द दरवाजेके सामने जाकर उठने पुकार—
“द्विजदास, अभीतक जाग रहे हैं !”

भीतरसे जवाब आया—“हाँ। पर इतनी रातमें आप कैसे !”

“आ सजती हूँ !”

“बड़ी चुपड़ेसे !”

बन्दनाने दरवाजा खोलकर भीतर जाकर देखा कि घेरके घेर कागजात किये हुए द्विजदास बिस्तरपर बैठा हुआ है। उम्ने पूछा—“यह आजका दिवाय होगा ! पर दिवाय तो जाग नहीं आ रहा द्विजदास, इतनी राततक जागनेसे लपीपत ओ लपच हो जायगी !”

द्विजदासने कहा—“हो जाती तो जी जाता, इन लकका आँसुंसे न देलना पड़ता।”

‘गर्भ बहुत व्यादा हो गया होया ! मारें लाइपके सामने कैदियत वैनी पढ़गी क्या !”

द्विजदास जागजातीको एक तरफ हटा हटकर लीपा होक पीठ गया, बोला

—“बन्धनपरिवर्तने तुलानि च मुलानि च । श्रीगुरुकौ कृपाते वे दिन भव मेरे नहीं रहे बन्धना देखी, आ मार्ग-साहबक आगे कैफियत हेनी होगी । भव तो उन्नत में कैफियत चार्हुंगा उनसे । कर्हुंगा—आमो जखी हिजाब, जखी आमो खपवा, कर्हुी केता लख-बर्ष किवा है बटाओ ।”

बन्धना दंग रह गार, बोली—‘ रात क्या है !’
 हिज्जात दोनों हाथोंकी मुट्ठी बाँधकर उन्हे माथेके ऊपर उठाकर बोझ—
 “रात अत्यन्त भीरल है । मैं दबामपी मुसपर दबा कर, बहनोइ शय्यपर मेरे
 छाया हो—छायादान विप्रदास ! अबकी बार मैं तुम्हारा पन और प्राण दोनोंसे
 बच करूँगा । इस ल्योगेके हाथसे अब तुम्हारा निहार नहीं ।”

बन्धनाकी पिन्टा बुदमनीप हो उठी, फिर भी वह बगौर हुंसे न रह सकी,
 बोली—‘तब बाठोंमें आपको मन्नाक ही दुस्ता खता है ! आप क्या एक खब
 भी लौरिबध (गम्भीर) नहीं रखना ध्यन्ते दिखू बाबू !’
 हिज्जातने कहा—“जानता नहीं ! तो से आओ शय्यपरको, आमो,—
 ली, रहने दो उन लोगोको । देखोगी कि उनके सामने हुंसे-मन्नाक गाँव
 छोड़के पुर्दाक्योंमें लहाराकी मकभूमिमें माम खबगा और गम्भीरका मुलामन्नाक
 हो उठगा आगन्ही-ओक (कमीकन्द) क लयान उरावना । परीभा कर देखिए ।”
 बन्धना कुरली लीचकर बैठ गई; बोली—“तो आपने तब मुन किया है !”
 तब नहीं, बकिफियत । तब तो ध्यन्ते हैं माइ साहब । पर वहाँ तो गहन
 बन है कुछ पता नहीं समनेक्य । लौर जानता है शय्यपर । वह बटा अकर
 देया पर तब कुछ बनाकर बसायेगा ।”

बन्धना म्माकुल-कच्छले बोली— आ कुछ आपको माखम है, मुसे बटा
 लकते हैं दिखू बाबू ! मैं बासाबम बहुत दर गर हूँ ।”
 हिज्जातने कहा—‘हरना खप है । मार्ग-साहबका सकस्य उलसे मस नहीं
 हो सकता —उनको हम लोगोंने लो दिया ।”

बलीके उन्नासेमें अब देला गया कि औंमुभ्रौले उसकी आँसें उखडवा आई
 हैं, गहन पेरकर किसी कदर उइ पौलकर वह लीपा होक बैठ गया ।
 बन्धनाने गाड़े खलमें कहा— बिच्छेइ इतनी आसानीसे आ आपगा दिखू
 बाबू ! लखमुच ही क्या इन रोका नहीं आ लकता !”
 हिज्जातने तिर दिखते हुए कहा—“नहीं । यह ऐली बीब है कि अब

आती है वह ऐसी ही अबाध गतिसे—ऐसी ही तेजीसे आती है, मनाही फिर मानती ही नहीं। जिसे रोना होता है, वह रोता है, पर अन्त उसका यहाँपर है।” —सुन-भर मौन रहकर फिर कहने लगा—“आप जानना चाहती हैं कारण ? विचारसे तो मैं नहीं जानता, पर कितना जानता हूँ उसे सिर्फ आपको ही बताऊँगा, और सहायता अगर कभी माँगनी पड़ी तो आपसे ही माँगूँगा— फिर आप चाहे कहीं भी क्यों न रों।”

‘सिर्फ मुझसे ही क्यों ?’

“उसका कारण यह है कि हाथ बपर पठारना हो पड़े तो महत्के आगे— यही शास्त्रका विधान है।”

“पर महत् क्या और काह नहीं है !”

“शायद हो, पर मुझे उसका पता नहीं मालूम। भार-साहसकी बात न ठेहूँगा, पर हमेशाका अन्धास या माभीक आगे हाथ फटारनेका, वह उल्टा आब बन्द हो गया। आप उनकी बहन हैं, मेरा हाथ उसी नातेसे है।”

“और मैं ?”

द्विजदानने कहा—“रथ जब सेजैसे चमता है तो मैं उसको अलापारण सारथी रहती हूँ, पर जब पहिले कीचड़में बँस जाते हैं तो मैं उस बल्ल असाहाय निरूपण हो जाती हूँ। उतरकर वे उसे सकेच नहीं सकतों। जब तुरे बल्लपर चर्केंगा आपके पास,—देंगी मिछ।”

“मिछाका विषय बगैर जाने कैसे कटाई दिगूँगा ?”

“सा तो मैं तुर मी मही जानता बन्दना; और सहरजमें माँगने भी न जाऊँगा। जब कहीसे भी कुछ न मिलेगा तभी पहुँचूँगा आपके पास।”

बन्दना बहुत देरतक मोषेको सिर छुकाये बैठी रही, फिर मुँह उठाकर बोली—“ओ मैं जानना चाहता था, नहीं बतावेंगे ?”

द्विजदानने कहा—“तब मुझे नहीं मालूम, कितना जानता हूँ वह भी शायद अज्ञान्त न हो पर इस विषयमें मुझे काई लन्देह नहीं कि मार सार्व आज लक्ष्मण ही गये—उनक पास कुछ भी न रहा, सब चला गया।”

“बन्दना पौक उठो, बाबी—“मुगर्जी साहब आज लक्ष्मण हो गये ! केस यह हुआ दिगूँगा ?”

द्विजदानने कहा—“बहुत ही आतामीसे और उस सगपरके पहुँचते।

साहा बीपरी-कम्पनीने बाक्सगाट उठ दिन दिवाळी निकाल दिवा और मार
ताहका लवख मी उठी बख उस गम्हें हूब गया। नीतर छिया रू गया
एक और इतिहास।”

कन्दना व्याकुल होकर बोली—“इतिहासको खने दीजिए दिवू बाबू, सिर्फ
पटनाकी बात बताइए। सर्वस्व जानेकी बात सच है या नहीं।”

“हाँ, सच है। वहाँ कोई गम्भीरी नहीं है।”
“और बीबी! बाबू! उनके लिए मी कुछ नहीं रू गया।”

“नहीं। रू गई सिर्फ मामीरु मायककी आमदनी। मामूली मोहते
सपने।”

“पर उते तो मुन्नी ताहक धरिगे नहीं दिवू बाबू।”

“नहीं। उतकी अपेक्षा उपास करनेपर मारताहकको कहीं क्यावा बिखात
है। वो मी दिन बीति।”

दोनों चुप रह गये। कुछ मिनट बाद कन्दनाने पूछ—“और आप।”

आपका अपना क्या हुआ।”

दिखावतने कहा—“परम निमर और निरपद बना हुआ हूँ। मारताहक
कुद हूबे पर मुझे शैला ही छड़ गये। पानीको एक बूँद मी पेटमें नहीं जाने
थी। आप पूछेंगी कि यह अलम्बक सम्भव कैसे हुआ।—सोकी मुश्किल, मार
ताहककी सामुता और मेरे अपने घुम प्रहकी घुम इतिहे। किरता घुनाता हूँ,
मुनिय,—एह घाघपर या मार-ताहकका बाबरबन्धु लहपाटी। दोनोंकी मुहक-
की काइ हद न थी। बड़े होनपर मार ताहकने उतके साथ कर दिया कम्पाकोका

क्याह। यह पदकता (तन्त्रब मिताना) हो मार ताहकके बीबनकी अलय
कीरिं है। मुनेमें जास कि घाघरके भित्ताके बड़ी-माटी बसीराठी है, बहुत
भार और नहीं है। बार ही ताल बीते होंगे कि अचानक एक दिन घाघरले
आकर लहर ही कि बसीराठी, एथय कायेघार लव अबाह पानीमें डूबनेवाला
है अब डेर नहीं,—आपको रखा करनी होगी। मैंने कहा, ‘रख ही उचित
है, पर दिवू मैरा मयी नाबाकिा है, उतके पैलेपर तो हाथ अगावा नहीं का
लफता वेरा।’ घाघरलेने कहा, ‘आम मर मी न लगेगा मी, लव चुकता हो
—बगा।’ मैंने कह दिया, ‘मायीबांर करली हूँ कि वेरा हो हो, पर नाबाकिा-

की सम्पत्ति है, उसके पिता रिस्कुल मनाही कर गये हैं।'

"कस्वापी रोटी हुई आई और माई साहबक पैरों पड़ गई, बोली, 'भरवा, म्वाह तुम्होंने किया था मेरा, आज बाब-बच्चोंको लेकर मैं मीन मोंगली टिर्की और तुम अपनी आँखोंसे देखा करोगे ! माँ देल सफती हैं, पर तुम !' जहाँ उनका बर्म है, जहाँ उनका विवेक और पैरगप है, जहाँ वे हम सबसे बड़ हैं, कस्वापीने नहीं बोट की। माई साहबने अमम देत हुए कहा, 'तू पर जा बहन, जो कुछ करना होगा मैं करूँगा।' उसी अमम मंत्रको जपते जपते कस्वापी अपने पर पत्नी गई। उसके बाबका इतिहास संक्षिप्त है बन्दना। पर उधर तो देखो, सारा हो रहा है।"—करते हुए उठने सुधी हुई लिङ्कीकी और उसकी दृष्टि आकर्षित की।

बन्दना उठक लड़ी हो गई, बोली—“और ये क्या कागजात कैंसे हैं ?”

द्विज्वाधने कहा—“मेरे निमन रहनके दस्तावेज हैं। आते बक म्वाह साहब अपने साथ लेते आने थे। पर मैं पूछता हूँ, आप भी क्या हम लोगेंका ऐस ही छोड़कर आज बनी आयेगी ?”

'नीक नहीं माखम दिखू बाबू। पर अब समय नहीं रहा, मैं आ रही हूँ। फिर मुझकाव होगी।"—इतना कहकर बन्दना पीरसे बर्हास बनी आई।

×

×

×

२४

अपनी बीबीको अबरदस्ती एक बुरतोपर बिगाकर बन्दना उठक पीछोंमें म्हाबर रुगा रही थी। उस बर मंगभाचार सिलाकर अजदा खुद न-जाने जहाँ छिप गए हैं। उसकी आँसु जाल मुग हो रही हैं, रुगाठार ओख बहाते-बहाते आँसु लूक गए हैं। बन्दनाक पूछनेपर उठने सछेपमे कहा था—“बहूको मैं अपना मुह मरी दिला चरूगी।”

“तुम क्यों नहीं दिला सछोगी अनु-दीदी, तुम्हें किस बातकी धरम है !”

“कुस धरम इत बातकी है कि इतक पहले ही मैं क्यों नहीं मर गई ? किच दिखो ही तो मैंने पल-भोतकर इतना बड़ा नहीं किया बीबी-बाई, किफनको भी किया है। उसकी माँ अब मरी थी तो किसके हाथ छीया था उठने अपन दो म्हीनके नग्दे-से बच्चेको ! मेरे ही हाथों। उठ दिन जहाँ थी

व्याप्ती ! क्यों ये उनकी बड़की और जमाई !"—कहते-कहते वह मुझपर
लौकिक दबाकर कहीं अन्धकार चली गई। जमीनपर बैठके अपने सुन्दरोंपर
बीबीके पोंच रतकर बन्दनाका महाभर जगाना मनो लक्ष्म ही नहीं होना
चाहता।

उपरो एक बूँद गरम मौसू छटीके पोंचपर आ पड़ा। छड़कर मी वह
बन्दनाका मुँह नहीं देख सकी। पर हावसे उसकी आँसू पोंचकर बाँधी—“तू क्यों
रो रही है क्या तो बन्दना !”

बन्दनाने उसी तरह तिर छड़के हुए हँसे हुए कंठसे कहा—“रो तो लगी
रहे हैं बीबी। मैं ही अकेली तो नहीं रो रही हूँ !”

“लगी रो रहे हैं सो क्या तुम मी रोना पड़ेगा ! इतना प्य-झिलकर
क्या मैंने यही मुँह लीली है !”

छातीकी बात सुनकर बन्दनाने एक क्षणके विषय अपना मुँह उठाकर उल्टी
की ओर देखा, और कहा—“मुँह दिलाक रोना पड़ेगा, नहीं तो आदमी रोवेगा
नहीं, तुम्हारी मी वह कैसी मुँह है बीबी !”

छातीने अपने हाथने बन्दनाका म्याया सहस्यते हुए स्नेहके साथ कहा—
“तुम्हारीछके साथ ठकते लौठना मुँहक है। ऐसा नहीं कहा री मैंने, ऐसा
नहीं कहा। उन बाँगीका कयाक है कि हमारा सब कुछ खाता खा इसीसे ल-
रो रहे हैं। मार सबकुछ तो एला हुआ नहीं। मेरे एक तरह तो हैं पति और
पुतली और है पुत्र,—संसारमें कोई मी तुम्हारा भय नहीं हुआ बहन, मेरे
विषय ए शोक मत कर। दुःख मुझे नहीं है।”

बन्दनाने कहा—“तुल मगवान् करे तुम्हें कमी न हो बीबी। पर तुम्हारा
दुःख ही सब-कुछ नहीं है। तुम्हारा कितना गया सो तुम मनो, पर सो रो-रोकर
दुःख ही सब-कुछ नहीं है। तुम्हारा कितना गया सो तुम मनो, पर सो रो-रोकर
आँसू बन्दनी कर रहे हैं उनका तुम्हारा मन पूरा करेगा, बताओ !”

तब तोही हैरत-उदरकर करने लगी—“मुलकी महाशय मर आदमी हैं, मे
को कुछी हो करे पर जाते समय सूनी आँसूने आज तुम बिना मत होना बीबी।
यह बात उन लोगोंको बहुत क्वाया चुमेगी !”

“किन लोगोंको चुमेगी री बन्दना !”

“किन लोगोंको ! नहीं जानती तुम उन्हें ! जो ताबकी उम्हें तुम भार
थी हल पचने परतें, हल परको ताबी साथ तुम्हारा अपना पर बनाते पने

आपे जो लोग—आपके एक ही पक्षमें उन लोगोंको तुम भूल गईं बीबी !
 तुम्हारी सत्त तुम्हारे बैपर, तुम्हारे परक दास्ये-दास, आभित लोग, टाकुरद्वारा,
 अविद्विद्याला, गौदाला गुरु-पुरोहित—इन सबका अभाव पूरा हो जायगा केवल
 पति और पुत्रसे ! और कोई नहीं हैं सोचनमें—सिफ वही हैं !”

बम्बना कहने लगी—“वह किन लोगोंके मुँहकी बात है जानती हो बीबी !
 दिन समाजमें मैं पत्नी-पत्नी हूँ उन लोगोंके मुँहकी । तुम साबती हागी कि
 पति मरिचकी वही अन्तिम बात है, ओके स्थिर इससे बचकर सोचनकी भार कोई
 बात नहीं । पर यह तुम्हारे भूक है । कलकसे बल्लो मेरी मौसीके पर देलागी—
 यह बात बर्हा पुत्रको दूर पड़ी है—इससे भ्राता से साचतो भी नहीं, करती भी
 नहीं । इतपर तुर्य यह कि” —कहते-कहते वह रुक गई । उसे सहसा ऐसा
 लगा कि कोई श्राव पीछे खड़ा है, मुड़कर देला तो दिखता है । जब वह
 पीछे भा खड़ा हुआ, दोनोंमसे किशोर मावूम नहीं पड़ा । घरमा कर बम्बना
 कुछ कहना ही चाहती थी कि दिखदाउने कहा—“डरनको काइ बात नहा, न
 छ में आपकी मौलाका पहचानता हूँ भार न उनके बर्हाके आयेका, आपकी
 बात उन लोगोंपर मरुट नहीं करेगा । पर अलखमें आपसे गकता हा र्हा है ।
 संसारमें पशु-पक्षिचका भी दल होता है, उनक आचरणका किसी धारमूममें
 बर्बाद आ सकता है, पर आदमिचका दल नहीं । एक साथ इस तरह आठठ
 विचार उनक बारेमें नहीं किया जा सकता । सबेरेव बहा बात साब रहा हू ।
 मोलाक दलसे पताउकर अनायास ही आपको धारताहक दलम दालिब किया
 जा सकता है, भार दयामपाके दलसे निकालकर मजेव उत मीशेवाका आपको
 मौलाक दलम पालान किया जा सकता है । मैं छर्त लगाक कर सकता हूँ कि
 कहीं मो रबम्याव विषय नहीं जानक्य । बाह रे आदमीका मन ! बाह रे
 उतकी प्रहृषि !”

सगान आभयंक साथ पूछा—“इत बातक मानी क्या अक्याओ !”

दिखदाउन उतसे स्यादा आभयंक मरुट करते हुए कहा—“तुम्हारे सामने
 भी मानी ! दिखक काम भार दिखकी बातक म्य अगर मानी हाने लग म्यो,
 तो फिर अकतक दयामपी-विप्रदासक दरबारमें न आकर तुम्हार पाठ हा उतकी
 सब अर्धियां क्यो पेश हातीं भ्या ! मानी समझनकी गरज तुम्हें नहीं है, इती
 स्थिर छ ! आज तुम्हारे जानेक दिन मौ उते बना रहने वा म्यक, टाक आर

गैर-ठीककी बाबकी लाक निकालनेकी बकूत नहीं।"—इतना कहकर लामने जाकर उसने मामीक पौबोंपर अपना सिर रखकर प्रणाम किया। पेटा वह नहीं किया करता। पौबोंक गीसे महाबराका रंग उसके माथेमें छया गया लतीने अक्य कर लिया, बोला— राग अपने ही आप फुँछ जायगा मामी, कमसे कम एक दिन तो बना रहने हो।"—बात पेटी कोरं बात नहीं थी, दिखने हँसते हुए ही कही थी, पर बन्दनाकी सोनीं अँख माँसुर्भासे भर भारी। उन्हें छिपाना बाधा, तो फिर वह अपना मुँह ही न ठठा सकी।

दिखवातेने कहा—“मैं धाया या लाकीर करने। समय हो क्या, मारं लाइव कस्टी कर रहे हैं। बीच-बलु सब पहुँचा ही गए हैं, बायको कपड़े-कपडे पहना-पिदुलकर गाड़ीमें बिठा थाबा हैं, मगलाबारका आबोकन फिसने कर दिया नहीं मायम, वह मी हायके हाय हो गया। डर या कि मनु-बीबी घायर कही हूब मी हो, पर अब सन्देह हो रहा है कि कहीं-न-कहीं ये जिया है। नहीं तो ये बीचों-आर कहींते ! केकिन जब कि उन्हें हँदक पाया नहीं जा सकता तो फिर हँदनेकी बकूत नहीं। उपर दबामनीके कमरेको साँकल बन्द है। लकड पार करनेके ब्रिज पंचकष उन्होंने अचकमन किया है उसमें करनेको कोई काम ही नहीं। हाँ, भीमती मैनेयीको जो कुछ करना हो कर जा सकती हो, यथा-समय वह बाता मँके कानोंतक पहुँच जायगी। मगर मेरा करना है कि ठककी कोई आबरबकता नहीं। अब हम बरा लरर होकर गाड़ीमें बचके बैठे मामी, हमें रेक्टमें बड़ाकर सुधी या बाऊँ, और अपने काममें मन लगा सड़ें।”

लतीने म्यान हँसी हँसते हुए कहा—“मुझे विशा करनेक किए जाबानीको बही कस्टी पड़ी हुई है।”

“मेरा काम पड़ा हुआ है जो बहुत साध।”

“क्या काम है मुर्दू तो !”

“रुठके पहले कमी तो हमने गुनना नहीं बाहा मामी। जब जो मोंगा है गुन्ते, बौर पूछे ही देती जाई हो बराबर। वह हमारे गुनने योग्य नहीं है।”

लती और बन्दना दोनों ही लज-मर चुक्या उलकी लरक देलकी रही, उतके बाब लतीने कहा—“मुम आओ कालाजी, अब मुझे देर न लगेगी।”

फिर बन्दयासे कहा—“तू मी यहाँ बैर न लमाना बरन, जितनी कस्टी हो सके

बम्बई वाली जाना । कलकत्ते जानेकी जरूरत नहीं, काकाजी वहाँ अकेले हैं, इसका खयाल रखना ।”

बन्धुजाने भी हिम्मीली तरह पौबीपर तिर रखकर प्रणाम किया, पौबीकी भूख लेकर माथेसे लगाईं और कहा—“नहीं बीबी, मौसीके घर अब नहीं, उधरका पाठ सतम करके ही बीटी थी, उसे मैं नहीं भूखूंगी ।”—कहते हुए उसने अपने आँचलसे आँखें पोंछी और फिर कहा—“श्याम कल ही बम्बई रहाना हो जाऊँगी; मगर तुम जानेके पहले यह मठेठा देती जाओ बीबी, कि फिर कस्ट्री ही तुम शोगीको देख सहुँ ।”

छत्तीने मन-ही-मन क्या आशोबाद दिया सो वही जाने, हाथ उठाके उसकी टाँही झूकर पुम्बन किया, और हँसते हुए कहा—“छो तेरे अपने हाथकी बात है बन्धना । काकाजीसे कहना थाकर कि तेरे ब्याहमें वे हमें निमन्त्रण भेजें, जहाँ करी मो रहूंगी जरूर पहुँच जाऊँगी ।”—अप टहरकर, शाबद मन-ही-मन यह सोचकर कि कहना ठीक है या नहीं, फिर कहा—“भेरो बड़ी-भयरी साथ थी कि इस परमें ही नू भावे । काकाजीके हाथ तुसे सीपकर और तेरे हाथों पर-गिरती का मार—बासूका मार—सब सोकर मोक साथ केकास-मात्राको खती, शेरली तो खंड भाती, नहीं तो नहीं,—केकिन, आदमी साथका कुछ है, होवा कुछ और ही है ।”—इतना कहकर वह पुप हा गइ । कुछ देर लग्न रहकर फिर कहने लगी—“इस परमें मैंने जो कुछ पाया था, सचार्म कोर उठे नहीं पाता । और सबसे क्यादा पाया था मैंने अपनी सासल । पर उन्हाँके साथ विष्टेद हा गया सबसे बड़कर । जानेक पहले पाँच मी नहीं मत लकी, दरवाजा बन्द है, चौतरकी पूर माथेने लगाकर कह आरं, माँ, इस काउची चौतरपर तुम्हारे पाँचोंकी भूख करी हुई है, वही मेरे—”बात पूरे न कर लकी, कष्ट बक भाया, अब ता वह बेकल हो दूद-दूद-सी गर, उसको दोनों आँखोंसे शर-शर आँसुओंकी धार बह पली । शी-शीन मिनर अपनेको समाकनेमें लम गये, फिर आँचलसे आँख पोंछ-कर बीटी—“और अनु-दाँवीको मी हँद-हँद रहन हा गर, वह मी नहीं मिसी । वह मेरी माँसे भी बड़ी है बन्धना । हम लार्गेक पसे जानेपर उठते कह तो देना नू, मैं उससे नाउज हीके गई हूँ ।”—फिर उसकी आँख मर भार । उनने आँचलसे आँखें पोंछ लकी । उसने एक बिपरी पाली थी, नाम रमा था नौमू । काम-काजके परमें बह कहां गयव हो गर है, पता नहीं । लदरे करं बार

उसका लयाक थाया, और सब फिर उसकी याद आ गई, बोली—“नीमू भी न बाने कहीं हड़की ब्याये बैने है, उसे मी न देख पाइ, अतु दीदीसे कह देना बन्दना।” मन्नेकी बात तो यह है कि कुछ ही देर पहले ठठने बोरेके लाप कहा था कि उसके एक तरफ तो है पति और दूसरी ओर पुत्र,—संसारमें उसका कुछ मी नुकसान नहीं हुआ। बात उसकी कितनी अबरदस छठ थी।

“मामी, कर क्या थी हो।”—बाहरसे दिव्यासका फिर लफाका आवा।

“मा रही हूँ मरवा, हो गया।”—करती हुई सही मन्नीसे ठठके बाहर पक दी।

×

स्टेशनसे दिव्यास जब अकेला छोटा लव घाम हो चुकी थी। मकान-मरमें हर जगह बचिगी जक रही हैं, स्त्री-पुरुष सब अपने-अपने काममें पूर्वक ही मगल हैं, इस बड़े परिवारमें कहीं कौन-सा विप्लव हो गया, और जानता मी नहीं। बाहरकी तरफ ऊपर विप्रदासकी बैठकके दरवाजे-कान्ठे खल कर हैं,—उसकी तरफ अँधेरा पड़ा है। ऐसे तो कितने ही दिन बची नहीं कमली, जब विप्रदास कलकत्ते रहते हैं। इसमें अनहानी-सी कोई बात नहीं। बीनेक बाईं तरफ बाजेमें बथोक खला है, लिडकीसे दिव्यार दिया कि वह बाणमकुलसी पर पैर फैलाने पड़ा है और बचीके उबासेमें बड़े प्यानसे कोई फिताव पड़ रहा है। कछेककी गैर हाजिरी करके अक्षय बाबू खब मी यही मीरद हैं, उनका कमरा आलिरामें पड़ता है। वे करपर ही हैं या बाहर हवा खाने गये हैं, कुछ मासूम न हो सका। मंदरसे उठरके जीवनमें देर रखते ही दिव्यासकी निवार पशुची सिमझिकेक बाइसेरी-कम्पर। धामके बाहर बहाँ मावा अँधेरा ही खला है, मान खेफिन लुगी हुई लिडकीसे उबाका निकल रहा था। उसे लन्ने न रहा कि बहाँ बन्दना होगी। किताई पढ़नेको नहीं, बरिक् आँसू पोंडनेक श्रिय और खेगोंके संलग्ने आत्म रक्षा करनेक श्रिय उठने पद्यममें जाकर आभय श्रिया है। माजकी रात कितो करर घाट देनेके बाद कक वह पथी जायगी—बहुत बूर बरगर्की तरफ, जहाँ वह पल-बनकर हलनी बड़ी हुई है—जहाँ उसक फिता है आश्रय खज्ज है, और है कितने ही दिनोंक मित्र और लली-सदेकिर्वा। कितो दिन किली बहानेसे फिर कथी उसका हल गीबमें माना संभव हो सकता है—यह खेबा मी नहीं आ सकता। विधिव है यह दुनिवा,—न खाने कितनी

अधुना और मनसोजी पढ़नाएँ महा पण्डित मारते ही पद आया करती हैं। एक-एक करके उस प्रथम दिनसे मेहर आकाशकी सब बातें दिव्यशास्त्रको याद आने लगी। वही अज्ञानक आना और फिर अज्ञानक नाश होकर ब्रह्म आना। बीचमें किन्तु कुछ पद्योंकी बातचीत। उस दिन बन्दनाने हँसते हुए कहा था—सिर्फ आलौकिक परिचय ही नहीं है दिव्यशास्त्र, नहीं तो, देवरके गुण अथगुण मिल मेहनतमें बीबीने कभी आकाश नहीं किया। मैं सब-कुछ जानती हूँ, आपके साथ-परमें मुझसे कोई बात छिपी नहीं है। अब जब पर-मरक शोर्गको आपने आया-सताया है तब-तब उसकी लारी लहर पहुँचती रही है मेरे पास। दिव्यशास्त्रने पूछा था—हम परस्पर श्रेष्ठ कितीको जानते नहीं, फिर भी आपके सामने मेरी बहनामी पैमानेमें साधकता क्या थी। बन्दनाने हँसके ब्रह्म दिया था—छापर मैं समझती हूँ कि बीबीको अठलमें आप देखे नहीं मुझसे,—यह उठीका बरणा है।

इसके बाद दोनोंने ही हँसके बातको परिहासमें स्पन्दारित कर दिया था; परन्तु उस दिन दोनोंमें किसीने भी न सोचा था कि यह था उठीका दिव्यश्रेष्ठ बन्दनाका चित्त आकर्षित करनेका कौशल। छापर कभी अपनी बहनको अपने पास लाकर रख सकें, छापर कभी उनके हाथ सँपकर देवरकी शासनमें लाया जा सकें। परन्तु बैसा नहीं हुआ, उगकी मनकी कस्मना मनहीमें छिपी रह गई। आज भी दोनोंमें श्रेष्ठ भी उन विद्वियोंके मानी न समझ सका।

दिव्यशास्त्र लीला ऊपर पश्य गया। पररा हवाकर भीतर आकर देखा—बन्दनाकी गौरमें किताब लुप्त पड़ी है, पर वह खुर बगलेके बाहर देखती हुई स्थिर बैठी है। एक पक्षि भी पढ़ी होगी कि नहीं शक है। तब समझते हुए भी किर्क बात शुरू करनेकी गरजसे दिव्यशास्त्रने पूछा—“कौन-सी किताब पढ़ रही थीं?”

बन्दनाने किताब बन्द करके मेहरस रख दी, और वह लड़ी होकर पूछने लगी—“आपका लौटनेमें इतनी देर कैसे हुई? कलकसेही गाड़ी तो कभीकी पभी गई होगी?”

दिव्यशास्त्रने कहा—“देर ही लरी, पर लोट ली आया आभिर। नहीं भी तो लौट सकता था।”

बन्दनाने कहा—“आलानीसे।”

उसका लबाब आवा, और जब फिर उठकी याद आ गई, बोली—“नीमू भी न बाने क्यों हुबकी बगाने बैने है, उठे भी न देख पाए, अनु बीदीसे कह देना बन्दना।” मनेकी बात तो यह है कि कुछ ही देर पहले उसने जोरके हाव कहा था कि उठक एक ठरक ता है पति और वूसी ओर पुत्र—तंतारमें उठका कुछ भी मुकतान नहीं हुआ। बात उसकी कितनी क्वरवका हउ थी।

“मामी, कर क्या रही हो।”—बाहरसे हिक्कासका फिर लकाबा आवा।

“आ रही हूँ मरणा, हो गया।”—कही हुई छती बस्तीसे उठके बाहर पक दी।

×

×

×

खेदानसे हिक्कास जब अकेला सोया तब धाम हो चुकी थी। मकान-मरतें हर बगह बरतियाँ बन्द रही हैं। बी-मुक्य सब अपने-अपने काममें पूबकर ही बन्द हैं, इस बड़ परिवारमें क्यों कौन-ठा किक्क हो गया, कोर ब्यन्ता भी नहीं। बाहरकी ठरक ऊपर विप्रवासकी बैठकक दरवाजे-बंगले सब बन्द हैं,—उपरकी ठरक अंधेरा पड़ा है। ऐसे तो कितने ही दिन बची नहीं कबली, जब विप्रवास करकसे रहते हैं। इतमें अनहोनी-सी कोर बात नहीं। बीनेक बार् सरकबाने कमरमें अणोक रहता है, सिद्धकीसे दिलाह दिया कि वह आरामकुली पर पैर फैकाने पड़ा है और बलीके उकाखेमें बने प्यानसे कोई कितान पड़ रहा है। कोठेकभी गैर-हाथिरी करके अलब बाबू अब भी परी मोबर हैं, उनका कम्ता भातरिम पढ़ता है। वे सरपर ही हैं या बाहर हवा लाने गये हैं, कुछ माखम न हो सका। मंदरते उठरक भाँगनमें पैर रखते ही हिक्कासकी निगाह पडुकी सिमकिलेक स्पइनेटी-कम्पर। धामके बाहर बहाँ प्राण अंधेरा ही रहता है, बाब सेफकन कुली हुई सिद्धकीमेंसे उजाबा निकक था या। उठे लन्देह न रहा कि बहाँ बन्दना होयी। कितारें पढ़नेका नहीं, बरिफ आँसे पौछनके सिप और व्ययोक संतमसे भास्य-रमा करनेक सिप उछने एक्यन्तमे आकर आश्रव थिया है। आबकी रात किसी करर काठ देनेके बाद कम बर पडी बाबगी—बहुत दूर बगहकी ठरक, जहाँ बह पम्-मनपकर इतनी बड़ी हुई है—जहाँ उठके सिप हैं, आम्नेप सबन हैं, और हैं कितने ही दिनोंक मिल और लती-सदेतेवाँ। किसी दिन किसी बहानेसे छिर कभी उठका हल गाँबमें मामा संभव हो सकठा है—बह लोया भी नहीं आ सकठा। सिबिब है बर पुनिया,—न बाने कितनी

बन्दन और मनसोबी पढ़नाएँ वहीं पलक मारते ही पट आया बरती हैं। एक-एक करके उस प्रथम दिनसे लेकर आठवककी सब बातें दिग्दशको पाद आने लगीं। वही अपानक आना और फिर अन्धानक नागब हाकर पला आना। बीचम किफ कुछ पद्योंकी बातचीत। उस दिन बन्दनाने हँसते हुए कहा था—किर्क भीलोका परिषय ही नहीं है त्रिगु बाबू, नहीं तो, देबरके गुण अथगुण शिब भेजनेमें भीजने कमी आरुत नहीं किया। मैं सब-कुछ जानती हूँ, आपके लम्प-पमें मुससे कोई बात छिपी नहीं है। अब जब पर-मरके लोकोको आपने कलाया-सनाया है तब-तब उसकी साथी लवर पहुँचती रही है मेरे पास। दिग्दशतने पूछा था—हम परस्पर क्यूर किसीको जानते नहीं, फिर भी आपके लामने मेरी बदनामी फैलानेमें लायकता क्या थी? बन्दनाने हँसके अथय दिया था—घायद मैं समझती हूँ कि भीलोको अथलमें आप देखे नहीं मुसाते,—यह उलीका बदला है।

इसके बाद दोनोंने ही हँसके बातको परिहासमें रुपान्तरित कर दिया था; परन्तु उस दिन दोनोंमेंने किमीने भी न सोचा था कि यह था लतीका दिग्दशके प्रति बन्दनाका विश्व आकर्षित करनेका कौशल! घायद कमी अपनी बहनको अपने पास आकर रख लके, घायद कमी उनके हाथ सोंपकर देबरको घासनमें आया जा सके। परन्तु पैना नहीं हुआ, उनकी मनकी कसना मनरीमें जिरा रह गई। आज भी दोनोंमेंने क्यूर भी उन शिष्टियोंके मानी न समझ लका।

दिग्दश सीबा ऊपर बध्य गया। परना हयकर मीतर आकर देला—बन्दनाकी गोदमें किताब लुथी पड़ी है, पर यह लुद अगलेक बाहर लैलती हुई फिर बैठी है। एक पंक्ति भी पढ़ी होगी कि नहीं शक है। सब समझते हुए भी किर्क बात शुरू करनेकी गरजसे दिग्दशतने पूजा—“कीन-सी किताब पढ़ रही थी?”

बन्दनाने किताब बन्द करके मेजर रख दी, और वह लड़ी हाकर लूने लगी—“आपका लोटनेमें इतनी हर कैसे हुए? कलकसेकी गाड़ी ल कपीकी पनी गई होगी!”

दिग्दशतने कहा—“देर ही लरी, पर लोट लो आया आलिर। नहीं भी लो लोट लकटा था।”

बन्दनाने कहा—“आसानीसे।”

विश्वनाथ एक छत्र चुप रहकर बोला—“ठीक, यही बात पहले मेरे मनमें उठी थी। गाड़ी बूट गार्, लिङ्कशिसे मुँह निकालकर बासू हाथ हिलाने लगा, क्रमशः उसका नन्दा-का हाथ गाड़ी मुड़ते ही भोटमें छिप गया। पहले वही मनमें आया कि उसके साथ ही अन्य बातें तो ठीक रहता—”

बन्दनाने कहा—“आप बासूको बहुत प्यार करते हैं, न ?”

विश्वनाथने बरा सोलकर कहा—“बलिप, क्वाब क्या हूँ, इन सब चीजों का शाब्द मैं स्वरूप ही नहीं जानता। प्रकृति मेरी ऐसी कस्ती, ऐसी नीरस है कि वो ही क्षणमें सब सोलकर सूनी बासूकी तरह फिर क्योकी लों पकक उठती है। प्लेटफार्मपर लड़-कड़े आँसुओंमें भाँसू मर जाये मकिन फिर उठी बल्ल कपने आप ही सुल गये,—म्यपका निष्पन्नतक न रह गया।”

बन्दनाने कहा—“यह एक प्रकारका मगानाका आशीर्वाद है।”

विश्वनाथ कहने लगा—“क्या मासूम, हो मी लकटा है। बीर, लक पूछो तो हल बासूके डरसे ही म्ये ककते डरब्यजा बन्द बिबे पड़ी हैं। नहीं तो न माई लाइबके सिप, न मामीक सिप। म्ये खोपती हैं बासूको घायर उन्होंने पाल्य-पेला है, पर विश्वास लगाकर देना ब्यब तो देलेंगी कि उसके उमरका आचर लमप म्येका बोला है लीबोंमें। लक किसके पास रहता था वह ? मेरे पास। राइफ़ोइड कुलारमें खैन बागा या लाठ-लाठ दिन ? मैं। आज ज्यठ पक किठने उठे कपड़े-सत्त परनाये ? मैंने। उसके कपड़े-लक किठकी बालूमारीमें रहते थे ? मेरीमें। उसकी किताब-कपी सिबेट मेरी ही टेबिलपर रखी थी। उसके लीनेकर बिस्तर मेरी ही लाउपर लमठा था। म्ये लीनातानी करक से मी ब्यली थी—पर किठनी ही लखोंको वह जैसे ही ब्यगठा, म्यग आता मेरे कमरेमें।”

बन्दना एकदक उसके मुँहकी ओर देल रही थी, बोली—“ले मी ले आपकी आँसुओंके भाँसू सुलनेमें एक लकते ज्वाहा नहीं लगा।”

विश्वनाथने कहा—“महाँ। पेला ही मेरा स्वभाव है। उसके किरपमें मुझे किर्न वही बिम्बा है कि वह आ पड़गा अपने म्ये-आपके हाथोंमें। आप कहींगी कि लन्धरमें वही तो स्वाभाविक है इसमें डरनेकी क्या पाठ है ? परन्तु स्वाभाविक होनेसे ही मैं सिप बड़ा-म्यरी लकड है कि इतनी बड़ी उकटी बात आदवीका समयसार्क कैसे ?”

बन्दनाने यह नहीं कहा कि लमसानेकी ऐसी बन्दरत ही क्या है। कुलरी

और मौ-बापके विरुद्ध इतना बड़ा अभियोग सत्य हो सकता है, यह विश्वास करना भी उसके लिए कठिन है, सासकर विप्रदासके विरुद्ध। किन्तु कोई तक न उठकर वह चुप रह गई।

दूसरे ही क्षण अपने बचपनको स्मरण करनेके लिए दिव्यदास खुद ही कहने लगा—“एक बातसे जानकरना है मुझे कि माभी ठाय है, नहीं तो भाई साहबके हाथ सीपकर गुप्त रत्नीमर मो धामि न रहती।”

बन्दनाने कहा—“भाप तो निर्बिचार हैं, बासुन्नी मन्थार-दुवारीसे आपको मन्थर्य ही क्या ! जो बाहे हो, होवा रहे न !”

सुनकर दिव्यदासके चेहरेपर एक सुतीक्ष्ण वेदनाकी छाया-सी पड़ गई, किन्तु वह मौन रहा।

बन्दनाने कहा—“भाई साहबके प्रति गंभीर विश्वास और अज्ञाकी बात एक दिन स्वयं आपके ही मुँहसे सुनी थी। वह भी क्या ठन मौसुभौकी तरह ही पकक मारते लुग गई ! या अब भादमी अपने होपसे नि-स्व या सबलाम्त हो गया है उततर विश्वास नहीं किया अब सकता—आलिर क्या मही भाप कहना चाहते हैं !”

दिव्यदास विरम्य और व्यथासे विह्वल भौलोंसे धन-मर उतकी ओर देगता रहा, फिर दोनों हाथ जोड़कर मायेसे कृपाया हुआ आदिखेते बोला—“नहीं, यह मैं नहीं कहना चाहता। मैं कह रहा था, प्यास बुझानेके लिए पानी माँगने कोई समुद्रके पाठ आकर हाथ न फैलाए। पर, भाई साहबके सम्बन्धमें अब और आशोचना करने दो, बाहरबामे ठसे नहीं समझते।”

इस बातसे बन्दनाको बड़ी-भारी नीतरी खोद पहुँची, पर प्रतिबादके लिए उसे कुछ हँसि नहीं मिला, वह लम्ब रह गई।

दिव्यदासने अब दिव्यदुल दूतरी हो बात छोड़ी, उतने पूछा—“आप क्या कह हो बन्धर बनने जावेंगी !”

बन्दनाने कहा—“हाँ।”

“अधोक बापु ही से जावेंगे !”

“हाँ, वे ही पहुँचा देंगे।”

दिव्यदासने कहा—“बन्धर मेक पहनि बहुत पत नीचे गुरुती है। कक भाप लोगेको मैं स्टेसन पहुँचा भाऊँगा। पर दिनमें न रह लईक, अब कुछ

काम है।”

“बापूजीको एक तार भिक्षा दीजिएगा।”

“अच्छी बात है।”

दो-एक मिनट चुप रहकर, बगसे हाँकते हुए विप्रवासने कहा—“एक बात आपसे पूछूँगा—अकसर सोचा करता हूँ, पर नाना कारणोंसे दिन बीतते चले गये पूछ न सका। क्या आप पत्नी ही व्यर्थगी, फिर बच नहीं भिखेगा। अगर नाशक न हो, तो कहूँ।”

“कहिए।”

देर होने लगी।

बन्दनाने कहा—“नाशक न होऊँगी, आप बेचइक कह जायिए।”

विप्रवासने कहा—“कहफेरेसे मैं एक दिन नाशक होकर मामीको लेकर अशानक पत्नी आई थी—याह है।”

“है।”

“कारण न मात्रम होनेसे आप अशम्भेमें पड़ गई थी। मन आपका बहुत लयब हो गया था। मेरे कमरेमें आकर उस दिन आपने एक बात कही थी कि आपका मैं अच्छा लगता हूँ। याह है।”

“है। पर बहुत सरमके साथ ही बाद पकती है वह बात।”

“तो उस बातका मूल्य क्या कुछ भी नहीं।”

“नहीं।”

विप्रवास क्षण-भर स्तम्भ रहकर बोला—“मैं भी ऐसा ही सोचता हूँ। उतका मूल्य कुछ भी नहीं।”

फिर कुछ देर बाद कहने लगा—“आपने कहा था कि आपकी मोटी बाहरी है कि अछोकते साथ आपका स्वाह हो। सो क्या तब हो गया।”

बन्दनाने कहा—“वह हमारा पारिवारिक विषय है। बाहरवालोंसे इसकी आलोचना नहीं की जा सकती।”

विप्रवासने कहा—“आलोचना तो नहीं करता, तर्क एक बात जानना चाहता हूँ।”

बन्दनाने तीसरे स्तरसे कहा—“आपके साथ मेरा ऐसा कोई आत्मीयताका सम्बन्ध नहीं कि उचितसे ऐसी बात आप पूछ सकते हो। दिगू बाबू, आप विप्रवास

पुरुष हैं, ऐसा कुतूहल बजावनक है।”

सुनके दिबदास सचमुच ही स्तब्ध हो उठा, उसका चेहरा म्मान हो गया।
 पोद्दा—“मुझे गहरी हो गई बन्दना। स्वभावसे मैं कुतूहली नहीं हूँ, वृत्तियोंकी
 बात बाननेका शोम मुझमें बहुत कम है। अगर न जाने कैसे मुझे ऐसा लगता
 या कि संसारमें जो बात किशोरे भी नहीं कह सकता वह आपसे कह सकता
 हूँ। जिस विषयमें और किसीको भी पुकार नहीं जा सकता, आपकी पुकार
 सकता हूँ। आप—”

उसकी बातके बीचमें ही बन्दना हँस पड़ी, बोली—“पर अभी अभी तो आप
 कह रहे थे कि मार-साहबके विषयमें बाहरवालेके साथ आशोचना आप नहीं
 करना चाहते। मैं तो गैर ही हूँ, किन्तु बाहरकी।”

दिबदासने कहा—“अगर यही बात है तो फिर आपने ही क्यों उनके
 सम्बन्धमें मुझपर अघट्टाका आरोप लगाया। जानती नहीं आप, मेरे बन्ध
 क्या हो प्दा है।”

पत्नीके प्रकाशमें स्वर दिखार दिया कि उसकी भाँलोंकी कोरें भाँतुभीते
 भर भार हैं।

इतनेमें मैत्रेयीने कमरेमें प्रवेश किया। उसने कहा—“आप क्या ध्येते, हम
 ल्येमोंको तो कुछ म्दम ही नहीं हुआ।”

दिबदास मुहकर सड़ा हो गया, बोझ—“म्दम करनेकी कोरें क्यादा
 बन्दत थी क्या।”

मैत्रेयीने कहा—“यह लूँ कहा। आपने कह नहीं गाया, आज भी नहीं
 जाया,—यह और किसीको म्दम हो या न हो, मुझे तो म्दम है। बसिय
 मोंके कमरेमें।”

“लेकिन मोंके कमरेका तो दरवाजा बन्द है।”

मैत्रेयीने कहा—“यह तो बन्द हो, पर मैंने पीछ नहीं छोड़ा। फिर पुन
 पुनकर दरवाजा खुल्ला किया है, उन्हें नरह्य-मुल्ला दिया है, संध्या-पूजा भी
 करवा दी है, जबरहस्तो पुठ क्क गिन्म दिये हैं, सब सिष्ट छोड़ा है। कर रही
 थी—दिम् न तापगा तो मुझसे न लाया जायगा। मैंने कहा—जो नहीं होनेका
 भाँ, आपका यह हुकम मैं नहीं मान लूँगी। लेकिन लक्से हम सभी आपकी बात
 देना रही हैं। बसिय, आपका ताना रत्न भार हूँ मोंके कमरेमें।”

हिबबाल रंग रह गया। इसके मुँहसे इतनी बात उसने पहले कभी नहीं सुनी थी। बोझ—“बकिए।”

मैत्रेयीने बन्दनाको बक्ष्य करके कहा—“माप मी भाइए। मों मापको मुला रही हैं।”—इतना कहकर वह हिबबालको एक प्रकारसे गिरफ्तार करके ही छे गर्द बहसि। सबके पीछे-पीछे गद् बम्बना।

अपने कमरेमें बरामची विस्तरपर छेड़ी हुई थी। अनुम्बल हीपाओकमें उनके छोकापठक बोहरेकी तरफ देखनेसे ब्येय म्यसूम होता है। भालें सूजकर काक हो गई हैं। घोड़ी देर पहले नहानेसे मायेके बाक भीगे और बिलेरे हुए हैं। सिखाने बैठी कम्पाची माकेपर हाथ फेर रही है दूसरी भार कुरतीपर घाघर बैठा है, कुछ बुरीतर एक कुरतीतर अकब बाबू बैठे हुए हैं। हिबबालके कमरेमें मुलते ही बरामचाने करबड सेकर मुँह फेर लिया और दूसरे ही क्षण एक अलफुट बम्बनके बबकड बेगले उनका हाथ घीर कोर्न कण। बन्दना कुपकसे बारे भीरे जाकर उनक पैरीक पाठ बैठ गई। इतनी बड़ी बेदनाके इस्की घामर वह कभी कम्पना मी न कर सकठी। बहुत दरतक समी नीरब रहे, इत सम्बलाको भग करके सबसे पहले बात की छपबने। बाबा—“ककसे, मुना है कि तुम त्वना लाये-यीये हा —ये भी योहा-बहुत ला सका, ला बो।’

हिबबालने कहा—“हां।”

कमीन साफ करके मैत्रेयी बाकी बगा रही थी, उत तरफ देखते हुए छपबने कहा—“तुम्हें छोटनेमें इतनी देर कैसे हो गई? वे खेग गये तो हैं बाई बनेकी यादिले?”

हां।”

छपबने क्या हँसनेका प्रकन करते हुए कहा—“धीर मनेकी बात यह कि कककनेका मकान मी मुना है तुम्हाय ही है।”

हिबबालने कहा—“बनों, मेर मकानम म्यई-साइबका प्रवेस निपिद है क्या।”

छपबने कहा—“तो मरीं करता। बरिंक वे ही देला-कुछ म्यब रिस्तवा गये ये। इस मकानको छड़कर मी तो उनके बानकी बकल नही थी, भापसमें ही कोर निबयाय कर-करा छेते।”

हिबबालने कहा— निबयारेका यव्या अपर मुला म्य तो भापन कर

कपी नहीं लिया !”

“मैं कर लेता !” — छायापरने अत्यन्त आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा — “यह कैसी बात है तुम्हारी ? मेरा अपमान तो किता उन्होंने और निबटारा कर लेता मैं ? सलाह तो बुरी नहीं ?” — कहकर वह अवरदस्ती गीब-गीबके हुतने लगा । उसकी हँसी रुकनेपर द्विबदावने कहा — “सलाह तो आपने बुरी नहीं ही छायापर पाव । औरतें कदा करती हैं पहाड़की ओट रहना, — या मारसाहब से पहाड़, आप से उनको ओटमें । अब आम्न-सामने लड़ होंगे हम ओर आप । मयन अपमयनका लेक अभी सतम थोड़े ही हो गया है, — अभी तो शुरू ही हुआ है !”

“इसके मानी !”

“मानी यह कि मैं आपको वास्तव-बन्धु विप्रदास नहीं हूँ, — मैं हूँ द्विबदास ।”

छायापरके चेहरेकी हँसी धीरे धीरे गायब हो गई, उसने मपकर यम्मीर कण्ठसे पूछा — “तुम्हारी बातका अर्थ क्या है, क्या कुप्यता करके तो करो !”

बड़े मारका मित्र होनेके कारण छायापर द्वारा ‘तुम’ कहे जानेपर भी द्विबदास उससे ‘आप’ ही कहा करता था बोला — ‘आपकी यह बात मैं मानता हूँ कि अर्थ आज स्पष्ट हो जाना ही अच्छा है । मेरे मारसाहब उस श्रेणीके आदमी हैं जो लसकी रसाके स्थिर सर्वस्थान्तक हो सकते हैं, आभिर्तिके स्थिर देहका मरुतक काटके दे सकते हैं; उन जैसे लोगोंम ‘आदश’ नामकी न-बाने कौन-सी एक विचित्र बीज होती है जिसके स्थिर देता कोई काम नहीं था से न कर सकते हैं — वे लोग एक तरहके पागल हैं — हमीसे उनकी देवी बुद्धि जाती है । परन्तु मैं निहायत साधारण आदमी हूँ, मेरा आपको साथ क्यादा प्रमेद नहीं है । टीक आपको ही तरह मुझमें शर्पा है, पूना है, और बन्ना सेनेकी रीतानी बुद्धि भी है, सिहावा मार-साहबको आपन भोला देकर उगा होगा तो मैं भी आपको ठगूँगा, उनके नामसे आणसाजी की शर्मा तो मैं भी आपको आशमसे अन्धकी हवा प्रसन्नार्कगा, — कभीकम कोशिश करनेमें कोई बुद्धि न ररुँगा अब तक कि दानों पर ही रहने मियारी नहीं हो पाते । विज-बन्धुके कुरस तुना है कि ऐसी ही छायाद इतकी परिचरत है । सा अब बही जाने दो ।”

छायापर चित्ताकर कह उठा — “माँ, सुन रही है अयन द्विबुधी बालें ! जो मनमें भाषा कर दिया — उसे मना कर दीजिए ।”

द्विबदावने कहा — “माँसे सिहायत करनेमें कोई काम नहीं छायापर

वे जानती हैं कि मैं विपिन नहीं हूँ,—मृतुवास्य दिखके लिए वेद-वास्य नहीं हैं। दिख ताक थोककर स्वर्ण करनेका अभिनय नहीं करता, वे इस बातको समझती हैं।”

किसीके मुँहसे कोई बात नहीं निकली। इन दोनोंका अकस्मात् इस तरहका वाद-प्रतिवाद मानो बिल्कुल अनसोनी बात थी। विस्मय और डरसे सबके सब काँप ही गये। घटाघर समझ गया कि यह मजाक नहीं, अत्यन्त कठोर संकल्प है। ठहर बैठे हुए अब उनके गलेमें पहरे बैठा खोर नहीं रह गया था, फिर भी खोर देखकर ही कह उठा—“बत नहीं लतम है। यहाँ अब मैं पानी-तक प्रवृत्त न करूँगा।”

दिखदासने कहा—“कैते अकथक प्रवृत्त कर रहे थे, यही तो आश्चर्य है घटाघर बाबू।”

कस्वाभी रो सी, बोली—“छोटे मइया अस्तमें तुम ही क्या हम ज्योगोंको मार जानना चाहते हो। अपनी मौके पेड़के लगे भाई हो तुम, तुम्हीं करोगे हम ज्योगोंका लवनाघ।”

दिखदासने कहा—“तू समझती है कि आँल्योसे भाँव टपकाकर लवनाघको बार-बार रोका था लफटा है। कहीं भी कोई विचार न होगा तुम्हीं ज्योगों की ही होगी बार-बार धेत। माना कि मार-साहब नहीं हैं, फिर भी तुसे अब जानेको न मिले; आना मेरे पास सब तेरा रोना-बिबकना सुनूँगा—धमी महीं।”

रसाम्मी चुपचाप बहुत छह चुकी थीं अब उनसे न लहा गया, वे एकाएक भीत्कार कर उठीं—“दिख, तू अब यहाँसे। इस तरह गाभी-गलीब करना क्या विपिन ही तुसे सिला गया है।”

“कौन सिला गया कहा। विपिन।”

“हाँ, यही। अरु बही सिला गया है।”

दिखदासके जोड़ लज-मरके लिए सिकुड़ गये, बोस्य—“मैं अब रहा हूँ। लेकिन मैं, जानेको तुमने बहुत छोटा कर डाला है, अब और छोटा न बनाओ।”—कहता हुआ वह बाहर लज्य गया।

जाने कमरेमें आकर दिखदास चुपचाप बैठा हुआ था। करीब पच्चे मर बाद मैदेपी बहाँ भाई। उसके हाथमें परेसी हुई पानी थी, बोली—“फिरसे सब खाना बनाके मारें हूँ, खाने वैदिय। इसी कमरेमें पारा क्या हूँ।”

“यह आपसे किसने कहा !”

“किसीने नहीं। कसमे आपने कुछ खाया-पीया नहीं, तो क्या मैं नहीं जानती !”

‘इतने शोर्षोंके रहते हुए आपके जाननेकी आवश्यकता !”

मैत्रेयी तिर छुड़ाये चुपचाप लड़ी रही। ब्याप न पाकर दिग्भ्रमसे कहा—
“अच्छा, यही रस हीजिए। अभी भूल नहीं है, अगर खी तो बादमें खा लूँगा।”

मैत्रेयी एक किनारे पाय लगाकर, ठमसर घायी रखकर, अन्नके साथ सब हाँक-डूँककर बस्ती गई। उसने क्यादा आग्रह नहीं किया, पर भी नहा कहा कि उठवा हो जानेते खाना अच्छा नहीं लगेगा।

रातके करीब बारह बजे होंगे, दिग्भ्रमस कुरसी छोड़कर उठ खड़ा हुआ। मामूली चोड़ा-सा खा-पीकर जो आर्क—यह छोड़कर शय-सुह खोनेक सिद्धि जैसे ही बाहर गया, देखा कि दरवाजेके पास कोर खड़ा है। वयमरेमें बहुत कम प्रकाश था, पहचान न सकेनेसे उसने पूछा—“कौन ?

“मैत्रेयी।”

दिग्भ्रमसके आश्चर्यकी सीमा न रही, बोला—“इतनी रातको आप यहाँ क्यों ?”

“खाते बस किसी बीजम्मी अगर बस्यत पढ़ गए—इसीसे बैठी हूँ।”

“यह आपकी बहुत उपदेखी है। पहले तो बस्यत ही नहीं पढ़ती और पढ़ती भी तो क्या परमे और चाह नहीं है ?”

मैत्रेयीने मूढ कष्टसे कहा—“कर दिनोंक निरन्तर परिश्रमसे सब पढे हुए हैं। कोर अग नहीं रहा है, सब खो गये।”

दिग्भ्रमसने कहा—“आपने कुछ भी तो कम मेहनत नहीं की है, तो फिर आप क्यों नहीं धरें ?”

मैत्रेयीने कोई ब्याप नहीं दिया, चुप रही।

दिग्भ्रमसअ अनेछाहृत रुला स्वर भव बहुत-कुछ मुखापम हो आया, बोला—“इस तरह बैठ रहना महा दिग्भ्रमस रस है। आप भीतर बसके बैठिए, अबतक आर्क—निरीक्षण करलो रहें।”—यह कहकर वर शय-सुह खोने पानीबान्नी काठरीमें बहा गया।

इसके पहले मैत्रेयीके साथ द्विजदास बहुत कम ही बोझ है। बहरहा भी नहीं पड़ी, और इच्छा भी नहीं हुई। अब घटबिघ्न किन्तु हंगसे करे, यह सोचता हुआ वह वापस आके देखता है कि न तो बहाँ यात्री है और न मैत्रेयी कुर। इस बीचमें क्या बात हो गई, इसका अनुमान लगानेसे पहले ही वह वापस आ गई। बोधी—ठैकना उठाकर देला कि सब सुलभे ककड़ी हो गया है, इसीसे फिरसे जाने गई थी। बैठिए।”

द्विजदासने कहा—“इसमेंसे माप निकल रही है। इतनी घटको गरम्यगरम थीये कहाँसे मिल गई।”

मैत्रेयीने कहा—“सब कुछ तैयार रख छोड़ा था। अब आपने कहा कि खानेमें देर खोगी तभी समाप्त किया कि सब चीज तैयार न रखनेसे आपका खाना ही न होगा।”

द्विजदास बीमने पैग तो पहले उसने रुचन-नैपुण्यकी प्रशंसा करत हुए खान दिया कि उनमेंसे कर चीजे कुर मैत्रेयीके हाथकी बनारि हुई हैं। उन्हें वह बार-बार अनुरोध करके खावा-खावा निकालने लगी। इत विषयमें वह मुसप है, खानती है कि कैसे लिखया जाता है।

द्विजदासने ईतत हुए कहा—“ज्यादा खानेसे तभीमठ खराब न हो जायगे।”

“नहीं, नहीं होगी। ककसे उपास किये हुए हैं, इसे क्याया खाना नहीं करते।”

“सेकिन मैं ही तो आपका बगैर खाने नहीं हूँ, यहाँ और भी तो बहुत-से होंगे।”

मैत्रेयीने कहा—“बहुतोंकी बात मुझे नहीं माखूम, पर मोंके में किन्तु कठिनार्थसे और सूट लिखा लकी हूँ तो मैं ही खानती हूँ। न खती तो न जानें किने दिनोंतक दरखावा कन्द किये पड़ी रहती। सोचती हूँ, तो कर खती हूँ। सेकिन आप मुझे ‘आप’ न कहा कौनिए। सुनती हूँ तो धरमा खती हूँ। मैं कितनी खेरी हूँ आपसे।”

द्विजदासने कहा—“सो ठीक है, तुमसे अब ‘आप’ न कहूँगा। सेकिन यह तो पताभो, तुमने अपरा-बीदीकी भी कुछ खबर ली।”

मैत्रेयीने कहा—“उठे और क्या हो गया। वह भी क्या बगैर-खाने है।”

अब तक मैत्रेयी की बातें उसे बहुत अच्छी लग रही थीं, एक तरह की प्रसन्नता की हवा इस दुःख में भी मानी उसके मन को कुछ-कुछ स्पष्ट कर जाती थी, परन्तु इस अन्त की बातसे उसके अन्त एक क्षण में विरूप हो उठा, बोस्य—
 “अनुवीचीक सारेमें इस तरह बात नहीं की जाती। घायल सुन रत्ना होगा कि वे हमारे पार्श्व की दासी हैं, पर इस पर मैं उनसे बढ़कर मेरा और कोई नहीं है। हम स्वर्गों को पाल-पोसकर उन्हें इतना बढ़ा दिया है।”

मैत्रेयीने कहा—“तो तुना है। पर ऐसे तो कितने ही घरों में पुरानी दासियाँ लड़के-बाळोंको पालती-पोसती हैं। इतम नइ बात खैन-सी है। अच्छा, आपका भोजन हो चुकनेपर मैं उनको लखर लूंगी।”

द्विजदास अन्धकार में विद्ये लक्ष्मण उसके मुँह की ओर देखता था। उसका उसे ऐसा लगा कि ठीक ही तो है, ऐसा तो कितने ही परिवारों में हुआ करता है। जो पीतल की बात नहीं मानता उसका निकट, सिंग बाहर की पटना में, असन्त आश्रय की बात इसमें क्या है। उसको कठोर विचारपाथ इलकी हा आइ। बोस्य—“अनु-वीचीन न मी लाबा हो तो इतनी रात बीत वे न जावेंगी। उनको किए आइ चिन्ता करनेकी जरूरत नहीं।”

फिर कई मिनट तक कोर कुछ न पाव। द्विजदासने पूजा—“मैत्रेयी, गीतोंकी इस तरह सेवा करना तुमने सीखा किससे। अपनी माँसे।”

मैत्रेयीने कहा—“नहीं तो, अपनी बीबीसे। उनका समान पति की सेवा करते हुए मैंने कितनी नही देखा।”

द्विजदासने हँसकर कहा—“पति क्या गैर हुआ करते हैं। मैं गीतोंकी सेवा करनेकी बात पूछ रहा था।”

‘ओह—गीतोंकी।’—कहकर तुरत ही मैत्रेयीने हँसकर घरमाके मुँह नीचे झुका लिया।

द्विजदासने कहा—“अच्छा तैर, करो, अपनी बीबीकी ही बात करो।”

मैत्रेयीने कहा—“बीबी अब बीती नहीं है। तीन साल हुए, एक लड़का और दो बड़कियाँ छलक मर गई है। बीबी-साहबने साह-पर भी धोरन नहीं भय, फिर म्याह कर लिया है। कितना बढ़ा अन्धकार है, बतारए तो।”

द्विजदासने कहा—“पुरए ऐसा ही किया करते हैं। वे एत अन्धकार नहीं मानते।”

“आप भी ऐसा करेंगे क्या ?”

“पहले एक तो कर सूँ, उसके बाद दूसरीके बारेमें सोचूँगा ।”

मैत्रेयीने कहा—“पेला करनेसे तो नहीं चलेगा । ठक आपकी भानी मीमूह थी, पर अब वे नहीं हैं । मौकी देक मरक कौन करेगा ?”

द्विकदासने कहा—“कौन देख-भाक करेगा, सो मैं नहीं जानता मैत्रेयी, शायद कड़की-कमार्ई ही उनकी देख मरक करे, या फिर और कोई जाकर इसका मर से,—संसारमें कितनी अरुमक बातें लभक हो जाती हैं, कोई नहीं कया लकता । हम लोगोंकी बात जाने दो, तुम अपनी बात करो ।”

“पर मेरी अपनी बात तो कुछ है नहीं ।”

“कुछ भी नहीं है । बिककुल ही कुछ नहीं ।”

मैत्रेयी पहले तो अरु लिकुड़-सो गई, उसके बाद अरु-ठा हँसकर करने लगी—“ओहो मैं लभक मर, आपने चौपरो लकककी बात कित्तीसे सुनी होगी शायद । लिकुड़, कैते मिकक अरुमकी हैं, कीकीके मरते ही कहींसे प्रस्ताक मिकका दिवा मुसते मरक करनेके लिये ।”

“उतके बाद ?”

मैत्रेयीने कहा—“कीकीके पाल कन बहुत है मी और बापुकी दोनी ही रकी हो गये । लोषा, और कुछ हो कहे न हो कीकीके बाक-कपने तो सुनी रहेगे । कैसे संसारमें मेरे लिये और कहीं काम ही न हो कीकीके बाक-कपको पाकनके लिका । मैंने कइ दिवा, पेसी बात तुम लोग फिर कवानकर जाने, तो मैं कहींसे लगाक मर जाऊँगी ।”

“क्यों, तुम्हें इतनी क्पावा आपलिक कहीं थी ?”

“आपलिक नहीं होगी । संसारमें इतनी कहीं लघासिककी और कौन-सी बात है ?”

द्विकदासने कहा—“यह बात तुम्हारी लक नहीं है । संसारमें समी लोषोंमें क्पासिक नहीं जाती मैत्रेयी । मेरी मीने ही मर-लककका पका-लोषा वा ?”

मैत्रेयीने कहा—“पर अलिकमें उतका नकीका क्या मिकका ? क्पाकक लमान तुम्हपुर्व ककना इल बरमें और कमी दुर् ली क्या ?”

द्विकदास लक रह गया । इलकने बात लुट नहीं है, किकु लक भी इरुगक मरी । सो-लीन मिककक अलिकधुतके लमान कैंटा रहा, फिर अकककक मानो

उसे घेतना-सी हो आई बोला—“मैरेगी, प्रतिपाद मैं नहीं करूँगा। इस परिवारमें महादुःख आ गया यह सब है, मगर फिर भी मैं जानता हूँ कि तुम्हारी यह बात साधारण जिबोंके अति दुष्प्रसंगिक हिसाबसे बढ़कर और कुछ नहीं है।” इतना कहनेके बाद ही वह उठ खड़ा हुआ। उसका अपना समाप्त हो चुका था।

दूसरे दिन दोपहर-मर बह पर नहीं खा, किस कामसे कहाँ चला गया था सो नहीं जाने। संध्याके अँधेरेमें चुपचाप बह पर बापस आया और सीधा बन्दना के कमरेके सामने आ खड़ा हुआ, आवाज दी—“मीटर आ लकटा हूँ !”

“कौन, दिग्गु बाबू ! आइए, आइए।”

हिजदासने मीटर बाहर देखा—बन्दनाने अपना बकस मकस सँभालकर छेपार कर लिया है। सपरकी तैयारीका लगभग पूरी हो चुकी है। बोला—“सचमुच ही चक दी ऐं ! एक दिन भी ज्यादा नहीं रमा आ सका !”

उसके चेहरेकी तरफ देखकर बन्दनाकी इच्छा नहीं हुई कि कुछ कहे, फिर भी कहना ही पड़ा—“अना तो होगा ही, एक-आध रोज ज्यादा रखनेसे काम क्या है बतारए !”

हिजदासने कहा—“कामकी बात तो मैंने सोची नहीं, तिक लोबता हूँ—तमी बच्चे का खर्च है, इतन बढ़ परमें मेरा भव कोद मित्र-जस्यु नहीं रह गया।”

बन्दनाने कहा—‘पुणने मित्र खाते हैं और नये खाते हैं—एसा ही संसार का नियम है दिग्गु बाबू, उसी आधापर धीरज धरके खना पढ़वा है,—संचल होनेसे काम नहीं चलता।’

हिजदासने जवाब नहीं दिया, चुप रहा।

बन्दनाने कहा—“तमय ज्यादा नहीं है, कामकी बातें दो-एक कह लें। मुना होगा धायद धायधर बाबू कम्याजीकी सेकर बने गये हैं।”

“नहीं, मुना तो मही, पर अनुमान कर लिया था।”

“खाते बल एक बूँद पानी भी उन्हें कोद नहीं मिला सका। दानोंने जाके मौको प्रशाम करके कहा—‘इम श्लेग का रहे हैं। मैंने कहा—‘आमा। फिर बूनरी और मुद घेरे रही।—’ इतना कहकर बन्दना चुप हो गई। जिस बजहसे उन श्लेगका जाना पड़ रहा है मीक सामने दिग्गुके कज एतकी जो बातें कही थीं उनका उल्लंघनक मही किया।

कुछ क्षण मौन रहकर वह फिर कहने लगी—“मैं बहुत ज्यादा मुरझ गई हूँ। देखनेसे कफला आती है,—कफलाक सारे किसीके आगे गानो उनसे मुँह खिलाने नहीं बनता। मैथिली कितनी सेवा कर रही है उठनी छायद उनको अपनी कड़की भी नहीं कर सकती। मैं अगर किसी दिन स्वस्थ हो उठी तो वह उसीकी सेवा-टहलते। कड़की बहुत अच्छी है, कुछ दिन उसे पकड़ रखनेकी कोशिश कीजिएगा वही मेरा अनुरोध है।”

“देला ही होगा।”

“हिन्दू ब्राह्म, अपनेसे पहले एक अनुरोध और करती चार्की।”

“करिए।”

“आपको ब्याह करना पड़ेगा।”

“क्यों।”

कल्पनाने कहा—“नहीं तो वह विद्याल परिवार में ही छिप्र-मिह हो व्यवसाय। आप लोगोंकी बहुत बड़ी छति हुई है वह मैं जानती हूँ, पर जो कुछ कहा है वह भी बहुत है। आप लोगीका चिन्ता खान है, कितने उत्कर्ष, कितने आश्रित जन हैं, कितने दीन-हरिजोंके अवलम्बन हैं आप लोग —और सा भी क्या सिद्ध आकसे। कितने पुराने सम्बन्ध पर चारा बहती पक्षी भा रही है आप लोगोंके परिवारमें—कितने दिन कच्ची नहीं, वह क्या भव कम्ब हो जावगी। म्यार्-साहबको सम्झीते जो पत्ता गया है, तो तो प्य बाहुस्य, प्रयोक्तसे व्यति-रिक्त। वह गया ता जाने दीजिए। जो कुछ वह छोड़ गया है, शान्त मनसे उसको परेष्ठ सम्बन्धके प्रहण कीजिए। वह अर्थात्त ही आपक किए अक्षय और काप्री हो, प्रतिदिनकी आबरवकृताभामें भगवान् कमी न रख, आज विद्या क्षेत्रसे पहले उनसे मेरी वही प्रार्थना है।”

द्विबालकी आँसुमें आँसु मर आवे।

बन्दना करने लगी—“आपके पिताजी अल्पक विधासते म्यार्-साहबको अपना सर्वस्व सौंप गये थे, पर वह रहा नहीं। पिताक सम्बन्ध से अपराधी हो गये। परन्तु वह मुझि अगर ईश्वर काकर उन लोगोंके पुण्य-कर्मको वाचामस्त करे, तो किसी भी दिन मुन्बर्डी-साहब अपनेका सात्त्वना न दे सकेंगे। इस अवस्थामें आपको उनकी रक्षा करनी होगी।”

द्विबाल किसी करर आँसुमेंको रोकर बोला—“म्यार्-साहबकी बात इस

तरह किमोने मी नहीं सोची बन्दना, मीने मी नहीं । कैसे आश्चर्यकी बात है ।”

माग्य अन्ध था वो समाधानकी छायाकी ओरमे उसे बन्दनाका पहरा नहीं बील पड़ रहा था । उसने कहा—“मार्ग साहबके लिए मैं सभी तरहके कुत्त अपना सकता हूँ पर उनके बापोंका बोझ ममा कैसे ढोऊंगा ?—साहस नहीं होता । उन्होंने सबको देखने आज बाहर गया था । उनका स्कूल, उनका विद्यालय, उनकी संस्कृत-पाठशाला, मुसलमानोंके लिए स्थापित मक़तब या मस्जिद,—और वे मी क्या दो एक हैं ? बहुत-से हैं । किसान रिआयाकी आप-पार्श्वके लिए एक नहर खुदाई कर रही है बहुत दिनोंतक उसके लिए रुपये ख़राने पड़ेंगे । कागज़ोंमें एक बन्धी सूनी मिट्टी है मुझे—उत्तम मिट्ट दानक आँकड़ हैं । वे लोग सब माँगने अग्रगणे तब क्या कहूंगा कुछ समयमें नहीं जाता ।”

बन्दनाने कहा—“कहिपणा, उन्हें भिन्नेगा । वह सब देना ही होगा । पर एक बात पूछती हूँ आपसे, क्या अबतक उन्होंने इस बारेमें किसीसे कुछ कहा सुना नहीं ?”

“नहीं ।”

‘इतकी बन्द ?’

द्विजदासने कहा—“कुछ गोपन करनेके लिए नहीं, किन्तु कहत मी तो किससे ? संसारमें उनका बन्दु तो कोई था नहीं । जब-जब कुत्त आया है उसे अकेले ही होला है, और जब भानस्य आया है उलझ भी अकसे ही उपमोय किया है । भयबा ज्ञाया हो तो उनक उस एकमात्र बन्दुको ।”—करते हुए उसने ऊपरकी ओर देगा, और फिर कहना शुरू किया—“पर उत बातको आरमोबन्धन कैसे जान सकते हैं ? जानते होंगे सिद्ध वे और उनका वह अस्तवामी ।”

बन्दनाने पुनरुक्त साथ पूछा—“अबउा दिव् बाबू, आपको क्या माखम होता है मुन्गरी साहबने किसी दिन कितसे प्यार नहीं किया ? किसी मी आदमोको !”

द्विजदासने कहा—“नहीं, वह बात उनमें प्रकृतिक विच्छ है । मनुष्यके संसारमें इतना बड़ा निःसंग एकाकी पुरा और कार्र मी न होगा ।”

इसके बाद बहुत देरतक दोनों चुप रहे ।

बन्दनाने अचानकसे मनो एक बात-सा झड़के फेंक दिया, कहा—“ता

होने दीखिए दिखू बाबू। उनका साथ काम आपको उठा देना पड़ेगा,—
एकका भी छोड़ नहीं सकेंगे।”

“पर मैं तो माह-साहब नहीं हूँ, अकेला उठा बैठे सकूँगा बन्दना।”

“बकेंछे नहीं, दोनों बर्तें भिन्नक उठाइएगा। इसीसे तो करती हूँ आपसे,
आपको ब्याह करना होगा।”

“भार प्रेम हुए बिना मैं ब्याह कैसे करूँ ?”

बन्दना आश्चर्यसे उसके-मुँहकी ओर देखने लगी, बोली—“यह क्या कह
रहे हैं दिखू बाबू ? यह बात तो हमारे सम्बन्धमें सिर्फ़ हम ही लोग कहती रहती
हैं। पर, आपका परिवारमें कितने कब प्रेम करके ब्याह किया है जो आपका
उसके बगैर काम न चलेगा ? इत बहानेको छोड़ दीखिए।”

द्विबधाउने कहा—“माना कि यह विधि हमारे परकी नहीं है, किन्तु उठी
नबीरको हमेशा मानना पड़ेगा, और उसीसे मुली होऊँगा, यह विश्वास भंग
नहीं रहा है।”

बन्दनाने कहा—‘विश्वतके विरुद्ध तक नहीं कम सकता, और मुझकी
अमनता भी नहीं दे सकती, कारण यह धन किन्के हाथमें है उनका पता मैं
नहीं जानती। उनकी विचार-प्रवृत्ति अप्रसूत है—उसमें लालची लोभ बुरा है।
सेकिन, ब्याहके पहले नवन-अन-र-वन पूर्वानुपगक लेख मैं बहुत देल चुकी हूँ,
और फिर एक दिन उस अनुपगने बाढ़ लगा ही न जाने किस गहन वनमें,
जा प्रकृत भी बहुत देला। मेरा कहना है कि उस आश्रममें प्रेम रचनेकी अस्मृत
नहीं दिखू बाबू। खानेका म्यथा-मृग भिन्न वनमें भरता खोख्या डूने, उबे बर्तों
परने दीखिए, इत परमे तादर बुझानेकी कोई अस्मृत मरी।”

द्विबधाउ मुक्तपरावा हुआ बोला—“इतके मानी हैं कि सुधीर बाबूने
आपके मनको कुपी तरह विगाड़ दिया है।’

बन्दनाने भी हँसकर कहा, “हाँ। किन्तु मनका उत समय भी कितना कुछ
बाकी था उसे विगड़ दिया आपने। और उसके बाद जाने हैं अशोक। अब
क्यों लकड़ीरों से ही टिके रँगे तो बच जाऊँ।”

“इ कौन ? अशोक ? उनसे आपको किस बातका डर है ?”

“डर यह है कि उन्होंने भी अकस्मात् प्रेम करना शुरू कर दिया है।”

“तो क्या आपका बही संकल्प है कि कोई प्रेम-व्यारके पाठसे भी म

नकसे !”

“हाँ, यही मेरी प्रतिज्ञा है। क्याह अगर कमी किया, तो यही संकल्प कर ला है कि बड़े-मारी मुन्नी खाणामे कितो बड़ी-मारी बिहम्बनामें पैर न रूँ। इतोसे भयोके बाबूको कक लावधान कर दिया है कि मुसे प्यार करल ही न मोग लही होऊँगी।”

“मुनके उन्होंने क्या कहा !”

“कहा कुछ भी नहीं, तिक मेरे मुँहकी तरफ उक लगाकर देखते रह गये। देखकर मुसे बड़ा दुःख हुआ दिन् बाबू।”

“दुःख अगर सचमुच ही हुआ हो तो अब भी ठम्पीर है। किन्तु जान रमिपण यह सब माँतोके परकी पोखर प्रतिधिया है,—महज सामयिक, टेकनेवाणी नहीं।”

बन्दनाने कहा—“प्रसम्भ नहीं, हो भी सकती है। मगर सीमा बहुत है। जोचती हूँ, भाग्यसे कककसे भा गई, बरना बहुत-सी बातें तो असंभव ही हो जाती।”

द्विजदास कुछ देर चुप रहकर बोला—“जपादा कक अब नहीं रहा, अन्तिम उपदेश मुसे क्या देना है तां दे जाइए—मुस क्या करना होगा !”

बन्दनाने परिहासकी भंगिमासे कर बार तिर दिखते हुए कहा—“उपदेश चाहिये ! सचमुच ही चाहिये क्या !”

द्विजदासने कहा—“हाँ, सचमुच ही चाहिये। मैं माह-साहब नहीं हूँ, मुसे बन्धुकी बकरत है और उपदेशकी भी। म्याह करनेको मुससे करे जा रही हूँ, तो मैं करूँगा। मगर मुहम्बत न लहा, बगुन्य मी न पापा तां जा मर आप मुस दिने जा रही हैं उसे बहन केने करूँगा !”

द्विजदासके दोहरेपर परिहासका आम्बलतक न था, उसके कठखरने बन्दनाको विचम्बित कर दिया, उसने कहा—“दरकी कार्र बात नहीं दिन् बाबू, बन्धु भावेण, सचमुचका प्रयोजन होनपर मगजान् उसे आपके दरवाजेके पास आकर पहुँचा व्यपंगे। इतना विश्वास रमिपण।”

प्रत्युत्तारमे द्विजदास कुछ करना ही पारता था कि इतनमें बाबा आ पही। बाहरसे मीनेरीको आवाज आर—“दिन् बाबू भीतर हैं क्या ! मैं आपके बुला रही हूँ।”

द्विष्टू ठठके लड़ा हो गया बोला—“बारह बजे गाड़ी जाती है, चाहे-भारह बजे यहाँसे रहाना होना पड़ेगा। टीक बकरर आपको आकर आवाज दूँगा। याद रहे।”—इतना कहकर वह बस्तीसे बाहर चला गया।

×

×

×

२५

बन्दनाके निर्बिभ्र बम्बर पर्वुप जानेके संपादके उत्तरमें कई दिन बाद द्विजवाचका ज्वाब पर्वुपा कि वह नाना कार्योंमें व्यस्त रहनेके कारण बसासमय थिष्टी नहीं मिल सका। जैसा कि बन्दना अपनी भाँवोंसे देख गई है सब वैसा ही चल रहा है। किन्तुने व्यपक कोई खास बात नहीं है। मैजपीके फिठा लो फकफके लौठ गये हैं पर वह सुर नहीं है। मीकी सेवा-जुमूगमें उत्तकी जुटि नहीं पकड़ी जा सकती, पर-शहलीका मगर मी फिज्जहाभ उतीपर आ पड़ा है। टीक ही चल रहा है। परके सब उत्तसे सुष्ट है। स्वर्न द्विजवाचकी तरफसे मी आकटक धिकाकतका फोर कारण उपस्थित नहीं हुआ। अन्तमें बन्दना और उत्तके फिठाके प्रति धुम कामना करके बीर बचानिधि नमस्कारदि फिलके उत्तने पत्र समाप्त फिजा है।

इतके बाद तीन महीनेसे मी ब्यादा सम्य बीत गया, फिठी तरफसे पत्रा दिका कोई आवाज प्रवान नहीं हुआ। विप्रवासका, बीबीका, बाबूका संचार अणनेके लिए बन्दनाका मन चौप-चौबमें बहुत उत्कटित हुआ है, पर अणनेका कोई उत्तर उसे दूँदे नहीं मिला। अपनी तरफसे उन लगेने आकटक लखर नहीं थी कि वे कहाँ हैं, कैसे हैं—सब-कुछ अज्ञात है। फिक इलीकी जानकारीके लिए द्विजवाचको अनुरोधपूवक थिष्टी फिलनेमें बन्दनाको इतनी धारम माखम होती है कि ली-ली इच्छाने होते हुए मी वह काम उसके लिए असाध्य-सा हो रहा है। अब तो बहरामपुरकी स्मृतिकी तीकता और वेदनाकी तीकता बानों ही बहुत दमकी हो गई हैं, परन्तु वहाँसे जसे आनेके बाद तो उत्तकी हाकत प्राय-शोचनीय हो गई थी। फिन्तु दिनपर दिन ब्यप्यनुर विमुन्व बिच घीरे घीरे फिलना ही घाम्त हो रहा है उत्तना ही वह अनुभव होता है कि उन लोयोंके साथ लखमुबका देखा कोई सम्बन्ध नहीं है; एकर निचातके वे मुख-मुासते भरे अनिर्वचनीय फिन विविध घनिष्ठतासे मनमें फिलना ही क्यों न निविदवाक्य संचार

करें, उनकी आयु थोड़ी है। यह समझना उसके लिए बाकी नहीं रहा कि इस आचारविमूढ़ प्राचीनपन्थी मुल्की-परिवारके लिए यह आवश्यक भी नहीं है। मोर्गे पक्षमें शिक्षा संस्कार और सामाजिक परिवर्तनने जो व्यवधान बना रखा है वह जैसा ही सत्य है वैसा ही कठिन भी।

इतनेमें पतिके कर्मव्यस्य पंजाबने मौसीजी का पहुँची। उनकी लचीलत अच्छी नहीं है। पंजाबकी अपेक्षा पम्बर्की भाव-रूपा अच्छी है यह समझ उन्हें किस शक्य करने की है सा सा वे ही जानती हैं, पर भार है, स्वास्थ्यके ही बहान। बम्बर् जानेके पहले बन्दना उनसे मिलके नहीं आर, यह भिन्नावत उनके मनके अन्दर मौजूद थी, परन्तु बहनोठिनके मित्रावका जो कुछ थोड़ा-बहुत परिचय उन्हें मिला है उससे बहनोर् रे-साहबक दरबारमें प्रकट करते नास्तिय रुज करनेकी उन्हें हिम्मत नहीं पड़ रही थी, फिर भी स्वानेकी टेकिएपर बैन्कर इशारेसे उन्होंने यह बात छेड़ ही दी। बोली—“मस्टर रे, आपने एक बातपर गौर किया है या नहीं, मैं नहीं कह सकती, पर मैंने बहुत जगह देखा है कि माँ-बापके इच्छीते लड़के-लड़की इतने ज्यादा भिरी हो जाया करते हैं कि उनके साथ निम्ना मुश्किल हो जाता है।”

साहबने इस बातको ठीक छत्र स्वीकार कर लिया, और देखा कि इच्छान्त उनके हाथके पास ही मौजूद है। आनन्दक साथ उसका ठस्य करत हुए बोले—“जैसे यह पगली बिरिया। एक बार ‘ना’ कर दिया तो, किसकी मजाल कि हीं कर ले। बचनहीने देखा भा रहा हूँ—”

बन्दनाने कहा—“इसीसे शायद अपनी बिरिन लड़कीको प्यार नहीं करते होंगे, क्यों बापूजी।”

साहबने औरक साथ प्रतिवाद किया, बोले—“तू मेरी बिरिन लड़की है। इतना नही। कोई नहीं कह सकता।”

बन्दना हँस दी, बोली—“अभी अभी तो तुम कह रहे थे बापूजी।”
“मैं। इतना नही।”

मुनकर मौसीतक बगैर हमे न रह लकीं।

बन्दनाने पूछा—“अच्छा बापूजी, तुम्हारी लड़ मौझे भी जग मैं देने न मुहली थी।”

साहबने कहा—“तेरी माथे। इस विषयको छत्र तो कितनी ही बार उतते

मेरा समझा हो जाया करता था। एक बार बचपनमें मैंने मेरी पढ़ी तोड़ दी थी। तेरी मैंने गुस्सेमें भाकर तेरा कान पेंठ बिचा और तू रोती हुई दौड़ी भाइ में पास। मैंने गोबरमें उठा लिया और फिर उस दिन तेरी माँके साथ दिन भर नहीं बाका।” — कहते-कहते वे पूर्वस्मृतिके आश्रममें उसके पास आ गये और कड़की का माथा छातोंसे लगाकर धीरे धीरे हाथ फेरने लगे।

बन्दनाने कहा—“बचपनकी तरह अब क्यों नहीं प्यार करते बापूजी !”

साहबने मौसोको बताया—“सुना मिस्तेज पोपाक, पगलीकी बात सुनी !”

बन्दनाने कहा—“क्यों फिर अब तब कहते रहते हो कि तेरा स्वाह करके संतुष्ट मिया देना चाहता हूँ। मैं क्या तुम्हारी आँसूको फिरफिरी हूँ !”

“सुनती है मिस्तेज पोपाक, कड़कीकी बात सुनी !”

मौसोने कहा—“तब है बन्दना। कड़की बड़ी हो जाती है, तो माँ-बापको कैसी अश्रुबद्ध विन्या हो जाती है, जो सुनके कड़की होनेपर ही एक दिन समझोगी।”

“मैं समझना नहीं चाहती मौसो।”

“पर पिताके आगे तो कर्तव्य है बेटी। माँ-बाप तो बिरखीवी नहीं होते, छत्यानका भविष्य न खोबें तो उनके लिए अपराधकी बात होगी। क्यों तुम्हारे पिताजीको मनमें ध्वनि नहीं मिल रही है, इस बातको ठिठके ही समझ सकते हैं जो खुद माँ-बाप हैं। तुम्हारी बहन प्रकृतिका अस्तक मैं स्वाहन कर सकी तबतक मुझसे मर-येट रोटी नहीं त्वाँर गई। सोना छूट गया था मेरा। फिटनी रातें मुझे खी ही जग-जगके विधानी पड़ी हैं, सा तुम नहीं समझोगी, तुम्हारे पिता समझ सकते हैं। तुम्हारी माँ विन्या होतीं खे उनकी भी मेरी कैसी बच्चा होती।”

रे साहबने फिर हिजाते हुए आदिस्तेसे कहा—“बिबकुल तब है मिस्तेज पोपाक।”

मौसो उन्हींकी तरह मुन्दास्त्रि होकर कहने लगे—“आज इसकी माँ खीली होतीं तो बन्दनाक मिय के आपको परेधान कर जाकतीं। मैंने खूर ही क्या कम बिचा है उनको। अब तो उसकी बाइसे भी धरमा खीली हूँ।”

साहबने अनुप्यदन करते हुए कहा—“इसमें आपका योग नहीं। ऐसा ही हुआ करता है।”

मौसी कहने लगी—“यही मैं जानती हूँ। सिर्फ यही चिन्ता बनी रहती थी कि अपनी भी तो उमर बढ़ती चर रही है,—भादमीके मरने जानेकी तो कोई हिम्मत नहीं, मोटे-थी कड़कीका कुछ उद्यम न कर सकी और अपनाक कुछ हो गया तो क्या होगा। मारे चिन्ता और डरके बे तो खूब-से गये थे।”

बन्दनासे भय न सहा गया, उसने देखा कि उसके बापूजीका भी मुँह खूबने लगा है, खाना बन्द हो गया है। उसने कहा—“मौलाजीको बेमस्तक बहुत प्वाबा डर दिलाया है मौसी, और आप भरे बापूजीको भी दिला रही हो। ऐसा क्या हो गया, बताना भैया ! बापूजी अभी बहुत दिन खीयेगे। अपनी कड़कीकी मर्जारके लिए जो कुछ करना होगा उसके लिए उन्हें बहुत समय मिलेगा। तुम छुटमूठकी चिन्तामें मत खालो बापूजीको।”

मौसी फिर दबनेबाजी रुद नहीं। लासकर, रे साहबने जब कि उन्हींका समर्पन करते हुए कहा—“तुम्हारी मौसीको ठीक ही कह रही हैं बन्दना। वास्तवमें मेरी उचीपत अब ठीक नहीं रहा करखी, और यह तो ठीक ही है कि शरीरका कमी बिस्ताठ नहीं करना चाहिए। ये अपनी आशीष हैं, लभ्य रहते ये अगर लाबधान न करें तो कौन करेगा बताओ !”—इतना कहकर वे दोनोंक सुँदकी सरक देखने लगे। मौसीने तिरछी निगाहोंसे देखा कि बन्दनाका चेहरा छायाच्छन्न-सा हो रहा है, ये तुरन्त अविश्व-कन्से स्वस्तताक साथ कह उठी—“यह कहना भायक बिबकुल अलगत है मिस्टर रे। आपकी सी साककी परमायु हो, हमारी सबकी यही प्रायना है। मैंने तो सिर्फ यही कहना चाहा था—”

साहब बीबमें ही शोक ठठे—“नहीं, आप ठीक ही कह रही हैं। सबमुच स्वास्थ्य में ठीक नहीं है। सम्भरर आबधान न होना, कतग्यकी उपेक्षा करना सबमुच ही अनुचित है।”

बन्दनाने भाने गुड़ श्रेषधे समन करते हुए कहा—“भाऊ बापूजी कुछ ला-थी हो न सकेंगे मौलाजी।”

मौसीने कहा—“रहने दीनिए इन सब बातोंको मिस्टर रे। आपका खाना पीना पूरा न हुआ तो मुस बहुत कह होगा।”

साहबकी गाने-पीनेमें रचि बातें रही थी फिर भी बरखी उन्हीं मंजका एक टुकड़ा काटके मुँहमें डाल्य। इसके बाद गाने-पीनेका काम कुछ इस्तक सुनवाप ही चकता रहा।

साहबने पूछा—“अमार्ग साहबकी प्रैक्टिस कैसी चल रही है मिस्टर पोगर ?”

मौसीने जवाब दिया—“अभी तो शुरू ही है। सुना है कुटी नहीं चलती।”

फिर कुछ देर लम्बाया रहा। मौसीने मुँहका प्रात निगलते हुए कहा—“प्रेक्टिस कैसी मी अच्छे मिस्टर रे, मैं उसको बहुत महत्व नहीं देती। मेरा लो फरना है कि उसके मी बहुत बड़ा है आदमीका परिश। उसके निर्मल हुए बीर कोर मी ली कमी बधायर मुली नहीं हो सकती।”

“इसमे क्या लन्देह !”

मौसी कहने लगी—“मेरी एक मुश्किल यह है कि मेरे अन्दर मायकेके शिक्षा संस्कार मोबदू हैं। उन लोकोके हलान्त मनमें मुँचे हुए हैं। उसके एक दिन मी कहीं कम-बेघ देखती हूँ तो मुझे लहा नहीं जाता। अपने अघोकको देखने हूँ लो लमी नैतिक आच-बधाकी बात पाद भा जाती है जिसमें मेरा बचपन बीता है। मेरे पिता, मेरे भार् जैसे वे—वह अघोक मी ठीक बैता ही उठरा है। बैता ही लरल, बैता ही लबार, बैता ही लरिखवान।”

रे साहबने लव-कुल मान किया, कहने लगे—“मुझे मी लोके ऐमा ही लगा है मिस्टर पोगर। लड़का बड़ा लराबारी है ल-लाल दिन वह यहाँ ल, उसके लबलारसे मैं मुल हा गया हूँ।”—इतना कहकर लनोंमे कल्याको लाली मानते हुए कहा—“लवों ठीक कह रहा हूँ न पगली, अघोक हम लोकोके बैता लच्छा लगा ल ? जिस दिन वह यहाँसे गया, मेरा ठो दिन मर मन लयल रहा।”

बन्दनाने लीकर करते हुए कहा—‘हाँ बापूजी, वह लच्छे आदमी हैं ! जैसे लिनपी जैसे ही मद्र। मेरे लो किसी मी अनुलेखर लनोंने ‘नल’ नहीं कहा। मुझे वे बलर आकर न पहुँचा लते ल बड़ी माफल होले।’

मौसीने कहा—‘और एक बात शाबद तुम्ने लेनी होगी बन्दना, ललमें लनोली लिलकुल नहीं, लो कि आलकलक लनोंमें लेरके लय कलमा ही पदेगा कि हमलेके बलुलोके अन्दर पार जाती है।’

बन्दनाने हलते हुए कहा—“तुम्हारे परपर लो किसी दिन किसी लनोके लेना नहीं लेनीली।”

मौसीने हलके कहा—“दिला लरीं महीं बेरी। तुम आलल कुदिल्ली हो, लरमें वे जैसे लोला दे सकते हैं।”

मुनकर रे साहब भी हँस दिये । यह बात उन्हें बहुत अच्छी लगी । घोसे —“इतनी बुद्धि साधारणतः पाह नहीं जाती मित्रेज पोराब । बापके मुँहसे यह बात गर्वझी-खी सुनाह पड़गी, पर बिना कहे भी रहा नहीं जाता ।”

बन्दनाने कहा—“इस प्रसंगको तुम बन्द करो मौसीजी, नहीं तो फिर बापूजीको सम्झावते न पनेगा । तुमने इकसोठी बड़कीक बापोंको ही देखा है पर यह नहीं देखा कि इकसोठी बड़कीक बापोंकी तरह दाम्मिक धादमी भी सभारमें कम होते हैं । मेरे बापूजीकी भावणा है कि उनकी बड़की जैसी बड़की संसारमें बूसरी नहीं है ।”

मौसीने कहा—“उस भावणाकी मैं भी बड़ी हिस्सेदार हूँ बन्दना । सभ्य मित्रनेवासी हो तो वह मुझे भी मित्रनी चाहिए ।”

फिराके मुँहपर अनिबचनीय परिवर्तनकी सन्द-सन्द हँसी चमक उठी, उन्होंने कहा—“मैं दाम्मिक हूँ या नहीं खो तो नहीं जानता पर इतना जानता हूँ कि कम्पा खनकी दृष्टिसे मैं सचमुच ही भाग्यवान् हूँ । ऐसे बड़की बहुत कम बापों को मिलती है ।”

बन्दनाने कहा—“बापूजी, यह क्या, आज तो तुमने भी ‘सन्देश’ नहीं लाया । अच्छे नहीं बने घायद !”

साहबने प्रेरणसे आधा ‘सन्देश’ छोड़कर मुँहमें देते हुए कहा—“सब कुछ दिवियाने अपने हाथसे बनाया है । अपनी बल-बलसे औद्योगिक बाद इतने साध का साध लाना बदल दिया । रसेदार सरकारी, मजिबा, मछलीका शौक, दही सन्देश और भी न जाने क्या-क्या पनाया करती है । किससे सीख आर है आत्म नही, परमें मंगल तो जाने ही नहीं देती । कहती है उलस मेरी तबीयत परराब हा खोधी है । देखिए मित्रेज पोराब, ये सब बंगाली लाने लखत-लखते म्यस्रम हाता है जैसे बुढ़ापेमें मैं अच्छा ही हूँ । अब बाप कुछ भूल भी अपने लगी है ।”

बन्दनाने कहा—“मौसीजीको आरत नहीं है, घायद तकलीब हाती हो ।”

मौसीने इस गूढ़ व्यंग्यपर कुछ प्यान नहीं दिया, बोली—“नहीं-नहीं, एक बीक बादेकी, बर हा मुझे अच्छा हो लगता है । निर्द भाव-दवा बदलना ही तो खेज नहीं है, लाने-पानमें भी खेज हाता जरूरी है । इलीसे घायद मैं इतनी बसदी स्वल्प हो उठी हूँ ।”

“अच्छी होने लगी हो, न मौसीजी !”

“अच्छ । इतमें एक थोड़े ही है ।”

“तो और भी कुछ दिन रह जाओ । और भी अच्छी हो जाओगी ।”

“थेकम क्यावा दिन रहना मी मुमकिन है बन्दना । अघोफने लिखा है कि हर महीनेके आखिरमें ही यह पंखब खेडके लिए आनेवाला है । उधर आनेके पहले ही मुझे वहाँ पहुँच जाना है ।”

गोबन अत्याय समाप्त हो रहा था । साहब उठना ही चाहते थे कि मौसी मन-ही-मन खबक हो ठठी । वे प्रस्ताव पेश करनेके पक्षमें जो अनुकूल बातावरण तैयार कर चुकी थीं उधे अंतोके लिहासे प्रह कर देनेसे फिर पेश करना बुरा हो जावगा, वह सोचकर उन्होंने संक्षेप छोड़कर कहा—“मिस्टर रे, एक बात कहनी थी अगर समय—”

साहब उठी सग बैठ गये और बोले—“नहीं नहीं, समय क्यों नहीं है । कहिए, क्या बात है !”

मौसीने कहा—“मैंने सुना है कि बन्दनाकी भी अतम्पति नहीं है । अघोफ धनवान् नहीं है, पर अपने सुधिसा और पारिव-वकसे स्ट्रगल (Struggle = संघर्ष) करके एक दिन यह उन्नति करेगा ही, यह मेरा हृद विश्वास है । आप अगर उधे अपनी लड़कीके अपाय न समझें तो—”

साहब आश्चर्य भाकर बोले—“लेकिन यह कैसे हो सकता है मिसेब पौयक ! अघोफ आपका अपना मजोबा है, तो रिस्तेमें बन्दनाका मीठप मार हुआ !”

मौसीने कहा—“लिई कहनेके लिए, नहीं तो बहुत दूरका नाता है । मेरी मानी और बन्दनाको मानी दोनों बहने थीं, उधे रिस्तेमें बन्दनाकी मैं मौसी समझी हूँ । वह विवाह निगिद नहीं हो सकता मिस्टर रे ।”

साहब कुछ देर चुप रहे, सायद मन-ही-मन कुछ हिचाब सपाते रहे, फिर कहने लगे—“अघोफको जितना भी मैंने देखा है और बन्दनाके मुँहमें जो मी कुछ सुना है उतसे मैं उधे असोम्ब नहीं समझता । लड़कीका ब्याह तो एक-न एक दिन मुझे करना ही है, मगर उतकी अपनी राय भी तो ब्याने लेना बस्यी है ।”

मौसीने स्नेहके स्वरमें बन्दनाको उल्लाह देते हुए कहा, “धरमाओ मत

बेटी, कह दो अपने बाबूजीसे क्या तुम्हारी इच्छा है ?”

बम्बनाका चेहरा लज मरके लिए मुन्न हो उठा, किन्तु वूसरे ही लज लज स्वरमें उसने कहा—“अपनी इच्छाको मैं विलम्बन कर चुकी हूँ मौसीजी, उसकी खोज करनेकी जरूरत नहीं।”

साहबने डरते हुए कहा—“इसके मानी ?”

बम्बनाने कहा—“मानी मैं डीक-टीक समझाके बठा नहीं सज्जी बापूजी। लेकिन इतीसे यह न लोच लेना कि मैं बाबू दे रही हूँ।”—फिर जय ठहरकर कहा—“यरी ली थीकीका म्याह हुआ था नौ लालकी उमरमें। बाप-मंनि जिनके हाथ उन्हें लीप दिया उन्होंने थीकीके अंगीकार कर लिया, अपनी बुद्धिसे उन्होंने पुनाच नहीं किया। फिर मी, म्याम्बसे जिन पतिको पया बह संतारमें बुद्धि है। मैं उली म्याम्बर ही विधात करूंगी बापूजी। विप्रवास बाबू सायु पुराय है, आनेके पहले उन्होंने मुझे आशीवाद देते हुए कहा था—जहाँ मेरा कस्बाज है, मगवान् मुझे वहीं पहुँचा देंगे। उनकी बह बात कमी छटी नहीं होनेकी। तुम मुझे जो आदेश दोगे मैं उसीका पालन करूंगी। मनमें किसी मझारका लयप, किसी तरहका डर मय मैं न रखूंगी।”

साहब आश्चर्यसे दंग रह गये और उसके मुखकी तरफ देखते रहे, मुँहसे उनके एक शब्द भी न निकला।

मौतोंने कहा—“म्याम्बक लयप तुम्हारी ली थीकी थीं बाबूजीक इससे उनके मतामठका कोई लयाम ही नहीं उठा। अगर तुम लो कम्पी नहीं हो, बड़ी हो गई हो, अपनी मन्दाइ-बुद्धिकी कुम्भेदायी अब तुम्हीपर है, इस तरह आजक मौम्बके म्याम्बने मतेमे लेक लेकना लो अब तुम्हें नहीं लाहता बम्बना।”

“तोहता है या नहीं, मैं नहीं जानती मौसीजी, परन्तु उनकी तरफ, पैल ही, म्याम्बको प्रलम मनसे मान लूँगी।”

“मगर इस तरह उदासीनकी तरह बात करोगी लो तुम्हारे बापूजी अपना मन बीसे स्थिर करेंगे ?”

“जिन तरह इनके बड़े मारने किया था छटी-जीकीके सम्बन्धमें, जिन तरह इनके समल पूर्व पुरन्धेन अपनी-भमनी लम्हानीका विवाह किया था—मेरे सम्बन्धमें भी उली तरह बापूजी अपने मनको स्थिर करें।”

“तुम सुर कुठ लो न देनागी, कुठ भी न लोनेगी।”

“खेसा-सोबी, देना-देखी बहुत देल चुकी मौसीजी । अब और नहीं । जब मरोता करूंगी बापूजीके भाषोबादपर और उस भाषपर बिलख अन्त आबतक कोरं नहीं देल सका ।”

मौसीने इतना होकर अग-कुछ कहुए स्वरमें कहा—“माय्मको हम मीमनली हैं, लेकिन अपने समाज अपनी पिछा, और अपने संस्कार, लखको डुधकर मुर्खबिपोंछ उम कर दिनेका संगर्मा ही तुम्हें इतना प्यादा आच्छर कर जालेग—बह मैंने नहीं खेसा या । तुम्हारी बात सुनकर अब ऐसा नहीं माख्म होवा कि तुम हमारी बही बन्धना हो । मानो हम खेगीके किये तुम बिलकुल ही पराई हो गई हो ।”

बन्दनाने कहा—“नहीं मौसीजी, मैं पराई नहीं हो गई । उन लोगोंको अपनीनेके लिए मुझे किसीको परया नहीं बनाना होगा, यह बात निश्चित अपने ज्ञान आई है । मेरे विषयमें तुम खेग किसी तरहको आशय मत करो ।”

मौसीने पूछ—“तो अखेकको बुझानेके किये एक तार मेरा दिया जाय ?”

“मेरा हो । मुझे कोई आपत्ति नहीं ।”—इतना कहकर बन्धना कमरेसे बाहर पसी गई ।

“मिस्टर रे, तो फिर आपके नामसे ही तार मेरा दिया जाय ?”—कहते हुए मौसीने मुँह उठाकर आश्चर्यके साथ देखा कि अठरमात् रे साहबको आँसू भर आई हैं । इसका कारण उन्हें हँसे न मिला और साहबने धीरे-धीरे जब यह कहा कि देखियेज आब रहनेसे मिसेज खोपाब, लख भी हेतु न समझ लकनेके कारण उन्होंने पूछा—“क्यों, रहने क्यों दें मिस्टर रे, बन्धना तो सम्मति रे ही गई है ?”

“नहीं ।” उनके आँसुओंने मौलर-ही-मौलर मौसीको झुड़ कर दिया । एक प्रवीण और परम्य व्यक्तिका एक तरहकी सेप्टिमेप्टेन्टि (माधुष्या) उनके किये अलख हो डठी । अगर आगे बिद करनेका भी उन्हें साहस न हुआ । हो-गक मिनट हुए रहनेके बाद साहबने कहा—“उसके बापके करनेकी विन्दा तो मैंने ही है पर उसकी माँ नहीं है । तो उसको भी विन्दा मुझे करनी पड़गी मिसेज खोपाब । इसके किये थोड़ा समझ चाहिए ।”

खेसीने मन-ही-मन कहा, यह और एक स्टुटिड सेप्टिमेप्टेन्टि (मूलतापूव माधुष्या) हुई । साहबने इसे तावा वा नहीं तो नहीं माख्म, पर अक्की बार

उन्होंने बरबरकी बरा म्यान हँसो हँसो हुए कहा—“मुझसे तो यह है कि उसकी बात हम कोई अच्छी तरहसे समझ नहीं पाते । किन्तु आजकी बात नहीं, बंगालसे आनेके बादसे ऐसा क्या रहा है कि उसे ठीक-ठीक मैं समझ नहीं पा रहा हूँ । उसने सम्मति ही ज़रूर है, पर यह उसकी अपनी है वा उसके नये रिश्तेदारकी, कुछ समझमें ही न आया ।”

“नया रिश्तेदार ! मानी !”

“मानी मैं भी नहीं जानता । किन्तु स्पष्ट देख रहा हूँ कि बंगालसे यह न-जाने क्या एक चीज अपने साथ लेती आई है । रात दिन वही उसके पेंसि रहती है । उसका खाना-पीना बदल गया है, बातचीत बदल गई है, खन खन और खन्ना-फिरनातक मादूम होता है पहले जैसा नहीं रहा । तड़के ही उठकर नहा सोकर मेरे कमरेमें पहुँच जाती है और पाँच घूमी है । कहता हूँ, विदिया पहले तो तू यह सब कुछ न करती थी ! क्या कहते हैं तब जानती न थी चापूरी । अब जो मुझारे पॉसेकी पूज मयसे जागाकर दिन शुरू करती हूँ तो अच्छी तरह समझ लेती हूँ कि यह मुझे दिन-भरक सब कामोंमें रक्षा करेगी ।”—कहते-कहते उनकी आँसु फिर उबड़िया आई ।

मेरी मन-ही-मन अत्यन्त नाराज होकर बोली—“यह सब नया बंग सील आई है उसी मुझसेके परसे । आप तो जानते हैं कि वे किस दक्खिनासुस आई कर रहे हैं । मगर इसे रिश्तेदार नहीं कहते, कुलस्कार कहते हैं । यह पूजा-ऊजा भी करती है !”

साहबने कहा—“मादूम नहीं, करछे है वा नहीं । छायद नहीं करछे । कुलस्कार मुझे भी लगा है, मना मैं किया जगया, पर यह पगली परछेकी तरह अब तो बहुत ही नहीं करछे कुलस्कार किन्तु मुनती और देखती रहती है । मेरा भी मुझ पर हा जाता है—कुछ कहते नहीं बनता ।”

मौलाना कहा—“यह आपकी कम-शरी है । पर इतना निमित्त समझ भीजिए कि इसे रिश्तेदार नहीं कहते, इसका नाम है मुपररिदघन, अन्धभदा । इसका प्रभव देना अन्धाय है अन्धाय है ।”

साहब बुर्जियाके साथ धीरे-धीरे कहने लगे —“बरी हो छायद । रिश्तेदार छायद मुँहसे ही करता रहा हूँ, कभी सुद या पचा की नहीं उठकी, उठका नेचर, स्वरूप, क्या है वा भी नहीं जानता किन्तु कभी-कभी अबाहू होकर लावा करता-

हूँ कि लड़कीको इस तरह ऊपरसे नीचेतक बरक किसने दिया ?” वह हँसी नहीं, आनन्दकी खंखटा नहीं, बर्षाप्रणुके लिखते हुए पृथ्वीको तरह उसकी पेंसुविर्षी मयनों पानीसे मोगी हुई हैं। कमो उसे बुझकर करता हूँ पगली, मुझसे छिपा यत्न, भीतर-ही-भीतर तुझे किसी बीमारीने तो नहीं घेर लिया है। चउसे हँसके फिर हिजाकर कह देती है नहाँ बापूजो, मैं थिङ्गुळ बण्ठी हूँ, मुझे किसी बीमारीने नहीं घेर। हँसती हुई वह तो परक काममें छग जाती है, पर मेरी छाठीके पंकर छीने पड़ जाठ हैं मिसेज पीयाळ। यही एक बड़की है, मीं नहीं, अपने हापसे इतना बड़ा किया है इसे,—बान्ना सर्वल देकर मीं अगर बण्ठी उठी कन्दनाको केसीकी बेसी बापस पा जाता—”

मोखीने छेर समाकर कहा — ‘पाकेगे। मैं बचन दे रही हूँ, बकर पयेंगे। यह सिर्फ एक सामयिक बण्णवाद है, बर्मकी सनक मीं हा सफ्ती है पर है निम-कुळ निस्वार। थिङ्ग उन मोग्याक संलग्मे बानेका शणिक थिङ्कार है। ब्पाह कर यीञ्चिए, सब दो दिनमें ठीक हो बायगा। इमेयकी थिङ्ग ही बावमीमें रह जाती है मिरर दे, दो दिनकी सनक दो ही दिनम खतम हो जाती है।”

साहबने लसरी हुए, पर लन्देह नहीं मिय। बोसे—“उठको कहिये किससे क्या प्रेरणा मिम्मे, मुझे नहीं मालूम, किन्तु मुना है, पयि वह जाती है, तो फिर लुच्चे मनुष्यके मनसे उठे हर्मिज नहीं मियया या सफ्ता। मनुष्यक थिर दिनके बान्पासको वह एक छत्रमें बरक देती है। नशा का मिञ्चता है रलकी बायमें, खँवन-मर फिर उलको कुम्परी नहीं जाती। रली बातका मुक्त बर है मिसेज पीयाळ।”

प्रमनुत्तरमें मोखी अरु बबबाकी हँसी हँस ली, कदने बगीं—“बाहिबात है बाहिबात। मींने बहुत देखा है मिरर दे, दो-चार दिन बाद फिर कुळ नहीं रह जाता। फिर बरीका बरी। लेकिन इसे बकने इना भी ठीक नहीं,—आज ही अछेकका एक ठार कर हूँ—वह भा ब्य।”

‘आज ही मेथेंगी !’

‘हो आज ही। और आण्डे नामने।”

साहबने मनु कंग्से सम्मति ज्वाते हुए कहा—“कैता ठीक समझ करिए। मैं जानता हूँ, अछेक बण्ण बड़का है। परिकथान दे, लराबायी है—नहीं तो कन्दना बरके साथ बानेकी इतनाय राजी म होती।”

मौसीने इसी बातको जय बग-फुल्लकर कहना चाहा पर इतनेमें एक विप्लव आ खड़ा हुआ। बन्दनाने कमरेके भीतर आकर कहा— 'बापूजी, आज हाजी साहबके यहाँकी औरतोंने मुझे चायक लिए निमंत्रण दिया है। दोपहरको जाऊँगी,—शामको आमतसे भीरते बरु मुझे लाय लेते आना।'

मौसीने पूछ—“उनके घर तो तुम कुछ खाओगी पैओगी नहीं बन्दना !”

“नहीं।”

“क्यों !”

“मेरी तबीयत नहीं होती।—बापूजी, तुम भूक तो न खाओगे !”

“नहीं बेरो, तुम्हें खाना भूक बार्क, ऐसा मी कमी हो सकता है।” करते हुए राय साहब बग ईस दिखे। फिर बोले—“अच्छा आ रहे हैं। उन्हें आज एक बार मेज दूंगा।”

“अच्छी बात है, मेज दो।”

मौसीने कहा—“मैं ही खबरदस्ती उसे मुक्या रही हूँ। इतना, आनेपर उसका असम्मान न होने पाये।”

“इसे मत मौसीजी, हमारे यहाँ चिठीका असम्मान नहीं किया जाता। असोक बाबू खुद खानते हैं।”

बड़कीकी बात सुनकर राय साहबने प्रसन्न होकर कहा—“भाहित आते बरु रास्तेम आज हो वार कर दूग निरिया। आज शुक्रवार है, सोमवारको बरु यहाँ पहुँच सकता है अगर काइ बिम न आया।”

इतनमें दरबान डाक लेकर आ पहुँचा। डेरक डेर अल्पचार हैं, जगह-जगहकी चिट्ठी-पत्री भी कुछ कम नहीं। हजर कुछ दिनोंस डाकक प्रति बन्दनाका औमुक्य नहीं पा। बरु समझ गई थी कि प्रतिदिन आया करक प्रतीक्षा करना बुरा है। उसकी याद करक चिट्ठी शिम्नेचामा है ही कीन। बरु अब हो रही थी कि राय साहबन उसका नाम लेकर कहा—“तेरे मामकी मी दो चिट्ठियाँ हैं बन्दना। माद, लोभित, एक भावज मी है मिठेज पायाज।”

अन्तेते मी इतरेकी चिट्ठीपर मौसीका बगारा कुहरक है। मुँर बड़ाकर देखती हुई बोली—“एक तो अगोरक हायकी चिट्ठी हुई माहूम होती है। वृत्तरी कितकी है !”

इस अकारण प्रस्नका बन्दनाने कोर उत्तर नहीं दिया, रानो चिट्ठियाँ

हाथों से कर वह अपने कमरेकी तरफ चला दी।

राज साहबने मुसकराते हुए कहा—“भयोकके साथ म्यूसम होता है चिट्ठी पत्री चल रही है। तार कर हूँ वह पता भाये। मड़का बालाबमें अम्मा है। उसपर विश्वास न होता तो बन्दना कमी चिट्ठी न लिखती।”

प्रत्युत्तरमें मौसी भी गर्बके साथ बोल हँस दीं। अर्थात् ‘बनती बहुत कुछ हूँ।’

शामके बत्त आफिससे बीट्ये बत्त हाजी-साहबके घर होते हुए रे घाहन अकेले पर बीटे। बन्दना वहाँ नहीं गईं। मौसी सामने दी पढ़ गई, मुँह बनाकर बोली—“बन्दना चिट्ठी छेकर जो टयकी पुसी है अपने कमरेमें, सो अब तक निकली ही नहीं।”

राज साहबने ठदरिफन-मुससे पूछा—“लाया नहीं।”

“नहीं सभरे बही हो-भार फल लाये थे, फिर कुछ नहीं लाया।”

राज साहबने ठेकीसे बन्दनाके कमरेके सामने जाकर दरवाजा खटलदाया, बोले—“चिट्ठिया।”

बन्दनाने किबाड़ लोल दिये। उतक बेहरेकी तरफ देखते ही राज साहब सभ ख गये, पूछा—“क्या हुआ री।”

बन्दनाने कहा—“बापूजी, आज रातकी गाड़ीसे मैं बकरामपुर जाऊँगी।”

“बकरामपुर ! क्यों !”

“द्विबदास बाबूने एक चिट्ठी लिखी है,—पढ़ोगे बापूजी !”

“तू पढ़, मैं सुनता हूँ।”—करते हुए वे एक कुर्सी पीचकर बैठ गये। बन्दना उनसे खटकर पढ़ी हा गई और चिट्ठी पढ़कर सुनाने लगी,—

“सुनरिठामु

आपके जानेका दिन बार आटा है। लहानमें राड़ी लड़ी पी और आपने कहा था कभी-कभी चिट्ठी देनेके लिए। मैंने कहा था—भारतीय भारमी उदर, चिट्ठी पत्री लिखनेकी क्यादा भारत नहीं, और अम्मी तरद लिखना भी नहीं जानता। वह मार बलि और किसीर छेड़ जाइए।

सुनकर आप सभ हाकर मुँहकी तरद देखने लगीं। उतके बाद गाड़ीपर जा पीर, हुनरी बार अनुपेच नहीं किया। थापर आपने सोया होगा कि बलीअम्ब

जिसे ऐसे समयमें भी एक आघ बख्ती बात मूर्हर नहीं माने देता, उसके आगे और कहा भी क्या जा सकता है।

मैं ऐसा ही हूँ। फिर जो भाशा थी कि अगर कभी मिलना ही हो तो ऐसा कुछ निम्न सर्व् जो राजी-कुशोकी लवरसे अधिक हो और वह मिलना बनायास ही मेरे समस्त अपराधोंकी समा मोग सख।

मदमें सोचा करता कि मनुष्यके लिए क्या अनसोचा दुःख ही है? अन सोचा दुःख क्या संसारम होता ही नहीं?

भाई साहबक हृद हकता क्या बराबर आँसू मीचे ही रहेंगे, आँसू लोम्बर कभी देखते ही नहीं? सपनन जो घटित हो गया वही निरस्पापो बना रहगा, उसके दिमाने-मिदानकी शक्ति क्या कही भी नहीं है?

देखा गया कि नहीं है,—वह शक्ति कही भी नहीं है। न तो मय्यान् ही बिये, न उसका मक ही उसल मत हुआ। निधूम निकम्प दीप-शिल्पा आज भी क्योंकी त्यों ऊप्यमुषी होकर बन रही है, स्याति कहींस भी रंभमात्र नष्ट नहीं हुई है।

यह प्रसंग क्यों छड़ा, सा कतल्यना है। तीन दिन हुए माइ साहब पर वापस आ गये हैं। सबेरे जब वे गाड़ीसे उठते तो उसके पीछे-पीछे उतरा बासू। उसके पाँव नगे वे भार मयमें उचरपय^१ पड़ा था। गाड़ी वापस पत्नी गई, और कार नहीं उतरा। सबेरेकी भूम छतर लड़ा था, आँसूक भागे सारे सुनिया अन्ध चरमप हा उरो,-टीक अमावसकी रातकी तरह। सापह दो ही मिनर बीते होंगे, उमक बाद सब खानने लगा, फिर लन लन हो आया। पंता भी हुआ करता है इसके पहले मैं नहीं जानता था।

मीचे उतर आया। भाइ साहबने कहा—तेरी मामी एक सबेरे मर गईं हैं। हाथमें अपने-पैते बंधा नहीं हैं, उसके लिए मामूली-सा भाइका आवाजन कर दे। मैं कहाँ हूँ?

मैंने कहा—टाका गई हैं, अयनी कड़कीक पर।

'टाका!'—उर सुन रहकर बोले—क्या जानें, सापह आ न सकेंगी, पर मातृदाप जानकर बासू उगदें बिट्टी उम्बर लिए दे।

१. उचरपय = माता का विनाशी हस्त होनेपर, अर्थात् दूर होनेके अनेक-ही शक्ति हकना कार्यवाही बन्नी-सा एक कथा।

मैंने कहा—बिस्लेगा क्यों नहीं !

बाबू बीबा आबा और मेरी गरदनसे लिपटकर उतने अपना मुँह छिप भिवा। उसके बाद ये उठा। मैं उस रोनेकी कोई म्यापा नहीं, बैठे ही चिट्ठीमें प्रकट करनेकी मी म्यापा नहीं। शिकारका आनपर मरनेके पहले अपनी अन्तिम नाबिध बिल म्यापमें छोड़ जाता है बहुत-कुछ बैठा लमसो। उसे भोरमें उठाकर म्याग आबा सीधा अपने कमरेमें। वह बैसा ही रोता रहा मेरी छातीमें मुँह छिपाकर। मैंने मन-ही-मन कहा—भो रे बाबू नुकसानकी दृष्टिसे तैने ही कुछ स्वादा लोवा हो सो बात नहीं, और मी एक आदमीकी छतिकी म्यावा तुम्हसे कहीं अधिक बढ़ गई है। और फिर तुम्हसे समझानेवाला तो कोई है, पर उसके कोई भी नहीं है। सिफ एक भाषा है—बखना अगर समझ सकें।

इस तरह बहुत देर बीत गई। अन्तमें उसकी आँखें पौछे हुए मैंने कहा—तू बरे मर रे, मों न रहें, बाप न रहें पर मैं तो हूँ। क्य तो उनका न पुका सकेगा, पर उसे अस्वीकार कमी नहीं करेगा। आज सबसे बढ़कर ब्यस्य और सबसे बढ़कर नुकसानके दिन यही रही तरे काकाकी धारण।

किन्तु इस विपदाको भेकर जब बाटें न बढ़ाकेगा। बाटीम है ही क्या। बचपनमें मिठाकी कहा करते थे मुझे गंवार, मों कहती थीं जंगली। भाई ताहब मी कितनी ही बार गुस्सा हुए हैं—अनाबर और भवहेम्नासे कितने ही दिन जब यह घर लिस्कर हो उठा है, तब भाभी ही बाई हैं मेरे पान और उम्होंमे कहा है—ब्याबजो, क्या बाहिए दुम्हें बठाओ तो ! गुस्सेमें मैंने जवाब दिया है—कुछ नहीं बाहिए माम्मे, मैं बका आकेगा महांसे।

‘कब !’

‘आज ही।’

मुनकर हुंतेके कहतीं—हुकम नहीं है जानेका। बाओ तो देखें मेरे हुकमके लिमाफ।

फिर नहीं का सका। पर बढ़ जानेका दिन जब लचमुच ही आ गया तो ये ही बली गई। सोचता हूँ सिफ मेरे ही लिए या हुकम, उनको हुकम देनेवाला कोई नहीं या बुनियातें !

भाई ताहबने पूछ—कैसे मर्गें वे ? बोले—कमरुतेमें ही तबीयत लगाव हो गई थी—छाबर मीतर-ही-मीतर बहुत लोया करती थी—दर से गया

पछोड़की तरह। पर कहीं भी सुविधा नहीं हुई। अन्तमें हरिद्वारमें हुम्नार आ गया, मेकर चम्म भाया काछो। वहीं देहान्त हो गया। वस।

पूछा—इलाज हुआ या मार-साहब ?

बोले—यथासम्भव हुआ ही था।

पर वह 'यथा' कितना-सा था, सो मार साहबके सिवा भीर कोई नहीं जानता।

इच्छा हुई कि कहीं मुझे इतनी बड़ी सजा क्यों दी ? क्या किया था मैंने ? पर उनके मुँहकी तरह देखकर इस प्रश्नको जवानपर न लय सका।

पूछा—वे किसीके कुछ कह नहीं गए मार साहब ?

बोले—हाँ। मरनेके आठ-दस घण्टे पहलेठक रोया था। पूछा कि सती, मोंसे कुछ कहना है ?

बोली—नहीं।

'मुझमें ?'

'नहीं।'

'दिल्ले ?'

'हैं। उठमे मेरा आशीर्वाद कह देना। कहना, सब रहा।'

मैं भागकर माथीके छूने घरमें आ गया। पेटरो उतरवानेमें उन्हें बड़ी शरम लगती थी। सिर्फ एक तलवार उनकी आन्तमाथीमें छिपी हुई रखी थी। मेरी ही उतारी हुई थी वह। उसके सामने लड़ा हाकर बोला—धम्प हो गया—मैं माथी लमस गया आज तुम्हारा हुकूम। इतनी खप्पी खरी आभोगी, वह मैंने नहीं बोचा था। मगर, कहीं भी मगर हो तुम तो देखोगी कि तुम्हारे आदेशकी मैंने उल्लेख नहीं की। सिर्फ इतनी शक्ति हो कि तुम्हारे शीर्षमें किसीके सामने झोंसू न सिरें। पर आज बर्तक रहने दो उनकी बात।

खब रह गया मैं। जाले बल्ल आगने अनुरोध किया था ग्राह करनेके लिए। कारण, इतना भार अकेला मैं नहीं ही सकता—नयी-साथीकी बन्धन है। वह लगी होगी मैत्रेरी—परी आगके मर्ममें था। मैंने आपत्ति नहीं की, सोचा कि लक्ष्मणमें पन्द्रह भाना आनन्द ही जब मिर बुका, तब बाकी एक आनेके लिए एसीयातानी न करेगा। किन्तु वह भी धाज नहीं होता शीघ्रता—माथेकी मृत्पुने ला ही अन्तर्नीय बाधा। बाधा किन पावकी ? मैंनेही खबर

तो से सकती है, पर वह बोल नहीं दो सकती। वह बात मातूम कर ली है। पर मेरे लिए भवकी बार वह बोल ही हो गया है मारी। फिर भी कहूँगा कि विपत्तिके दिनोंमें उसने हम लोगोंके लिए बहुत किया है। उसके लिए मैं उसका कृतज्ञ हूँ। समय अगर कभी आता तो उसका कदम भूँगा नहीं।

कल बहुत रात बीते बाबू रो उठा। उसे किसी तरह सुष-सुषुकार में पल्ल गया मारि साहबके कमरेमें। देखा कि वे जगकर किताब पढ़ रहे हैं। मैंने पूछा—कौन-सी किताब है मारि साहब? मारि साहबने किताब पढ़ करके हँसते हुए कहा—क्या करने आता तू बता! उनकी तरह बैसकर, या कुछ कहने गया या छो न कह सका। सोचा, सोते-सोते बाबू रो उठा है, उसमें विप्रदासका क्या है? दूसरी बात मनमें उठ आरि, बोला—आसके घर आप कहाँ रहेंगे मारि साहब? कलकत्ते?

उन्होंने कहा—ठीपठाना करने आऊँगा।

‘औरेंगे कलकत्ते?’

मारि साहब जरा हँसके बोले—कौहूँगा नहीं।

सत्य होकर उनके मुँहकी आर लड़ा बैलठा रहा। सन्देह न रहा कि उनका संकल्प टक नहीं सकता। मारि साहबने सदसामम छोड़ दिया।

परन्तु, अनुनय विनय रोना-बिडना आस्तिर कितके आगे? इत निष्पूर संस्थापीक आगे? इसके बढ़कर और अपमान क्या हो सकता है?

मैंने कहा—लेकिन बाबू!

मारि साहबने कहा—विमाकषके पास एक आभयका पठा क्या किया है, वहाँजामे छटे बम्पोंका मार उठा छेते हैं। शिक्षा भी वे ही छेते हैं।

‘उन लोगोंक हाप छीप रहेंगे उसे? और मैंने उसे पाक-पोसकर बढ़ा किया है तो?’

उसके बार में बोनी हास्येते जान बचाकर माय आता बहते। उन्होंने क्या कहाव दिया, मैंने नहीं सुना।

बाबूके पास बैठकर लारी पठ छोपठा रहा हू। कहीं इतका किनाय है, किसी भी तरह पठा नहीं पा सका। बार उठ आरि आन्की। आप कह गरि जी कि कन्सुकी जब लक्षमुच ही जरूरत होगी लन भगवान् अपने आप ही पहुँचा रहेंगे उसे हरबाजेके सामने। कहा था आपने कि इत बाकपर विधाय रहलो।

कौन यन्तु है, सब यह आयेगा मासूम नहीं, फिर भी बिनास किये हुए बैठ हूँ कि मेरे इस अत्यन्त प्रयोजनके समाप्त एक दिन यह आयेगा ही।

—द्विजराज ।”

पढ़ना स्वतन्त्र होनेपर देखा गया कि राय साहबजी जीर्णोत्थित भाँसू बढ़ रहे हैं। स्थावर निकालकर उन्हें पौष्टने लगे, सोसे—“भाब ही बाबा घरी, मैं बापा नहीं दूँगा। दरवान और तुम्हारा यह बूढ़ा हिम्नू भी साथ आया।”

बन्दनाने छुटकर पिताके पाँच रुप और सिरसे हाथ लगाती हुए बोली—
“जानेकी तैयारी करके बापूजी, जाती हूँ।”

×

×

×

२६

मिनेज्ज बिराजदत्त मोहर लेकर दृष्टानपर उपरिप्लत थे। उन्होंने बन्दनाको सम्पन्नके साथ ट्रेनसे बहारकर गाड़ीमें बिठाया।

बन्दनाने पूछा—“माँ अभीतक घर नहीं आरें दत्तजी ?”

“नहीं शीरी ?”

“जैनेपी ?”

“नहीं, उन्हें लो कोर जाने नहीं गया।”

“बाबू अष्टी तरद है ?”

“हाँ ?”

“मुन्वकी साहब ? हिन्नु बाबू ?”

“बड़े बाबू अष्टी तरद हैं, पर छोटे बाबू बेगनेमें दैते अष्टे नहीं मासूम हात।”

बन्दनाने पूछा—“कुमार-उगार लो नहीं आया ?”

दत्तजीने कहा—“टोक म्यसूम नहीं दीरी, पर काम-काज लो लर कर रहे हैं।”

बन्दना कुछ देर पुन रहकर बोली—“दत्तजी, मुझे ऐसा लगता है कि मैं आपपर इन कुगर-शीष सब न आयेगी। पर कुन्व बादे कितना भी कर्ते न हो, अष्टक आयोगन लो करना ही पड़ेगा। कुछ हो रहा है क्या ?”

“हो कर्ते नहीं रहा है दीरी। बड़े बाबूके आदके तिय जेना कुछ ल

अगमग बैसा ही इन्तजाम हो रखा है।”

बाबू अच्युती तरह समझ न सकनेके कारण कन्दनाने विरमवक साव पूछा—
“कितने बैसा कहा आपने, मुसलमी साहबके फिदाके भादके समान ! उठनी
बड़ी सैवारियाँ हो रही हैं !”

दत्तजीने कहा—“हाँ, अगमग वैसी ही। जाकर देख लीजिएगा। बड़े
बाबूने छोटेको कुत्पकर कहा—‘द्विज, पागलपन मत कर, सब थोडकी एक
मात्र होती है। छोटे बाबूने उत्पकते कहा—‘मना होटी है या मानता हूँ,
पर माशाहान तो सबका एक छा नहीं होता भार् साहब। बड़े बाबूने इसके
कहा—‘पर तू तो समीको मात्राको लोपे का रखा है द्विज। छोटे बाबू ने कहा—
‘ये आप लोगोंने मेरी बड़ी बिनली है कि एक बारक सिध मुझे सम्य कर लीजिए !
मैं मात्रा रखन कर सकूंगा, पर मामीकी मर्माकाका रखन नहीं कर सकूंगा।
इसके बाद फिर कार् कुछ नहीं बोला। अब आप अगर कुछ कर सक तो करें।
रुन बीत पचीस हजारत कम न बैठेगा।”

“रुन क्या लख छोटे बाबूका हो रखा है।”

“हाँ, वे ही कर रहे हैं।”

कन्दनाने पूछा—“इतना क्या उनके सिध बहुत ब्यादा मात्रम होता है
दत्तजी !”

“बहुत ब्यादा न होनेपर भी—‘हालमें बला भी तो बहुत गया है बोरी।
अब लमकके फसनेकी ककरत है। और फिर इसके ऊपर नई भाष्य आनेमें क्या
हेर लगती है !”

‘अब और मर आधत कैसी !’

दत्तजी सब-भर चुप रहकर बोले—“आपने क्या तुना नहीं कि ब्यारै
साहबक साव मुकबम्य पक रखा है ! इन लख बालीका मतीका तो आप जानती
ही हैं, फल्यफल इतका कोर नहीं बला सकत।”

“ये मना क्यों नहीं किया !”

“मना ! वे तो बड़े बाबू नहीं हैं हीरी, जो मनाही मान लेंगे। इनको
मना करनेवाली तिर्क एक ही थी, जो स्वर्गमें बली गर।”—इतना ककर
दत्तजीने एक गदरी लीठ से ली और चुप रह गये।

कन्दनाने फिर कोर प्रम्व नहीं किया। मकानके पाठ जाकर बैसा कि

साम्नेबाबे मैगनमें एक तरफ बकहियाँ काट-काटकर उनका बड़ा भारी डेर ख्या दिया गया है। जो होपहियाँ दयामयीक बठ और अनुदानके बरसरपर बनबाद गई थीं उनकी मरम्मत हो रही है। बाहरबाबे प्रांगणमें विशाल मण्डन बनाया जा रहा है बहुतसे लोग कामरत लगे हुए हैं। बन्दना इस बातको समझ गई कि विराज्दलने असुक्ति कुछ भी नहीं की।

गाईसे उठरते ही वह सीपी ऊपर चम्पी गई। पहले द्विजदासके कमरेमें पहुँची। एक मोटे तर्कियेके सहारे वह बिकरपर पड़े हुए थे। परबा इत्ये खानेकी आबाबसे आँसु छोडके उठ बैठे और बोले—“यस्यु अपने आप ही पला आया मेरे दरबाजेपर।”

बन्दनाने कहा—“हाँ आया ही तो। पर इस बरक पड़ कैसे हो।”

द्विजदासने कहा—“भालें मीचक तुम्हारा ही प्यान कर रहा था, और मन-ही-मन कह रहा था, बन्दना मेरे दुःखकी खीसा नहीं है। देखने बक नहीं, मन्में मसोसा नहीं, छापद अब टपेकसे न बनेगा, नाब बीष धरामे ही हूनेगी। उठ पार पहुँचना अब न हो सक्ता।”

बन्दनाने कहा—“पहुँचना ही होगा। तुम्हें पुष्टी देकर अब नाब चम्पाने-का मार खीगी मैं खुद।”

“तु लो। पर नाबक होकर अब चम्पी मत जाना।”

बन्दनाने उनके पास आकर दोक देके प्रणाम किया, उनके पाँवकी धूक माथेसे बगकर उनके लड़ी हुए लो देखा कि योनों आँसुके आँसु बह रहे हैं। इस तरह प्रणाम करना उनका यह पहले परदक था। उधने कहा—“तुम्हारी आँसुके भी आँसु आत हैं, पर मैं परसे नहीं जानती थी।”

द्विजदासने कहा—“मैं भी नहीं जानता था। छापद उनक खानेका चम्पा अबतक बन्द था। परसे-वरक खुदा उस दिन कित दिन तुम मैरे-बो-बो दका कर उनकर इस पर-गदरपीका मार देनेके लिए कहकर चम्पी गईं। मैंने आइमें छिनकर आँसु लीठ शणी और मन-ही-मन कहा—इतनी बड़ी मामिक चोट जो आनाबीमे हूनेके गेकते पहुँचा लडती है उनक आगे कभी भीष न मारूँगा। पर वह प्रणिम मेरी न निम लडी। माभी चम्पी गई स्वग, मार नाइदने आदिर किया लम्बर-स्वागध संकल्प, एक मिनटके भूकनमें मामा लव कुछ धूकसे मिन गया। पर भी लड लका था, पर जब यह खुना कि पर छोड़कर बाहू चम्पा

क्या बीब है वह,—रूपये-येकेका शोक बनावास ही फेंक-फेंककर बस हूँगा ।”

अबदाने बन्दनाके रोनों हाथ पामकर कहा—“इकोगो नहीं दीरी, बिपिन की राव बरहवा नहीं लकोगी ! बाघुको पर नहीं रख लकोगी !”

“रख लकीगी अनु-दीरी ।”

“और वह जो छत्यानासी मामब्य चळ रहा है जगार्-बाघुके साथ—रकबा नहीं लकोगी हते !”

“हां, उसे मी रकबा लकीगी अनुदीरी !”—सजमर लम्ब रखर भिर कहने लगी—“ये मी मेरे जबाप्य न होंगे, इली घर्षपर मैं इत परकी छोटी-बहु बननेको राखी हुई हूँ अनु-दीरी ।”

बाघुको अन्धी तरह न समझ सकनेसे अबदा पुरचार उसके मुँहकी ओर देखती रही । बन्दाने कहा—‘बी गया छो छो आ चुका । ऊपरसे क्या मोंको मी लोना पड़ेगा ! मुकरमा बगैर उठाये उन्हें बापल कैसे जया आ सकता है !”

द्विबदाने लकियके नीचेसे पाबिबोंका गुच्छ निकालकर बन्दनाके पैरोंके पास फेंक दिया और कहा—“यह लो । जबाप्य न होऊंगा कमी—आज यही छल मंखु करता हूँ तुम्हारी ।”

बन्दाने पाबिबोंका गुच्छ उठाकर मौनरसे शौच किया ।

अब अबदाको छारा तातर्क समझमें आ गया । बन्दनाको छातीसे अग्यकर देखकर वह स्तिर लड़ी रही, उसकी आँसुसे लिङ बड़ी-बड़ी बूँदें टपकने लगीं ।

×

×

×

बन्दमाने विप्रबातके कमरमें आकर उन्हें प्रथम किया । बोली—“भार साहब आ गई मैं ।”

वह नवा लम्बोबन विप्रबातके कानीको कुछ अरपय-सा लया । पर इस बारेमें कुछ न कहकर उन्होंने पूछा—“तुन किया या तुम आ रही हो, तुम्हारे पिताजीका छार किया था । रातमें लकलीक था नहीं हुए !”

“नहीं ।”

“साथ कौन आया है !”

“इमारे यहाँका दरवान और बूदा नीकर दिनु ।”

‘बापूजी तुम्हारे अन्धी तरह हैं ।”

“हाँ।”

विप्रदास बग-सा चुप रहकर बोले—“दिनू कैसा पगबपन कर रहा है, देखा !”

बन्दनाने कहा—“आप आइके विषयमें कह रहे हैं ? पर वह पगबपन क्यों है ? आशोकन तो इतना ही बड़ा होना चाहिए था । नहीं तो उनसे मर्नादाको पका पहुँचेगा ।”

“पर वह सँभाल कैसे सज्जा बन्दना !”

“वे नहीं, तो मैं तो सँभाल सजूँगी मारूँ साहब !”

विप्रदासने हँसते हुए कहा—“धौंक तुममें है, मैं मानता हूँ, पर मित्रवत् विवाद जानेसे तो मुश्किल होगी । अन्तानक नाराज होकर कभी न गई तो सम्झेंगे कि हाँ बच गया ।”

बन्दनाने कहा—“उस दिन आरंभ थी पराह-सी, फिरपर कोह मार नहीं था । पर आज आरंभ हूँ परकी छोटी-बहु होकर । गुस्ता दिखानेसे गुस्ता हो भी सकती हूँ, पर अब पत्नी कैसे था सकती हूँ ! वह रास्ता तो बन्द हो चुका है ।”—इतना कहकर उसने आविर्भोका गुच्छा दिखाते हुए कहा—“यह देखिए, इस परकी सब आत्मपरिच्छे और लम्बूकी लक्ष्मिणी ये रहीं । अपने-आप उठाकर उन्हें मैंने आँबलसे बाँध दिया है ।”

आनन्द और आश्चर्यसे विप्रदास चुपचाप देखते रह गये । बन्दना कहने लगी—“आपसे धरमठ साम कहनेकी—छिया-छिपूके कहनेकी कोर बात नहीं मेरी । मगवान्के सामने जैसे आदमीकी छिपने योग्य कोई बात नहीं होती ठीक पैल ही । पाह है आपको अपने आधाबादकी ? जाते समय मुझसे कहा था आपने कि तुम्हारा ब्ये ब्येपरमें अपना है लकीको तुम पाधोगी एक रोज । उस दिनसे मेरी संपत्ता जाती रही है, धान्य मन्ते किर्क रही बात सोचती हूँ कि जो त्रिनेन्द्रिय है, जो आत्म्य छद्म सत्यवादी और लघु हैं उनके आधीबादसे अब मुझे कोह डर नहीं रह गया । जो मरे पति हैं उन्हें मैं प्रार्थनी ही ।”—कहते-कहते उसकी आँसु आँसुओंसे भर आई ।

विप्रदासने पास आकर उसके माथेपर हाथ रखकर मान-आधीबाद दिया, और आज यह परल्य दिन है, कि बन्दना उनके पौरोपर बहुत दैरतक मक्कक रखकर प्रणाम करती रही । उठकर उठकर सड़े होनेकर विप्रदासने कहा—“आज

जिसे तुमने पाया है बन्दना, उससे बदकर बुर्खम बन और कुछ नहीं। वह बात मेरी इमेजा याद रखना।”

बन्दनाने कहा—“बाद रखूंगी माईं साहब, एक दिनके लिए मी न भूँसूंगी।”

फिर बग टहरकर कहा—“एक दिन बीयारीमें आपकी सेवा की थी, आपने पुरस्कार देना चाहा था। पर ठठ दिन मैंने नहीं लिया था,—बाद है वह बात।”

“हे।”

“आज वही पुरस्कार लेना चाहती हूँ। बाबूको मैंने ले लिया।”

विप्रदासने मुसकरते हुए कहा—“ले लो।”

“उसे सिलार्कमी ‘मौ’ कहके पुकारना।”

“ऐसा ही करना। उसकी मौ और उसके बाप—दोनोंको ही आज छोड़े जाया है तुम्हारे अन्दर। और छोड़े जाया है इस मुल्की-भरनेकी म्दती मर्जाबा तुम्हारे हाथमें।”

बन्दनाने सत्र भर सिर हड़काने चुपचाप खनो वह मार प्रहस कर लिया। उसके बाद वह बीबी—“और एक घायना है। अपनीको पहचान न सकनेके कारण एक दिन आपके भागे मैंने अन्तःपत्र किया था। आज वह भूल जाती रही, आज उसके धिय क्षमा चाहती हूँ।”

“अमा बहुत दिन पहले ही कर चुका बन्दना। मैं खानदा था, तुम्हारी अन्तरात्माने जिसे एकाम मनते पाहा है उसे तुम एक-न-एक दिन पहचानोगी ही। इसीसे, मेरे पाठ तुम्हें कोरें घरम नहीं।”

बन्दनाकी आँसुमें फिर आँसू भर आये, बहरन् उन्हें रोकती हुई बोली—“और भी एक निशा है। हम अंग्रेजोंके पर-संसारमें क्या एक दिन भी न रहने आप ? अस्मिन् और संश्लेषक बस किसी म्ये दिन मन भरकर आपकी सेवा नहीं कर पाई हूँ, पर वह बाबा तो अब जाती रही अब तो मुझे संश्लेष नहीं रहा—रहिए न कुछ दिन हमारे पास। दो-चार दिन पूजा कर लूँ।”—कहकर वह उल्टजाती हुई आँसुमेंसे उनकी ओर देखती रही, उसका आकुल कम्पत्तर मानो अन्तःकरणको भेदकर बाहर निकलत हो।

विप्रदास मुसकरते हुए चुप रहे।

बन्दनाने कहा—“इत मुसकराहट-मुखा म्येनको ही मैं कबसे क्याहा डप्टी हूँ मार साहब। कैसा कटोर है आपका मन, इसे न तो गनावा क्या सकता है

और न डिगाया ही जा सकता है। दंगे नहीं बनावें।”

विप्रदास भवकी बार हँस पड़े। उनकी हँसी कितनी स्निग्ध थी उतनी ही सुन्दर और निर्मल। उन्हें इस तरह हँसते हुए सम्बन्धाने आज पहले ही पदक देना। बोली—“बनाव पा गई, अब आपको मैं परेशान न करूँगी। पर मनचो छान्त कैसे करूँ, सो बता दीजिए। वह तो भीतरसे बार-बार रो उठता है।”

विप्रदासने कहा—“मन आप ही छान्त हो जायगा बन्दना, जिस दिन तुम निर्विघ्न होकर वह समझ जाओगी कि तुम्हारे ‘मार्ग साहब’ तुम्हारे गदमें बूट पड़नेके लिए घर नहीं छोड़ रहे हैं। उसके पहले नहीं।”

“पर इस में समझौती किस तरह ?” -

“सिर्फ मुझपर विश्वास करके। जानती हो बहन, मैं बूट नहीं बोटता।”

सम्बन्धा चुप रही। फिर दो-एक मिनट बाद एक गहरी साँस लेकर बोली—
“बही होगा। आजसे ही जानसे समझाऊँगी अपनेको, मार्ग साहब तब कह गये हैं, सत्यवादी हैं वे, झूठी बातें पढ़ाने नहीं गये मुझे। वहीं मनुष्यका परम भेष है, उसी लीपके लिए उन्होंने यात्रा की है।”

विप्रदासने कहा—“हाँ। अपने मनचो समझकर कहना कि वे सबसे बड़कर सुन्दर है, सबसे बड़कर सत्य है, सबसे बड़कर मधुर है, ‘मार्ग साहब’ उसी मागकी लोभमें निकसे हैं। उन्हें बाधा नहीं देनी चाहिए, उन्हें भ्रान्त नहीं कहना चाहिए, उनक लिए शोक करना भवताप है।”

बन्दनाकी आँसूमें फिर आँसू उमड़ आये जल्दी उन्हें पोंछकर बोली—
“देता ही होगा। देता ही होगा। हम जीवनमें अगर फिर कभी भेंट न हुए, तो भी कहूँगी—वे भ्रान्त नहीं हुए, उनके लिए शोक करना अत्याप है।”

परदेकी संभ्रमिते मुँह निकालकर बन्दनाने कहा—“दीदी, एक बस्तुरो यात्र करनी है, एक बार बाहर जाना होगा।”

“भाती हूँ बिनाज बाबू। मार्ग साहब, जाती हूँ जय।”—तना करके बन्दना बाहर चली गई।

सलीका भाऊ समारोहके साथ समाप्त हो गया। मिथुन हीन-दुखी लड़कती-साथीका जयगान करके बापन चम गये। समीने कहा—सुगंधी-परायनेका चारस देना ही हुआ करता है। उतमें टोटा-बड़ा नहीं हाता।

उधरे नशा-खाकर बन्दना अब विप्रदासके कमरेमें उन्हें प्रणाम करने पहुँची

तत्त्वज्ञान विमोह

रखना जानते हैं। जब तक धनु पूरी तरह पर्यप्त नहीं हो जाता तब तक वे किसी तरह यह-कर्ममें प्रवृत्त नहीं होते। वही उनका स्वतंत्रता का बल है। लेकिन हम लोगोंने? जबबन्द पृथ्वीजन्ते सेकर सिपुत्रुदीक्ष, मीरमाधरतक भी यह अस्थि-सम्बन्धत अमिन्वप बना ही रहा—इससे पुत्रकाय नहीं मिका। इत धर्ममें मानों-भी-मोने पुत्र होकर अपने धर्म-देवताका यय गाते हुए, 'धर्म-गठ' (एक धार्मिक पुस्तक) में लिखा—

“धर्म हरल्य यवनकर्म्यी
मायाव दिला काबो द्वी
बर्मर धनु करिते विनाश।”

[अर्थात् धर्मके धनुओंका विनाश करनेके लिए धर्मन यवन-रूप धारण किया और माथेर काभी योगो अर्थात् ।]

अर्थात् विदेशी हमलावर मुक्तमान अहिन्दू धर्मावलम्बी पड़ोसी बंगालियोंको कुल देन क्या, इसीसे उन्हें परम आनन्द हुआ। अभी कलकी ही बात है—अपने योगोंसे सङ्गठित-संगठित ही रहने वह विषय-पुरुष विचारजन शायकी शायी उन्नत वीथ गर्। और आज भी क्या वह बन्द है? वह जो पुस्तक है इसके भीतर मी पया अगानेसे तेरह हक देन पड़ेंगे। किसीका किसीसे मेल नहीं है—इतक कितने ही प्रकारके मतनेर हैं, कितने प्रकारके मान अमिमानोंको अनवन है—कमलके पसेमे पानीकी बूँदको तरह यह अस्तित्व है। कय गिरकर कौन अक्य हो जायगा।

इत तरह बाहरसे इकट्ठा की गई भीड़ करनेका नाम क्या organization (संघटन) है। और (संघटित या बौध्दिक) देह-बस्तुकी तरह क्या इतके पैरक नालूनमें लुरं पुमानेसे तिरके अस्तक सिहर उठते हैं! किन्तु अित विन देखा होगा—पैरकी थोटका कय सिरतक पहुँचेगा, उठ दिन कम्ते कम बंगालमें, उपाय-हीनताकी प्रिकायत न चुन पड़गी।

लोकता है वही छे हम लोगोंका उनावन संस्कार है। धनु आकर दरबाज्य परलया रहा है, तो मी हक-बन्दीका लगुदा नहीं मिय। अयक, इन्दीके ऊपर आज देहकी शायी भाषा और भयेका है! कय इसकी मीमांसा शायी, छे परसे कम्पनेमें दिम्बिअयका गौरव प्राप्त करनेके लिए प्रथमतः उद्योग जगदीश्वर ही जानें।

परसे कम्पनेमें दिम्बिअयका गौरव प्राप्त करनेके लिए प्रथमतः उद्योग जगदीश्वर ही जानें।

हे राजनीति । और वह जित्ना कुछ बड़े-बड़े व्यवसायियों (वा पूँजीपतियों) के हाथमें है । या तो अपने हाथमें करते हैं, नहीं तो अपने आदमियोंत कएत हैं । बनिक्-वृत्ति ही इस समय मुख्यरूपसे राजनीति है । घोषणके लिए ही घासन हो रहा है । नहीं तो उसकी कोई विशेष प्रयोजनीयता नहीं है । एत-यन्त्रह शास्त्र पढ़ते जो विद्ययापी महापुत्र (पोपोपका प्रथम महापुत्र) हो गया है, उसका मूलमें भी मही एक बात थी—वही बाजारों और लरीदारोंके लिए दूकानदारोंकी छीना-काटी । बालबर्षमें इस जगहपर थोटा मारनेके समान बड़ा आघात वर्तमान युगमें और नहीं है । नानाविध असम्मानय उत्प्रेक्षित या पागल होकर कक्षिणने विदित मारके बायकाटका संकल्प ग्रहण किया है । उन लोगोंका संकल्प पूरा हो । बंगालके पुत्रकहन्द, इस समयमें तुम लोग जी-जानसे सहायता करो । किन्तु अन्येकी तरह नहीं, महात्माजीके द्रुक्म करनेसे भी नहीं, क्षत्रिय समानस्वरसे उसकी प्रतिष्थानि करती घूमे—तो भी नहीं । भारतकी बीस लाख रुपयेकी लारी से बरसी करोड़ रुपयेकी कमी पूरी नहीं की जा सकती । काठक पल्लेसे लारेकी मशीनको भी हराबा नहीं जा सकता और अगर ऐसा हो भी जाय तो ठठसे मनुष्यके कस्यायका मार्ग प्रशस्त नहीं हाता । विशेष कर, इस समय यह अप नीतिक विवाद नहीं है, राजनीतिक विवाद है—यह बात किसी तरह नहीं भूकनी चाहिए । मुत्तगम् बाधनी सुते हैशक करपेमें कुने हुए कपड़ों हो वा देपक कक-कम्प्रेठ तैयार कपड़ोंते हो अथवा लपाही शोणिक लहरसे ही हो, इन बातका पूरा करना ही चाहिए । बंगालमें तो वह अत अज्ञात नहीं है । उस दिन (बंगालके आन्दोलनके समय) बंगालके मनीषी नेताभीने जो मार्ग दिगजाया था, उसी मार्गसे चलकर यह संकल्प सामक होगा । British cloth (बिजायती कपड़) की जगह foreign cloth (विदेशी कक) जाइ देकर अहिंसानीतिकी पयकाशा विचार का सखती है, किन्तु असम्भवक मोहमें आत्मसंयना करनेसे फल संयनाका संयक ही टेर होग्य, और कुछ न हांग्य । आगामी ३१ दिनारका इन्द्रशक उन रवाकी तरह ही आंग्येमें पूर होंकर मरेगे बिना बिज-बापाके निरक जायगा ।

बंगालक बेहातमे मेरा पर है । बंगालका मैं नहीं जानता, यह अत्याद हायद मेरा बदन बड़ा रागु भी मुते नहीं देगा । मैंने पर पर जाकर देना है, यह यदि प्कार नहीं पकता बर्षा । हा-पार स्वदेयमन्त पुत्र इवका निर्वाह घारे मने ही

तठ्ठोंका विद्रोह

कर लें, लेकिन औरतोंका काम तो चलता ही नहीं। अन्य प्रदेशोंकी बात में बनवा, लेकिन इस देशकी किस्मोंको दिनोंके अन्तमें कई बच्चोंकी जरूरत होती इस प्रदेशकी सामाजिक रीति और इस देशका अरिब मज्जागत संस्कार ही यह समामें लड़े होकर सहरकी महिमामें गला फाड़नेपर भी वह भीत्कार किती तरह भी देहातके एकान्त अन्त-पुरमें नहीं पहुँचेगा। स्वच्छ अथवा पीते यहस्यकी ही बात नहीं कहवा, गरति रोसिहर-मज्जुयोंकी बात भी मैं हूँ—यह मेरी बात सख है और इसे स्वीकार करना ही अच्छ है। किती एक खास सख-हिबीकनमें दो-एक मन पल्लेका कवा सत ठेकार नगीर शमित करके इसका ब्याव नहीं रिया जावगा। यह तो हुआ

बिकरव। पल्लेकी भी बड़ी दया है। ठहर हमारे किथान-मज्जुयोंके कटीब बय्ठेका समम अगर बे पा जाती हैं तो म्हात्माजीके आदेशको क्यकर - - हवा हावमें उनके बसा बेनेर भी बे छो जाती हैं। मैं उनको सोप नहीं क्ठवा। जान पड़ता है, सन्ना प्रबोकन न होनेके कारण ही ऐसा होता है। इस प्रसंगमें और एक बात कहना मैं जरूरी समझता हूँ। इस देशके

द्विष व्यक्तियोंका मत यह है कि मनुष्यकी जीवन-यात्राकी जरूरतें निम्न ही रूपका कम कर देनेकी आवश्यकता है। अभाव मज्जुम पड़ना ही बुद्ध है। अथवा दस हाथके बदले पाँच हाथकी होती और पाँच हाथके बदले पड़नी ब्याव—और कूँकि विद्याविता पाप है, इही कारण सव प्रकारका धाकन (या तकलीफ उठाना) ही मनुष्यके विकालका सखत उद्यम उपाय है।

यह पुण्यमूमि स्वागके माहात्म्यसे ही भरपूर है। ऊँचे बच्चोंके दर्शनध्यानमें बना है, नहीं जानता; किन्तु तहज्जुदिते जान पड़ता है कि यह स्वागका मत्र दिन दिन सर्वसाधारणको मनुष्यके बच्चोंसे गिराकर पशुके दर्भमें सींच गया है। उब बाकाया बना करोगे, अभावका शोष ही उनम नहीं रहा। छोटी व्यक्तियाँ अद्वैत हैं—इससे क्या! ऐसा तो मगान्त्वे उन्हें बना दिया है! एक मूलसे अथिक उन्हें अपन नहीं नहीं होता—यह उनकी तकदीरमें लिखा है। उन्हें इधरमें सन्तुष्ट रहना चाहिए। जो लोग और बोझ अथिक जान रखते हैं, वे ठवाव दल्ले देलकर करते हैं—यह संसार तो म्या है—दो दिनका लोक। इत अन्तमें सन्तुष्ट बिलते बुद्ध सख जानैये दूठरे अन्तमें मगान्त् उनकी और कृप-वर्धिते

। एक माम्बके सिवा और किसीके खिलाफ उनकी शिकायत नहीं है।
 (या दावा करना) वे जानते नहीं मोंगते वे करते हैं। अथ नहीं है,
 नहीं है, शक्ति नहीं है, अभावपर अभाव निरन्तर खिलना ही उन्हें दबाता
 है, उठना ही वे उसे सहनेका बरदान मोंगते हैं। उलसे भी अब पूरा नहीं
 है, तब आकाशकी ओर देखकर बुधचाप बॉम्ब मूँह छेदे हैं।

एक बात पुण्डित-पण्डितोंके मुन्धसे प्रायः ही सुन करके बहुत मुनी जाती
 : उल पुण्डित अमानमें ऐसा नहीं था। अब खेतिहरतक कुला पहनते हैं,
 वे सूते काटना चाहते हैं, तिरपर छतरी लगाते हैं उनकी औरतें साकुनसे देह
 हैं, बाबूरीसं दस तबाह हो गया। इसका अभावमें उनसे तुमको बही बात
 ही चाहिए कि अगर यह सच है तो आनन्दकी बात है। देखने तबाह न
 र उभरितीकी ओर मुँह फेर है और उसीका यह आभाव दिखाह विवा है।
 व खिलना चाहता है उतनी ही उमको प्राप्त करनेकी शक्ति बढ़ती है।
 आपर विभन पाना ही जीवनकी लक्ष्मता है। जने स्वीकार करके उलकी
 लमी करना ही कापरपन है। एक दिन जो नहीं था, उसे अकारण बाबूरीसं
 कर बिकार देने छिन्ना ही देशके कस्यापकी कामना नहीं है।

विगत दिनम्बरमें कलकत्तेमें बुलाये गये All India youth league
 (एल इण्डिया यूथ लीग) के सम्मेलनके सम्प्रति श्रीसुन्द नारीमन साहबके
 तसे एक अग्रहका मैं उल्लेख करना चाहता हूँ। उन्होंने उल्लेखित आवेग
 माय बार-बार यह बात कही थी कि पारदाकीमें हमने अँगरेजोंके छातन
 को पछाड़ दिया है। मिडिंग-मिह अब लामाके मारे फिर ऊँचा नहीं कर पा
 है। अतएव Bardolise the whole country (गारे दयबो
 रडोली बना दा।) बारडोलीके गौरवकी शक्ति करनेका मेरा इयदा नहीं है।
 र यह भी मैं समूह स्वीकार करता हूँ कि यहाँने स्वयं मादमी और हवचित
 । और ठीक ऐसा ही काम अगर तुमका कभी बगालमें करना पड़ा तो अक्षय
 ठे मपर पश्चिम-भारतके कमिनी नेताओंकी तरह दुनियांममें इस तरह ताल
 क-लोककर गूँधते न चिरो। मोदी-मी मद्रता अण्ठी होती है। यहाँ बात क्या
 र थी, संशेरमें कहता हूँ। अमाभियोंने कहा—“तुमए एक कपड़ेकी मान्गुजारी
 । कपड़ा हो गर है, हम और इसे नहीं दे लेंगे—मर जायेंगे। हमए यह
 हना लन है कि मरी, जोंब कर स्वीक्षण।” अविशेषक

तक और और गति नहीं है, हमारी मुक्ति का द्वार विष्णु का ही बन्द है और इती
 किये सब काम छोड़कर तिरतना-पतना बंदर ही हो व्यस्त हैं, वे अन्धे आदमी
 हैं, इसमें सन्देह नहीं, लेकिन उनके ऊपर मुक्त काम ही गयेगा है। अब बलम्ब
 समाप्त करता हूँ। मुसलमान भाइयों के सम्बन्धमें आह्वान करके कुछ भी करने की
 आवश्यकता मैंने नहीं समझी; क्योंकि वे भी देखके इस तत्त्व-संपर्क के अन्तर्गत हैं।
 तबल लोग एक ही तरण-व्यक्ति हैं—उनका और कोई वृत्त नाम नहीं है।

शुभ लोग प्यार करके मुझे इतनी दूर लौट जाने दो, इसके लिए मैं
 कल्पना देता हूँ।

कल्प समाप्त कर मैंने अनेक अप्रिय बातें कही हैं। उठका पुरस्कार रख छोड़ा
 गया है। इसी सम्बन्ध-अवस्था में दो दिन बाद तिरस्कार की बाद उमड़ आयेगी।
 किन्तु उस में हाथड़ा के एकान्त गाँव 'माजू' में आकर साहित्य के दरबार में
 भिड़ जाऊँगा, यहाँ का तबल-गजन मेरे चानोतक नहीं पहुँचेगा—इतनी ही
 कृपण है।'



१. सन् १९१९ में ईश्वरजी बुद्धिजी के अतीव आदरपूर्वक आग्रह से मुझे ही बरफे
 की वरफे पुरस्कार-पत्रिका के सम्बन्ध में मुझे बरफे का।

कहा—“ना, यह
करेंगे।” रिमाबा

क्रिया—यह सार्ति
गवर्नमेंटने एक इ

कुछ-कुछ पैसा ही
छोटे-बड़े बरों के

भार। बालों
यह मुझ तक तक

प्रत्येक सचमुच इ
बोड़ी-सी Inq

करना— केर
बंगालमें इसे

संपत्तिको ecc
उस repre

अवतीर्ण हो
सेबक संगठ

आत्म-बंधन
बहों उपरि

मन्त्री मॉरे
इतनी बार्

मिनि
गवा है।

दौआमेव
विस्थाक

होवा।
(एकि

बन्धी

उक्त और कोर गति नहीं है, हमारी मुक्ति का द्वार निरन्तर ही बन्द है और इसी लिए सब काम छोड़कर निरस्तना-पड़ना छोड़ ही था व्यस्त हैं, वे अफ़से आदमी हैं, इसमें अफ़ेद नहीं, लेकिन उनके ऊपर मुझे कम ही मरवा है। जब वह सब समाप्त करता हूँ। मुसलमान भाइयोंके सम्बन्धमें अन्वेषण करके कुछ भी कहनेकी आवश्यकता मझे नहीं लगती; क्योंकि वे भी देशके इस तन्म-संघके अन्तर्गत हैं। तत्त्व ज्ञान एक ही तत्त्व-आदि के हैं—उनका और कोई दूसरा नाम नहीं है।

हम लोग प्यार करते मुझे इतनी दूर लौट लाये हो, इसके लिए मैं धन्यवाद देता हूँ।

तत्त्व समझकर मैंने अनेक अप्रिय बातें कही हैं। उसका पुरस्कार रत्न छोड़ा गया है। इसी कांग्रेस-सत्रमें दो दिन बाद तिरस्कारकी बाद उमड़ आयेगी। किन्तु उस में हाथ-पादके एकदम गोंब 'मार्क' में आकर शारिस्वके दरबारमें भिड़ जाऊँगा, वही का तर्ज-गर्जन मेरे कानोंतक नहीं पहुँचगा—इतनी ही कुछ है।'



१. सन् १९१९ में ईशानकी सुविधीने बंगाल प्रारिपिक तालिम आन्दोलनके कुछ ही पहले अन्तः-सम्मेलनकीके समावधि-परसे दो दूर बचपना।